

The Dalai Lama Tibeto-Indological Studies Vol. IV

धम्मपद

DHAMMAPADA

सिद्धेद रिगजित नाभा



केन्द्रीय उच्च शिक्षा-विभाग, सारनाथ

कुडाण्ड २३२६

Central Institute of Higher Tibetan Studies
Sarnath

1982

दलाई लामा भोट-भारती ग्रन्थमालायाश्चतुर्थं पुष्पम्
The Dalai Lama Tibeto-Indological Studies Series Vol. IV

धम्मपद

सम्पादक एवं भाषान्तरकार
छिमेद रिगजिन लामा



भोटविद्या संस्थानम्

केन्द्रीय उच्च तिब्बती-शिक्षा-संस्थान. सारनाथ

बुद्धान्त २५२६

Central Institute of Higher Tibetan Studies
Sarnath
1982

दलाई लामा भोट-भारती ग्रन्थमालायाश्चतुर्थ पुष्पम्

The Dalai Lama Tibeto-Indological Studies Series Vol. iv

सामान्य सम्पादक : भिक्षु समदोङ् रिनपोछे

General Editor : Ven. Samdhong Rinpoche

First Edition (500 copies)

Price (Rs. 75/- hard back,
Rs. 55/- paper back)

Copy rights reserved 1982

Published by :

Central Institute of Higher Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi-221007 (India)

Printers :

Bhojpuri Press
Jagatgunj, Varanasi-221002

विषयानुक्रमणी

प्रकाशकीय भिक्षु समदोङ् रितपोछे
भूमिका (अंग्रेजी) छिमेद रिगजिन लामा
मूलधम्मपद (पालि, संस्कृत, तिब्बती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषान्तर सहित)

१	यमकवग्गो	1
२	अप्पमादवग्गो	21
३	चित्तवग्गो	33
४	पुण्णवग्गो	44
५	बालवग्गो	60
६	पण्डितवग्गो	76
७	अरहन्तवग्गो	90
८	सहस्सवग्गो	100
९	पापवग्गो	116
१०	दण्डवग्गो	129
११	जरावग्गो	146
१२	अत्तवग्गो	157
१३	लोकवग्गो	168
१४	बुद्धवग्गो	180
१५	सुखवग्गो	198
१६	पियवग्गो	210
१७	कोधवग्गो	222
१८	मलवग्गो	236
१९	धम्मट्ठवग्गो	256
२०	मग्गवग्गो	274
२१	पकिण्णकवग्गो	291
२२	निरयवग्गो	307
२३	नाशवग्गो	321
२४	तण्हावग्गो	335
२५	भिक्षुवग्गो	361
२६	ब्राह्मणवग्गो	384
शुद्धि-पत्र		425
गाथा-सूची		427

ཆེད་བརྗོད།

ཆོས་ཀྱི་ཆོགས་སྤྱ་བཅད་པ་བཞིན་ནང་བའི་ཐོག་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་མཐུན་
མོང་དུ་ཆད་མར་བཟང་བའི་གཞུང་ཞིག་ཡིན་པས་ཀུན་གྱིས་ཐོས་བསམ་བྱ་
ཡུལ་ཁྱད་འཕགས་ཤིག་ཡིན་པ་དང་། གཞུང་འདི་ལོགས་སྤྱར་དང་། ཡུ་
ལའི་སྐད་དུ་བཞུགས་པ་མ་ཟད། བོད་དང་དབྱིན་ཅིན་སྐད་དུ་འང་འགྱུར་
རིགས་མི་འདྲ་བ་སྤྱ་ཆོགས་ཤིག་གི་དབར་རྒྱན་མང་པོ་ཞིག་སྤང་།

བོད་སྐད་བསྐྱར་འགྱུར་དུ་བཞུགས་པའི་ཆེད་དུ་བརྗོད་པའི་ཆོས་སྤྱ་
ཆོས་ཀྱི་ཆོགས་སྤྱ་བཅད་པའི་ཤོ་ཡོག་པལ་ཆེར་ཆང་ཡང་གོ་རིམ་ཅང་མི་འདྲ་
བ་འདུག་ཅིང་། སྤྱར་ཡང་དུས་སྤྱི་མཁས་དབང་དགེ་འདུན་ཆོས་འཕེལ་
གྱིས་ཡུ་ལའི་ཆོས་ཀྱི་ཆོགས་སྤྱ་བཅད་པ་ནས་ཐད་ཀར་བོད་སྐད་དུ་བསྐྱར་ཞིང་།
ཁྱོད་འགྱུར་ཆོས་སྤྱ་ཆོགས་བརྗོད་འགའ་རེར་སྐབས་བསྐྱར་འགྱུར་བཅོས་...
མཛད་པ་འདྲ་ཅི་རིགས་ཤིག་འདུག

དེ་ལྟར་འགྲོ་དོན་དར་ཁྱབ་ཆེ་བའི་གཞུང་འདི་གོང་གསལ་སྐད་རིགས་
ཆང་མར་སྒྲེབས་གཅིག་དུ་དོན་གཉེར་ཅན་ནམས་ལ་ཆོགས་མེད་ཐོབ་ཆེད་...
མཁས་མཆོག་འཁོར་གདོང་གདོར་སྒྲུལ་འཆི་མེད་རིག་འཛིན་མཆོག་ནས་...
སྤྱོད་སྤྱི་གས་ཞུ་ཆེན་མཛད་དེ་སྤྱེད་ཆེད་ཀྱི་བཞིག་གྲུབ་པར་མཛད་པ་...
དེ་བཞིན། འདི་ག་སྒྲོབ་ཁང་ནས་དབར་བསྐྱར་ཞུ་རྒྱུ་ཁས་ལེན་ཡོང་བ་བྱུང་
སྤྱོད་སྤྱི་གས་ཞུས་ཅང་། བར་སྐབས་བཞགས་ཀྱིན་སྤྱ་ཆོགས་ཀྱི་དབང་
གིས་རིང་འགྲངས་མོང་བ་སྒྲོ་འཕམ་གྱི་གནས་སྤྱར་གྱིས་མོད། ད་ཆ་དཔར་
འགྲེམས་ཐུབ་ཅིས་བྱུང་བ་བསོད་ནམས་ཀྱི་སྐལ་བར་སྒྲོམས། དཔེ་དེབ་འདི་
བཞིན་དོན་གཉེར་ཅན་གྱི་སྒྲོབ་གཉེར་བ་དང་ཉམས་ཞིབ་པ་ནམས་སྤྱ་མ་ཟད།
དད་འདུན་ཅན་ཡོངས་ལ་འདྲ་མཁོ་མེད་ཆེན་པོ་ཡོང་བའི་རེ་འདུན་ཡོད།

ཐམ་གདོང་པ་དགེ་སྒྲོང་སྒྲོ་བཟང་བསྐྱར་འཛིན།

प्रकाशकीय

धम्मपद सभी बौद्ध निकायों के लिए समान मान्यता प्राप्त एक मूलभूत एवं महत्वपूर्ण ग्रन्थ है जिसका निर्विवाद रूप से समस्त बौद्ध अनुयायी अध्ययन-अध्यापन करते हैं। यह ग्रन्थ पालि, संस्कृत मूल के अतिरिक्त भोट, हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवादों के अनेक संस्करणों में उपलब्ध है।

तिब्बती तद्व्युर में इसका प्राचीन अनुवाद 'उदान वर्ग' के नाम से मिलता है जिसमें धम्मपद की प्रायः सभी गाथायें संगृहीत हैं; यद्यपि उनके क्रम में किञ्चित् अन्तर अवश्य दिखाई देता है। इसके अतिरिक्त महापण्डित श्री गेदुन छोफेज ने पालि मूल से इसका यथावत् भोट रूपान्तर भी कर दिया है, जिसमें उदान वर्ग के अन्तर्गत भाषान्तरित गाथाओं में आवश्यकतानुसार संशोधन हुआ है।

ऐसे महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय ग्रन्थ को इन सभी भाषाओं में सरलता से उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रोफेसर छिमेद रिगजिन लामा जी ने इसे एकसाथ सम्पादित करके एक महत्वपूर्ण कार्य किया है। इसे संस्था के भोट-मारती ग्रन्थाला के अन्तर्गत प्रकाशित करने का निर्णय लगभग दस वर्ष पूर्व हुआ था; परन्तु इस बीच अनेक तरह से व्यवधान पड़ता गया और इसके प्रकाशन में अत्यधिक विलम्ब हुआ जिसके लिए हमें हाविक कष्ट है।

श्री लामा जी के असाधारण धैर्य और उनके संयम की हम सराहना करते हैं, जो उन्होंने हमारी सीमाओं को सही ढंग से समझा और कुछ अन्यथा नहीं लिया।

मैं आशा करता हूँ कि वर्तमान रूप में इस ग्रन्थ के प्रकाशन से बौद्ध धर्म और दर्शन में आस्था रखने वाले अध्येताओं को इसके तुलनात्मक विवेचन में काफी सुगमता होगी। भद्वालुओं के लिए तो इसका प्रचार ही स्तुत्य है।

सारनाथ, वाराणसी

९ नवम्बर १९८२

भिक्षु समदोङ् रिनपोछे

प्राचार्य

प्रकाशकीय

धम्मपद सभी बौद्ध निकायों के लिए समान मान्यता प्राप्त एक मूलभूत एवं महत्वपूर्ण ग्रन्थ है जिसका निर्विवाद रूप से समस्त बौद्ध अनुयायी अध्ययन-अध्यापन करते हैं। यह ग्रन्थ पालि, संस्कृत मूल के अतिरिक्त भोट, हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवादों के अनेक संस्करणों में उपलब्ध है।

तिब्बती तड्युर में इसका प्राचीन अनुवाद 'उदान वर्ग' के नाम से मिलता है जिसमें धम्मपद की प्रायः सभी गाथायें संगृहीत हैं; यद्यपि उनके क्रम में किञ्चित् अन्तर अवश्य दिखाई देता है। इसके अतिरिक्त महापण्डित श्री गेबुन छोफेज ने पालि मूल से इसका यथावत् भोट रूपान्तर भी कर दिया है, जिसमें उदान वर्ग के अन्तर्गत भाषान्तरित गाथाओं में आवश्यकतानुसार संशोधन हुआ है।

ऐसे महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय ग्रन्थ को इन सभी भाषाओं में सरलता से उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रोफेसर छिमेद रिगजिन लामा जी ने इसे एकसाथ सम्पादित करके एक महत्वपूर्ण कार्य किया है। इसे संस्था के भोट-भारती ग्रन्थनाला के अन्तर्गत प्रकाशित करने का निर्णय लगभग दस वर्ष पूर्व हुआ था; परन्तु इस बीच अनेक तरह से व्यवधान पड़ता गया और इसके प्रकाशन में अत्यधिक विलम्ब हुआ जिसके लिए हमें हादिक कष्ट है।

श्री लामा जी के असाधारण धैर्य और उनके संयम की हम सराहना करते हैं, जो उन्होंने हमारी सीमाओं को सही ढंग से समझा और कुछ अन्यथा नहीं लिया।

मैं आशा करता हूँ कि वर्तमान रूप में इस ग्रन्थ के प्रकाशन से बौद्ध धर्म और दर्शन में आस्था रखने वाले अध्येताओं को इसके तुलनात्मक विवेचन में काफी सुगमता होगी। श्रद्धालुओं के लिए तो इसका प्रचार ही स्तुत्य है।

सारनाथ. वाराणसी

९ नवम्बर १९८२

मिक्षु समदोङ् रिनपोछे

प्राचार्य

PREFACE

Today as throughout its long history, the Dhammapada is one of the most popular books of Buddhist moral teaching and example. There have been many translations of it into English and also several into modern Indian and European Languages. This new edition contains versions of the text in Pali, Sanskrit and Tibetan with Hindi and English translations. Where verses of the Sanskrit Udānavarga have been found to correspond with those of the Dhammapada, they have been printed alongside in Tibetan. By printing versions in several languages it is hoped that students of Pali, Sanskrit and Tibetan will be able to derive much benefit from the advantage of easy cross-references. The Dhammapada is not found in the Tibetan Canon (bKa-gYur), and apart from a few random verses it was unknown in Tibet until the recent translation by the Rev. dGe-dun Chos-'phel. Comments have been made on certain verses of his translation to make the meaning clearer.

The Pali Dhammapada containing 423 verses arranged in 26 chapters, is a part of the Khuddaka-nikāya of the Sutta-piṭaka of the Tripiṭaka of the Theravādin canon. There are 4 other works in the Dhammapada class of scriptures which have survived till the present day, the Gāndhārī Dharmapada, the Sarvāstivādin Udānavarga, the Mahāsāṅghika Dharmapada and the text (perhaps texts) which contributed to the unidentified chapters of the Chinese Fa-chu-ching.¹ According to Prof. J. Brough² who

1 The author would like to mention that in 1945 Rev. Gedun Chos 'phel stayed in his house at Tso Pema, H. P. for a week during which time they had many talks on the Dhammapada.

2 Much of the information of this paragraph is drawn from the Gāndhārī Dharmapada, Edited by Dr. John Brough, O. U. P. 1962. We gratefully acknowledge the assistance which his scholarly works provide for all those interested in the Dharmmapada.

has edited the Gāndhārī text from photographs of the birch bark manuscript in Kharosthī script—the Pali and Prakrit recensions and the Sanskrit Udānavarga probably have a *common nucleus* of about 330 to 340 verses”,³ He goes on to say, ‘this is such a large fraction of the total Pali text that we may reasonably see in this common nucleus an indication that the three texts were built up in the separate schools by a process of rearranging and adding to a specific collection of verses inherited from an earlier period, and recognised as Dharmapadāni.’ These collections of verses certainly faithfully reflect the teaching of Śākyamuni Buddha and should be respected and studied by followers of all the different schools.

The English translation is a new one, though it incorporates many interpretations and insights from previous translations. Much use has been made of the very valuable guide to the Dharmapada in Hindi by Mahāpandit Rahul Sankrityayana. It is hoped that this new translation will help readers to penetrate into the deep significances of Bhagawan Buddha’s teachings and that the simple renderings given will encourage some real thinking on these important matters so vital to our future well-being.

The Dhammapada’s simplicity of expression and directness and force of meaning make clear many important points of Buddhist teaching. The inevitable consequential results of actions good or bad (Karma) are well illustrated, and the necessity of having a pure morality as a basis for wisdom is pointed out. Impermanence, death and the inescapable sorrows of worldly life are explained and the need for great diligence and vigilance are treated in many places. Due to the dualistic view resultant on engrasping an ego or self, all actions which are experienced as being performed by that self come to have karmic consequences. For an action to be fully karmically potent there must be four factors present, an intention, an object, an act, and a result

3 Ibid, Intro, p. 24.

of the accomplishment of the intention, for example, desire to kill (the intention), a man (the object), the act of killing with a suitable instrument (the act), and the death of the man (result). Of these four, the intention, the orientation and decision, is the primary one in absence of which the other factors, though present, will have no karmic consequence.

The very first verse makes clear the position of paramount importance which is occupied by mind, but this is not readily understood by those who are fascinated by the wonders of material reality. Only by controlling the restless surface of the mind can its real nature be perceived, and only then is the actual nature of 'material reality' revealed. The Dhammapada is not a work of speculative thought but is the teaching of Buddha Śākyamuni who with his great wisdom penetrated into the ultimate truth of reality, and with great compassion taught the Dharma as a means to free all beings from the suffering consequent on ignorance of their own true natures. The Itivuttaka (40) says 'Whatever misfortunes there are here in this world or in the next, they all have their root in ignorance and are given rise to by craving and desire'. By cutting off ignorance and craving the mind is set free from all the objects, feelings, emotions and activities which formerly disturbed and deluded it, and then enjoys its natural state of perfect wisdom.

By developing faith in the teachings of Bhagawān Buddha as the true description of the nature of reality, confidence is gained permitting the familiar world of personal identity to be cast off, recognising clearly that it has its source in misunderstanding and sin. It is to be hoped that the false notion once prevalent in English speaking countries that nirvāṇa is an 'extinction' or 'blowing out' into a dead and empty nothingness has by now been cleared for good. Such a mistaken view rejects the Buddha's own teaching that his was the middle way free from the extremes of existence and non-existence, eternalism and nihilism. It also

makes impossible comprehension of and faith in the Buddha's great compassion and also severely limits the scope and quality of the individual's aspiration for perfection.

The Buddha is truly supreme with many great and wondrous qualities and his nature is not amenable to grading and classification by any system devised by those who are still bewildered in the darkness of ignorance. Buddha's wisdom penetrates the heart of reality and also clearly illuminates this world of ours so that he is never confused and always acts for the benefit of others. As the Dhammapada says in V. 180, 'In whom there is no entangling poisonous craving to lead to any involvement, that Buddha of limitless sphere of activity who is without fixed abode, by what path will you lead him astray?'.

The Dharma does not belong to anyone. Whoever studies it, is diligent in its daily practice, will undoubtedly gain great benefit in this and future lives. The doctrine of Karma makes it clear that success or failure depends on one's own efforts. Each person has to decide for himself which way he wants his life to go and whether he is to be pure and happy or sinful and miserable. By understanding and wisdom one becomes freed from the constraints of Karma and then, like the Buddha, is able to work for the benefit of others without limitation.

The teaching contained in the Dhammapada is especially valuable in the present difficult times of the degenerate Kali yuga. Dealing directly with the great potential in all beings it (The Dhammapada) affirms the traditional moral values of honesty, purity, compassion, self-control and hard work. It clearly places inner qualities over mere outer shows, for only from purity can wholesome, beneficial activity arise. Dharma/Religion is not a thing of the past, for it leads us to the truth,
 but if it is not practiced, and if noble aspirations are sunk in a morass of self-indulgence, then all its teachings will be seen

as very far-fetched and impractical. Buddhism's approach is in fact very practical, asserting that if only there is the sincere attempt then great benefit will be attained for oneself and for others. By following the path of morality (śīla), mind control (samādhi) and wisdom (prajñā) all impurities and afflictions are abandoned and the great liberation from the endless suffering of samsāra is attained. This truth has been realised by countless saints in the past. May this edition of the Dhammapada inspire many to realise the same !

May all beings be happy !

Chhi Med Rig Dzin Lama

ACKNOWLEDGEMENT

I would like to thank Prof. Dr. A. C. Bannerjee, Ex. Head of the Deptt. of Pali, Calcutta University, Prof. Dr. Biswanath Bannerjee, Head of the Deptt. of Sanskrit & Pali, Visva-Bharati, and Dr. S. N. Ghoshal, Reader in Sanskrit, Visva-Bharati for their help in Sanskrit and Pali, when the meaning was not clear to me. On occasions, when difficulties arose, I discussed the questions with them and gained much help and insight therefrom.

I would also acknowledge the help given by Mr. James Low in the correcting and writing out of the English translation.

Prof. S. Rinpoche, Principal, Central Institute of Higher Tibetan Studies, Sarnath, gave valuable advices and provided much information regarding the verses. He also gave much help of organisation and arranged for the publication of this book.

Thanks are also due to Tulku Thondup Rinpoche, Reader in Indo-Tibetan Studies, Visva-Bharati for his valuable help.

The author also wishes to acknowledget he help derived from the following books and thank their authors and publishers.

- 1) Dr. Sarvapalli Radhakrishnan : The Dhammapada Oxford, 1954.
- 2) Sri Narada Mahathera : The Dhammapada, Calcutta, 1970.
- 3) Mahapandit Rahul Sankrityayana : Dhammapada (Hindi), Lucknow, 1957.
- 4) Acharya Vinoba Bhave (Editor) and Srikrishna Dutta Bhatta (Translator) : The Dhammapada (Nava-Samhita), Varanasi, 1972.

१—यमकवग्गो

मनोपुब्बङ्गमा धम्मा, मनोसेट्ठा मनोमया ।

मनसा चे पदुठेन, भासति वा करोति वा ।

ततो नं दुस्स्वमन्वेति, चक्कं व बहूतो पदं ॥१॥

भावस्ती मनःपूर्वङ्गमा धर्मा मनःश्रेष्ठा मनोमयाः । चक्रपाल (येर)

मनसा चेत्प्रदुष्टेन भाषते वा करोति वा ।

तत एनं दुःखमन्वेति चक्रमिव बहतःपदम् ॥

མཉན་ཡོད་དུ་མིག་སྤོང་ལ།

ཆོས་རྣམས་ཡིད་ཀྱི་རང་བཞིན་དེ། །

ཡིད་ནི་གཙོ་ཞིང་ཕྱོད་ལ་འགྲོ།

གཡ་ཏེ་གདག་པའི་ཡིད་ཀྱིས་ནི།

ལྷ་ས་སམ་ཡང་ན་བྱས་ཀྱང་ཅང་། །

དེ་ལ་དེ་ཡིས་སྤྱད་བཟུལ་འབྱོབ།

ཡིང་ད་ཆེས་སུ་འབྲང་བ་བཞིན།

सभी धर्मों (=कायिक, वाचिक, मानसिक कर्मों, या सुख-दुःख आदि अनुभवों) का मन अग्रगामी है, मन (उनका) प्रधान है, (कर्म) मनोमय हैं। जब (कोई) सदोष मन से (बात) बोलता है, या (काम) करता है, तो वाहन (बैल, घोड़े) के पैर का जैसे (रथ का) पहिया अनुगमन करता है (वैसे ही) उसका दुःख अनुगमन करता है।

Mind is the forerunner of all things. Mind is chief and they are mind made. If with an impure mind, one speaks or acts, then misery follows just as the cart wheel, follows the ox-hoof.

ཆོས་ས། P 124 (XXXI, 24) ཆོས་ཀྱི་ཕྱོད་དུ་ཡིད་འགྲོ་ཏེ། | Pl VI

ཡིད་སྐྱོལ་སྐྱོལ་ཡིད་ནི་གཙོ་བོ་ཡིན།

གཡ་དེ་ཡིད་རབ་གདག་བ་ཡིས། ༥

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

དེ་ཡིས་དེ་ནི་རྒྱག་བསྟུང་ཕྱོག།

འཁོར་ལོ་སྐོར་གྱི་བོ་བཅད་པ་བཞི་མ།

1 མཉམ་ཡོད་ནི་ (བྱུང་བཅི) རྩི་རྩིས་བས་ཚོ་འཇུག་པ་མཉམ་ས་དང་ལོ་
ཉི་ཤར་དབྱར་གནས་མཆོད་པའི་གནས་སོ།

मनोपुञ्जमा घम्मा, मनोसेट्ठा मनोमया ।
मनसा चे पसन्नेन, भासति वा करोति वा ।
ततो नं सुखमन्वेति, छाया व अनपायिनी ॥२॥

भावस्ती मनः पूर्वज्जमा घर्मा मनःश्रेष्ठा मयोमयाः ।

मट्टकुण्डली

मनसा चेत् प्रसन्नेन भाषते वा करोति वा ।

तत एनं सुखमन्वेति छायेवानपायिनी ॥

कॅसं कॅससं यँदं ग्रीं रं वल्लेक्कं दे । ।

यँदं के मत्तं विं सुक्कं यं रं म्मो । ।

मायं दे यँदं के रं वं दुदं स वं स । ।

सुसं ससं यं रं वं पुसं ग्गं रं रं । ।

दे यं दे यँसं वदे वं रं म्मो । ।

मीवं स यँयं वं रं स रं म्मो वल्लेक्कं । ।

सभी घर्मों का मन अग्रगामी है, मन प्रधान है; (कर्म) मनोमय है । यदि (कोई) स्वच्छ मन से बोलता या करता है, तो (कभी) न (साथ) छोड़नेवाली छाया की तरह सुख उसका अनुगमन करता है ।

Mind is the forerunner of all things ("things" here has many significances. Here it means, thing, condition, state). Mind is chief and they are mind made. If with a pure mind, one speaks or acts, then happiness follows, even as the shadow that never leaves.

1. thing,

sense of

(क) P 124 (XXXI, 25) कॅसं ग्रीं सुक्कं दू यँदं रं म्मो सु । P2 V2

यँदं मत्तं मासं यँदं के मत्तं वं यँक्कं । ।

मायं दे यँदं रं वं दुदं स वं स । ।

सुसं ससं यं रं वं पुसं ग्गं रं रं । ।

दे यँसं दे के वदे वं रं म्मो । ।

मीवं स दे स सु रं म्मो वं वल्लेक्कं । ।

मोदं मासं यँ कॅसं वत्तं मासुदं स रं मासं मादं दू मासुदं स
वं दं मादं वं मासुदं रं वं वत्तं दं रं वं मासुदं सु मासं
वत्तं । रं रं मासं रं मासुदं रं मासं रं रं रं मासुदं ग्रीं रं रं रं
मासं वत्तं । ।

अवकोच्छ्र मं अवधि मं, अजिति मं अहासि मे ।

ये च तं उपनयन्ति, वेरं तेसं न सम्मति ॥३॥

श्रावस्ती (जेतवन)

धुल्लतिस्स (थेर)

अक्रोशीत् मां अवधोत् मां अजैषीत् मां अहार्षीत् मे ।

ये च तत् उपनह्यन्ति वैरं तेषां न शाम्यति ॥

ལྷ་མོ་འདི་ཚེས་རྒྱ་བཟང་གི་ལོ།

ང་ལ་སྒྲུང་ཅིང་ང་ལ་གཞོད།

ང་ལས་འཕྲོག་ཅིང་ང་མས་ཞེས།

གང་གིས་དེ་དག་སེམས་བྱེད་པ།

དེ་རྒྱུ་མ་གྱི་བཞི་མི་འབྱུང།

‘मुझे गाली दिया’, ‘मुझे मारा’, ‘मुझे हरा दिया’, मुझे लूट लिया’ (ऐसा) जो (मन में) बाँधते हैं, उनका वैर कभी शान्त नहीं होता ।

"He abused me", "He beat me.", "He defeated me.", "He robbed me.",—the hatred of those who cherish such thoughts is not appeased.

(ཏྲ) P47 (XIV, 9) བདག་ལ་ཁ་ཟེར་བདག་ལ་གཤེ། | P2 V3

བདག་པམ་བདག་པམ་ཅེད་བཟོ་ཞེས། །

འདི་གང་སེམས་ལ་འཛིན་བྱེད་པ།

དེ་ཡི་ཁོན་ནི་ཞི་མི་འགྲུང་།

[illegible]

अवकोच्छि मं अवधि मं, अजिनि मं अहासि मे ।

ये च तं नुपनहन्ति, वैरं तेषूपसम्मति ॥४१॥

अक्रोशीत् मां अवधीत् मां अजैषीत् अहर्षीत् मे ।

ये तत् नोपनहन्ति वैरं तेषूपशाम्यति ॥

ང་ལ་སྐད་ཅིང་ང་ལ་གནོད། ।

ང་ལས་འཕྲོག་ཅིང་ང་ལས་ཞེས། ।

གང་གིས་དེ་དག་མི་སེམས་བ། ।

དེ་ཕྱིས་ཁྱོ་བ་ཞི་བར་འགྱུར། ।

‘मुझे गाली दिया’, ‘मुझे मारा’, ‘मुझे हरा दिया’, ‘मुझे लूट लिया (ऐसा)
जो (मन में) नहीं रखते उनका वैर शान्त हो जाता है ।

“He abused me.”, “He beat me.”, “He defeated me.” “He
robbed me.”,—the hatred of those who do not cherish such
thoughts is appeased.

(क) P 4^r (XIV, 10) བདག་ལ་ཁ་ཐེར་བདག་ལ་གཤོ། । P3 V4

བདག་ལས་བདག་ལས་ཕྱེད་བའོ་ཞེས། ।

འདི་གང་སེམས་ལ་མི་འཛོལ་བ། ।

དེ་ཡི་ཁོན་ནི་ཞི་བར་འགྱུར། ।

न हि वेरेण वेरानि, सम्मन्तीध कुदाचनं ।
अवेरेण च सम्मन्ति, एस धम्मो सवन्ततो ॥५॥

आवस्ती (जेतवन)

काली (यक्खिनी)

न हि वैरेण वैराणि शाम्यन्तीह कदाचन ।
अवैरेण च शाम्यन्ति एष धर्मः सनातनः ॥

ཏུ་བ་ཤེད་ཆས་དུ་ནས་སྐྱེ་ཡོད་པོ།

འདི་ན་ནས་ཡང་ཁྱོ་བ་ཡིས། ॥ १

དག་ནས་ཁྱོ་བ་མི་ཤེད་ཀྱང་། ॥ १

ཁྱོ་བ་མེད་པས་ཁྱོ་བ་འགུར། ॥ १

འདི་ནི་གཞུང་དུང་ཆོས་ཡིན་ནོ། ॥ १

यहाँ (संसार में) वैर से वैर कभी शान्त नहीं होता, अवैर से ही शांति होता है, यही सनातन धर्म (=नियम) है ।

Hatreds never cease by hatred in this world. By love alone do they cease (i. e. they are pacified by the absence of a hateful response). This is an ancient law [an ancient principle (puranako Dhammo), followed by the Buddhas and disciples].

(क) P 47 (XIV, 11) འདི་ན་ཁོན་གྱིས་ཁོན་ཅན་དག ॥ P3 V5

ནས་ཡང་ཁྱོ་བ་འགུར་བ་མེད། ॥

བཟོད་པས་ཁོན་ནི་ཁྱོ་བ་འགུར་བ། ॥

འདི་ནི་ཆོས་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡིན། ॥

परं च न विजानन्ति, मयमेतद्यमामसे ।

ये च तत्तद्विजानन्ति, ततो सम्मन्ति मेघगा ॥६॥

जैतवन

कोसम्बक मिश्र

परं च न विजानन्ति वयमत्र यस्यामः ।

ये च तत्र विजानन्ति ततः शाम्यन्ति मेघगाः ॥॥

एतन्मया दत्तं न भवति मेघगाः ।

एतन्मया दत्तं न भवति मेघगाः ।

देवमया दत्तं न भवति मेघगाः ।

देवमया दत्तं न भवति मेघगाः ।

अन्य (अज्ञ लोग) नहीं जानते कि हम इस (संसार) से जानेवाले हैं ।
जो लोग इसे जानते हैं, फिर (उनके) मन के (सभी विकार) शान्त हो जाते हैं ।

Some people do not know that we are all guests in this world (i. e. there is nothing that is really 'ours' to get angry about). Those who realise this have their quarrels calmed thereby.

सुभानुपस्सि विहरन्तं, इन्द्रियेषु असंवृतं ।
 भोजनमिह चामत्तञ्जं, कुसीतं हीनवीरियं ।
 तं वे पसहति मारो, वातो रुक्खं व दुब्बलं ॥७॥

भावस्ती

चुल्लकाल, महाकाल

शुभमनुपश्यन्तं विहरन्तं इन्द्रियेषु असंवृतम् ।
 भोजने चामात्राज्जं कुसीदं हीनवीर्यम् ।
 तं वै प्रसहते मारो वातो वृक्षमिव दुर्बलम् ॥

མཉན་ཡོད་དུ་ནག་པོ་ཆེ་རྒྱང་གཉིས་ལཱོ།

ལྷག་པ་རྩེས་སུ་བལྟ་བ་ལ་གནས་ཤིང་། །

དབང་པོ་མ་བསྐྱམས་ཟས་ཀྱི་ཆོད་མི་རིག།

ལེ་ལོ་ལྷན་ཅིང་བཅོན་འགྲུས་དམན་པ་དེ། །

སྒོབས་མེད་ཤིང་ལ་རྒྱང་བཞིན་བདུད་ཀྱིས་བཟླ། །

(जो) शुभ ही शुभ देखते विहरता है, इन्द्रियों में संयम न करनेवाला होता है, भोजन में मात्रा को नहीं जानता, आलसी और उद्योगहीन होता है; उसे मार (= मन की दुष्प्रवृत्तियाँ) (वैसे ही) पीड़ित करता है, जैसे दुर्बल वृक्ष को हवा ।

The man who lives contemplating pleasure with senses unrestrained, immoderate in eating, lazy and inert, is overpowered by Mara like a weak tree in the wind.

P10(XXIX, 15) གང་ཞིག་དབང་པོ་མ་བསྐྱམས་ཤིང་། ། P4

ཟས་ཀྱི་ཆོད་ནི་མི་སྤེས་ལ། །

དན་པ་ཉམས་དང་ལེ་ལོ་ཅན། །

གཅིང་མ་ལྟ་ཞིང་གནས་བྱེད་བ། །

དེ་ནི་འདྲོད་ཆགས་ཉམས་ཀྱིས་བཅོམ། །

རྒྱང་གིས་མི་བདུན་ལྷན་ཤིང་བཞིན། །

असुमानुपस्सिं विहरन्तं, इन्द्रियोसु सुसंवृतं ।
 भोजनमिह च मत्तञ्जुं, सद्धं आरब्धवीरियं ।
 तं वे नप्पसहति मारो, वातो सेलं व पब्बतं ॥८॥

अशुभमनुपश्यन्तं विहरन्तं इन्द्रियेषु सुसंवृतम् ।
 भोजने च मात्राज्ञं श्रद्धं आरब्धवीर्यम् ।
 तं वै न प्रसहते मारो वातः शैलमिव पर्वतम् ॥

सिं.सुण.१.हेस.सु.वडु.व.अ.ण.स.सि. ॥ १
 ५५८.वो.अ.ण.स.व.सु.स.अ.स.गु.ऊ.५.५.५. ॥ १
 ५५.व.अ.स.सि.व.ऊ.५.अ.स.सु.स.व.५. ॥ १
 ५५५.गु.स.सि.सु.स.सु.व.सि.सु.स.५.५.५. ॥ १

जो अशुभ देखते विहरता है, इन्द्रियों का संयम करता है, भोजन में मात्रा का
 जानता है, श्रद्धावान् तथा उद्योगी है, उसे शिलामय पर्वत को जैसे वायु नहीं
 हिला सकता, (वैसे ही) मार नहीं (हिला सकता) ।

The man who lives meditating on the "impurities" (such
 as the 'Thirty-two Parts of the Body') with senses restrained.
 moderate in his food, confident and energetic, cannot be over-
 thrown by Mara, like a rocky mountain in the wind.

(५) P106 (XXIX, 16) व.स.सि.५५८.वो.अ.ण.स.व.सु.स.अ.स.गु.ऊ.५.५.५. ॥ P5 V8

अ.स.गु.ऊ.५.५.५. ॥ १
 स.सि.५५.व.अ.स.सु.स.व.५. ॥ १
 सि.सु.५.५.व.स.सु.स.५.५. ॥ १
 ५.५.५.५.अ.स.गु.स.सि.व.५. ॥ १
 सु.व.सि.५.५.व.सि.सु.स.५.५. ॥ १

अनिक्कसावो कासावं, यो वत्थं परिदहिस्सति ।

अपेतो दमसच्चेन, त सो कासावमरहति ॥६॥

भावस्ती (जेतवन)

देवदत्त

अनिष्टकषायः काषायं यो वस्त्रं परिधास्यति ।

अपेतो दमस्त्याभ्यां न स काषायमर्हति ॥

མཉམ་ཡོད་དུ་སྒྲུབ་བྱེད་ལའོ།

གང་ཞིག་འབག་པ་མ་བསམ་བར།

གོས་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་དཀྱིལ་བྱས་ཀྱང་། །

བདེན་དང་དྲམ་བ་མི་ལྔ་པ།

རེ་ལ་དར་མཁའ་ལོ་མ་མ་ཡིན།

जो (पुरुष) (राग, द्वेष आदि) कषायों (= मलों) को बिना छोड़े काषाय वस्त्रों को धारण करेगा, वह संयम एवं सत्य से परे हटा हुआ (है) और (वह) काषाय (वस्त्र) का अधिकारी नहीं है ।

He who dons the yellow robe (of a Buddhist monk) without being cleansed of impurities and lacking self-control and truth is not worthy of it.

(5) P105 (XXIX, 7) གང་ཞིག་སྤྱི་གས་མ་ཡོད་པ་ཞིན་དུ། P5 V9

རྟེན་མེད་པ་གསུང་ནི་གྲོལ་བྱེད་ལ།

དལ་དང་དེས་པ་མེད་པ་དང་།

ལྷ་རྩེ་གི་ཡོན་པའི་དམ་ཆ་ཡིན།

यो च वन्तकसावस्स, सीलेसु सुसमाहितो ।

उपेतो दमसच्चेन, स वे कासावमरहति ॥१०॥

यश्च वान्तकषायः स्यात् शीलेषु सुसमाहितः ।

उपेतो दम-सत्याभ्यां स वै काषायमहति ॥

གང་ཞིག་འབག་པ་བསལ་གུར་ཅིང་།

ཚུལ་ཁྲིམས་དག་ལ་གཅེས་བར་འཇོག་།

བདེན་དང་དུལ་བ་ལྡན་གུར་བ།

དེ་ཉིད་ལ་ནི་ཅུར་སྒྲིག་འོས།

जिसने काषायों का वमन कर दिया है, जो आचार (=शील) से सुसम्पन्न तथा संयम-सत्य से संयुक्त है, वही काषाय (वस्त्र) का अधिकारी है ।

He indeed is worthy of the yellow robe who has cleansed out all impurities, and who is well established in morality and endowed with self-control and truth.

(६) P105 (XXIX. 8) གང་ཞིག་སྒྲིགས་མ་ཉམས་སྤངས་ནས། P6 V10

ཚུལ་ཁྲིམས་ལེགས་བར་མཉམ་བཞག་བ།

དུལ་དང་དེས་བ་ལྡན་བ་དེ།

ཅུར་སྒྲིག་འོན་པའི་འོས་ཡིན་ནི།

असारे सारमतिनो, सारे चासारदस्सिनो ।

ते सारं नाधिगच्छन्ति, मिच्छासङ्कपगोचरा ॥११॥

राजगृह (वेणुवन)

संजय

असारे सारमतयः सारे चासारदर्शिनः ।

ते सारं नाधिगच्छन्ति मिथ्यासङ्कल्पगोचराः ॥

འོད་མཛི་ཚལ་རྩུ་ཡང་དག་སྤྱལ་བ་ལའོ།

ལྷོང་པོ་མེད་ལ་ལྷོང་པོ་དང་།

ཡིང་པོ་ཡིང་པོ་མེད་པར་སྒྲོང་།

མི་བདེན་ཀུན་ཏེག་ཕྱོད་ཡུལ་ཅན། །

དེ་རྒྱལ་ས་སྤྱིང་པོ་འབྲོབ་མི་འགྱུར། །

जो असार को सार समझते हैं, और सार को असार, वह झूठे संकल्पों में संलग्न (पुरुष) सार को नहीं प्राप्त करते ।

Taking the unreal (such as the necessities of life, false beliefs etc.) for the real and seeing the real (such as right beliefs.) as unreal, those who thus abide in the realm of false thoughts never arrive at the real (such as morality concentration, insight etc.).

1 རོད་མའི་ཆལ་ལྗེ་ (བུའུ་བཙུ་) ཀྱི། སྒྲུང་ཆལ་ཞིག་དུ་སྐྱུལ་པོ་བཟུགས་པ་
ཅན་སྒྲིང་པོ་གཉིད་འཐུག་པོར་ལོག་དུས་དུག་སྐྱུལ་གྱིས་འཕྲོ་བར་བཅས་ས་
པ་ན་ཕུ་ཀ་ལན་ད་ཀ་ཞིག་གིས་ཆེད་གཉིར་གྱིས་སྐྱུ་འཕྲོ་དེ་སྐྱུལ་པོ་རྟི་...
སྒྲིག་བཟུབས་སོ། སྐྱུལ་པོས་སྒྲོག་བཟུབས་བའི་རྟི་བཟོར་སྒྲུང་ཆལ་དེ་
ཉིད་རོད་མའི་ཆལ་ལྗེ་སྐྱུག་མའི་ཆལ་གྱིས་བསྐྱོར་ནས་ཕུ་དེ་ལ་སྐྱིན་བའི་
ས་འོད་མའི་ཆལ་ཕུ་ཀ་ལན་ད་ཀ་གནས་པ་ཕུ་བ་དེའོ།

सारं च सारतो ज्ञत्वा, असारं च असारतो ।
ते सारं अधिगच्छन्ति, सम्मासङ्कल्पगोचरा ॥१२॥

सारं च सारतो ज्ञात्वा, असारं च असारतः ।
ते सारं अधिगच्छन्ति सम्यक्-सङ्कल्प-गोचराः ॥

श्रीरं.बो.ठक.ल.श्रीरं.बो.दर. ।
श्रीरं.बो.दर.श्रीरं.बो.दर.बो.दर. ।
ल.दर.दर.दर.बो.दर.श्रीरं.बो.दर. ।
दर.दर.श्रीरं.बो.दर.बो.दर.दर. ।

जो सार को सार जानते हैं, असार को असार, वह सच्चे सङ्कल्प में सलग्न
(पुरुष) सार को प्राप्त करते हैं ।

By seeing the real as real and the unreal as unreal, those
who abide in the realm of true thoughts arrive at the real.

(ॐ) P104 (XXIX, 4) शरीरं.बो.दर.ल.शरीरं.बो.दर. । P8 V12

शरीरं.ल.शरीरं.बो.दर.शरीरं.बो.दर. ।

ल.शरीरं.बो.दर.शरीरं.बो.दर. ।

दर.दर.शरीरं.बो.दर.बो.दर.दर. ।

यथा अगारं दुच्छन्नं, वृष्टी समतिविज्झति ।

एवं अभावितं चित्तं, रागो समतिविज्झति ॥१३॥

भावस्ती (जेतवन)

नन्द (थेर)

यथागारं दुच्छन्नं वृष्टिः समतिविध्यति ।

एवं अभावितं चित्तं रागः समतिविध्यति ॥

दयेरं वं ठेसं वरं वण्णं वरं वरं ।

कसं वरं वण्णं वरं वरं वरं ।

दं वण्णं वरं वरं वरं वरं ।

दयेरं वरं वण्णं वरं वरं वरं ।

जैसे ठीक से न छाये घर में वृष्टि घुस जाती है । वैसे ही अभावित (= न क्षयम किये) चित्त में राग घुस जाता है ।

Just as rain penetrates a badly thatched house, so desire penetrates a mind which does not meditate.

(क) P122 (XXXI, 12) वरं वण्णं वरं वरं वरं वरं । P8 V13

कसं वरं वण्णं वरं वरं वरं ।

दं वण्णं वरं वरं वरं वरं ।

दयेरं वरं वण्णं वरं वरं वरं ।

यथा अगारं सुच्छन्नं, वृष्टी न समतिविज्जति ।

एवं सुभावितं चित्तं, रागो न समतिविज्जति ॥१४॥

प्रथागारं सुच्छन्नं वृष्टिर्न समतिविध्यति ।

एवं सुभावितं चित्तं रागो न समतिविध्यति ॥

दवेरं कं अणसं वरं वण्णसं वदिं हिंसा ।

करं वसं गुणं दुं वद्वेअं स अं क ।

दे वण्णि कं अणसं वरं वण्णसं वदिं सेससा ।

अद्वेदं कणसं गुणं के अणसं से वुद ।

जैसे ठीक से छाये घर में वृष्टि नहीं घुसती, वैसे ही सुभावित चित्त में राग नहीं घुसता ।

Just as rain does not penetrate a well-thatched house, so desire does not penetrate a mind which meditates well.

(क) P123 (XXXI) हिं वरं वरं वण्णं वण्णं वदिं हिंसा । P9 V14

करं वसं कणसं वरं से अणसं व ।

दे वण्णि कं अणसं वरं वण्णसं वदिं सेससा ।

अद्वेदं कणसं कणसं गुणं अणसं से वुद ।

इध सोचति पेच्च सोचति, पापकारी उभयत्थ सोचति ।
सो सोचति सो विहञ्जति, दिस्वा कम्मकिलिट्ठमत्तनो ॥१५॥

राजगृह (वेणुवन)

चुन्द (सूकारिक)

इह शोचति प्रेत्य शोचति पापकारी उभयत्र शोचति ।
स शोचति स विहन्यते दृष्ट्वा कर्म क्लिष्टमात्मनः ॥

येन स विहङ्गति सोचति, पापकारी उभयत्र सोचति ।

हे नरेन्द्र सोचति प्रेत्य सोचति पापकारी उभयत्र सोचति ।

सोचति सोचति सो विहङ्गति, दिस्वा कम्मकिलिट्ठमत्तनो ॥१५॥

सोचति सोचति सो विहङ्गति, दिस्वा कम्मकिलिट्ठमत्तनो ॥

हे नरेन्द्र सोचति प्रेत्य सोचति पापकारी उभयत्र सोचति ।

यहाँ (इस लोक में) शोक करता है, मरने के बाद शोक करता है, पाप करने वाला दोनों (लोकों) में शोक करता है । वह अपने मलिन कर्मों को देखकर शोक पीड़ित होता है ।

The evil-doer grieves here in this world and he grieves after death. He grieves in both realms. He grieves and suffers on seeing the acts which arise from his own troublesome passions (desire, hatred and stupidity).

P102 (XXVIII, 30)

P9 V15

(३) यद्विहङ्गति सोचति, पापकारी उभयत्र सोचति ।

हे नरेन्द्र सोचति प्रेत्य सोचति पापकारी उभयत्र सोचति ।

सोचति सोचति सो विहङ्गति, दिस्वा कम्मकिलिट्ठमत्तनो ॥१५॥

सोचति सोचति सो विहङ्गति, दिस्वा कम्मकिलिट्ठमत्तनो ॥

1 सुमन्तविरचिते (२३३) अंशे सप्तमः ३३३ श्लोकः सोचति सोचति सो विहङ्गति, दिस्वा कम्मकिलिट्ठमत्तनो ॥१५॥

इध नन्दति पेच्च नन्दति, कतपुञ्जो उभयत्थ नन्दति ।

पुञ्जं मे कृतं ति नन्दति, भित्त्यो नन्दति सुगतिं गतो ॥ १८॥

इह नन्दति प्रेत्य नन्दति कृतपुण्य उभयत्र नन्दति ।

पुण्य मे कृतमिति नन्दति, भूयो नन्दति सुगतिं गतः ॥

ཆོ་འདིར་དགའ་ཞིང་སྤྱི་མར་དགའ་བར་རྒྱུར།

དག་པ་ཕྱེད་པ་གཉིས་ཀར་དབྱེད་པར་འབྱུང་།

བདག་གིས་དག་པ་བྱས་ཞེས་དཀར་པར་འགྱུར།

བདེ་འགྱུར་སྐོར་ནས་ལྷག་པར་དགའ་བར་འགྱུར། །

यहाँ आनन्दित होता है, मर कर आनन्दित होता है। जिसने पुण्य किया है, वह दोनों जगह आनन्दित होता है। “मैंने पुण्य किया है”—यह (सोच) आनन्दित होता है, मुक्ति को प्राप्त हो और भी आनन्दित होता है।

The righteous man is happy in this world and he is happy after death. He is happy in both worlds. He is happy thinking, "I have practiced virtue." He is happier still on having gone to the states of bliss.

P 103 (XXVIII, 35)

P 11 V 18

(ཙ) བདག་གིས་བསོད་ནམས་ཏུས་པས་དགའ་འགྱུར་ཞིང་།

མི་ཤུལ་གྱི་མི་ཤུལ་བས་དགའ་བར་འགྱུར།

ཐད་གཤམ་གྱིས་དཔེན་པར་བྱས་པས་དགའ་བར་འབྱུང་།

རྟེན་པོ་ལྷན་སྐྱེས་པོར་དཔལ་དགུན་བར་བྱུགས།

वहृ पि चे संहितं भासमानो, न तत्करो होति नरो प्रमत्तो ।

गोपो व गावो गणयं परेषां, न भागवा सामञ्जस्य होति ॥१६॥

श्रावस्ती (जेतवन)

दो मित्र मिथु

वह्नीमपि सहितां भाषमाणः, न तत्करो भवति नरः प्रमत्तः ।

गोप इव गा गणयन् परेषां, न भागवान् श्रामण्यस्य भवति ॥

अनं दणं वसुसं वं सनं वं अदं नं नुनं ।

दे दणं अणं सुं सौं नुनं वणं खेदं सौं ।

गणनं सौं वं अणं वसुसं नुनं वणं वं वणं ।

दणं नुनं दणं वीं नुनं सुं सौं अणं नुनं ।

चाहे कितनी ही संहिताओं (=वेदों) का उच्चारण करे, किन्तु प्रमादी बन (जो) नर उसके (अनुसार) (आचरण) करने वाला नहीं होता; (वह) दूसरे की गायों को गिनने वाले । खाले की भाँति श्रामण्य (=संन्यासीपन) का भागी नहीं होता ।

Although a man recites many Sacred Texts, if carelessly he does not apply them, then he will get no share in the life of the righteous ones, like a cowherd counting the cows of others.

P 18 (IV, 20)

P 11 V 19

(१) अनं दं देवसं वसुसं सनं नुनं सुसं नुनं ।

वणं खेदं सौं दणं दे नुनं नुनं सौं अणं नुनं ।

दणं नुनं वसुसं नुनं गणनं सौं वसुसं वणं नुनं ।

दे दणं दणं नुनं सुसं वसुसं वसुसं नुनं ।

अप्यं पि चे संहितं भासमानो, धम्मस्स होति अनुधम्मचारो ।

रागं च दोसं च पहाय मोहं, सम्मप्यजानो सुविमुत्तचित्तो ।

अनुपादियानो इध वा हुरं वा, स भागवा सामञ्जस्स होति ॥२०॥

अल्पमपि संहितां भाषमाणो, धर्मस्य भवत्यनुधर्मचारो ।

राग च द्वेषं च प्रहाय मोहं, सम्यक् प्रजानन् सुविमुत्तचित्तः ।

अनुपादान इह वाऽमुत्र वा, स भागवान् श्रामण्यस्य भवति ॥

हुनं ह्यत्र गुं श्रेः ऋक् ५। अमुः ददः च ॥

अदः दगः वसुसः वः दृदः दुः सुः सुदः सुदः ।

ऊसः अः ऊसः ददः ससुक् वरः सुदः सुदः वः ।

ऊसः ददः लेः सुदः सुदः वः वः सुदः सुदः ।

अदः दगः मेसः वः ऊसः वरः दगः वरः सेसः ।

अदः ददः सुदः सुदः वः वः सुदः सुदः वः ।

देः देः दगः सुदः दगः वीः सुदः सुदः सुदः ।

चाहे अल्पमात्र ही संहिता का भाषण करे, किन्तु यदि वह धर्म के अनुसार आचरण करने वाला हो, राग, द्वेष और मोह को त्याग कर, अच्छी प्रकार सचेत और अच्छी प्रकार मुक्तचित्त हो, यहाँ और वहाँ (दोनों जगह) बटोरने वाला न हो, (तो) वह श्रामण्य का भागी होता है ।

Though little a man recites the Sacred Texts, if he acts in accordance with the Teaching, and forsaking lust, hatred, and ignorance, is truly knowing, with mind totally freed and clinging to nought either here or hereafter, then he gets the share of the practitioners of virtue.

P 18 (IV 21)

P 12 V 20

(४) अदः दगः वसुसः वः दृदः दुः सुः सुदः सुदः ।

ऊसः अः ऊसः ददः ससुक् वरः सुदः सुदः वः ।

ऊसः ददः लेः सुदः सुदः वः वः सुदः सुदः ।

देः देः दगः सुदः दगः वीः सुदः सुदः सुदः ।

२—अप्यमादवगो

अप्यमादो अमतपदं, पमादो मच्चुनो पदं ।

अप्यमत्ता न मीयन्ति, ये पमत्ता यथा मता ॥१॥

कौशाम्बी (घोषिनाराम)^१

सामावती (रानी)

अप्रमादोऽमृतपदं प्रमादो मृत्योः ममम् ।

अप्रमत्ता न म्रियन्ते ये प्रमत्ता यथा मृताः ॥

འག་ཡོད་བདར་རྩི་ལོ་འཕང་ལྷོ། ।

འག་མེད་པ་ནི་འཆི་བའི་གནས། ।

འག་ཡོད་འཆི་བར་མི་འགྱུར་དེ། ।

འག་མེད་པ་ནི་འཆི་དང་འདྲ། ।

प्रमाद (आलस्य) न करना अमृतपद है और प्रमाद (करना) मृत्युपद ।
अप्रमादी (कभी) नहीं मरते, प्रमादी तो मरे हुए की तरह ही हैं ।

Heedfulness is the Undying Stage, (the end of all the troubles that entice one into samsara.) while heedlessness is the domain of death. Heedfulness does not die while heedlessness is like death itself.

P 14 (IV, 1)

P 13 V 21 No 1

(३) འག་ཡོད་འཆི་མེད་གནས་ཡིན་དེ། ।

འག་མེད་པ་ནི་འཆི་བའི་གནས། ।

འག་ཡོད་འཆི་བར་མི་འགྱུར་དེ། ।

འག་མེད་པ་ནི་དྲག་ཏུ་འཆི། ।

१. ཀྱི་ཤི་བྱི་སྟོ་ཤིན་རྒྱུ་ལ་མ་གཤངས་ཅན་གྱི་ཀུན་དགའ་རྩ་བ་ནི། རྒྱལ་
པོ་འཆར་བྱེད་ཀྱི་སྟོན་པོ་ཁྱིམ་བདག་ནོར་བཟང་བྱ་བས་སྟོན་པ་ལས་ཆོས་་་་
ཅན་བས་བདེན་པ་མཐོང་ནས་ཀྱི་ཤི་བྱི་རང་གི་ཀུན་དགའ་རྩ་བར་གཙུག་
ལག་ཁང་བཅེགས་ནས་སྟོན་པ་ལ་སྐྱལ། སྟོན་བའི་བཀའ་བཞིན་དག་སྟོང་
བསྐྱལ་བྱེད་ཀྱིས་ཐོག་མར་དེར་ཕྱིན་བས་སྐྱལ་བྱེད་ཀྱི་གཙུག་ལག་ཁང་དང་
ནོར་བཟང་གི་མིང་གཞན་གཤངས་ཅན་ཟེར་བས་གཤངས་ཅན་གྱི་ཀུན་དགའ་
རྩ་བ་ (སྟོ་ཤིན་རྒྱུ་ལ) ཞེས་བདགས་བ་དེའོ ॥

ते ध्यायिनो साततिका, निर्व्वं ददहपरकमा ।
 फुसन्ति धीरा निब्बानं, योगवखेमं अनुत्तरं ॥३॥

ते ध्यायिनः साततिका नित्यं दृढपराक्रमाः ।
 स्पृशन्ति धीरा निर्वाणं योगक्षेमं अनुत्तरम् ॥

आमस'व'क्रु'ङु'वञ्ज'स'मु'द'ते' । ।
 ङ'वा'ङु'व'ङ'ङ'ते'ज'व'वा'ङ'ङ'वा' । ।
 ङ'ङ'वा'ङ'व'व'ङ'ङ'ङ'वा'व'ङ'ङ'वा' । ।
 व'व'ङ'ङ'व'व'ङ'ङ'ङ'व'व'ङ'ङ'वा' । ।

(जो) वह निरन्तर ध्यानरत नित्य दृढ़ पराक्रमी हैं, वह धीर अनुपम योग-क्षेम (आनन्द मंगल) वाले निर्वाण को प्राप्त करते हैं ।

The wise ones who are ever meditative and always steadfastly persevering, realise Nirvana, free of bonds, the highest.

P 15 (IV, 3)

P 14 V 23 NO 8

(३) ङ'व'क्रु'ङु'व'ञ्ज'स'व'ङ' । ।
 ङ'वा'ङु'व'ङ'ङ'ते'ज'व'वा'ङ'ङ'वा' । ।
 व'ङ'ङ'व'व'ङ'ङ'ङ'व'व'ङ'ङ'वा' । ।
 व'व'ङ'ङ'व'व'ङ'ङ'ङ'व'व'ङ'ङ'वा' । ।

उत्थानवतो सतीमती, शुचिकम्मस्स निसम्मकारिनो ।
सञ्जनस्स धम्मजीविनो, अप्पमत्तस्स यशोऽभिवड्ढति ॥४॥

राजगृह (वेणुवन)

कुम्भघोसक

उत्थानवतः स्मृतिमतः शुचिकर्मणो निशम्य-कारिणः ।
संयत्तस्य च धर्मजीविनोऽप्रमत्तस्य यशोऽभिवर्द्धते ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

(जो) उद्योगी, सचेत, शुचि कर्मवाला तथा सोचकर काम करने वाला होता है, और संयत धर्मानुसार जीविका वाला एवं अप्रमादी है (उसका) यश बढ़ता है ।

Continually increasing is the glory of he who is energetic, mindful, pure in deed, discriminating, self-controlled, right-living and heedful.

P 15 (VI. 6)

P 14 V 24 No 6

(३) ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

उट्ठानेनप्पमादेन, संयमेन दमेन च ।

दीपं कयिराथ मेधावी, यं ओघो नाभिकीरति ॥५॥

राजगृह (वेणुवन)

चुल्लपन्थक (थेर)

उत्थानेनाऽप्रमादेन संयमेन दमेन च ।

दीपं कुर्वति मेधावी यमोघो नाभिकिरति ॥

ཡོད་མཐོ་ཚལ་དུ་ལས་རྒྱུ་བ་ལ་འོ།

ཡང་བ་ཡང་དང་བག་ཡོད་ཀྱིས། ।

ཡང་དག་ཕྱི་མ་དང་དུ་བ་བ་ཡིས། ।

མཁས་བས་སྒྲིང་དུ་བྱས་ཀྱང་བ། ।

གང་ལ་རྒྱབས་ཀྱིས་ཚྭ་གས་བ་མེད། ।

मेधावी (पुरुष) उद्योग, अप्रमाद, संयम और दम द्वारा (अपने लिए ऐसा)
द्वीप बनावे, जिसे बाढ़ नहीं डुबा सके ।

By effort, earnestness, discipline, and self-control let the
wise man make for himself an island which no flood can over-
whelm.

P 15 (VI, 5)

P 15 V 25 No 5

(५)

བཙོན་འགྱུས་དང་ནི་བག་ཡོད་དང་!!

ཡང་དག་ཕྱི་མ་དང་དུ་བ་བ་ཡིས། ।

མཁས་བས་སྒྲིང་དུ་བྱས་ནས་ནི། ।

རྒྱ་བོ་ཚེན་བོ་མའོན་དུ་རྒྱུག། ।

प्रमादमनुयुञ्जन्ति, बाला दुग्धेधिनो जनाः ।
अप्रमादं च मेधावी, धनं श्रेष्ठं व रक्षति ॥६॥

प्रमादमनुयुञ्जन्ति बाला दुग्धसो जनाः ।
अप्रमादं च मेधावी धनं श्रेष्ठमिव रक्षति ॥

दुग्धेधिनो जनाः प्रमादमनुयुञ्जन्ति ।
मेधावी धनं श्रेष्ठं व रक्षति ।
बाला दुग्धसो जनाः प्रमादमनुयुञ्जन्ति ।
अप्रमादं च मेधावी धनं श्रेष्ठमिव रक्षति ॥

मुख्य दुग्ध जन प्रमाद में लगते हैं; मेधावी श्रेष्ठ धन की भाँति अप्रमाद की रक्षा करता है ।

The ignorant, foolish folk indulge in heedlessness, but the wise man guards heedfulness as the greatest treasure.

मा पमादमनुयुञ्जेथ, मा कामरतिसन्धवं ।
अप्पमत्तो हि ज्ञायन्तो, पप्पोति विपुलं सुखं ॥७॥

मा प्रमादमनुयुञ्जीत मा कामरतिसंस्तवद् ।
अप्रमत्तो हि ध्यायन् प्राप्नोति विष्णुं सुखम् ॥

བག་མེད་པ་ལ་ཕྱོད་མི་ལ།
 འདོད་བའི་དགའ་བ་བཞུག་མི་ལ།
 བག་མེད་བཞུགས་པར་བྱས་པ་ཡིས།
 གྱུ་ཆེན་བདེ་བ་བཞོལ་བར་འགྱུར།

मत्त प्रमाद में फँसो, मत्त कामों में रत होओ, मत्त कामरति में लिप्त हो
अमादरहित (पुरुष) ध्यान करते महात्मा मुख को प्राप्त होता है।

Indulge not in heedlessness. Do not depend on sensual pleasures. By heedful practice of meditation an abundance of bliss will be obtained.

P. 16 (VI, 11)

P 16 U 27

(क)

प्रमादं अप्रमादेन, यदा नुदति पण्डितो ।
 प्रज्ञाप्रासादमारुह्य, असोको शोकिनीं प्रजाम् ।
 पर्वतट्ठो व भूमट्ठे, धीरो बाले अवेक्षति ॥८॥

जैतवनं

महाकस्सप (धेर)

प्रमादमप्रमोदन यदा नुदति पण्डितः ।
 प्रज्ञाप्रासादमारुह्य अशोकः शोकिनीं प्रजाम् ।
 पर्वतस्थ इव भूमिस्थान् धीरो बालान् अवेक्षते ॥

འོད་སྤང་ཆེན་པོ་ལ་འོ་

མཁས་པ་གང་ཆོ་བཟ་མེད་བཟ་ཡོད་ཀྱིས། ।

བསྐྱད་ནས་ཤེས་རབ་རབ་དངས་ལ་ཞིན་བ། ।

སྒྲིམ་དེ་རི་བོའི་ཆེ་ནས་ཤང་བཞིན་དུ། ।

བྱིས་བའི་སྒྲི་བྱ་སྤང་ན་ཅན་ལ་གཟིགས། ।

पण्डित जब अप्रमाद से प्रमाद को हटाता है, तब निःशोक हो शोकाकुल प्रजा को, प्रज्ञारूपी प्रासाद पर चढ़कर—जैसे पर्वत पर खड़ा (पुरुष) भूमि पर अवस्थितों को देखता है (वैसे ही) धीर (पुरुष) अज्ञानियों को (देखता है) ।

When the sagacious one casts away heedlessness by heedfulness, then free of sorrows, he rides into the palace of wisdom and clarity and looks down on the ignorant sorrowing beings as one regarding the plains from a mountain peak.

अप्पमत्तो पमत्तेसु, सुत्तेसु बहुजागरो ।
अबलस्सं व सीवस्सो, हित्वा याति सुमेधसो ॥६॥

अप्रमत्तः प्रमत्तेषु सुप्तेषु बहुजागरः ।
अबलाश्वमिव शीघ्राश्वो हित्वा याति सुमेधाः ॥

वण षेदं प्रदं न वणं अदं उदं । ।
उदं वदं प्रदं न वणं अदं उदं । ।
न वणं अदं प्रदं न वणं अदं उदं । ।
अदं वणं प्रदं न वणं अदं उदं । ।

प्रमादियों के बीच में अप्रमादी, सोतों के बीच में बहुत जागनेवाला,
अच्छी बुद्धिवाला (पुरुष)—जैसे निर्बल घोड़े को (पोछे) छोड़ शीघ्रगामी छोड़ा
(आगे) बला जाता है—(वैसे ही जाता है) ।

Heedful amongst the heedless, wide awake amongst the
sleepy, the wise man advances like a swift steed, leaving the
enfeebled horses behind.

अप्रमादेन मघवा देवानां श्रेष्ठतां गतः ।
अप्रमादं प्रशंसन्ति प्रमादो गहितः सदा ॥

བག་ཡོད་ཅིང་ཁྱིམ་བརྒྱ་ཁྱིམ་ཅི།
 རྩ་ལྷན་པ་དག་གི་གཙོ་བོར་བྱས།
 བག་ཡོད་བ་ཞི་རབ་དུ་བསྐྱེད་པ།
 བག་མེད་བ་ཞི་དུ་བསྐྱེད་པ།

अप्रमाद (= आलस्य रहित होने) के कारण इन्द्र देवताओं ने शत्रु दाना
अप्रमाद की प्रशंसा करते हैं, और प्रमाद की सदा निन्दा होती है ।

By heedfulness Sakka became the chief of the gods. Heedfulness is ever praised while heedlessness is ever despised.

(5)

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अप्यभादस्तो भिक्षु, पमादे नयदस्ति वा ।

संयोजनं अणु थूलं, इह अगदीव गच्छति ॥११॥

जेलबन

बोधो विभू

अप्रमादरतो भिक्षः प्रमादे भयदर्शी वा ।

सप्रोजतं अणु म्भूलं दहन् अग्निमिव गच्छति ॥

དག་པོ་སྒྲིང་བཟ་ཡོད་མ་དགའ་ཞིང་།

འགྲུ་མེད་ཀྱི་གཏེར་པར་བརྒྱ་བ་མེ།

ཀྱན་ཏུ་ལྷོད་པ་སྤྱོད་པ་ལྟེན་པ།

ཡུལ་པར་ལུང་པའི་མི་འཁྱིལ་བཤུར།

(जो) भिक्षु अप्रमाद में रत है, या प्रमाद से भय खानेवाला (है), (वह) आग की भाँति छोटे मोटे वस्तुओं को जलाते हुए जाता है ।

The Bhikshu who delights in heedfulness, and looks with fear on heedlessness, advances like fire, burning all fetters, both great and small.

P 19, VI.7)

P 18 V 31

(5)

ཡག་མེད་པ་ལ་འཛིགས་ཏུ་བས། །

[illegible]

མི་ཡིས་བསྐྱེད་པ་བཞིན་དུ་ཐོབ། །

अप्रमादरतो भिक्षु, प्रमादे भयदर्शि वा ।
अभयः परिहाणाय, निर्वाणस्यैव अंतिके ॥१२॥

जेतवन

(निगम-वासी) तिल्स (थेर)

अप्रमादरतो भिक्षुः प्रमादे भयदर्शी वा ।
अभयः परिहाणाय निर्वाणस्यैव अंतिके ॥

དག་སྒྲོང་བག་ཡོད་ལ་དགའ་ཞིང་། །
བག་མེད་འཇིགས་པར་བརྩ་བ་ནི། །
ཡོངས་སུ་ཉམས་པ་མི་སྲིད་ཅིང་། །
སྤངན་འདས་པའི་གས་ན་གནས། །
བག་ཡོད་ཀྱི་སྡེ་ཚན་དེ། ལེན་གཉིས་པ་འོ། །

(जो) भिक्षु अप्रमाद में रत या प्रमाद से भय खानेवाला है, उसका पतन होना सम्भव नहीं, (वह) निर्वाण के समीप है ।

The Bhikshu who delights in heedfulness, and looks with fear on heedlessness, is not liable to fall. He is close to Nirvana.

P 19 (VI, 30)

P 18 V 32

(ङ) དག་སྒྲོང་བག་ཡོད་ལ་དགའ་ཞིང་། །
 བག་མེད་པ་ལ་འཇིགས་ལྟ་བས། །
 སྤངན་འདས་དང་ཉེ་བའི་ཁྱིམ། །
 ཡོངས་སུ་ཉམས་པར་མི་སྲིད་དོ། །

३—चित्तवग्गो

फन्दनं चपलं चित्तं, दूरवखं दुन्निवारयं ।

उजुं करोति मेधावी, उसुकारो व तेजसं ॥१॥

स्थालिय पर्वत

मेघिय (थेर)

स्पंदनं चपलं चित्तं दूरस्थं दुर्निवार्यम् ।

ऋजुं करोति मेधावी इषूकार इव तेजतस् ।

ཙ་མི་ཡའི་རི་བོར་གསུངས་པ།

སེམས་ནི་གཡོ་ཞིང་འཁྱུག་པ་དང་།

ཡུལ་པ་པར་དཀར་ཞིང་ཞི་དཀར་སྟེ།

མདའ་མཁན་མདའ་མོ་ཕྱིད་པ་བཞིན།

ལྷ་དང་ལྷན་པས་པལ་བར་བྱ།

(इस) चंचल, चपल, दुर-रक्ष्य, दुर-निवार्ये चित्त को मेधावी (पुरुष, उसी प्रकार) सीधा करता है, जैसे वाण बनाने वाला वाण को ।

As a fletcher straightens his arrow, so a wise man straightens his flickering, unsteady mind which is difficult to guard and difficult to restrain.

F 122 (XXXI, 8)

P 19 V 33

མེས་ས་ནི་གཡོ་ཞིང་བཟུང་བ་སྟེ།

འིང་རྩ་བུ་གིས་བཟོས་པའི་

མཛེས་མཁན་མེ་ཡིས་སྤོང་བ་ལྟར།

ཡིན་པའི་པ་ཡིས་པར་པ་ལ།

བདུང་ཁྱི་གཞི་དག་སྤོང་བ་ན།
 རྒྱ་བོའི་གནས་ནས་རབ་བརྟེན་དེ།
 བྲང་ལ་བོར་བའི་ཉ་ལྷ་བྱང་།
 བདག་གི་སེམས་ནི་ཡོངས་སུ་གཡོ།

दुर्निग्रहस्स लघुनो, यत्थकामनिपातिनो ।
चित्तस्स दमथो साधु, चित्तं दन्तं सुखावहं ॥३॥

भावस्ती

कोई

दुर्निग्रहस्य लघुनो यत्र-काम-निपातिनः ।
चित्तस्य दमनं साधु, चित्तं दान्तं सुखावहम् ॥

अ०३० अ०३०३० ।

चत्तुद्वारं चत्तुद्वारं चत्तुद्वारं चत्तुद्वारं । १

चत्तुद्वारं चत्तुद्वारं चत्तुद्वारं चत्तुद्वारं । १

चत्तुद्वारं चत्तुद्वारं चत्तुद्वारं चत्तुद्वारं । १

चत्तुद्वारं चत्तुद्वारं चत्तुद्वारं चत्तुद्वारं । १

(जो) कठिनाई से निग्रह योग्य; शीघ्रगामी; जहाँ चाहता है वहाँ चला जानेवाला है; (ऐसे) चित्त का दमन करना उत्तम है; दमन किया गया चित्त सुखप्रद होता है ।

The mind is hard to check, swiftly it flits wherever it wishes, To control the mind is good, for a controlled mind is conducive to happiness.

P 121 (XXXI, 1)

P 19 V 34

चत्तुद्वारं चत्तुद्वारं चत्तुद्वारं चत्तुद्वारं । १

चत्तुद्वारं चत्तुद्वारं चत्तुद्वारं चत्तुद्वारं । १

चत्तुद्वारं चत्तुद्वारं चत्तुद्वारं चत्तुद्वारं । १

चत्तुद्वारं चत्तुद्वारं चत्तुद्वारं चत्तुद्वारं । १

सुदुर्दसं सुनिपुणं, यत्थकामनिपातिनं ।
चित्तं रक्खेथ मेघावी, चित्तं गुत्तं सुखावहं ॥४१॥

आवर्त्ती

कोई उत्कण्ठित मित्र

सुदुर्दशं सुनिपुणं यत्र कामनिपाति ।
चित्तं रक्खेत् मेघावी, चित्तं गुत्तं सुखावहम् ॥

सुदुर्दसं सुनिपुणं यत्र कामनिपाति १

चित्तं रक्खेत् मेघावी, चित्तं गुत्तं सुखावहम् १

सुदुर्दसं सुनिपुणं यत्र कामनिपाति १

चित्तं रक्खेत् मेघावी, चित्तं गुत्तं सुखावहम् १

कठिनाई से जानने योग्य; अत्यन्त चालाक, जहाँ चाहे वहाँ से जानेवाले
चित्त की; बुद्धिमान् रक्षा करे; सुरक्षित चित्त सुखप्रद होता है ।

The mind is very hard to perceive, extremely subtle, flitting
wherever it wishes. Let the wise man guard it, for a guarded
mind is conducive to happiness.

अनवद्वितचित्तस्स, सद्धम्मं अविजानतो ।
परिप्लवपसादस्स, पञ्चा न परिपूरति ॥६॥

आवस्ती

चित्तहृत्य (धेर)

अनवस्थित-चित्तस्य सद्धम्मं अविजाततः ।
परिप्लवप्रसादस्य प्रज्ञा न परिपूर्यते ॥

सोमसंवेत्तं सत्तुं सत्तुं सत्तुं सत्तुं ।
सत्तुं सत्तुं सत्तुं सत्तुं सत्तुं ।
सत्तुं सत्तुं सत्तुं सत्तुं सत्तुं ।
सत्तुं सत्तुं सत्तुं सत्तुं सत्तुं ।

जिसका चित्त अवस्थित नहीं, जो सच्चे धर्म को नहीं जानता, जिसका
(चित्त) प्रसन्नताहीन है, उसे प्रज्ञा (परम ज्ञान) नहीं मिल सकता ।

He whose mind is not steadfast, who knows not the Noble Doctrine, and whose faith wavers, will never develop perfect wisdom.

कुम्भोपमं कायमिमं विदित्वा, नगरूपमं चित्तमिदं ठपेत्वा ।
योधेथ मारं पञ्चायुधेन, जितं च रक्खे अनिवेसतो सिया ॥८॥

आवस्तो

पाँच सौ विषयक मिश्र

कुम्भोपमं कायमिमं विदित्वा नगरोपमं चित्तमिदं स्थापयित्वा ।
युद्धेत् मारं प्रज्ञायुधेन जितं च रक्षेत् अनिवेशनः स्यात् ॥

उसंदिं सुसं वंदिं वरं दिं सुसं मीदं । ।
सोमसंदिं सुदं हिंदिं वरं वरं सुसं वरं । ।
मेसं वरं सख्खं सुसं वरं वरं सुसं वरं सुसं । ।
वरं वरं वरं वरं वरं वरं वरं वरं । ।

इस शरीर को घड़े के समान (भंगुर) जान, इस चित्त को गढ़ (=नगर)
के समान कायम कर, प्रज्ञारूपी हथियार से मार से युद्ध करे। जीतने के बाद
(अपनी) रक्षा करें, (तथा) आसक्ति रहित होवे।

Realising that this body is (as fragile) as a jar and establi-
shing this mind (as firm) as a (fortified) city, he should attack
Mara with the weapon of wisdom. He should guard his conquest.
and be without attachment.

P 126 (XXXI, 36)

P 22 V 40

उसंदिं सुसं वंदिं वरं दिं सुसं मीदं । ।
सुदं हिंदिं वरं वरं सोमसं सुसं वरं सुसं वरं । ।
मेसं वरं सख्खं सुसं वरं वरं सुसं वरं सुसं । ।
वरं वरं वरं वरं वरं वरं वरं वरं । ।

अचिरं वतयं कायो, पठवि अधिसेस्सति ।
 छुद्धो अपेतविज्जाणो, निरत्थं व कलिङ्गरं ॥६॥

आवस्ती

पूतिगत तिस्स (धेर)

अचिरं वतायं कायः पृथिवीं अधिशेष्यते ।
 क्षद्रोऽपेतविज्ञानो निरर्थं इव कलिङ्गरम् ॥

མཉན་ཡོད་དུ་སྒྲར་གྱུ་ཡ་ལའོ།

ཀུ་མ་རིང་བོ་མི་བློགས་པར། །

ལུས་འདི་ནམ་ཤེས་བྱུང་གུར་དེ། །

ཡན་ལག་ལུས་ནས་བོང་བ་བཞིན། །

ས་ཡི་མེད་དུ་འཇོག་པར་འགྱུར། །

अहो ! यह तुच्छ शरीर शीघ्र ही चेतनारहित हो निरर्थक काठ की भाँति
 पृथिवी पर पड़ रहेगा ।

Alas ! before long this body will lie upon the earth, cast
 aside, devoid of consciousness, like a useless log.

P 6 (I, 34)

P 23 V 41

ཀུ་མ་ལུས་འདི་མི་བློགས་པར། །

གཏོང་ཞིང་ནམ་ཤེས་དང་བྱུང་ནས། །

དུར་ཁྲོད་བོང་བའི་མགལ་དུས་མྱར། །

ས་ཡི་མེད་དུ་འགྱུར་པར་འགྱུར། །

दिसो दिसं यं तं कयिरा, वेरी वा पुन वेरिनं ।

मिच्छापणिहितं चित्तं, पापियो नं ततो करे ॥१॥

कोसलं देश

नन्द (गोप)

द्वद् द्विषं कुर्यात् वैरी वा पुनः वैरिणम् ।

मिथ्याप्रणिहितं चित्तं पापीयांसं एनं ततः कुर्यात् ॥

गो.स.अ.सु.ग.स.ह.द.ग.अ.व.अ.॥

अ.ग.स.व.स.अ.ग.स.स.स.अ.द.क.॥ ।

द.ग.अ.स.द.ग.अ.उ.स.व. । ।

दे.अ.स.के.स.के.उ.स.व.द.ग. । ।

अ.ग.व.स.अ.स.व.स.स.ग.उ.दे. । ।

जितनी (हानि) शत्रु शत्रु की ओर वैरी वैरी की करता है, झूठे (मार्य पर) लगा चित्त उससे अधिक बुराई करता है ।

Whatever (harm) a foe may do a foe, or a hater to a hater, an ill-directed mind can do us still greater harm.

P 122 (XXXI, 10)

P 23 V 42

अ.ग.व.स.अ.ग.स.स.स.अ.द.क.॥ ।

द.ग.अ.स.द.ग.अ.उ.स.व. । ।

दे.अ.स.के.स.के.उ.स.व.द.ग. । ।

अ.ग.व.स.अ.स.व.स.स.ग.उ.दे. । ।

न तं माता पिता कयिरा, अज्जे वा पि च आतका ।
सम्मापणिहितं चित्तं, सेय्यसो नं ततो करे ॥११॥

कोसल देश

सोरथ्य (थेर)

न तत् मातापितरौ कुर्यातां अन्ये चापि च ज्ञातिकाः ।
सम्यक् प्रणिहितं चित्तं श्रेयांसं एवं ततः कुर्यात् ॥

मं दं वं यै स मं पु स यै दं । १

ते दु म्म ज्ज वं त्रि स मं पु स वं । १

दे य स क्के स क्के दं ये म्म स वं दं । १

यं दं वं दं स वं वि सै म्म स त्रि स पु दं । १

सै म्म स त्रि स क्के दं वं दे ।

ये दु म्म पु स वं ॥

जितनी (भलाई) न माता-पिता कर सकते हैं, न दूसरे भाई-बन्धु, उससे
(अधिक) भलाई ठीक (मार्ग पर) लगा चित्त करता है :

A well-directed mind will do us far greater service than
mother, father or any relative could do.

४—पुष्पवग्गो

को इमं पठवि विजेस्सति,
यमलोकं च इमं सदेवकं ।
को धम्मपदं सुदेसितं,
कुसलो पुष्पमिव पचेस्सति ॥१॥

आवस्ती

वाच सौ मिच्छु

क इमां पृथिवीं विजेष्यते यमलोकं च इदं सदेवकम् ।
को धर्मपदं सुदेशितं कुशलः पुष्पमिव प्रचेष्यति ॥

अ३३ अ५५

स० अ३३ अ५५ अ३३ अ५५ अ३३ अ५५ ।
अ३३ अ५५ अ३३ अ५५ अ३३ अ५५ ।
अ३३ अ५५ अ३३ अ५५ अ३३ अ५५ ।
अ३३ अ५५ अ३३ अ५५ अ३३ अ५५ ।

देवताओं सहित उस यमनोक और इस पृथिवी को कौन विजय करेगा;
अच्छी तरह से उपदिष्ट धर्म के पदों को कौन चतुर (पुरुष) पुष्प की भाँति
चयन करेगा ।

Who will conquer this earth, and the realm of yama (Lord
of Death), and the gods ? Who will investigate the well-taught
path of virtue even as an expert (garland-maker) would pluck
flowers ?

1 (44)

P 25 V 44

अ३३ अ५५ अ३३ अ५५ अ३३ अ५५ ।
अ३३ अ५५ अ३३ अ५५ अ३३ अ५५ ।
अ३३ अ५५ अ३३ अ५५ अ३३ अ५५ ।
अ३३ अ५५ अ३३ अ५५ अ३३ अ५५ ।

सेखो पठान्वि विजेस्सति,
यमलोकं च इमं सदेवकं ।
सेखो घम्मपदं सुदेसितं,
कूसलो पुप्फमिव पचेस्सति ॥२॥

शैशः पृथिवीं विजेष्यते यमलोकं च इमं सदेवकम् ।
शैशो धर्मपदं सूदेशितं कुशलः पुष्पमिव प्रचेक्ष्यति ॥

ས་འདི་གཤིན་ཆེན་འཛིན་ཏེན་དང་།
 ལྷུང་བཅས་སྟོབ་མས་ཀྱང་བར་འདོད།
 ལེགས་གསུང་དག་པའི་ཆོས་ཀྱི་ཆོག
 མེད་ག་བཞེན་དུ་སྟོབ་མས་འཆོལ།

शैश देवताओं सहित इस यमलोक और पृथिवी को विजय करेगा। चतुर शैश सुन्दर प्रकार से उपदिष्ट धर्म के पदों को पुष्प की भाँति चयन करेगा।

A disciple will conquer this earth, and the realm of yama, and the gods. A disciple will investigate the well-taught path of virtue even as an expert (garland-maker) would pluck flowers.

2 (45)

P 25 V 45

ལྷ་པོ་འཕགས་པ་ཤིན་ཏུ་འཇིག་རྟེན་འདི་ལོ།
 ས་སྤྱང་ལས་སྐལ་སྤྱོད་པ་ཡིན།
 མེ་དྲོག་ལྷ་ཕྱར་རབ་འདོད་པ་ལོ།
 ཆོས་བཞིན་ལེགས་པར་སྤྱོད་མཁས་དེ།

फेणूपमं कायमिमं विदित्वा,
 मरीचिघम्मं अभिसम्बुधानो ।
 छेत्त्वान मारस्स पपुप्फकानि,
 अदस्सनं मच्चुराजस्स गच्छे ॥३॥

भावस्ती

मरीचि (कम्मट्टानिक थेर)

फेणोपमं कायमिमं विदित्वा
 मरीचिघम्मं अभिसम्बुधानः ।
 छित्त्वा मारस्य प्रपुष्पकाणि
 अदर्शनं मृत्पुराजस्य गच्छेत् ॥

सुखं भवेत्तु भवत्तु सुखं भवेत्तु सुखं भवेत्तु ।
 क्लेशं क्लेशं क्लेशं क्लेशं क्लेशं क्लेशं क्लेशं क्लेशं ।
 वदन्ति मे भवेत्तु भवेत्तु भवेत्तु भवेत्तु भवेत्तु ।
 भवेत्तु भवेत्तु भवेत्तु भवेत्तु भवेत्तु भवेत्तु भवेत्तु ।

इस काया को फेन के समान जान, या (मर-) मरीचिका के समान मान; फन्दे को तोड़कर यमराज को फिर न देखने वाले बनो ।

Knowing that this body is like foam, and comprehending its miragelike nature, one should destroy the flower-shafts of sensual passion (Mara) and pass beyond the sight of the king of death.

1

P 26 V 46

सुखं भवेत्तु भवत्तु सुखं भवेत्तु सुखं भवेत्तु ।
 क्लेशं क्लेशं क्लेशं क्लेशं क्लेशं क्लेशं क्लेशं क्लेशं ।
 वदन्ति मे भवेत्तु भवेत्तु भवेत्तु भवेत्तु भवेत्तु ।
 भवेत्तु भवेत्तु भवेत्तु भवेत्तु भवेत्तु भवेत्तु भवेत्तु ।

पुष्पानि हेव पचिनन्तं, व्यासक्तमनसं नरं ।
सुप्तं ग्रामं महोवो व, मच्चु आदाय गच्छति ॥४॥

श्रावस्ती

विदूढम्

पुष्पाणि ह्येव प्रचिन्वन्तं व्यासक्तमनसं नरम् ।
सुप्तं ग्रामं महोव इव मृत्युरादाय गच्छति ॥

འཕགས་སྐྱེས་པོ་ལོ།

མེ་དྲོག་ཅས་ཞིག་བདུ་བ་ལ། ।
རྣམ་བར་ཆགས་པའི་ཡིད་ལྷན་སྒྲི། ।
ཡུ་འདྲ་ཆེན་པོས་གཞིད་ཡོག་པའི། ।
གྲོང་བཞིན་འཆི་བས་འཁྲུར་དེ་འགྲོ། ॥

(राग आदि के) फूलों के चुननेवाले आसक्तियुक्त मनुष्य को मृत्यु
(वैसे ही) पकड़ ले जाती है, जैसे सोये गाँव को बड़ी बाढ़ ।

As a flood carries off a sleeping village, so death carries off a man who gathers flowers (of sensual pleasures) and whose mind is distracted.

13

1 26 V 47

མི་ཡི་ཡིད་ལ་རྣམ་ཆགས་དང་། ।
མེ་དྲོག་བཞིན་དུ་རབ་བསགས་པ། ।
འཆི་བདག་གིས་ནི་གྲོང་ས་ནས་འགྲོ། ।
ཉལ་གྲོང་ཆུ་བོས་བདས་བ་བཞིན། ।

पुष्पानि हेव पचिनन्तं, व्यासत्तमनसं नरं ।
अतित्तञ्जेव कामेसु, अन्तको कुरुते वसं ॥५॥

भावस्ती

पतिपूजिका

पुष्पाणि ह्येव प्रचिन्वन्तं व्य।सक्तमनसं नरम् ।
अतृप्तं एव कामेषु अन्तकः कुरुते वशम् ॥

མེ་དོག་ཙམ་ཞིག་བདུ་བ་ལ། །
 ཉམ་པར་རྒྱལ་ས་པའི་ཡིད་ལྟར་མི། །
 འདོད་བ་མ་ཚོམ་ཉིད་དུ་ནི། །
 འཆི་བས་རབང་དུ་ཕྱེད་པར་འགྱུར། །

(राग आदि) फूलों को चुनते आसक्तियुक्त पुरुष को, (जब कि अभी उसने) कामों में तृप्ति नहीं प्राप्त की, (तभी) यम (अपने) वश में कर लेता है।

Yama (the Lord of Death) brings under his sway those who gather flowers (of sensual pleasures) with minds distracted, and who are insatiate in desires.

14 (48)

P 27 V 48

མི་ཡི་ཡིད་ལ་རྣམ་ཆགས་དང་། །
 མེ་དྲག་བཞེན་དུ་རབ་བསགས་བ། །
 འདྲོད་པ་རྣམས་ཀྱིས་མི་ངོསས་ཤིང་། །
 འཆི་བདག་གིས་ནི་དབང་དུ་བྱེད། །

यथा पि भमरो पुष्पं, वर्णगन्धस्यहेठयं ।
पलेति रसमादाय, एवं ग्रामे मुनी चरे ॥६॥

भावस्ती

(कंजूस) कोसिय सेठ

यथापि भ्रमरः पुष्पं वर्णगन्धं अघ्नन् ।
पलायते रसमादाय एवं ग्रामे मुनिश्चरेत् ॥

མཉམ་པོད་དེ།

ཇི་ལྟར་བྱང་བ་མེད་ལ་གྱི། ।
ཁ་དོག་རྩི་ལ་མི་གཞོད་བར། ।
སྤང་ཅི་སྤང་ས་དེ་འབྲེལ་བྱེད་པ། ।
དེ་བཞིན་ཐུབ་པ་གྲོང་དུ་རྒྱ། ।

जिस प्रकार भ्रमर फूल के वर्ण और गन्ध को बिना हानि पहुँचाए, रस को लेकर चल देता है, वैसे ही गाँव में मुनि विचरण करे ।

Just as a bee collects honey and departs without injuring the scent or colour of the flower, so should the sage wander in the village.

P 59 (XVIII. 8)

P 27 V 49

ཇི་ལྟར་བྱང་བ་མེད་ལ་གྱི། ।
ཁ་དོག་རྩི་ལ་མི་གཞོད་བར། ।
ཁྱེ་བ་གཞིབས་ནས་འབྲེལ་བ་རྩར། ।
དེ་བཞིན་ཐུབ་པ་གྲོང་དུ་རྒྱ། ।

न परेषां विलोमानि, न परेषां कृताकृतं ।
अत्तनो व अवेक्खेय्य, कृतानि अकृतानि च ॥७॥

आवस्ती

पाठिक (आजीवक साधु)

न परेषां विलोमानि न परेषां कृताकृतम् ।
आत्मन् एव अवेक्षेत कृतानि अकृतानि च ॥

२८-३९-॥ ७ ॥
३०-३१-॥ ८ ॥
३२-३३-॥ ९ ॥
३४-३५-॥ १० ॥

न दूसरों के विरोधी (काम) करें, न दूसरों के कृत अकृत के खोज में रहे, (आदमी को चाहिए कि वह) अपने ही कृत (= किये) और अकृत (= न किये) की (खोज करे) ।

He should not look to the faults of others, the things done or left undone by them, but only to his own misdeeds and negligences.

P 59 (XVIII, 9)

P 28 V 50

३६-३७-॥ ११ ॥
३८-३९-॥ १२ ॥
४०-४१-॥ १३ ॥
४२-४३-॥ १४ ॥

यथा पि रुचिरं पुष्पं, वर्णवन्तं अगन्धकं ।

एवं सुभासिता वाचा, अफला होति अकुर्वतो ॥८॥

आवस्ती

(छत्रपाणि) उपासक

यथापि रुचिरं पुष्पं वर्णवद् अगन्धकम् ।

एवं सुभाषिता वाक् अफला भवति अकुर्वतः ॥

མཉན་ཡོད་དུ་དག་བསྟན་པ་ལོ།

རྩི་ལྟར་རྩི་ཞིམ་མེད་པ་ཡི། ।

མེ་དོག་མདངས་ལྡན་མཛེས་པ་བཞིན། ।

རང་ཉིད་དེ་ལྟར་མེ་བྱེད་པ་ལོ། ।

ལགས་པར་སྦྱས་པ་འབྲས་བྱ་མེད། ।

जैसे रुचिर और वर्णयुक्त (किन्तु) गन्धरहित फूल है, वैसे ही (कथानुसार) आचरण न करनेवाले की सुभाषित वाणी भी निष्फल है ।

As a beautiful and lovely flower which lacks scent is fruitless, so are well-spoken words that are not acted upon.

P 59 , XVIII, 6)

P 28 V 51

རྩི་ལྟར་མེ་དོག་ཡོད་པར་བ། ।

ཁ་དོག་བཟང་ཡང་རྩི་མེད་ལྟར། ।

དེ་བཞིན་ལགས་པར་གསུངས་པའི་ཆོག། ।

འབྲས་བྱ་མེད་པར་མ་བྱེད་ཆོག། ।

यथा पि रुचिरं पुष्पं, वर्णवन्तं समन्धकं ।
एवं सुभाषिता वाचा, सफला होति कुर्वतो ॥६॥

यथापि रुचिरं पुष्पं वर्णवत् समन्धकम् ।
एवं सुभाषितां वाक् सफला भवति कुर्वतः ॥

ई०बु०-ई०बै०-बु०-व०-यौ ।
मे०दे०-मे०दे०-बु०-मे०दे०-व०-वै० ।
मे०दे०-दे०-बु०-मे०दे०-व०-यौ ।
मे०दे०-मे०दे०-बु०-मे०दे०-व०-वै० ।

जैसे रुचिर वर्णयुक्त और गन्धसहित फूल होता है वैसे ही (वचन के अनुसार काम) करनेवाले की सुभाषित वाणी सफल होती है ।

As a beautiful and lovely flower full of scent is fruitful,
so are well-spoken words that are acted upon.

P 59 (XVIII, 7)

P 29 V 52

ई०बु०-मे०दे०-यौ०-दे०-व० ।
मे०दे०-मे०दे०-बु०-मे०दे०-व० ।
दे०-वै०-मे०दे०-मे०दे०-व०-वै०-वै० ।
मे०दे०-मे०दे०-व०-मे०दे०-व०-वै० ।

यथा पि पुष्करासिम्हा, कयिरा मालागुणे बहू ।

एवं जातेन मत्त्वेन, कत्तब्बं कुसलं बहु ॥१०॥

आवस्ती (पूर्वाराम)*

विशाखा (उपासिका)

यथापि पुष्पराशेः कुर्यात् मालागुणान् बहून् ।

एवं जातेन मत्त्वेन कर्तव्यं कुशलं बहु ॥

མཉན་ཡོད་དུ་ས་ག་ས་ཡོད།

རི་ལྷ་ར་མེ་དོག་དུ་ས་ཡས། ।

མེ་དོག་སྤང་བ་སང་བྱེད་ལྷ་ར། ।

སྤྱེས་ནས་འཆི་བར་ངེས་པ་རྣམས། ।

དགེ་བ་སང་དུ་བྱེད་དགོས་སོ། ।

जित प्रकार पुष्पराशि से बहुत सी मालायें बनाये; उसी प्रकार उत्पन्न हुए प्राणी को चाहिए कि वह बहुत से भले (कर्मों को) करे ।

As many kinds of garlands can be made from a heap of flowers, so many good deeds should be performed by one born a mortal.

P 59 (XVIII, 11)

P 29 V 53

རི་ལྷ་ར་མེ་དོག་སྤང་བ་ཡས། ।

མེ་དོག་སྤང་བརྒྱད་སང་བྱེད་ལྷ་ར། ।

དེ་བཞིན་མིར་ནི་སྤྱེས་པ་ཡིས། ।

དགེ་བ་ཡང་ཆེན་རྣམས་ཀྱང་བྱ། ।

* བྱུ་རྒྱུ་རྒྱུ་ (ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་ཀུན་དགར་རྒྱ་བ་) ནི་ རྒྱལ་པོ་གསལ་
རྒྱལ་ཀྱི་ནང་སྤོན་རི་དྲགས་འཛིན་གྱི་བྱ་རྒྱུང་ཤོས་ཀྱི་རྒྱུང་མའི་བསྐྱེན་...
བཀྱར་ལ་མཉེས་དེ་ རི་དྲགས་འཛིན་གྱིས་མའི་དྲན་གསོ་འི་ཕྱིར་.....
བརྒྱགས་ཤིང་ འདིར་སྤོན་པས་ལོ་ལྔར་དབྱར་གནས་མཛད་དོ།

न पुष्पगन्धो पटिवातमेति,
न चन्दनं तगरमल्लिका वा ।

सतं च गन्धो पटिवातमेति,
सब्बा दिसा सत्पुरुषो पवायति ॥११॥

श्रावस्ती

आनन्द (थेर)

न पुष्पगन्ध प्रतिवातमेति
न चन्दनं तगर-मल्लिके वा ।
सतां च गन्धः प्रतिवातमेति
सर्वा दिशः सत्पुरुषः प्रवाति ॥

མཉམ་ཡོད་དུ་ཀུན་དགའ་བོ་ཡང་།

མེ་དྲག་ཅན་དན་རྒྱ་སྤྱོད་མཁའ་ཀླུ་།

དྲི་ཞིས་རྩི་ཕྱོགས་ལྷོག་སྤེལ་གྱོ་མ་ཡིན།

དམ་བཤི་དྲི་རྩི་རྩི་ཕྱོགས་ལྷོག་སྤེལ་གྱོ་།

སྤྱོད་སྤེལ་དམ་བཤི་ཡུལ་ཀུན་ཁབ་བཤིན།

फूल की सुगन्ध हवा से उलटी ओर नहीं जाती, न चन्दन तगर या चमेली
(की गन्ध ही वैसा करती है); किन्तु सज्जनों की सुगन्ध हवा से उलटी ओर
बह जाती है, सत्पुरुष सभी दिशाओं में (सुगन्ध) बहाते हैं।

The perfume of flowers blows not against the wind, nor
does the fragrance of sandalwood, tagara, and jasmine. But
the fragrance of the virtuous, travels even against the wind.
The virtuous man pervades every direction.

P 26 (VI 14)

P 30 V 54

མེ་དྲག་དྲི་རྩི་རྩི་ཕྱོགས་ལྷོག་སྤེལ་གྱོ་།

ཅན་དན་རྒྱ་སྤྱོད་མཁའ་ཀླུ་མིན།

དམ་བཤི་དྲི་རྩི་རྩི་ཕྱོགས་ལྷོག་སྤེལ་གྱོ་།

སྤྱོད་སྤེལ་དམ་བཤི་ཡུལ་ཀུན་ཁབ་མིན།

चन्दनं तगरं वा पि, उत्पलं अथ वस्त्रिकी ।
एतेषां गन्धजातानां, शीलगन्धो अनुत्तरो ॥१२॥

चन्दनं तगरं वापि उत्पलं अथ वाविकी ।
एतेषां गन्धजातानां शीलगन्धोऽनुत्तरः ॥

འདྲ་མཐོང་ཆེན་པོ་འདྲ་སྤང་ལའོ།

ཅན་དན་དང་ནི་རྒྱ་སྤུང་སམ། ।

ཡུང་བལ་དབྱར་གྱི་མེ་དྲག་སྟེ། ।

དྲི་ཞིས་འབྱུང་བ་དེ་རྣམས་ལས། ।

ཅུང་ཁྲིམས་དྲི་ནི་ཐོན་མེད། ।

चन्दन या तगर, कमल या जुही, इन सभी (की) सुगन्धों से सदाचार की
सुगन्ध उत्तम है ।

The fragrance of virtue is unsurpassed, even among the
perfumes of sandalwood, tagara, lotus or jasmine.

P 26 (VI 15)

P 30 V 55

རྒྱ་སྤུང་དང་ནི་ཅན་དན་དང་། ।

ཡུང་བལ་དང་མ་ཡི་ཀ། ।

སྤུང་གྱི་དྲིགས་ནི་འདྲི་དག་བས། ।

ཅུང་ཁྲིམས་དྲི་བསྤང་ཕུལ་དུ་ཕྱིན། ।

अप्यमत्तो अयं गन्धो, द्वायं तगरचन्दनं ।
यो च सीलवतं गन्धो, वाति देवेसु उत्तमो ॥१३॥

राजगृह (वेणुवन)

महाकस्सप

अल्पमात्रोऽयं गन्धो योऽयं तगरचन्दनी ।
यः शीलवतां गन्धो वाति देवेषु उत्तमः ॥

གྱུ་ཕྱོམ་རང་ནི་ཅན་དན་གྱི།
 རྒྱ་ཁྱིམ་གང་ཡིན་ཅུང་ཟད་ཅམ།
 ཅུམ་བྱིམ་ལ་ལུན་བའི་རྒྱ་མཆོག་གང་།
 མཐོ་རིམ་རྣམས་སུ་ལྷང་བར་བྱེད།

तगर और चन्दन की जो यह गन्ध फैलती है, वह अल्प मात्र है, और जो यह सदाचारियों की गन्ध है, (वह) उत्तम (गन्ध) देवताओं में फैलती है ।

Of little account is the fragrance of tagara or sandal.
Excellent is the fragrance of the virtuous which blows even
amongst the gods.

P 26 (VI 16)

P 31 V 56

ལྷ་ཕྱོག་ཙན་དན་གང་ཡིན་པའི། །
 གྲི་བསྐྱུང་འདི་ནི་ཆུང་ཆུང་ན། །
 འཇམ་ཁྲིམས་ལྷན་པའི་གྲི་བསྐྱུང་གང་། །
 དེས་ནི་དདེ་དང་མགོ་རིས་ཁྲུག། །

तेसं सम्पन्नसीलानं, अप्पमादविहारिनं ।

सम्मदञ्चा विमुत्तानं, मारो मगं न विन्दति ॥१४॥

तेषां सम्पन्नशीलानां अप्रमाद-विहारिणाम् ।

सम्यक्-ज्ञा-विमुक्तानां मारो मार्गं न विदन्ति ॥

देवसदेकधनुवयदवदवायदे ।

कुवमिसससुवसुसकेवसवद । ।

ववयदेववववववववववव । ।

वववववववववववववववव । ।

वववववववववववववववव । ।

(जो) वे सदाचारी निरालस हो बिरहूनेवाले; यथार्थ ज्ञान द्वारा मुक्त (हो गये हैं); (उनके) मार्ग को मार नहीं पकड़ सकता ।

Mara finds not the path of those who are full of virtue, heedful in living and freed by true knowledge.

P 26 (VI, 16)

P 31 V 57

देवसववयदेवववववववववव । ।

कुवमिससवववववववववववव । ।

वववववववववववववववववव । ।

वववववववववववववववववव । ।

यथा सङ्कारधानस्मि, उज्जितस्मि महापथे ।
पदुमं तत्थ जायेथ सुचिगन्धं मनोरमं ॥१५॥

जैतवन

गरहादिन्न

यथा संकारधान उज्जिते महापथे ।
पद्म तत्र जायेत सुचिगन्धं मनोरमम् ॥

ལྷུང་ཁྱེད་ཚལ་དུ་འོ།

ཇི་ལྟར་ཕྱག་དང་ཕྱང་པོ་དག ༥

ལས་པོ་ཆེ་ལ་བོར་བྱས་པ། ༥

དེ་ན་གཙང་མའི་དྲི་ལྟན་བའི། ༥

ཡིད་འོང་བསྐྱེ་བར་འགྱུར། ༥

जैसे महापथ पर फेंके कूड़े के ढेर पर मनोरम; सुचिगन्ध; गुलाब (=पद्म)
(उत्पन्न) होवे ।

As upon a heap of rubbish thrown on the highway a
sweet-smelling and charming lotus may grow.

P 59 (XVIII, 10)

P 32 V 59

ཇི་ལྟར་ཕྱག་བདར་ཕྱང་པོ་དག ༥

མི་གཙང་ཆུ་འདི་མེད་འདི་ལས། ༥

བསྐྱེ་ཁ་ཁྱེ་གཙང་བ་དང་། ༥

དྲི་ཁྱིམ་ཡིད་འོང་རབ་སྐྱེས་ལྟར། ༥

एवं सङ्कारभूतेषु, अन्धभूते पृथुज्जने ।
अतिरोचति पञ्चाय, सम्मासम्बुद्धसावको ॥१६॥

अेतवच

गरहादित्त

एवं संकारभूते अन्धभूते पृथग्जने ।
अतिरोचते प्रज्ञया सम्यक्-संबुद्ध-श्रावकः ॥

देवत्थिक्खुण्णसंवरं सुत्तं ।
संश्लेषं पंचसंवरं पंचसंवरं ।
संश्लेषं पंचसंवरं सुत्तं ।
संश्लेषं पंचसंवरं सुत्तं ॥

संश्लेषं पंचसंवरं सुत्तं ।
संश्लेषं पंचसंवरं सुत्तं ॥

इसी प्रकार कूड़े के समान अन्धे अज्ञजनों (पृथग्-जनों) में सम्यक्-सम्बुद्ध (= यथार्थ ज्ञानी) का अनुगामी (अपनी) प्रज्ञा से प्रकाशमान होता है ।

Even so, amongst the rubbish of blinded mortals, a disciple of the Completely Enlightened One is most beautiful in his wisdom.

P 59 (XVIII 10)

P 32 V 59

देवत्थिक्खुण्णसंवरं सुत्तं ।
संश्लेषं पंचसंवरं पंचसंवरं ।
संश्लेषं पंचसंवरं सुत्तं ।
संश्लेषं पंचसंवरं सुत्तं ॥

५—बालवगो

दीघा जाग्रतो रत्ति, दीघं सन्तस्स योजनं ।

दीघो बालानां संसारो, सद्धम्मं अविजानतं ॥१॥

श्रावस्ती (जेतवन)

दरिद्र सेवक

दीर्घा जाग्रतो रात्रिः दीर्घं श्रान्तस्य योजनम् ।

दीर्घो बालानां संसारः सद्धर्मं अविजानताम् ॥

कुम्भेदं कथं दुदुग्धं पौलस्यं पण्डितम् ।

मार्जितं मेदं पण्डितं मन्त्रं मेदं । ।

दधं पण्डितं पण्डितं पण्डितं पण्डितं । ।

दधं पण्डितं पण्डितं पण्डितं पण्डितं । ।

दधं पण्डितं पण्डितं पण्डितं पण्डितं । ।

जागते को रात लम्बी होती है; यके के लिए योजन लम्बा होता है;
सच्चे धर्म को न जानने वाले मूर्खों के लिए संसार (=बावागमन) लम्बा
होता है ।

Long is the night for the wakeful, long is the way for him
who is weary, long is Samsara (the cycle of sorrowful rebirths)
to the foolish who know not the Holy Dharma.

P 3 (I, 17)

P 33 V 60

मेदं मेदं पण्डितं मन्त्रं मेदं । ।

दधं पण्डितं पण्डितं पण्डितं पण्डितं । ।

दधं पण्डितं पण्डितं पण्डितं पण्डितं । ।

दधं पण्डितं पण्डितं पण्डितं पण्डितं । ।

चरञ्चे नाधिगच्छेय्य, सेय्यं सदिसमत्तनो ।
एकचरियं दळ्हं कयिरा, नत्थि बाले सहायता ॥२॥

राजगृह

साद्विहारी (= शिष्य)

चरन् चेत् नाधिगच्छेत् श्रेयांसं सदस आत्मनः ।
एकचर्या दृढं कुर्यात् नास्ति बाले सहायता ॥

श्रुय'वो'दी'भव'दु'र'।

अ'श्रो'व'र'द'अ'स'अ'व'द'। ।

र'द'द'अ'श'व'अ'र'द'। ।

उ'स'ग'र'उ'स'ग'र'अ'श'व'र'। ।

श्रु'स'व'अ'स'र'द'अ'र'द'। ।

यदि विचरण करते अपने अनुरूप भलेमानुस को न पाये, तो दृढ़ता के साथ अकेला ही बिबरे, मूढ़ से मित्रता नहीं निभ सकती ।

If a seeker should not find a companion who is his better or equal, he should resolutely pursue a solitary course. There is no fellowship with the foolish.

P 48 (XIV, 15)

P 33 V 61

अ'श'व'र'द'अ'श'व'र'अ'श'व'र'। ।

श्रु'स'व'अ'स'र'द'अ'र'द'। ।

श्रु'स'व'अ'स'र'द'अ'र'द'। ।

अ'श'व'र'द'अ'श'व'र'अ'श'व'र'। ।

पुत्ता मत्थि घनमत्थि, इति बालो विहञ्जति ।
अत्ता हि अत्तनो नत्थि, कुतो पुत्ता कुतो घनं ॥३॥

आवस्ती

आनन्द (सेठ)

पुत्रा मे सन्ति घनं मे ऽस्ति इति बालो विहग्यते ।
आत्मा हि आत्मनो नास्ति कुतः पुत्रः कुतो घनम् ॥

མཉམ་ཡོད་དུ་དགའ་བོ་ལའོ།

བདག་ལ་བྱ་ཡོད་ནང་ཡོད་ཅེས། ।

བྱིས་པ་རྒྱམས་ནི་སེམས་པར་ཉིད། ।

བདག་ཀྱང་བདག་ལ་ཡོད་མིན་ན། ।

བྱ་དང་ནོར་ནི་ག་ལ་ཞིག ། ।

“मेरा पुत्र है”, “घन मेरा है” ऐसा (करके) अज्ञ (नर) उत्पीड़ित होता है, जब आत्मा (= शरीर) ही अपना नहीं, तब कहीं से पुत्र और घन (अपना होगा) ।

The fool is tormented thinking, “These sons belong to me.” “his wealth belongs to me.” He himself does not belong to himself. How then can sons be his ? How can wealth be his ?

P 4 (I, 18)

P 34 V 62

བདག་ལ་བྱ་ཡོད་དེ་བཞིན་དུ། ।

ནོར་ཡོད་ཅེས་བས་བྱིས་པ་བརྒྱག། ।

ཕྱི་རོལ་ནང་ན་བདག་མིན་ན། ।

སྐྱ་ཡིས་བྱ་ཡོད་ཅི་ཞིག་ནོར། ।

यो बालो मञ्जति बाल्यं, पण्डितो वा पि तेन सो ।
बालो च पण्डितमानी, स वे बालो ति वुच्चति ॥४॥

जितवन

गिरहकट (चोर)

यो बालो मन्यते बाल्यं पण्डितश्चापि तेन स ।
बालश्च पण्डितमानी स, वै बाल इत्युच्यते ॥

सुखं पोरं सोमसं पोरं सुखं पोरं । ।
देवं सुखं सोमसं पोरं देवं पोरं । ।
सुखं पोरं सोमसं पोरं देवं पोरं । ।
देवं पोरं सुखं पोरं देवं पोरं । ।

जो (कि वह) अज्ञ होकर (अपनी) अज्ञता को जानता है, इस (अंश) से वह पण्डित (= ज्ञानकर) है । वस्तुतः अज्ञ होकर भी जो पण्डित होने का दम भरता है, वही अज्ञ (= बल) कहा जाता है ।

A fool who thinks that he is a fool, is, for that very reason, a wise man. But the fool who thinks himself wise, is called a fool indeed.

P 85 (XXX, 22)

34 V 63

सुखं पोरं सोमसं सुखं पोरं । ।
देवं पोरं देवं सोमसं पोरं । ।
सुखं पोरं सोमसं सोमसं पोरं । ।
देवं पोरं सुखं पोरं देवं पोरं । ।

यावज्जीवं पि चे बालो, पण्डितं पयिरुपासति ।

न सो धम्मं विजानाति, दब्बो सूपरसं यथा ॥५॥

थावस्ती (जेतवन)

उदायी (घेर)

यावज्जीवमपि चेद बालः पंडितं पर्युपास्ते ।

न स धर्मं विजानाति दर्वी सूपरस यथा ॥

ཐུག་ཐེན་ཚལ་དུ་འཆར་ཀ་ལའོ།

ཇི་སྒྲིང་འཚོ་བའི་བར་དག་དུ། ।

རྒྱན་པོས་མཁས་པ་བསྐྱེན་བྱས་ཀྱང་།

བྱག་པའི་བློ་བ་གཟར་བྱས་བཞིན། ।

ཆོས་ནི་དེ་ཡིས་ཤེས་མི་འགྱུར། ।

चाहे बाल (=जड़, अज्ञ) जीवन भर पंडित की सेवा में रहे, (तो भी) वह धर्म को (वैसे ही) नहीं जान सकता, जैसे कि कलछी (दबली) सूप (दाल आदि) के रस को ।

Though all his life a fool associates with a wise man, he will have no more understanding of the Dharma than a Ladle has of the flavour of soup.

P 84 (XXX, 13)

P 35 V 64

བྱིས་བས་ཇི་སྒྲིང་གསོན་བར་དུ། ।

གལ་དེ་མཁས་པ་བསྐྱེན་བྱས་ཀྱང་། ।

དེ་ཡིས་ཆོས་ཤེས་མི་འགྱུར་དེ། ।

གཟར་བྱས་ཆོད་མའི་རོ་བཞིན་ནོ། ।

ཐུག་ཐེན་ཚལ་དུ་འཆར་ཀ་ལའོ།

मुहुत्तमपि चे विज्झू, पण्डितं पर्युपासति ।
 खिप्पं धम्मं विजानाति, जिह्वा सूपरसं यथा ॥६॥

आवस्ती (जेतवन)

भद्रवर्गीय (भिक्षुलोच)

मुहुत्तमपि चेद्विजः पण्डितं पर्युपास्ते ।
 क्षिप्रं धर्मं विजानाति जिह्वा सूपरसं यथा ॥

सो दं द्वाक् वसं सुदं ठमं विना ।
 समसं वं दवां वं वसुक् पुसं गुदं । ।
 सुवां वरं वं वं वं वं वं वं वं । ।
 कंसं वं सुदं वं वं वं वं वं वं । ।

चाहे विज (पुरुष) एक मुहुत्त ही पण्डित की सेवा में रहे, (तो भी वह)
 शीघ्र ही धर्म को जान सकता है, जैसे कि जिह्वा सूप के रस को ।

Though for a moment only an intelligent person associates
 with the wise, he quickly understands the Dharma as does the
 tongue, the flavour of soup.

P 84 (XXV, 14)

P 35 V 65

सो दं द्वाक् वसं सुदं ठमं विना ।
 समसं वं दवां वं वसुक् पुसं गुदं । ।
 दे वं वं कंसं वं वं वं वं वं वं । ।
 वं वं वं वं वं वं वं वं वं । ।

चरन्ति बाला दुग्धेष्वा, अमितेनेव अत्तना ।
करोन्ता पापकं कम्मं, यं होति कटुकफलं ॥७॥

राजशृङ्ग (वेणुवन)

सुप्पबुद्ध (कोटी)

चरन्ति बाला दुग्धसोऽमितेणैवात्मना ।
कुर्वन्तः पापकं कर्म यद् भवति कटुकफलम् ॥

शुभं वदन्ति मम सुते ।

एतन्ममैव सुते मम सुते ।
एतन्ममैव सुते मम सुते ।
एतन्ममैव सुते मम सुते ।
एतन्ममैव सुते मम सुते ।

पाप कर्म को—जो कि कटु फल देनेवाला होता है—करते दुष्ट बुद्धि अज्ञ
(जन) अपने ही अपने शत्रु बनते हैं ।

The fools of poor intellect act as enemies to themselves,
doing evil deeds whose fruits are bitter.

P 33 (IX, 12)

P 36 V 66

एतन्ममैव सुते मम सुते ।
एतन्ममैव सुते मम सुते ।
एतन्ममैव सुते मम सुते ।
एतन्ममैव सुते मम सुते ।

न तं कर्म कृतं साधु, यं कृत्वा अनुतप्पति ।
यस्स अस्सुमुखो रोदं, विपाकं पटिसेवति ॥८॥

जितवन

कोई कस्सप

न तत् कर्म कृतं साधु यत् कृत्वाऽनुतप्यते ।
यस्याश्रुमुखो रुदन् विपाकं प्रतिसेवते ॥

शुभं पुनः कृतं नु र्देव सुखं चरे ।

न न विना पुनः कृतं नु र्देव सुखं चरे । ।

न न देव पुनः न विना न चरे । ।

न न देव पुनः न विना न चरे । ।

न न देव पुनः न विना न चरे । ।

उस काम का करना ठीक नहीं, जिसे करके (पीछे) अनुताप करना पड़े,
और जिसके फल को अश्रुमुख रोते भोगना पड़े ।

That deed is not well done, which, having been done, one
after-wards repents, and the fruit of which one reaps weeping,
with tearful face.

P 33 (IX, 13)

P 36 V 67

न न विना पुनः कृतं नु र्देव सुखं चरे । ।

न न देव पुनः न विना न चरे । ।

न न देव पुनः न विना न चरे । ।

न न देव पुनः न विना न चरे । ।

तं च कर्म कृतं साधु, यं कृत्वा नानुत्पद्यति ।
यस्य प्रतीतो सुमनो, विपाकं पटिसेवति ॥६॥

राजगृह (वेणुवन)

सुमन (माली)

तच्च कर्म कृतं साधु यत् कृत्वा नानुत्पद्यते ।
यस्य प्रतीतः सुमनो विपाकं प्रतिसेवते ॥

काद्विषादुसकस्येदुद्वेगवद्वि । ।
दसदेद्वेगसदसदुसद्वेगवद्वि । ।
सुद्विद्वेगवद्वेगवद्वेगवद्वि । ।
देद्वेगवद्वेगवद्वेगवद्वेगवद्वि । ।

उसी काम का करना ठीक है, जिसे करके अनुपात करना (= पछताना) ।
न पड़े, और जिसके फल को प्रसन्न मन से भोग करे ।

That deed is well done, which, having been done, one
does not later repent, and the fruit of which one reaps with joy
and pleasure.

P 33 (IX, 14)

P 37 V 68

काद्विषादुसकस्येदुद्वेगवद्वि । ।
दसदेद्वेगसदसदुसद्वेगवद्वि । ।
सुद्विद्वेगवद्वेगवद्वेगवद्वेगवद्वि । ।
देद्वेगवद्वेगवद्वेगवद्वेगवद्वेगवद्वि । ।

मधुवा मञ्जति बालो, याव पापं न पचति ।
यदा च पचति पापं, बालो दुःखं निगच्छति ॥१०॥

जैतवन

उप्पलवणा (धेरी)

मध्वव मन्यते बालो यावात् पाप न पच्यते ।
यदा च पच्यते पापं अथ दुःखं निगच्छति ॥

कुयं पुनं क्वं दुःखं वदंति मरिचं वदंति ।

इति श्रुत्वा श्रुत्वा च श्रुत्वा च ।

पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः ।

मरिचं क्वं श्रुत्वा च श्रुत्वा च ।

देवदेवदेवदेवदेवदेवदेवदेव ।

अज्ञ (जन) जब तक पाप का परिपाक नहीं होता, तब तक उसे मधु के समान जानता है । जब पाप का परिपाक होता है, तो दुखी होता है ।

A fool thinks an evil deed to be as sweet as honey for as long as it does not ripen. But when it does, then comes real sorrow.

P 100 (XXVIII, 18)

P 37 V 69

इति श्रुत्वा श्रुत्वा च श्रुत्वा च ।

देवदेवदेवदेवदेवदेवदेवदेव ।

मरिचं क्वं श्रुत्वा च श्रुत्वा च ।

देवदेवदेवदेवदेवदेवदेवदेव ।

मासे मासे कुसग्गेन, बालो भुञ्जेथ्य भोजनं ।

न सो सङ्खतघम्मानं, कलं अग्घति सोळ्ळिसि ॥११॥

राजगृह (वेणुवन)

जम्बुक (आजीवक साधु)

मासे मासे कुशाग्रेण बालो भुंजीत भोजनम् ।

न स संख्यातघर्माणां कलामर्हति शोडशीम् ॥

देव.सदे.कय.दु.गुण.दु.कु.सु.यदे।

सु.स.दे.व.सु.स.य। । .

गु.अदे.के.स.स.स.स.यद.। ।

के.स.के.स.स.स.स.स.स.गु। ।

सु.दु.ग.क.यद.दे.स.यदे। ।

यदि अज्ञ (पुरुष) कुश की नौक से महीने महीने पर खाना खाये, तो भी धर्म के जानकारों के सोलहवें भाग के भी बराबर (वह तृप्त नहीं हो सकता ।

For months on end a fool may eat his food with a blade of kusa-grass (an ascetic practice), but he is not worth one sixteenth of those who have comprehended the truth.

P 80 (XXIV, 19)

P 38 V 70

सु.स.दे.वे.दे.गु.अदे.के.स। ।

स.स.स.स.स.स.स.स.यदे.स। ।

के.स.के.स.स.स.स.स.स.गु। ।

सु.दु.ग.क.यद.दे.स.यदे। ।

न हि पापं कृतं कम्मं, सज्जु खीरं व मुच्चति ।

डहन्तं बालमन्वेति, भस्मच्छन्नो व पावको ॥१२॥

राजगृह (वेणुवन)

अहिपेत

नहि पापं कृतं कर्म सद्यः क्षीरमिव मुंचति ।

दहन् बालमन्वेति भस्माच्छन्न इव पावकः ॥

स्त्रीणं वरिणसं किं न स वरिण ।

देसं वरादुं स्यादुं न दे ।

स्य वरा वरा वरा वरा वरा वरा ।

स्त्री वरा वरा वरा वरा वरा ।

ताजे दूध की भाँति किया पाप कर्म, तुरन्त विकार नहीं लाता, वह भस्म से ढँकी आग की भाँति दग्ध करता अज्ञान का पोछा करता है ।

An evil deed does not immediately bear fruit, just as fresh milk does not curdle at once. Smouldering, like fire covered with ashes, it follows the fool.

P 34 (IX, 16)

P 38 V 71

देसं वरा स्त्रीणं वरा वरा वरा वरा ।

देसं वरा वरा वरा वरा वरा वरा ।

स्य वरा वरा वरा वरा वरा वरा ।

देसं वरा वरा वरा वरा वरा वरा ।

यावदेव अनत्याय, अत्तं बालस्स जायति ।
हन्ति बालस्स सुक्कंसं, मुद्धमस्स विपातयं ॥१३॥

राजगृह (वेणुवन)

सट्टिकूठ (प्रेत)

यावदेव अनर्थाय ज्ञप्तं बालस्य जायते ।
हन्ति बालस्य शुक्लांशं मूर्धानमस्य विपातयन् ॥

འད་མའི་ཚལ་དུ་ཤི།

ཇི་སྒྲིད་དོན་མིན་ཤེས་པ་ནི། ।

བྱིས་པ་དག་ལ་སྒྲིས་ཀྱི་བར། ।

བྱིས་པའི་དཀར་བོའི་ཆ་འཛོམས་ཞིང་། ।

དེ་ཡི་སྒྲི་བོར་ནས་པར་སྐྱང་། ।

मूढ़ (=बाल) का जितना भी ज्ञान है, (वह उसके) अनर्थ के लिए होता है ।
वह उसकी मूर्धा (=शिर= प्रजा) को गिराकर उसके शुक्ल (धवल = शुद्ध)
अंश का विनाश करता है ।

The knowledge gained by the fool becomes the cause of
his ruin. It destroys his bright lot and cleaves his head.

P 43 (XIII 2)

P 39 V 72

ཇི་སྒྲིད་སྐྱོན་བོ་མཚོན་བྱས་པ། ।

དེ་སྒྲིད་རབ་དུ་བསྐྱུག་པར་འགྱུར། ।

བྱིས་པ་དག་པོའི་ཆ་འཛོམས་ཅིང་། ।

དེ་ཡི་སྒྲི་བོར་ངེས་པར་ནམས། ।

असन्तं भावनमिच्छेय्य, पुरेक्खारं च भिक्खुसु ।

आवासेसु च इस्सरियं, पूजं परकुलेसु च ॥१४॥

चेतवन

सुधर्म (थेर)

असद्भावनमिच्छेत पुरस्कारं च भिक्षुषु ।

आवासेषु चैश्वर्यं पूजा परकुलेषु च ॥

कुलं पुनः कथं नु कसं वदन्त्येव ।

नमो स्तोत्रं नदं नु ग्रायं नोदं । ।

वज्रं वाक्कसं कसं नु ग्रायं नोदं । ।

ह्रीं वाक्कसं नदं नु ग्रायं नोदं । ।

ह्रीं वाक्कसं नदं नु ग्रायं नोदं । ।

अप्रस्तुत वस्तु की चाह करता है, भिक्षुओं में बड़ा बनना (चाहता है),
मठों में स्वामीपन (= ऐश्वर्य) और दूसरे कुलों में पूजा (चाहता है) ।

The fool will desire undue reputation, precedence
amongst monks, authority in the monasteries and honour
among other families.

P 43 (XIII, 3)

P 39 V 73

नमो स्तोत्रं नदं नु ग्रायं नोदं । ।

नमो स्तोत्रं नदं नु ग्रायं नोदं । ।

वज्रं वाक्कसं कसं नु ग्रायं नोदं । ।

ह्रीं वाक्कसं नदं नु ग्रायं नोदं । ।

ममेव कृतमञ्जन्तु, गिहीपञ्चजिता उभो ।
 ममेवातिवसा अस्सु, किञ्चाकिञ्चेसु किस्मिच्च ।
 इति बालस्स सङ्कप्पो, इच्छा मानो च वड्ढत्ति ॥१५॥

ममैव कृतं मन्येतां गृहि-प्रव्रजितावुभौ ।
 ममेवातिवसाः स्यातां कृत्याकृत्येषु केषु चित् ।
 इति बालस्य संकल्प इच्छा मानश्च वढ्ढते ॥

टिप्पणी-
 १. ममेव कृतं मन्येतां गृहि-प्रव्रजितावुभौ ।
 २. ममेवातिवसाः स्यातां कृत्याकृत्येषु केषु चित् ।
 ३. इति बालस्य संकल्प इच्छा मानश्च वढ्ढते ॥

गृहस्थ और संन्यासी दोनों मेरे ही किए को मानें, किसी भी कृत्य अकृत्य में मेरे ही वशवर्ति हों—ऐसा मूढ़ का संकल्प होता है, (जिससे) इच्छा और अभिमान बढ़ते हैं ।

“Let the laymen and the monks both think that this was done by me. In every work, great or small, let them defer to me.” Such is the aspiration of the fool, and thus his desires and pride increase.

P 43 (XIII, 1)

P 40 V 74

ममेव कृतं मन्येतां गृहि-प्रव्रजितावुभौ ।
 ममेवातिवसाः स्यातां कृत्याकृत्येषु केषु चित् ।
 इति बालस्य संकल्प इच्छा मानश्च वढ्ढते ॥

अञ्जा हि लाभोपनिषा, अञ्जा निब्बानगामिनी ।

एवमेतं अभिञ्जाय, भिक्षु बुद्धस्स सावको ।

सत्कारं नाभिनन्देय, विवेकमनुब्रूह्ये ॥ १६ ॥

आवस्ती (जेतवन)

(वनवासी) तस्स (थेर)

अन्या हि लाभोपनिषद् अन्या निवर्णिगामिनी ।

एवमेतद् अभिजाय भिक्षुबुद्धस्य आवकः ।

सत्कारं नाभिनन्देत् विवेकमनुब्रूह्येत् ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

लाभ का रास्ता दूसरा है, और निर्वाण को ले जाने वाला दूसरा— इस प्रकार इसे जानकर बुद्ध का अनुगामी भिक्षु सत्कार का अभिनन्दन न करे, और विवेक (= एकान्तचर्या) को बढ़ावे ।

Verily, the path that leads to worldly gain is one, and the path that leads to Nirvana is quite another. Understanding this, the Bhikhu, the disciple of the Buddha, should not delight in worldly honours but should praise the qualities of solitude and wisdom.

P 43 (XIII, 5)

P 40 V 75

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

६—पण्डितवर्गो

निधीनं व पवत्तारं, यं पस्से वज्जदस्सिनं ।
निग्गय्हवादि मेघावि, तादिसं पण्डितं भजे ।
तादिसं भजमानस्स, सेय्यो होति न पापियो ॥१॥

जैतवन

राव (धेर)

निधीनामिव प्रवत्तारं यं पश्येत् वज्जदक्षिणम् ।
निगृह्यवादिनं, मेघाविनं तादृशं पण्डितं भजेत् ।
तादृशं भजमानस्य श्रेयो भवति न पापीयः ॥

सुखं सुदं कथं सुदं ।

कण्ठं गीसं सुदं व सुदं सुदं सुदं । ।
अण्ठं दण्ठं सुदं व सुदं सुदं वरि । ।
सुदं सुदं सुदं व सुदं सुदं व । ।
सुदं सुदं सुदं व सुदं सुदं व सुदं । ।
सुदं सुदं सुदं व सुदं सुदं सुदं । ।
सुदं सुदं सुदं व सुदं सुदं सुदं । ।

(भूमि में गुप्त) निधियों के बतलानेवाले की तरह, बुराई को दिखानेवाले
ऐसे संयमवादी, मेधावी पण्डित की सेवा करे। ऐसे के सेवन करने वाले का
कल्याण होता है, अमंगल नहीं (होता) ।

If a person sees a wise man who points out faults and reprovcs and who teaches what is the pure morality, he should serve him as he would a revealer of hidden treasures. By doing such service good and not evil will arise.

ओवदेय्यानुसासेय्य, असब्भा च निवारये ।
सतं हि सो प्रियो होति, असतं होति अप्पियो ॥२॥

जेतवन

अस्सजी, पुनब्बस्

अववदेदनुशिष्याद् असभ्याच्च निवारयेत् ।
सतां हि स प्रियो भवति असतां भवत्यप्रियः ॥

एदमसं वरं पुं विदंस्सो वरं पुं ।
मै मधुक्कं वरं क्कमसं वल्लोक्कं वरं पुं ।
दमं वरं देवदंसेसं वरं सुं ।
दमं वरं मैक्कं क्कमसं दमं वरं मैदं सुं ।

(जो) मधुदेश देता है, अनुशासन करता है, नीच कर्म से निवारण करता है, वह सत्पुरुषों को प्रिय होता है, और प्रमत्पुरुषों को अप्रिय ।

Let him advise, instruct, and shield one from evil. A delight is he to the good, a vexation to the wicked.

न भजे पापके मित्ते, न भजे पुरिसाधमे ।
भजेथ मित्ते कल्याणे, भजेथ पुरिसुत्तम ॥३॥

जैतवन

छन्द (धेर)

न भजेत् पापानि मित्राणि न भजेत् पुरुषाधमान् ।
भजेत् मित्राणि कल्याणानि भजेत् पुरुषानुत्तमान् ॥

झैण् वदिं मुणसं वो वसुधेक् षीं सु । ।

सं रवसं सुसं सु वसुधेक् षीं सु । ।

दणो वदिं मुणसं ऋषसं वसुधेक् सु विदं । ।

सुसं सु सकेणं ऋषसं वसुधेक् वरं सु । ।

दुष्ट मित्रों का सेवन न करें, न अधम पुरुषों का सेवन करें । अच्छे मित्रों का सेवन करे, उत्तम पुरुषों का सेवन करे ।

Do not associate with evil friends, nor with common people. But associate with virtuous friends and noble men.

P 82 (XXV, 3)

P 42 V 73

झैण् वदिं मुणसं वो षीं वसुधेक् विदं । ।

सुसं सु रव व वसुधेक् षीं सु । ।

दणो वदिं वसेणं ऋषेक् वसुधेक् सु विदं । ।

सुसं सु दस व वसुधेक् वरं सु । ।

(दे हं सु दण वसुधेक् सुसं ण । ।

झैण् वरं षीं रगुणं वेणसं वरं रगुणं । ।)

धम्मपीति सुखं सेति, विप्पसन्नेन चेतसा ।
अरियप्पवेदिते धम्मे, सदा रमति पण्डितो ॥४॥

जेतवन

महाकप्पिन (थेर)

धर्मपीतीः सुखं शेते विप्रसन्नेन चेतसा ।
आर्यप्रवेदिते धर्मे सदा रमति पण्डितः ॥

शुभं भवेत्तु धर्मं पश्यन्ति ते सर्वे ।

एवमुक्त्वा धर्मं पश्यन्ति ते सर्वे ।

कस्यैवमुक्त्वा धर्मं पश्यन्ति ते सर्वे ।

एवमुक्त्वा धर्मं पश्यन्ति ते सर्वे ।

कस्यैवमुक्त्वा धर्मं पश्यन्ति ते सर्वे ।

धर्म (-रस) का पान करनेवाला प्रसन्न-चित्त हो सुखपूर्वक सोता है;
पण्डित (जन) आर्यों के जतलाये धर्म में सदा रमण करते हैं ।

He who imbibes the Dharma lives happily. With a tranquil mind the wise man ever delights in the Dharma revealed by the Aryas (Buddhas.)

उदकं हि नयन्ति नेत्तिका,
उसुकारा नमयन्ति तेजनं ।
दारुं नमयन्ति तच्छका,
अत्तानं दमयन्ति पण्डिता ॥५॥

जेतवन

पण्डित सामणेर

उदकं हि नयन्ति नेतृका इषुकारा नमयन्ति तेजनम् ।
दारु नमयन्ति तक्षका आत्मानं दमयन्ति पण्डिताः ॥

ཀྱིས་ཕྱིར་ཚལ་དུ་དགོ་ཚུལ་སྐྱེས་པ་ལོ།

ཡུལ་གྱི་ཕུང་པོ་ལྟ་བུ་ལྟོས་ཆུ་འདྲིན་གྱིང་།

མདའ་མཁར་ནམས་ཀྱིས་སྐྱེ་བ་ལ་བསྐྱར་བར་བྱེད།

[illegible]

མཁས་པ་རྣམས་ཀྱི་པད་ཉིད་འདུལ་བར་མཇུག།

नहरवाले पानी को ले जाते हैं, बाण बनानेवाले बाण को ठीक करते हैं, बढ़ई लकड़ी को ठीक करते हैं, और पण्डित (जन) अपना दमन करते हैं।

Irrigators lead the water, fletchers fashion the arrow shafts, carpenters bend the wood, and the wise control themselves.

P 58 (XXII, 11)

P 43 V 80

བཅོ་ལྔ་པ་མཁན་དག་ཅུ་མ་འབྲུ་ཞིང་།

མདའ་མཁན་མེས་ནི་སྤང་བ་དང་།

ཤིང་མཁན་ཤིང་ལ་འཛིག་སྟོང་ལྟར།

མཁས་བས་བདག་ཉིད་འདུལ་བར་བྱ།

सेलो यथा एकघनो, वातेन न समीरति ।
एवं निन्दाप्रशंसासु, न समिञ्जन्ति पण्डिता ॥६॥

जितवन

मद्विय (थेर)

शैलो यथैकघनो वातेन न समीर्यते ।
एवं निन्दाप्रशंसासु न समीर्यन्ते पण्डिताः ॥

ལྷ་མ་ཆེན་ཚལ་དུ་འོ།

རི་ལྗང་དུས་བྱ་གཞིག་བའི་བྲག་ ।

རྒྱང་གིས་གཡོ་བར་མི་བྱེད་བ། ।

དེ་བཞིན་བཟློད་དང་སྒྲོད་བ་ཡ། ।

མཁས་བ་མས་ནི་གཡོ་བ་མེད། ।

जैसे ठोस पहाड़ हवा से कम्पायमान नहीं होता, ऐसे ही पण्डित निन्दा
और प्रशंसा से विचलित नहीं होते ।

As a solid rock is not shaken by wind, even so, the wise
are not ruffled by praise or blame.

P III (XXIX. 53)

P 43 V 81

རི་ལྗང་རི་དང་བྲག་དག་ནི། ।

རྒྱང་གིས་གཡོས་བས་མི་འགྱུར་ལྟར། ।

དེ་བཞིན་བཟློད་དང་སྒྲོད་བ་ཡིས། ।

མཁས་བ་རབ་དུ་གཡོ་བ་མེད། ।

यथा पि रहदो गम्भीरौ, विष्पसन्नो अनाविलो ।
एवं धम्मानि सुत्वान, विष्पसीदन्ति पण्डिता ॥७॥

जैतवन

काण-माता

यथापि हृदो गम्भीरो विप्रसन्नोऽनाविलः ।
एवं धर्मांश्च श्रुत्वा विप्रसीदन्ति पण्डिताः ॥

हे. हृद. ग. द. ३ व. स. क. स. के। ।
कुं. ग. व. से. द. ३ व. द. स. व। ।
दे. व. ले. क. द. स. व. दे. क. स. से. स. क. स। ।
स. स. स. क. स. स. व. द. द. स. व. स. द. सु. स। ।

धर्मों को सुनकर पण्डित (जन) अथाह, स्वच्छ, निर्मल सरोवर की भाँति
स्वच्छ (सन्तुष्ट) होते हैं ।

As a deep lake is extremely clear and unperturbed, so are
the wise ones perfectly satisfied after hearing the Teachings.

P 57 (XV1I, 9)

P 44 V 82

हे. हृद. स. क. के. क. ३ व. स. द. व। ।
स. व. द. क. स. द. व. कुं. ग. से. द. हृ. स। ।
दे. व. ले. क. स. स. स. व. स. व. द. स. व. स। ।
द. दे. क. के. स. के. क. स. व. स. दे. स। ।

सम्बन्ध वे सत्पुरुषा चरन्ति,

न कामकामा लपयन्ति सन्तो ।

सुखेन फुट्टा अथ वा दुखेन,

न उच्चावचं पण्डिता दस्सयन्ति ॥८॥

जेतवम

पाँच सौ भिक्षु

सर्वत्र वै सत्पुरुषा ब्रजन्ति न कामकामा लपन्ति सन्त ।

सुखेन स्पृष्टा अथवा दुःखेन नोच्चावचं पण्डिता दर्शयन्ति ॥

स्त्रियः पुंश्चरन्त्येव न कामकामा लपन्ति सन्त ।

सुखेन स्पृष्टा अथवा दुःखेन नोच्चावचं पण्डिता दर्शयन्ति ॥

सुखेन स्पृष्टा अथवा दुःखेन नोच्चावचं पण्डिता दर्शयन्ति ॥

सुखेन स्पृष्टा अथवा दुःखेन नोच्चावचं पण्डिता दर्शयन्ति ॥

सत्पुरुष सभी जगह जाते हैं, (वह) भोगों के लिए धात नहीं चलाते;
सुख मिले या दुःख, पण्डित (जन) विकार नहीं प्रदर्शित करते ।

Pure people walk on, whatever happens to them. The saints are free from desireful talk. Whether touched by happiness or by pain, the wise exhibit neither elation nor depression.

न अत्तहेतु न परस्स हेतु,

न पुत्तमिच्छे न धनं न रट्ठं ।

न इच्छेय्य अधम्मिण समिद्धिमत्तनो,

न सीलवा पञ्चवा घम्मिको सिया ॥६॥

जैतवन

घम्मिक (येर)

नात्महेतोः न परस्य हेतोः

न पुत्रमिच्छेत् न धनं न राष्ट्रम् ।

नेच्छेद् अधर्मेण समृद्धिमात्मनः

स शीलवान् प्रज्ञावान् धार्मिकः स्यात् ॥

बन्नास्सन्मन्थिक्कलक्कल्लिस्सन्नुत्तिक्का ।

सुक्खिस्सिद्धिक्कल्लिक्कल्लिस्सिद्धिक्कल्लिक्का ।

कल्लिक्कल्लिक्कल्लिक्कल्लिक्कल्लिक्कल्लिक्का ।

देक्खिक्कल्लिक्कल्लिक्कल्लिक्कल्लिक्कल्लिक्का ।

जो अपने लिए या दूसरे के लिए, पुत्र, धन, और राज्य नहीं चाहते, न अधर्म से अपनी उन्नति चाहते हैं; वही सदाचारी (= शीलवान्) प्रज्ञावान् और धार्मिक है ।

One who is virtuous, wise and righteous is without desires for himself or for others. He desires neither sons nor wealth nor kingdom, and does not wish for his own success by unfair means.

अल्पका ते मनुस्सेसु. ये जना पारगामिनो ।

अथायं इतरा पजा, तीरमेवानुधावति ॥१०॥

जैतवन

धर्मधमण

अल्पकास्ते मनुष्येषु ये जनाः पारगामिनः ।

अथेमा इतराः प्रजा तीरमेवानु धावति ॥

शुभं भवेत्तस्य दुःखं न भवेत् ।

यस्यैव शान्तं चित्तं भवेत् ।

सिद्धिं चैव भवेत्तस्य दुःखं न भवेत् ।

देवैश्च पुण्यं चैव भवेत्तस्य दुःखं न भवेत् ।

सुखं चैव भवेत्तस्य दुःखं न भवेत् ।

मनुष्यों में मर जाने वाले जन बिरले हो हैं, यह दूसरे लोग तो तीर पर ही दौड़नेवाले हैं ।

Few amongst men are those who reach the further shore (of Nirvana). The rest of mankind only run about on the hither bank (of Samsara).

P 109 (XXIX, 37)

P 45 V 85

शुभं भवेत्तस्य दुःखं न भवेत् ।

यस्यैव शान्तं चित्तं भवेत् ।

सिद्धिं चैव भवेत्तस्य दुःखं न भवेत् ।

देवैश्च पुण्यं चैव भवेत्तस्य दुःखं न भवेत् ।

ये च खो सम्मदक्खाते, धम्मे धम्मानुवत्तिनो ।
ते जना पारमेस्सन्ति, मच्चुघेयं सुदुत्तरं ॥११॥

ये च खलु सम्यगाख्याते धर्मो धर्मानुवत्तिनः ।
ते जनाः पारमेष्ठ्यन्ति मृत्युघेयं सुदुस्तरम् ॥

གང་ཞིག་ཡང་དག་གསུངས་པ་ཡི། །
ཆོས་ལ་ཆོས་ཀྱི་རྗེས་སུ་འཇུག་ །
འཆི་བའི་ཡུལ་ས་བསྐོད་དཀར་བའི། །
པ་རེལ་སྤེལ་བོ་དེ་ནུས་པ་བྱོད། །

जो सुव्याख्यात धर्म का अनुगमन करते हैं, वह मृत्युमृहीत अतिदुस्तर
(संसार-सागर) को पार करेंगे ।

But those who truly act according to the teaching, when
it has been well expounded to them, will cross to the other shore
beyond the dominion of death, so difficult to traverse.

P 109 (XYIX 38)

P 46 V 86

གང་དག་ཡིགས་བར་གསུངས་པ་ཡི། །
ཆོས་ལ་ཆོས་ཀྱི་རྗེས་ན་བས། །
སྤེལ་བོ་དེ་དག་སྤེལ་བྱི་ཡི། །
སཀོ་ཆེན་ཀླུ་དཀར་པ་རེལ་འབྱོ། །

कण्हं धम्मं त्रिप्पहाय, सुक्कं भावेथ पण्डितो ।

ओका अतोकमागम्म. त्रिवेके यत्थ दूरमं ॥१२॥

जेलवन

पाँच सौ नवागल भिक्षु

कृष्णं धर्मं विप्रहाय शुक्ल भावयेत् पण्डितः ।

लोकात् अनोकं आगम्य विवेके यत्र दूरमम् ॥

ལྷ་མ་ཡི་ཆ་ལ་དཔེ།

ནག་པོ་ནི་ཆེན་ཅི་རྒྱལ་གྲུང་ས་ནས།

མཁས་པས་དཀར་པོ་གོམས་པར་བྱ། །

ཁྱིམ་ནས་ཁྱིམ་མེད་དཔེས་པ་ནི།

གང་དུ་དགའ་བ་དཀར་བར་སོང།

काले धर्म (पाप) को छाड़कर, पण्डित (जन) शुक्ल (धर्म) धर्म का
आचरण करें । घर से बेघर हो दूर जा विवेक (एकान्त) का सेवन करे ।

The wise man abandons dark states and cultivates the bright. Without going from house to house, he seeks great delight in solitude, so hard to enjoy.

तत्राभिरतिमिच्छेय, हित्वा कामे अकिञ्चनो ।
परियोदपेय्य अत्तानं. चित्तक्लेसेहि पण्डितो ॥१३॥

तत्राभिरतिमिच्छेत् हित्वा कामान् अकिञ्चनः ।
पर्यवदापयेत् आत्मानं चित्तक्लेशैः पण्डितः ॥

छिःअदःखेदःअरःअदोदःअदःअदः । ।
देरःअदःअदोदःअदःअदोदःअदःअदः । ।
अदःअदःअदःअदःअदःअदःअदःअदः । ।
अदःअदःअदःअदःअदःअदःअदःअदः । ।

भोगों को छोड़, सर्वस्वत्यागी हो बही रत रहने की इच्छा करे । पण्डित
(जन) चित्त के मलों से अपने को परिशुद्ध करे ।

Giving up all desires whatsoever, and desiring (only)
that real happiness (or being without desire), the wise man
completely removes the troublesome passions (desire, anger,
ignorance and their kindred) from his mind.

येसं सम्बोध्यङ्गेषु, सम्मा चित्तं सुभावितं ।

आदानपटिनिस्सग्गे, अनुपादाय ये रता ।

खीणासवा जुतिमन्तो, ते लोके परिनिब्बुता ॥१४॥

येषां सम्बोध्यङ्गेषु सम्यक् चित्तं सुभावितम् ।

आदानप्रतिनिःसर्गं अनुपादाय ये रताः ।

क्षीणास्त्रवा ज्योतिष्मन्तस्ते लोके परितिवृताः ॥

वा०-वी०-सु०-कु०-अ०-अ०-कु०-अ० ।

अ०-द०-सो०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ० ।

अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ० ।

अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ० ।

अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ० ।

अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ० ।

अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ० ।

अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ० ।

संबोधि (परम ज्ञान) के अंगों (= संबोध्यङ्गों) में जिनका चित्त भली प्रकार परिभाषित (अभ्यस्त) हो गया है; जो परिग्रह के परित्याग पूर्वक अपरिग्रह में रत हैं । ऐसे चित्त के मलों से निर्मुक्त (= क्षीणास्त्रव), जुतिमान (पुरुष) लोक में निर्वाण को प्राप्त हैं ।

Those who with a pure mind properly meditate on all the seven branches of enlightenment (mindfulness, wisdom, energy, joyousness, sevenity, concentrated meditation, and equanimity), and abandoning all attachment take no pleasure in grasping, such ones possessed of radiant clarity attain the passing from sorrow (Nirvana) in this world.

P 27 (XXXI, 40)

P 47 V 89

वा०-वी०-सु०-कु०-अ०-अ०-कु०-अ०-अ०-अ० ।

सो०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ० ।

वा०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ० ।

अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ० ।

अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ० ।

अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ०-अ० ।

७—अरहन्तवर्गो

मतद्धिनो विसोकस्स, विप्पमुत्तस्स सब्बधि ।

सब्बगन्धप्पहीनस्स, परिळाहो न विज्जति ॥१॥

राजगृह (जीवक का आश्रवन)

जीवक

गताध्वनो विशोकस्य विप्रमुक्तस्य सर्वथा ।

सर्वगन्धप्रहीणस्य परिदाहो न विद्यते ॥

असूदं कंठं दुग्धं सुदं वं वसुदं वं

सूदं वं सुदं सुदं सुदं सुदं ॥ १ ॥

सुदं वं सुदं सुदं सुदं सुदं ॥ १ ॥

सुदं वं सुदं सुदं सुदं सुदं ॥ १ ॥

सुदं वं सुदं सुदं सुदं सुदं ॥ १ ॥

जिसका मार्ग (गमन) समाप्त हो चुका है, जो शोक रहित तथा सर्वथा मुक्त है; जिसकी सभी ग्रंथियाँ क्षीण हो गई हैं; उसके लिये सन्ताप नहीं है ।

Completely without sorrow is he who has ceased moving (i. e. whose karma is finished), who is without troubles and who, wholly free from everything, has severed all bonds.

येसं सन्नचयो नत्थि, ये परिज्जातभोजना ।
 सुज्जतो अनिमित्तो च, विमोक्खो येसं गोचरो ।
 आकासे व सकुन्तानं, गति तेसं दुरन्नया ॥२॥

चेतवन

बेलट्टि मीस

येषां सन्नचयो नास्ति ये परिज्जातभोजनाः ।
 शून्यतोऽनिमित्तश्च विमोक्षो यस्य गोचरः ।
 आकाश इव अकुन्तानं गतिः तेषां दुरन्वया ॥

सुयं सुदं हं सुदं ।

वाः वा वा वा वा वा वा वा वा वा वा ।

वाः वा वा वा वा वा वा वा वा वा वा ।

वाः वा वा वा वा वा वा वा वा वा वा ।

वाः वा वा वा वा वा वा वा वा वा वा ।

वाः वा वा वा वा वा वा वा वा वा वा ।

वाः वा वा वा वा वा वा वा वा वा वा ।

जो (वस्तुओं का) संचय नहीं करते, जिनका भोजन नियत है, शून्यता-
 स्वरूप तथा कारण रहित मोक्ष (=निर्वाण) जिनको दिखाई पड़ता है; उनकी
 गति (=गंतव्य स्थान) आकाश में पक्षियों की (गति की) भाँति अज्ञेय है ।

Those who do not hoard, who reflect well over their food,
 and whose object is the Void, the signless Liberation, their
 course cannot be traced, like that of birds in the sky.

P 107 (XXIX, 25)

P 49 V 92

वाः वा वा वा वा वा वा वा वा वा वा ।

वाः वा वा वा वा वा वा वा वा वा वा ।

वाः वा वा वा वा वा वा वा वा वा वा ।

वाः वा वा वा वा वा वा वा वा वा वा ।

वाः वा वा वा वा वा वा वा वा वा वा ।

वाः वा वा वा वा वा वा वा वा वा वा ।

यस्सासवा परिक्लीणा, आहारे च अनिस्सितो ।
 सुञ्जतो अनिमित्तो च, विमोक्खो यस्स गोचरो ।
 आकासे व सकुन्तानं, पदं तस्स दुरन्णयं ॥४॥

राजगृह (वेणुवन)

अनुरुद्ध (थेर)

यस्यासवाः परिक्लीणा आहारे च अनिःसृतः ।
 शून्यतोऽनिमित्तश्च विमोक्षो यस्य गोचरः ।
 आकाश इव सकुन्तानां पदं तस्य दुरन्वयम् ॥

गदं गीं च गं च अदसं च उदं । ।

असं च वेदं च अदं च अदं । ।

गदं गीं सुदं पुनं सुदं उदं ददं । ।

अदं च अदं च अदं च अदं च अदं । ।

दे अदं च अदं च अदं च अदं च अदं । ।

अदं च अदं च अदं च अदं च अदं । ।

जिसके आश्रव (=मल) क्षीण हो गये हैं, जो आहार में आसक्त नहीं, तथा शून्य और अनिमित्त विमोक्ष जिसका गोचर है, उसकी गति, आकाश में पक्षियों की गति की भाँति अज्ञेय है ।

He whose corruptions (asava-sensuality; craving for existence; speculation; ignorance.) are destroyed, who is not attached to food, and whose object is the Void, the signless Liberation, his path cannot be traced, like that of birds in the sky.

P 108 (XXIX, 31)

P 49 V 93

गदं ददं च अदं च अदं च अदं च उदं । ।

गदं गीं च अदं च अदं च अदं च अदं च । ।

अदं ददं अदं च अदं च अदं च अदं च । ।

ददं च अदं च अदं च अदं च अदं च अदं च । ।

दे ददं अदं च अदं च अदं च अदं च अदं च । ।

अदं च अदं च अदं च अदं च अदं च अदं च । ।

यस्सिन्द्रियाणि समथङ्गतानि,
 अस्सा यथा सारथिना सुदन्ता ।
 पहीनमानस्स अनासवस्स,
 देवा पि तस्स पिहयन्ति तादिनो ॥५॥

श्रावस्ती (पूर्वाराम)

महाकव्यायन

यस्येन्द्रियाणि शमतां गतानि,
 अश्वा यथा सारथिना सुदान्ताः ।
 प्रहीणमानस्य अनास्रवस्य देवा,
 अपि तस्य स्पृहयन्ति तादृशः ॥

॥५॥ श्रीगुरुदेवार्चनम् ॥ १ ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

सारथी द्वारा सुदान्त (= सुशिक्षित) अश्वों की भाँति जिसकी इन्द्रियाँ शान्त हैं, जिसका अभिमान नष्ट हो गया, (और) जो आस्रवरहित है; ऐसे उस (पुरुष) की देवता भी स्पृहा करते हैं ।

Even the gods wish to emulate one whose senses are subdued, like horses well trained by the charioteer, whose pride is destroyed, and who is free of corruptions.

सन्तं तस्स मनं होति, सन्ता वाचा च कम्म च ।

सम्मदञ्जा विमुत्तस्स, उपसमन्तस्स तादिनो ॥७॥

जैतवन

कोसम्बिभासित तस्स (येर)

शान्तं तस्य मनो भवति शान्ता वाक् च कर्म च ।

सभ्यगाज्ञादिमुक्तस्य उपशान्तस्य तादृशः ॥

शुचं भूयं ऋषिं शुचं शुचं शुचं ।

देव्यं देव्यं देव्यं देव्यं देव्यं ।

देव्यं देव्यं देव्यं देव्यं देव्यं ।

देव्यं देव्यं देव्यं देव्यं देव्यं ।

देव्यं देव्यं देव्यं देव्यं देव्यं ।

उपशान्त और यथाथं ज्ञान द्वारा मुक्त हुए उस (अहंत्पुरुष) का मन शान्त होता है, वाणी और कर्म शान्त होते हैं ।

Calm and quiet is the mind, speech and action of one who has obtained freedom through true knowledge and is perfectly tranquil and unperturbable.

अस्सद्धो अकतञ्जू च, सन्धिच्छेदो च यो नरो ।

हतावकाशो वन्तासो, स वै उत्तमपोरिसो ॥८॥

जेतवन

सारिपुत्र (धेर)

अश्रद्धोऽकृतज्ञश्च सन्धिच्छेदश्च यो नरः ।

हतावकाशो वान्ताशः स वै उत्तम पुरुषः ॥

कुपुं सुदे कळं दुं पुं रीं सुं अरं ।

सिं पादं मेशं वं मेदं वं दं । ।

सं पुसं वं मेसं सळमसं सुं रं कं । ।

पाकसं सुं दं सं लेकं वं पुं अं पुं रं वं । ।

दें रं सुं सं पुं सळं पां यीं कं रं । ।

जो (मूढ़-) श्रद्धारहित, अकृत (= बिना बनाये = निर्वर्ण) = ज्ञ (संसार की) संधिका छेदन करने वाला; अवकाश रहित, (विषय-) भोग को चमनकर दिया नर है, वही उत्तम पुरुष है ।

The man who is not credulous, who understands the unmade (Nirvana), who has severed the connection, who has given up desire for a fixed home, who has become free of all desires, he, indeed, is the noblest of men.

1 पादं मेशं पुं रीं सुं (पुं रीं सुं) रं सळं पां यीं कं रं
 पां यीं कं रं । दें पां यीं कं रं दं वं सुं वं दं वं दं वं दं वं दं
 वं दं (वं दं वं दं वं दं वं दं वं दं) वं दं वं दं वं दं वं दं
 सुं वं दं वं दं वं दं वं दं वं दं (वं दं वं दं वं दं) दं वं दं वं दं
 वं दं वं दं वं दं वं दं वं दं वं दं वं दं वं दं वं दं
 वं दं वं दं वं दं वं दं वं दं वं दं वं दं वं दं वं दं
 वं दं वं दं वं दं वं दं वं दं वं दं वं दं वं दं वं दं
 वं दं वं दं वं दं वं दं वं दं वं दं वं दं वं दं वं दं
 वं दं वं दं वं दं वं दं वं दं वं दं वं दं वं दं वं दं

ग्रामे वा यदि वारञ्जे, निम्ने वा यदि वा स्थले ।
यत्थ अरहन्तो विहरन्ति, तं भूमिरामण्यकं ॥६॥

जेतवन

(सदिरवनी) रेवत (थेर)

ग्रामे वा यदि वाऽऽरण्ये निम्ने वा यदि वा स्थले ।
यत्थारहन्तो विहरन्ति सा भूमि रामणीया ॥

गुणं सुदं कं दुं कं गुणं ।

सुखं सुखं यदं कं कं सुखं कं यदं ।

सुखं सुखं यदं कं कं सुखं कं यदं ।

सुखं सुखं यदं कं कं सुखं कं यदं ।

सुखं सुखं यदं कं कं सुखं कं यदं ।

गाँव में या जंगल में, निम्न वा (ऊँचे) स्थल में जहाँ (कहीं) अर्हत् (लोग)
विहार करते हैं, वही रामणीय भूमि है ।

Delightful is that place wherever Arhats dwell, whether
it be a village or a forest, by lake or by vale.

P 106 (XXIX, 18)

P 52 V 98

सुखं सुखं यदं कं कं सुखं कं यदं ।

सुखं सुखं यदं कं कं सुखं कं यदं ।

सुखं सुखं यदं कं कं सुखं कं यदं ।

सुखं सुखं यदं कं कं सुखं कं यदं ।

रमणीयानि अरञ्जानि, यत्थ न रमती जनो ।
वीतरागा रमिस्सन्ति, न ते कामगवेसिनो ॥१७॥

क्षेत्रवन

आरण्यक शिक्षा

रमणीयान्यरण्यानि यत्र न रमते जनः ।
वीतरागा रमन्ते न ते कामगवेषिणः ॥

གང་དུ་སྐྱེ་བོ་མི་དགའ་བའི།
 དགོན་པ་རྣམས་ནི་ཉམས་དགའ་སྟེ།
 འདོད་པ་རྩེས་སྤུ་མི་འཆོལ་བའི།
 འདོད་ཆགས་བྲལ་བ་དེ་རྣམས་དགའ།

རྒྱ་བཅའ་བའི་ཕྱི་ཚན་དེ།

མེད་པ་དུས་པའོ།

उस रमणीय वन में जहाँ (साधारण) जन रमण नहीं करते, काम (भोगों) के पीछे न भटकनेवाले वीतराग रमण करेंगे।

Delightful are the forests where worldlings find no joy.
There the passionless will rejoice, for they seek no sensual pleasures.

P 106 (XXIX, 17)

P 52 V 99

དགེ་ལ་ལྟོ་བོ་མི་དགེ་ལ་ཡང་། །
དེ་ལ་འདོད་ཆགས་ལྷན་པ་དགེ་ལ་། །
འདོད་པ་ཚོས་བར་ཕྱེད་རྣམས་མིན། །

८—सहस्सवग्गी

सहस्समपि चे वाचा, अनर्थपदसंहिता :

एकं अर्थपदं श्रेयो, यं सुत्वा उपसम्मति ॥१॥

वेणुवन

तम्बदाठिक (चोररघातक)

सहस्समपि चेद् वाचः अनर्थपदसंहिताः ।

एकमर्थपदं श्रेयो यच्छ्रुत्त्वोपशाम्यति ॥

देव.सर्.क.५३।

देव.सर्.क.५३।

सु.व.५३।

मा.५३।

देव.सर्.क.५३।

अर्थ के पदों से युक्त सहस्रों वाक्यों से भी (वह) सार्थक एक पद श्रेष्ठ है, जिसे सुनकर शान्ति होती है ।

Better than a thousand utterances composed of meaningless words is one sensible word, by hearing which, one becomes pacified.

P 77 (XXVI, 1)

P 53 V 100

मा.५३।

कै.स.५३।

मा.५३।

देव.सर्.क.५३।

सहस्रमपि चे गाथा, अनर्थपदसंहिता ।
एकं गाथापदं श्रेयो, यं सुत्वा उपसम्मति ॥२॥

जैतवन

दारुचीरिय (थेर)

सहस्रमपि चेद् गाथा अनर्थपदसंहिताः ।
एकं गाथापदं श्रेयो यच्छ्रुत्वोपशाम्यति ॥

देवमेव केव कसस वसवास वुस वदि ।
केवास सु वउद व वुद वुव वस ।
वद वीव वीव व उर वी वदि ।
केवास वउद वद वउव वउव व वउव ।

व्यर्थ के पदों से युक्त हजार गाथाओं से भी एक गाथापद श्रेष्ठ है, जिसे सुनकर शान्ति होती है ।

Better than a thousand verses composed of meaningless words is one word of a verse by hearing which one becomes pacified.

यो च गाथा सतं भासे, अनर्थपदसंहिता ।
एकं धम्मपदं सेव्यो, यं सुत्वा उपसम्मति ॥३॥

जैतवन

कुण्डलकेसी (थेरी)

यश्च गाथाशत भाषेतानर्थपदसंहितम् ।
एकं धर्मपदं श्रेयो यच्छ्रुत्वोपशाम्यति ॥

वा० वी० दै० से० के० व० स० व० । ।
के० व० स० व० दै० व० स० व० । ।
वा० वी० से० व० से० व० । ।
के० व० के० व० स० व० व० व० । ।

(जो) व्यर्थ के पदों से युक्त सो गाथायें भी भाषे, (कहे) (उससे) धर्म का एक पद भी श्रेष्ठ है, जिसे सुनकर शान्ति होती है ।

Better than reciting a hundred verses composed of meaningless words is to recite one verse of Dharma by hearing which one becomes pacified.

P 77 (XXIV, 2)

P 54 V 102

वा० दै० के० दै० वी० के० । ।
के० व० स० व० दै० व० व० । ।
वा० दै० व० व० व० व० । ।
के० व० के० व० व० व० । ।

यो सहस्रं सहस्रेन, सङ्ग्रामे मानुसे जिने ।
एकं च जेय्यमत्तानं, स वै सङ्ग्रामजुत्तमो ॥४॥

यः सहस्रं सहस्रेण संग्रामे मानुषान् जयेत् ।
एकं च जयेद् आत्मानं स वै संग्रामजिदुत्तमः ॥

ཕྱིར་ཕྱག་ཕྱིར་གི་མི་རྒྱལ་ནི། ।
གང་གིས་གཡུལ་ལྷ་ལས་བ་བས། ।
བདག་ཉིད་གཅིག་བྱ་ལས་བྱས་བ། ।
དེ་ནི་གཡུལ་ལས་རྒྱལ་བའི་མཆོག་ ।

संग्राम में जो हजारों हजार मनुष्यों को जीत ले, उससे एक अपने को जीतने वाला कहीं उत्तम संग्रामजित् है ।

Although one may conquer in battle a thousand thousand men, yet the greatest victor is the one who conquers himself.

P 74 (XXIII, 3)

P 54 V 103

གང་ཞིག་ཕྱིར་ཕྱག་ཕྱིར་དག་གི། ।
མི་ཡི་གཡུལ་ལས་རྒྱལ་བ་བས། ।
གང་ཞིག་བདག་ལས་རྒྱལ་བྱེད་བ། ।
དེ་ནི་མི་ཡི་གཡུལ་ལས་རྒྱལ། ।

अत्ता हवे जितं सेय्यो, या चायं इतरा पजा ।
अत्तदन्तस्स पोसस्स, निच्चं सञ्जतचारिनो ॥५॥

अनर्थ-पूच्छक ब्राह्मण

आत्मा ह वै जितः श्रेयान् या चेयमितराः प्रजा ।
दान्तात्मनः पुरुषस्य नित्यं संयतचारिणः ॥

སྐྱེས་བུ་དུལ་བའི་བདག་ཉིད་ཅན།
 དག་དུ་བསྐྱེས་སྐྱེ་རྒྱ་བ་ལ།
 བདག་ཉིད་ཡམ་པ་སེལ་ཡིན་གྱི།
 སྐྱེ་རྒྱ་གཞན་དག་ཡམ་བས་ཅི།

इन अन्य प्रजाओं के जीतने की अपेक्षा अपने को जीतना श्रेष्ठ है।
अपने को दमन करनेवाला, नित्य अपने को संयम करनेवाला जो पुरुष है।

Those beings who discipline themselves, who always act with self-control, their self-conquest is indeed superior to conquest over other beings.

P 55 V 104

དག་དུ་སྒྲིམ་བ་སྒྲིང་བ་ཡི།
 མི་ཡིས་བདག་གདུལ་གཅིག་བྱ་ཡིས།
 བདག་ཉིད་ལས་རྒྱལ་མཆོག་ཡིན་གྱི།
 རྒྱེད་གྲུ་གཞན་ལྟ་པལ་བར་ཟད།

नेव देवो न गन्धर्वो, न मारो सह ब्रह्मणा ।
जितं अपजितं कयिरा, तथारूपस्स जन्तुनो ॥६॥

नैव देवो न गन्धर्वो न मारः सह ब्रह्मणा ।
जितं अपजितं कुर्यात् तथारूपस्य जन्तोः ॥

ལྷ་ཡིས་མ་ཡིན་ངྷི་ཟས་མིན། 1
བདུད་དང་ཚངས་པ་བཅས་པས་མིན།
དེ་ལྟའི་ངང་ཚུལ་དང་ལྷན་བཤི། 1
སྐལ་བའི་སྤྲེས་བྱ་ཡས་པ་མེད། 1

इस प्रकार के प्राणी के जीते को, न देवता, न गंधर्व, न ब्रह्मा सहित मार,
बेजीता कर सकते हैं ।

Not even a god nor a Gandharva nor Mara along with
Brahma could turn into defeat the victory of such a one (who
has conquered himself).

P 75 (XXIII, 5)

P 55 V 105

ལྷེས་རབ་ཀྱིས་གནས་དགེ་སྤྲོང་གིས།
སྐལ་བའི་བྱས་ལ་བདུད་དང་ནི། 1
ཚངས་པར་བཅས་པས་ཡས་མི་རྒྱས།
ལྷ་ཡིས་མ་ཡིན་ངྷི་ཟས་མིན། 1

मासे मासे सहस्त्रेण, यो यजेथ सतं समं ।
 एकं च भावित्तानं, मुहुत्तमपि पूजये ।
 सायेव पूजना सेव्यो, यं चे वस्ससतं हुतं ॥७॥

देणुवन

सारिपुत्त के माम

मासे मासे सहस्त्रेण यो यजेत शतं समान् ।
 एकं च भावितात्मानं मुहुर्तमपि पूजयेत् ।
 सैव पूजना श्रेयसी यच्चेद् वर्षशतं हुतम् ॥७॥

देवस्यैकं यज्ञं यजिष्ये ।

इदं यज्ञं ब्रह्म ब्रह्म वदन् ॥

सक्रेष्टुं यज्ञं यज्ञं यज्ञं यज्ञं यज्ञं ॥

यज्ञं यज्ञं यज्ञं यज्ञं यज्ञं यज्ञं ॥

यज्ञं यज्ञं यज्ञं यज्ञं यज्ञं यज्ञं ॥

यज्ञं यज्ञं यज्ञं यज्ञं यज्ञं यज्ञं ॥

यज्ञं यज्ञं यज्ञं यज्ञं यज्ञं यज्ञं ॥

सहस्र (—दक्षिण यज्ञ) से जो महीने महीने सौ वर्ष तक यजन करे, और यदि परिशुद्ध मनवाले एक (पुरुष) को एक मुहुर्त ही पूजे; तो सौ वर्ष हवन से यह पूजा ही श्रेष्ठ है ।

Although month after month, with a thousand things, one might make sacrifice for a hundred years, yet if for only a moment one would make offering to one who truly meditates, then that would indeed be better than the century of sacrifice.

यं किञ्चिद्विदुं च हुतं च लोके,
 संवत्सरं यजेथ पुञ्जपेक्खो ।
 सब्बं पि तं न चतुभागमेति,
 अभिवादना उज्जुगतेसु सेय्यो ॥६॥

वेणुवन

सारिपुत्त का मित्र ब्राह्मण

यत् किञ्चिद्दृष्टं च हुतं च लोके,
 संवत्सरं यजेत पुण्यापेक्षः ।
 सर्वमपि तत् न चतुर्भागमेति,
 अभिवादना ऋजुगतेषु श्रेयसी ॥

འདྲ་མཐོང་ཆལ་དུ་བྲམ་ཟེ་ལའོ།

གང་ཞིག་བསོད་ནམས་བཟུང་བས་འཛིག་དོན་དུ། ।
 འཁྱུང་འཁོར་ལོ་ལ་མཆོད་ཅིང་སྦྱིན་ཅིང་བ། ।
 དེ་ཀླན་བཞི་ཆ་ཙམ་ཡང་སྤོང་བའི། ।
 རྒྱུ་ཤོག་གཤེགས་ལ་བསྐྱེད་བཀྲམ་ཆེ་ཆེར་ལེགས། ।

पुण्य की इच्छा से जो वर्ष भर नाना प्रकार के यज्ञ और हवन को करे, तो भी वह सरलता को प्राप्त (पुरुष) के लिए की गई अभिवादना के चतुर्थांश से भी बढ़कर नहीं है ।

Whatever sacrifices or oblations a man might offer in a year in order to gain merit is altogether not worth a quarter of the superior offering of reverence shown towards one who follows the straight way.

P 81 (XXIV, 34)

P 57 V 108

བསོད་ནམས་འདོད་བའི་སྤོང་ལོས་འཛིག་དོན་དུ། ।
 སྦྱིན་ཤོག་མཆད་སྦྱིན་ཅིང་ཟེད་ཅི་བྱས་དེས། ।
 གང་ཞིག་རྒྱུ་ཤོག་སྤོང་ལོ་སེམས་ཀྱིས་ཕྱག་འཆལ་བ། ।
 དེ་ལོ་བཞི་ཆར་ཡང་ནི་སྤོང་བོ། ।

अभिवादनशीलस्स, निचवं वुड्ढापचायिनो ।

चत्तारो धम्मा वड्ढन्ति, आयु वण्णो सुखं बलं ॥१०॥

अरण्यकुटी

दीधायु कुकार

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धापचारिनः ।

चत्वारि धर्मा वर्धन्ते आयुर्वर्णः सुखं बलम् ॥

३८० गुणवर्धनं चत्वारि धर्मा वर्धन्ते आयुर्वर्णः सुखं बलम् ॥

३८० गुणवर्धनं चत्वारि धर्मा वर्धन्ते आयुर्वर्णः सुखं बलम् ॥

३८० गुणवर्धनं चत्वारि धर्मा वर्धन्ते आयुर्वर्णः सुखं बलम् ॥

३८० गुणवर्धनं चत्वारि धर्मा वर्धन्ते आयुर्वर्णः सुखं बलम् ॥

३८० गुणवर्धनं चत्वारि धर्मा वर्धन्ते आयुर्वर्णः सुखं बलम् ॥*

जो अभिवादनशील है, जो सदा वृद्धों की सेवा करनेवाला है, उसकी चार बातें (धर्म) बढ़ती हैं,—आयु, वर्ण, सुख और बल ।

For one who is ever inclined to honour and respect the elders, four blessings increase, lifespan, beauty, bliss and strength.

*मनुस्मृति में—

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः ।

चत्वारि संप्रवर्द्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम् ॥ (२ । १२१)

३८० गुणवर्धनं चत्वारि धर्मा वर्धन्ते आयुर्वर्णः सुखं बलम् ॥

३८० गुणवर्धनं चत्वारि धर्मा वर्धन्ते आयुर्वर्णः सुखं बलम् ॥

३८० गुणवर्धनं चत्वारि धर्मा वर्धन्ते आयुर्वर्णः सुखं बलम् ॥

३८० गुणवर्धनं चत्वारि धर्मा वर्धन्ते आयुर्वर्णः सुखं बलम् ॥

३८० गुणवर्धनं चत्वारि धर्मा वर्धन्ते आयुर्वर्णः सुखं बलम् ॥

॥ ३०० ॥

यो च वस्ससतं जीवे, दुस्सोलो असमाहितो ।

एकाहं जीवितं सेय्यो, सीलवन्तस्स ज्ञायितो ॥११॥

जैतवन

संकिञ्च (= सांकृत्य) सामणेर

यश्च वर्षशतं जीवेद् दुःशीलोऽसमाहितः ।

एकाहं जीवितं श्रेयः शीलवतो ध्यायितः ॥

कुम'त्रे'र'ळ'य'दु'र'णे'ळ'य'र' । ।

कु'य'र'ळ'य'म'र'म'वर'स'र'र'र' । ।

र'र'वर'र'र'र'र'र'र'र' । ।

कु'य'प्र'म'स'र'र'र'र' । ।

र'र'र'र'र'r'r' । ।

दुराचारी और एकाग्रचित्तताविरहित (= असमाहित) के सौ वर्ष के जीने से भी सदाचारी और ध्यानी का एक दिन का जीवन श्रेष्ठ है ।

Though one might live for a hundred years, immoral and uncontrolled, yet better than this would be a life of one day that was virtuous and meditative.

P 78 (XXIV, 3)

P 59 V 110

कु'य'र'ळ'य'म'र'म'वर'स'र'r' । ।

र'र'वर'र'r'r' । ।

कु'य'प्र'म'स'र'r' । ।

र'r' । ।

यो च वस्ससतं जीवे, दुष्पञ्चो असमाहितो ।
एकाहं जीवितं सेय्यो, पञ्चवन्तस्स ज्ञायिनो ॥१२॥

जैतवन

कोण्डव्व (थेर)

यश्च वर्षशतं जीवेद् दुष्प्रज्ञोऽसमाहिताः ।
एकाहं जीवितं श्रेयः प्रज्ञावतो ध्यायिनः ॥

सुखं अकलं अमरं अमरं अमरं ।
अमरं अमरं अमरं अमरं ।
सुखं अमरं अमरं अमरं ।
अमरं अमरं अमरं अमरं ।

दुष्प्रज्ञ और असमाहित के सौ वर्ष के जीने से भी प्रज्ञावान् और ध्यानी का एक दिन का जीवन श्रेष्ठ है ।

Though one might live for a hundred years, with no knowledge and no control, yet better than this would be a life of one day that was wise and meditative.

P 78 (XXIV, 5)

P 59 V 111

सुखं अकलं अमरं अमरं अमरं ।
अमरं अमरं अमरं अमरं ।
सुखं अमरं अमरं अमरं ।
अमरं अमरं अमरं अमरं ।

यो च वस्ससत्तं जीवे, कुसोतो हीनवीरियो ।
एकाहं जीवितं सेय्यो, विरियमारभतो दब्धं ॥१३॥

यश्च वर्षशतं जीवेत् कुसीदो हीनवीर्यः ।
एकाहं जीवितं श्रेयो वीर्यमारभतो दृढम् ॥

བཙུན་འགྲུས་དམན་ཞིང་ལེ་ལོ་ཅན། །
ལོ་བརྒྱ་དག་དུ་འཛོལ་ལས། །
བཙུན་འགྲུས་ཚུམ་བུ་བདན་བ་ཅན། །
རྩིས་གཅིག་ལ་འཛོལ་མཚེག། །

आलसी और अनुद्योगी के सौ वर्ष के जीवन से दृढ़ उद्योग करनेवाले के जीवन का एक दिन श्रेष्ठ है ।

Though one might live for a hundred years, dull and inert, yet better than this would be a life of one day in which one strove with diligence.

P 78 (XXIV 4)

P 60 V 112

བཙུན་མེད་ལེ་ལོ་ལྷན་བ་དག། །
ལོ་བརྒྱར་གསོན་བ་གང་ཡིན་བས། །
བཙུན་འགྲུས་བདན་བ་བཙུམས་བ་དག། །
རྩིན་གྲག་འགའ་ཞིག་གསོན་བ་བྱང་། །

यो च वस्ससतं जीवे, अपस्सं उदयब्बयं ।

एकाहं जीवितं सेय्यो, पस्सतो उदयब्बयं ॥१४॥

जैतवन

पटाचारा (थेरी)

यश्च वर्षशतं जीवे अपस्सं उदयव्ययम् ।

एकाहं जीवितं सेय्यो पस्सतो उदयव्ययम् ॥

सुत्तेऽद्वयं वसिंसेन वा ।

अथवा द्वापुः पञ्चद्वयं वा ।

सुत्तेऽद्वयं वसिंसेन वा ।

उत्तमं वा उच्यते वा ।

(संसार में वस्तुओं के) उत्पत्ति और विनाश का न ख्याल करने के सौ वर्ष के जीवन से उत्पत्ति और विनाश का ख्याल करने वाले का एक दिन श्रेष्ठ है ।

Though one might live for a hundred years, without seeing the arising and passing, yet better than this would be a life of one day in which one saw the rise and fall. (of the Five Aggregates, namely the impermanence of all conditioned things).

P 78 (XXIV. 6)

P 60 V 113

सुत्तेऽद्वयं वसिंसेन वा ।

अथवा द्वापुः पञ्चद्वयं वा ।

सुत्तेऽद्वयं वसिंसेन वा ।

उत्तमं वा उच्यते वा ।

यो च वस्ससतं जीवे, अपस्सं अमर्तं पदं ।
एकाहं जीवितं सेय्यो, पस्सतो अमर्तं पदं ॥१५॥

जैतवन

किंसागोतमः

यश्च वर्षशतं जीवेद् अपश्यन् अमृतं पदम् :
एकाहं जीवितं श्रेयः पश्यतोऽमृतं पदम् ॥

བདུད་རྩི་གོ་འཕང་མ་མཐོང་བ། །
ལོ་བརྒྱ་དག་དུ་འཚོ་བ་ལས། །
བདུད་རྩི་གོ་འཕང་མཐོང་བ་ནི། །
རྩི་མ་གཅིག་ལ་འཚོ་བ་མཆོག་ །

अमृतपद (= दुःखनिर्वाण) को न ख्याल करने के सौ वर्ष के जीवन से,
अमृतपद को देखनेवाले जीवन का एक दिन श्रेष्ठ है ।

Though one might live for a hundred years, without
seeing the Undying Stage, yet better than this would be a life
of one day in which one saw the Undying Stage.

P 79 (XXIV)

P 61 V 114

འཚོ་མེད་གོ་འཕང་མ་མཐོང་བ། །
ལོ་བརྒྱར་གསོན་བ་གང་ཡིན་ལས། །
འཚོ་མེད་གོ་འཕང་མཐོང་བ་དག །
རྩི་ཞག་འགའ་ཞིག་གསོན་བ་རུང་། །

यो च वस्ससतं जीवे, अपस्सं धम्ममुत्तमं ।
एकाहं जीवितं सेय्यो. पस्सतो धम्ममुत्तमं ॥१६॥

जेतवन

बहुपुत्तिका (थेरी)

यश्च वर्षशतं जीवेदपश्यन् धर्ममुत्तमम् ।
एकाहं जीवितं श्रेयः पश्यतो धर्ममुत्तमम् ॥

ऊँसं ग्रीसं ऊँसं ऊँसं ऊँसं ॥ १

ऊँसं ऊँसं ऊँसं ऊँसं ऊँसं ॥ १

ऊँसं ग्रीसं ऊँसं ऊँसं ऊँसं ॥ १

ऊँसं ऊँसं ऊँसं ऊँसं ऊँसं ॥ १

ऊँसं ऊँसं ऊँसं ऊँसं ऊँसं ॥ १

उत्तम धर्म को न देखने के सौ वर्ष के जीवन से, उत्तम धर्म के देखनेवाले के जीवन का एक दिन श्रेष्ठ है ।

Though one might live for a hundred years, without understanding the supreme Dharma, yet better than this would be a life of one day in which one understood the supreme Dharma.

६—पापवर्गी

अभित्यरेथ कल्याणे, पापा चित्तं निवारये ।

दग्धं हि करोतो पुञ्चं, पापस्मिं रमती मनो ॥१॥

जैतवन

(चूल) एकसाटक (ब्राह्मण)

अभित्वरेत कल्याणे पापात् चित्तं निवारयेत् ।

तद्रितं हि कुर्वतः पुण्यं पापे रमते मनः ॥

सुखं सुदं ऊढं सुसुखं सुदं ।

दग्धं वरि सुदं सुसुखं सुदं ।

सुदं वरि सुदं सुसुखं सुदं ।

वसिदं सुदं सुदं सुसुखं सुदं ।

सुदं सुदं सुदं सुसुखं सुदं ।

पुण्य (कर्मों में) जल्दी करे, पाप से चित्त को निवारण करे, पुण्य को धीमी गति से करने पर चित्त पाप में रत होने लगता है ।

Make haste in doing good and check your mind from evil, for the mind of one who is slow to gain merit, delights in evil.

P 100 (XXVIII, 23)

P 62 V 116

सुदं वरि सुदं सुसुखं सुदं ।

वसिदं सुदं सुदं सुसुखं सुदं ।

सुदं वरि सुदं सुसुखं सुदं ।

वसिदं सुदं सुदं सुसुखं सुदं ।

पापं चे पुरिसो कयिरा, न नं कयिरा पुनप्पुनं ।
न तम्हि छन्दं कयिराथ, दुक्खो पापस्स उच्चयो ॥२॥

जेतवन

सेय्यसक (थेर)

पाप चेत् पुंषः कुर्यात् न तत् कुर्यात् पुनः पुनः ।
न तस्मिं छन्दं कुर्यात्, दुःख पापस्य उच्चयः ॥

स्त्रेसं सुसं वक्तुं वा स्त्रीणां सुसं गृहं ।
अहं न हं अहं न हं न हं ।
न हं न हं न हं न हं न हं ।
वसन्तस्य वसन्तं स्त्रीणां वसन्तं वसन्तं न हं ।

यदि पुरुष (कभी) पापकर डाले, तो उसे पुनः पुनः न करे, उसमे रत न होवे, (क्योंकि) पाप का संचय दुःख (का कारण) होता है ।

Should a person commit evil, let him not do it again and again. He should not take pleasure in it for painful is the accumulation of evil.

P 100 (XXVIII, 21)

P 62 V 117

स्त्रीणां वसन्तं वसन्तं स्त्रीणां वसन्तं ।
न हं न हं न हं न हं न हं ।
वक्तुं वा स्त्रीणां वसन्तं न हं ।
अहं न हं अहं न हं न हं ।

पुञ्जं चे पुरिसो कयिरा, कयिरा नं पुनपुनं ।
तम्हि छन्दं कयिराथ, सुखो पुञ्जस्स उच्चयो ॥३॥

जेतवन

लाजरेख की कन्या

पुण्यं चेत् पुरुषः कुर्यात्, कुर्यात् एतत् पुनः पुनः ।
तस्मिन् छन्दं कुर्यात् सुखः पुण्यस्य उच्चयः ॥

སྒྲུབ་སྒྲུབ་བསོད་ནམས་བྱེད་བ་ན། །
 ཡང་དང་ཡང་དྲ་དེ་དག་བྱ། །
 དེ་ལ་འདྲན་བར་བྱ་བ་སྟེ། །
 དག་བའི་སྤང་བོ་བདེ་བ་ཉིད། །

यदि पुरुष पुण्य करे तो, उसे पुनः पुनः करे, उसमें रत होवे, (क्योंकि) पुण्य का संचय सुखकर होता है ।

Should a person perform good, let him do it again and again, he should take pleasure in it, for blissfull is the accumulation of good.

P 100 (XXVIII, 22)

P 63 V 118

བསོད་ནམས་བདེ་བ་སོགས་བས་ན།
 དེ་ནི་ལ་ནི་དགའ་བར་བྱ།
 གཡ་དེ་བསོད་ནམས་བྱས་ན་ཡང་།
 དེ་ནི་ཡང་དང་ཡང་དྲ་བྱ།

पापोऽपि पस्सति भद्रं, याव पापं न पचवति ।
यदा च पचवति पापं, अथ पापो पापानि पस्सति ॥४॥

जेतवन

अनाथपिण्डक (सेठ)

पापोऽपि पश्यति भद्रं यावत् पापं न पच्यते ।
यदा च पच्यते पापं अथ पापानि पश्यति ॥

ཀྱུ་ཤེད་ཆེན་པོ་སྐྱོན་མེད་ཟས་སྐྱོན་ལའོ་¹।

རི་སྤྱོད་སྤྱིག་པ་སྤྱོན་གྱི་བར། ।

སྤྱིག་ཅན་ཡིན་ཡང་བཟང་པོར་མགྲོང་། ।

གང་ཆོ་སྤྱིག་པ་སྤྱོན་གྱུར་བ། ।

དེའི་ཆོ་སྤྱིག་པ་ཅན་ནམས་མགྲོང་། ।

पापी भी तब तक भला ही देखता है, जब तक कि पाप का विपाक नहीं होता; जब पाप का विपाक होता है; तब (उसे) पाप दिखाई पड़ने लगता है ।

Even an evil-doer sees happiness, as long as his evil deed does not ripen. But when it bears fruit, then he sees the evil results.

P 100 (XXVIII, 19)

P 63 V 119

རི་སྤྱོད་སྤྱིག་པ་སྤྱོན་པ། ।

དེ་སྤྱོད་སྤྱིག་པ་ཅུང་བར་ལྷ། ।

གང་ཆོ་སྤྱིག་པ་སྤྱོན་གྱུར་བ། ।

དེ་ཆོ་སྤྱིག་པ་མགྲོང་བར་འགྱུར། ।

1 ཁྱེད་པོ་སྤྱོད་ཆེན་པོ་སྐྱོན་མེད་ཟས་སྐྱོན་ལའོ་ ཅུང་ཅུ་ནས་ཁྱེད་ཀྱི་ཆོ་པོར་
གྱུར་དེ་ སྤྱོད་ཆེན་པོ་སྐྱོན་མེད་དཔྱད་པོ་མང་པོར་གྱོས་ཟས་སྐྱོན་གྱིས་ཆོས་པར་
ཤེད་པས་ན་ མིང་སྤྱོད་ཆེན་པོ་སྐྱོན་ཏུ་བདག་སོ།

भद्रोऽपि पश्यति पापं, यावद् भद्रं न पच्यति ।
यदा च पच्यति भद्रं, अथ भद्रो भद्रानि पश्यति ॥५॥

भद्रोऽपि पश्यति पापं यावद् भद्रं न पच्यते ।
यदा च पच्यते भद्रं अथ भद्राणि पश्यति ॥

ཇི་སྲིད་བཟང་པོ་སྒྲིན་གྱི་བར། ।
བཟང་པོ་ཡིན་ཡང་སྲིན་གྱི་བར་མཐོང་། ।
གང་ཆོ་བཟང་པོ་སྒྲིན་གྱུར་བ། ।
དེ་ནས་བཟང་པོ་ནམས་མཐོང་བར་འགྱུར། ।

भद्र (पुण्य करने वाला पुरुष) भी तब तक पाप को देखता है, जब तक कि पुण्य का विपाक नहीं होने लगता; जब पुण्य का विपाक होने लगता है, तो पुण्यों को देखने लगता है ।

Even a good person sees evil until his good deeds ripen.
But when they bear fruit, then he sees the happy results.

P 100 (XXVIII, 20)

P 64 V 120

ཇི་སྲིད་བཟང་པོ་སྒྲིན་གྱི་བར། ।
དེ་སྲིད་བཟང་པོ་སྲིན་གྱི་བར་མཐོང་། ।
གང་ཆོ་བཟང་པོ་སྒྲིན་གྱུར་བ། ।
དེ་ཆོ་བཟང་པོར་མཐོང་བར་འགྱུར། ।

माप्यमञ्ज्रेथ पापस्स, न मन्तं आगमिस्सति ।
 उदविन्दुनिपातेन, उदकुम्भो पि पूरति ।
 बालो पूरति पापस्स, थोकथोकम्पि आचिनं ॥६॥

जैलवन

असंयमी (भिक्षु)

माऽवमन्येत् पापं न मां तद् आगमिष्यति ।
 उदविन्दुनिपातेन उदकुम्भोऽपि पूर्यते ।
 बालः पूरयति पापं स्तोकं स्तोकमप्याचिन्वन् ॥

བདག་ལ་དེ་ཡིས་ཅི་གནོད་ཅེས། ।

ཐྱིག་པ་ལ་ནི་བརྒྱུ་མི་བྱ། ।

ཅུ་ཡི་ཐྱིག་པ་བབས་པ་ཡིས། ।

ཅུ་བྱས་ནི་ད་ཀྱང་གང་བར་འགྱུར། ।

ཅུང་ཟད་ཅུང་ཟད་བསགས་པ་ཡིས། ।

སྒྲུབ་པོ་ཐྱིག་པས་གང་བར་འགྱུར། ।

“वह मेरे पास नहीं आएगा” ऐसा (सोच) पाप की अवहेलना न करे ।
 पानी की बूंद के गिरने से घड़ा भर जाता है (ऐसे ही) मूर्ख थोड़ा थोड़ा संचय
 करते पाप को भर लेता है ।

“Think not lightly of evil, saying “Misfortune will not come to me.” Even as a water-jar is filled by the falling of drips, so the fool gathering little by little, fills himself with evil.

P 5 (XVII, 5)

P 64 V 121

ཐྱིག་པ་ཅུང་བྱས་བདག་ནི་ད་ཀྱི། ।

ཐྱི་བཞིན་མི་འོང་མ་སེམས་ཐྱིག། ।

ཅུ་ཡི་ཐྱིག་པ་ཅུང་བ་ཡིས། ।

བྱས་ཆེན་གང་བ་ཇི་བཞིན་དུ། ।

ཅུང་ཟད་ཅུང་ཟད་བསགས་པ་ཡི། ।

དགེ་བས་བརྒྱུ་པ་གང་བར་འགྱུར། ।

माप्पमञ्जेथ पुञ्जस्स, न मन्तं आगमिस्सति ।

उदबिन्दुनिपातेन, उदकुम्भोऽपि पूरति ।

धीरो पूरति पुञ्जस्स, थोकथोकम्पि आचिनं ॥७॥

जेतवन

विलालपाद (सेठ)

माऽवमन्येत पुण्यं न मां तद् आगमिष्याति ।

उदविन्दुनिशतेन उदकुम्भोऽपि पूर्यते ।

धोरः पूरयतिपुण्यं स्तोकं स्तोकमप्य।चिन्वन् ॥

བདག་ལ་དེ་ཡིས་ཅི་ཡན་ཞེས།

བསོད་ནམས་ལ་ནི་དུས་མི་ཏུ།

ཆུ་ཡི་ཐྱིག་བ་འབབ་བ་ཡིས།

ཆུ་བུམ་ཉིད་ཀྱང་གང་པར་འགྱུར།

ཅུང་ཟད་ཅུང་ཟད་བསགས་བ་ཡིས།

མཁས་བས་བསོད་ནམས་རྫོགས་པར་འགྱུར།

“वह मेरे पास नहीं आएगा”—ऐसा (सोच) पुण्य की अवहेलना न करे। पानी की बंद गिरने से घड़ा भर जाता है। धीरे थोड़ा थोड़ा पुण्य संचय कर पात्र भर लेता है।

Think not lightly of good, saying "The benefit will not come to me." Even as a water-jar is filled by the falling of drips, so the wise man gathering little by little, fills himself with good.

P 57 (XVII, 6)

P 65 V 122

དགེ་བ་ལྷུང་བྱས་པ་དག་ཉིད་ཀྱི།

ཕྱི་བཞེན་མི་འོང་མ་སེམས་ཤིག།

ཐུ་ཡི་ཕྱིག་བ་རྩུང་བ་ཡིས།

ལྷན་ཆེན་གང་པོ་འཛིན་པའི་དུ།

ཅུང་ཟད་ཅུང་ཟད་བསགས་བ་ཡི། །

དགེ་བས་བདུན་པ་གང་པར་འགྱུར། །

वाणिजो व भयं मगं, अप्सत्थो महद्धनो ।

विसं जीवितुकामो व, पापानि परिवज्जये ॥८॥

जेतवन

महाधान (सेठ)

वाणिजोव भयं मार्गं अल्पसार्थो महाधनः ।

विषं जीवितुकाम इव पापानि परिवर्जयेत् ॥

गुणं भेदं कथं तु क्खं वदाम् ।

क्खं केव क्खं वदाम् गुणं भेदं ।

अद्विगलं वदं अद्विगलं वदं ।

अद्विगलं वदं अद्विगलं वदं ।

अद्विगलं वदं अद्विगलं वदं ।

थोडे काफिले और महाधनवाला बनजारा जैसे भययुक्त रास्ते को छोड़ देता है, (अथवा) जीने की इच्छावाला पुरुष जैसे विष को (छोड़ देता है) ! वैसे ही (पुरुष) पापों को छोड़ देता है ।

Just as a merchant with a small escort and great wealth avoids a perilous way, or just as one desiring to live avoids poison, even so should one shun evil.

P 99 (XXVIII, 14)

P 65 V 123

क्खं केव क्खं वदाम् गुणं भेदं ।

क्खं वदं अद्विगलं वदं अद्विगलं ।

अद्विगलं वदं अद्विगलं वदं ।

अद्विगलं वदं अद्विगलं वदं ।

पाणिम्हि चे वणो नास्स, हरेय्य पाणिना विसं ।

नाब्बणं विसमन्वेति, नत्थि पापं अकुब्बता ॥६॥

वेणुवन

कुवकुटमित्त

पाणौ चेद व्रणो न स्याद हस्ते पाणिना विषम् ।

नाऽव्रण विषमन्वेति, नास्ति पाप अकुर्वतः ॥

འོད་མ་དེ་ཚལ་དུ་འོ།

ལག་པ་མ་དང་མི་ཐུན་ལ།

དུག་ནི་ལག་བས་འཛིན་དུ་རྒྱང་།

མ་མེད་བ་ལ་དྲག་མི་འཇུག།

མ་ཡུལ་པ་ལྟོ་ལ་མེད།

यदि हाथ में घाव न हो, तो हाथ से विष को लेले (क्योंकि) घाव (= व्रण) -रहित (शरीर में) विष नहीं लगता; (इसी प्रकार) न करनेवाले को पाप नहीं लगता ।

If there is no wound in the hand, one may carry poison in it. Poison does not affect one who is free from wounds. No evil befalls him who does no evil.

P 99 (XXVIII, 15)

P 66 V 124

གཤམ་དེ་ལག་མཐོལ་སྤྲོ་མེད་ན།

ལག་ལས་དྲག་མི་བཟུང་བུས་གུང་། །

མ་མེད་དུག་ནི་མི་འཇོམ་ལྟར།

མ་ཁྱེ་ལ་ལྟོག་པ་མེད།

यो अप्यदुष्टस्त नरस्त दुस्तति,
 सुद्धस्त पोसस्त अनङ्गणस्त ।
 तमेव बालं पच्चेति पापं,
 सुखुमो रजो पटिवातं व खित्तो ॥१०॥

जेनवन

कोक (कुत्ते का शिकारी)

योऽल्पदृष्टाय नरान दुष्यति
 शुद्धाय पुरुषायाऽनङ्गणाय ।
 तमेव बालं प्रत्येति पापं, सूक्ष्मो
 रजः प्रतिवातमिव क्षिप्तम् ॥

ཐུམ་བྱེད་ཚལ་རྩེ།

ཆལ་དག་བསྐྱད་ཀ་མེད་བའི་སྒྲིམ་བྱ་དང་། །
 ཉེས་ཐུང་མེ་ལ་སྤུ་ཡིས་གཞོན་བྱས་པ། །
 རྩི་ཕྱོགས་ཡོག་སྟེ་རྩལ་རྩལ་གདོང་བ་བཞིན། །
 རྩལ་པོ་རང་གིས་རྩིག་དེ་སྤྲུང་འཕྱོང་འགྱུར། །

जो दोषरहित पुरु निर्मल पुरुष को दोग लगाता है, उसी अश को (उसका)
 पाप लोटकर लगता है, (जैसे कि) सूक्ष्म धूलि को हवा के आने के रुख फेंकने से
 (वह फेंकने वाले पर पड़ती है) ।

Whoever offends a harmless man, pure and faultless,
 upon that very fool the evil recoils, like fine dust thrown
 against the wind.

P 98 (XXVIII, 9)

P 66 V 125

གང་ཞིག་སྒྲིམ་དགྱ་དག་ཅིང་ཉོན་མོངས་མེད། །
 རབ་རྩུ་སྤང་མེད་མི་ལ་བློ་བྱེད་བའི། །
 བྱིས་བ་དེ་ལ་རྩིག་བ་ཕྱིར་འགྱོ་སྟེ། །
 རྩི་ཕྱོགས་སུ་ནི་རྩལ་རྩལ་གདོང་བ་བཞིན། །

गर्भमेके उत्पज्जन्ति, निरयं पापकम्मिनो ।

सगं सुगतिनो यन्ति, परिनिव्वन्ति अनासवा ॥११॥

जैतवन

(माणिकार कुलूपग) तिसस (थेर)

गर्भमेक उत्पज्जन्ते, निरयं पापकम्मिणः ।

स्वगं सुगतयो यान्ति, परिनिवर्तन्त्यनासवाः ॥

སྐར་རྒྱལ་ཡོད།

ཁ་ཅིག་མངལ་དུ་སྐྱེ་བར་འགྱུར། །

སྤྱིག་བའི་ལས་ཅན་དཔྱལ་བར་སྐྱེ། །

ལྷག་ས་བར་བྱེད་རྣམས་མགོ་རིས་བགོད། །

རྒྱལ་བ་ཟད་བ་སྤྱི་ངན་འདྲ། །

कोई (पुरुष) गर्भ में उत्पन्न होता है, (कोई) पाप कर्मा नरक में (जाते हैं)
कोई (सुगतिवाले पुरुष) स्वर्ग को जाते है; (और क्षित के) मलो से रहित
(पुरुष) निर्वाण को प्राप्त होते हैं ।

Some are born in a womb (i. e. into this world), the
wicked are born in hell, the pious go to heaven and these free
of the corrupting taints pass into Nirvana.

P 4 (I, 22)

P 67 V 126

སྤྱིག་བའི་ལས་ཀྱི་དཔྱལ་བ་དང་། །

བསྐྱེད་རྣམས་བྱས་པས་བདེ་འགྲོ་སྤྱི། །

ལྷན་དག་གིས་ནི་ལས་བསྐྱེད་པས། །

རྒྱལ་མེད་སྤྱི་ངན་འདྲས་བར་འགྱུར། །

न अन्तलिक्खे न समुद्दमज्जे,
 न पब्बतानं विवरं पविस्स ।
 न विज्जती सो जगतिप्पदेसा,
 यत्थद्वितो मुच्चेय्य पापकम्मा ॥१२॥

जैतवन

तीन भिक्षु

नान्तरिक्षे न समुद्रमध्ये
 न पर्वतानां विवरं प्रविश्य ।
 न विद्यते स जगति प्रदेशो
 यत्रस्थितो मुच्येत पापकर्मणः ॥

དག་སྐྱོང་གསུམ་ལོ།

གང་དུ་སྒྲིག་བའི་མས་ཀྱིས་མི་རྒྱགས་བའི། ।
 ས་ཕྱོགས་དེ་ནི་ཡོད་བ་ས་ཡིན་དེ། ।
 བར་སྒྲང་ལ་མེད་ཀྱི་མཆོད་དབུས་སུ་མེད། ।
 རི་བོ་ནི་སུམ་དང་བྲག་གི་ཁོངས་སུ་མེད། ।

न आकाश में न समुद्र के मध्य में न पर्वतों के विवर में प्रवेश कर—संतार
 में कोई स्थान नहीं है जहाँ रहकर—पाप कर्मों के (फल से) (प्राणी) बच सके ।

Neither in the sky, nor in mid-ocean, nor by entering a
 mountain cave, is found that place on earth where, by alighting,
 one may escape (the consequences of) an evil deed.

P 33 (IX, 5)

P 67 V 127

གང་དུ་གནས་ན་ལས་ཀྱི་མི་རྒྱགས་བའི། ।
 ས་ཕྱོགས་དེ་ནི་ཡོད་བ་ས་ཡིན་དེ། ।
 བར་སྒྲང་ལ་མེད་ཀྱི་མཆོད་དེ་ན་མེད། ।
 རི་བོ་ནས་ས་ཀྱི་ལ་མེད་དུ་བྱགས་ཀྱང་མིན། ।

न अन्तलिङ्गखे न समुद्गमज्ज्ञे,
न पञ्चतानं त्रिवरं पविस्स ।
न विज्जती सो जगतिप्पदेसो,
यत्थद्वितं नप्पसहेय्यमच्चु ॥१३॥

सुप्पबुद्ध (शाक्य)

नान्तरिक्षे न समुद्रमध्ये
न पर्वतानां विवरं प्रदिश्य ।
न विद्यते स जगति प्रदेशो
यत्रस्थितं न प्रसहेत मृत्युः ॥

ཉ་གྲ་རྒྱུད་དགོན་བར་ཡེགས་བར་རབ་སང་ལཱོ།
གང་དུ་གནས་ན་འཆི་བས་མི་ཚུགས་བའི།
ས་ཕྱོགས་དེ་ནི་ཡོད་བ་མ་ཡིན་དེ།
བར་སྤང་ལ་མེད་ཀྱང་མཚོའི་དབུས་སུ་མེད།
རི་བོའི་སྐལ་དང་བྲག་གི་ཁོངས་སུ་མེད།

མཆོག་པ་མཆོག་མཆོག་། བེའུ་དགུ་པའོ།

न आकाश में न समुद्र के मध्य में न पर्वतों के विवर में प्रवेश कर—संसार में कोई स्थान नहीं है जहाँ रहने वाले को मृत्यु न सतावे ।

Neither in the sky, nor in mid-ocean, nor by entering a mountain cave, is found that place on earth where, by abiding, one will not be overcome by death.

P 68 V 128

གང་དུ་གནས་ན་འཆི་བས་མི་ཚུགས་པའི། །
ས་ཕྱོགས་དེ་ནི་ཡོད་པ་ས་ཡིན་དེ། །
བར་སྐྱེ་ལ་མེད་ཀྱི་མཆོའི་ནང་ན་མེད། །
དེ་ཐོན་ས་ཀྱི་གསེབ་དུ་ཚུགས་ནའང་མེད། །

१०—दण्डवगगो

सब्बे तसन्ति दण्डस्स, सब्बे भायन्ति मच्चुनो ।

अत्तानं उपमं कत्वा, न हनेय्य न घातये ॥१॥

जेतवन

सुवर्गिय (भिक्षु)

सर्वे त्रस्यन्ति दण्डात् सर्वे विभ्यति मृत्बोः ।

अरत्मानं उपमां कृत्वा न हस्यात् न घातयेत् ॥

ཕྱིར་ཕྱོད་ཅིང་དུ་དྲན་པ་སྟེ་ལ་གསུང་པ་ལ།

ཅད་བ་ལ་ནི་ཐམས་ཅད་སྒྲུག

འཆི་བ་ལ་ནི་ཐམས་ཅད་འཇིགས།

རང་ཉིད་ལ་ནི་དཔེ་ཡོངས་ལ།

བདེག་བར་མ་ཕྱེད་གསལ་མ་ཕྱེད།

दण्ड से सभी डरते हैं, मृत्यु से सभी भीत होते हैं, अपने समान (इन बातों को) जानकर न मारे न मारने की प्रेरणा करे ।

All beings tremble at punishment, all fear death, Likening others to oneself, one should neither kill nor cause to kill

सब्बे तसन्ति दण्डस्स, सब्बेसं जीवितं पियं ।

अत्तानं उपमं कत्वा, न हनेय्य न घातये ॥२॥

जेतवन

षट्वर्गीय (भिक्षु)

सर्वं त्रस्यन्ति दण्डात् सर्वेषां जीवितं प्रियम् ।

आत्मानं उपमां कृत्वा न हन्यात् न घातयेत् ॥

ཆད་པ་ལ་ནི་ཐམས་ཅད་སྐྱུག།

གསོན་པ་ལ་ནི་ཐམས་ཅད་དགའ།།

རང་ཉིད་ལ་ནི་དབང་པོས་ལ།།

བདེག་པར་སྤྱད་པ་སོད་མ་བྱེད།།

सभी दण्ड से डरते हैं, सबको जीवन प्रिय है, (इसे) अपने समान जानकर न मारे न मारने की प्रेरणा करे ।

All beings tremble at punishment, to all life is dear. Likening others to oneself, one should neither kill nor cause to kill.

P 23 (V, 19)

P 69 V 130

ཐམས་ཅད་ལ་ཡང་སྐྱོག་ནི་སྐྱུག།

ཐམས་ཅད་ཆད་པས་འཛིགས་བས་ན།།

རང་གི་ཉམས་ལ་དབང་གྱིས་དེ།།

བདེག་པར་སྤྱད་པས་དམིགས་བྱ།།

1. གང་ཟག་ རྒྱལ་སྤེར་གྲགས་པ་ནི་ འཆར་ཀྱང་། དགའ་བོ།

ཉིད་གའ། འདྲན་པ། འགྲོ་མཁུགས། བསམ་སོ་ནམས་ཡིན་ལ།

དེ་དག་ནི་ཉིད་ལྟར་པན་ཚུན་བཅེ་བར་འགྲོགས་ཡིང་ རྒྱལ་བྱེད་ཆལ་

གྱི་སྒོ་རེ་སོས་བསྐྱར་སྤྱོད་སྤོང་བར་སྤེལ་བར། རྒྱུང་ཁྱེར་ཆེན་པོ་

རྒྱལ་བོ་ཉི་བྱ་དང་བྱ་སོ་ཉི་རིགས་རྩས་དང་སྤང་ཤེས་པ། རྩེ་རྩོད་

གསུམ་རིག་ཅིང་གྲོལ་བར་སྐྱོབ་པ་དག་ཡིན་པར་གསུངས་སོ།།

सुखकामानि भूतानि, यो दण्डेन विहिंसति ।

अतनो सुखमेसानो, पेच्च सो न लभते सुखं ॥३॥

जेलवन

बहुत से लड़के

सुखकामानि भूतानि यो दण्डेन न विहिनस्ति ।

आत्मनः सुखमन्विष्य प्रेत्य स न लभते सुखम् ॥

རང་གི་བདེ་བ་བཅའ་ནས་མི། ।

བདེ་བ་འདོད་པའི་མི་ནམས་ལ། ।

ཆད་པ་གཅོད་པར་བྱེད་པ་དེ། ।

སྤྱི་མར་བདེ་བ་འཐོབ་མི་འགྱུར། ।

सुख चाहने वाले प्राणियों को, अपने सुख की चाह से जो दूसरों को
इण्ड देता है, वह मरकर सुख नहीं पाता ।

When he who seeks his own happiness inflicts pain
(literally "strikes with a stick") on beings who (like himself)
are desirous of happiness, he does not obtain happiness
after death.

P 113 (XXX, 3)

P 70 V 131

བད་བ་འདོད་སྤྱིར་འབྱུང་པོ་ལ། ।

གང་ཞིག་འཆེ་ཞིང་ཆད་པས་གཅོད། ।

བདག་གི་བདེ་བ་འདོད་པ་དེ། ।

མ་རྗེས་དུ་མི་བདེ་མི་འགྱུར། ।

सुखकामानि भूतानि, यो दण्डेन न हिंसति ।
अत्तनो सुखमेसानो, पेच्च सो लभते सुखं ॥४॥

सुखकामानि भूतानि यो दण्डेन न हिंसति ।
आत्मनः सुखमन्विष्य प्रेत्य स लभते सुखम् ॥

རང་གི་བདེ་བ་བཅའ་ནས་ཀྱང་། །
བདེ་བ་འདོད་བའི་མི་ནྟམས་ལ། །
ཆད་བ་གཅོད་བར་མི་བྱེད་ན། །
ཕྱི་སར་བདེ་བ་འཕྲོབ་བར་འགྱུར། །

सुख चाहने वाले प्राणियों को, अपने सुख की चाह से जो दण्ड से नहीं मारता, वह मरकर सुख को प्राप्त होता है ।

When he who seeks his own happiness does not inflict pain ("strike with a stick") on beings who (like himself) are desirous of happiness, he obtains happiness after death.

P 113 (XXX, 4)

P 70 V 132

གང་ཞིག་བདེ་བ་འདོད་པ་དག །
འགྱུར་བོ་ལ་ནི་མི་འཆོ་ཞིང་། །
ཆད་བས་མི་གཅོད་བདེ་འདོད་པ། །
དེ་དག་པ་རྒྱལ་བདེ་བ་ཐོབ། །

मावोच परुषं कञ्चि, वृत्ता पटिवदेयु तं ।
दुःखा हि सारम्भकथा, पटिदण्डा फुसेय्यु तं ॥५॥

जेतवन

कुण्डवान (थेर)

मा वोचः परुषं किञ्चिद् उक्ताः प्रति वदेयुस्त्वाम् ।
दुःखा हि संरम्भकथाः प्रतिदण्डाः स्पशेयुस्त्वाम् ॥

ཀྱམ་བྱེད་ཚལ་དུའོ།

ཆོག་རྩལ་ཅི་ཡང་སྒྲ་མི་བྱ། །

ཁྱོད་ལ་སྒྲས་བའི་ལན་སྒྲོན་འགྱུར། །

ཁ་འབྲུལ་གདམ་ནི་སྒྲག་བསྐལ་ཉིད། །

ཁྱོད་ལ་དབྱག་བ་སྒྲར་རེག་འགྱུར། །

कठोर बचन न बोलो; बोलने पर (दूसरे भी वैसे ही) तुम्हें बोलेंगे,
दुर्वचन दुःखदायक (होते हैं), (बोलने से) बदले में तुम्हें दण्ड मिलेगा ।

Do not speak harshly to anyone. Those who are spoken to will answer you (in the same way). Since angry words are painful, retaliation will touch you.

P 86 (XXVI, 3)

P 71 V 133

ཆོག་རྩལ་ཅི་ཡང་སྒྲ་མི་བྱ། །

སྒྲས་ན་སྒྲར་ཡང་སྒྲ་བར་བྱེད། །

འཕྲུལ་གཏུགས་ཆོག་གིས་སྒྲག་བསྐལ་ཞིང་། །

དེ་ལ་བྱིར་ཡང་ཆད་བས་གཅོད། །

सचे नेरेसि अत्तानं, कंसो उपहतो यथा ।

एस पत्तोसि निब्बानं, सारम्भो ते न विज्जति ॥६॥

स चेत् नेरयमि आत्मानं कांस्यमुपहतं यथा ।

एष प्राप्तोऽसि निर्वाणं संरम्भस्ते न विद्यते ॥

देवदेवस्य चरितं प्रसन्नं च वै ।

सर्वेषां तेषां च सर्वेषां च ।

सर्वेषां च सर्वेषां च सर्वेषां च ।

सर्वेषां च सर्वेषां च सर्वेषां च ।

टूटा काँसा जैसे निःशब्द रहता है, (वैसे) यदि तुम अपने को (निःशब्द रखो), तो तुमने निर्वाण को पा लिया, तुम्हारे लिए कलह (= हिंसा) नहीं रही ।

If you silence yourself like a broken gong, you will have attained Nirvana, for there will be no strife in you.

P 86 (XXVI, 5)

P 71 V 134

सर्वेषां च सर्वेषां च सर्वेषां च ।

सर्वेषां च सर्वेषां च सर्वेषां च ।

सर्वेषां च सर्वेषां च सर्वेषां च ।

सर्वेषां च सर्वेषां च सर्वेषां च ।

यथा दण्डेन गोपालो, गात्रो पाजेति गोचरं ।

एवं जरा च मच्चु च, आयुं पाजेन्ति पाणिनं ॥७॥

आवस्ती (पूर्वाराम)

बिशाखा आदि (उपासिकार्ये)

यथा दण्डेन गोपालो गाः प्राजयति गोचरम् ।

एवं जरा च मृत्युश्चायुः प्राजयतः प्राणिनाम् ॥

एवं गुणसंस्तुतं च ।

हैः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः ।

पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः ।

हैः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः ।

हैः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः ।

जैसे ग्वाला लाठी से गाओं को चरागाह में ले जाता है; वैसे ही बुढ़ापा और मृत्यु प्राणियों की आयु को ले जाते हैं ।

As with a staff a cowherd drives his cattle to pasture, even so do death and decay compel the lives of beings.

P 3 (I, 15)

P 72 V 135

हैः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः ।

पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः ।

हैः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः ।

हैः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः ।

अथ पापानि कर्मानि, करं बालो न बुज्झति ।

सेहि कम्मेहि दुम्मेघो, अग्निदङ्घो व तप्पति ॥८॥

राजगृह (वेणुवन)

अजगर (प्रेत)

अथ पापानि कर्माणि कुर्वन् बालो न बुध्यते ।

स्वैः कर्मभिः दुर्मेघा अग्निदग्ध इव तप्यते ॥

देहं सरेः कथं नु यं नृणां यत् ।

देहं गृहं श्रेयं च देहं यत् नृणां च ।

श्रेयं च नृणां च श्रेयं च नृणां च ।

श्रेयं च नृणां च श्रेयं च नृणां च ।

श्रेयं च नृणां च श्रेयं च नृणां च ।

पाप कर्म करते समय मूढ़ (पुरुष उसे) नहीं बूझता, पीछे दुर्बुद्धि अपने ही कर्मों के कारण आग से जले की भाँति अनुताप करता है ।

When a fool does wicked deeds he does not realise (their evil nature). By his own deeds the stupid man is consumed, as if being burnt with fire.

P 33 (IX, 11)

P 72 V 136

नृणां च नृणां च नृणां च नृणां च ।

श्रेयं च नृणां च श्रेयं च नृणां च ।

नृणां च नृणां च नृणां च नृणां च ।

नृणां च नृणां च नृणां च नृणां च ।

नृणां च नृणां च नृणां च नृणां च ।

नृणां च नृणां च नृणां च नृणां च ।

यो दण्डेन अदण्डेसु, अप्यदुट्ठेसु दुस्सति ।

दसन्नमञ्जतरं ठानं, सिप्पमेव निगच्छति ॥६॥

राजगृह (वेणुक)

महामोग्गलान (थेर)

यो दण्डेनादण्डेण्वप्रदुष्टेषु दुप्पति ।

दशानामन्यतमं स्थानं क्षिप्रमेव निगच्छति ॥

येन सदे कल्लं (सक्खिणायकं पदं)

पादं पौसं कदं व स देसं वदे ।

तेसं सदे कदं वसं पाठेनं पुनं व ।

पादसं सवसं वहुं पौ पादं पुनं व ।

देसं वरं सुनं पुनं पौ व स्रे ।

जो दण्डरहितों के दण्ड से (पीड़ित करता है), निर्दोषों को दोष लगाता है, वह शीघ्र ही इन स्थानों में से एक को प्राप्त होता है ।

He who inflicts punishments on those who do not deserve it and offends those who are harmless will soon come to one of these ten states.

P 101 (XXVIII, 26)

P 73 V 137-140

पादं पौसं तेसं सदे कदं वसं पाठेनं ।

पादं व सदे कदं वसं पाठेनं ।

पादसं सवसं पादं पादं पुनं व वहुं ।

पुनं पुनं पौ व स्रे कदं व स्रे ।

1. सक्खिणायकं (सक्खिणायकं पुनं कदेनं) के सक्खिणायकं पुनं कदेनं व स्रे कदं व स्रे ।

वेदनं फरुसं जानि, शरीरस्य च भेदनं ।

मरुतं वापि आब्राधं, चित्तविक्षेपं वा पापुणे ॥१०॥

वेदनां परुषां ज्यानि शरीरस्य च भेदनम् ।

मुरुतं वाऽप्याब्राधं चित्तक्षेपं वा प्राप्नुयात् ॥

हुव.सं.दं.कै.सं.सं.दं.कै.सं.दं. । ।

सुस.कै.सं.सु.सं.दं.सं.दं. । ।

सु.सं.सं.कै.सं.सं.सु.सं.दं.सं.दं. । ।

सं.सं.सं.कै.सं.सं.सु.सं.सु.सं.दं.सं.दं. । ।

कड़वी वेदना, हानि, अग का भंग होना, भारी बीमारी, (या) चित्तविक्षेप
(पगल) को प्राप्त होता है ।

He will incur acute pain, disaster, bodily injury, or even
grievous sickness, or loss of mind.

P 101 (XXVIII, 26)

P 73 V 138

कै.सं.सं.सं.सं.सं.सं.सं. । ।

सु.सं.सं.सं.सं.सं.सं.सं. । ।

सं.सं.सं.सं.सं.सं.सं.सं. । ।

सु.सं.सं.सं.सं.सं.सं.सं. । ।

राजतो वा उपसर्गं, अन्मक्खानं च दाहणं ।
परिक्खयं च ज्ञातीनं, भोगानं च पभञ्जुरं ॥११॥

राजतो कोपसर्गमभ्याख्यातं वा दाहणम् ।
परिजयं वा ज्ञातीनां भोगानां वा प्रभञ्जनम् ॥

क्रुपं वो णि स के ण स ए दं ॥ १
ए दं णं स ए दं वा वो णे ॥ १
वा णे णं स ए दं स ए दं दं दं दं दं दं ॥
ए दं स ए दं दं दं दं दं दं दं दं ॥

या राजा से दण्ड को (प्राप्ता होता है), दाहण निन्दा, जाति बंधुओं का विनाश, भोगों का क्षय,

Or oppression by the king, or a fearful accusation, or loss of relatives, or the destruction of wealth,

P 101 (XXVIII, 26)

P 73 V 139

वा णे णं स ए दं दं दं दं दं दं दं ॥
ए दं स ए दं दं दं दं दं दं दं दं ॥
क्रुपं वो णे स ए दं दं दं दं दं दं ॥
स ए दं स ए दं दं दं दं दं दं दं ॥

अथवास्त अगारानि, अग्निं दहति पावको ।
कायस्त भेद्य दुष्पञ्चो, निरयं सोपपज्जति ॥१२॥

अथवाऽऽवागाराग्निरदहति पावकः ।
कायस्य भेदात् दुष्पञ्चो निरयं स उपपद्यते ॥

देवदेवः पद्मः पद्मः पद्मः पद्मः ।
मेदेवः पद्मः पद्मः पद्मः पद्मः ।
मेदेवः पद्मः पद्मः पद्मः पद्मः ।
देवदेवः पद्मः पद्मः पद्मः पद्मः ।

अथवा उसके घर को अग्नि = पावक जलाता है; कय्या छोड़ने पर वह दुर्बुद्धि नरक में उत्पन्न होता है ।

Or a ravaging fire will burn his house. Upon the dissolution of the body this unwise man will be born in hell.

P 101 (XXVIII, 26)

P 73 V 140

पद्मः पद्मः पद्मः पद्मः पद्मः ।
देवः पद्मः पद्मः पद्मः पद्मः ।
मेदेवः पद्मः पद्मः पद्मः पद्मः ।
देवदेवः पद्मः पद्मः पद्मः पद्मः ।

न नगचरिया न जटा न पङ्का,
 नानासका थण्डिलसायिका वा ।
 रजोजल्लं उक्कुटिकप्पघानं,
 सोधेन्ति मच्चं अवितिण्णकङ्खं ॥१३॥

जैतवन

बहुमस्तिक (मिश्र)

न नगचर्या न जटा न पङ्कं
 नाऽनशनं स्थण्डिलशायिका वा ।
 रजोजलीयं उत्कुटिकप्रघानं
 शोधयन्ति मर्त्यं अवितीर्णकिंक्षम् ॥

कुपुं सुदं ठवुं ५० ।

गठेन सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं ।

सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं ।

सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं ।

सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं ।

जिस पुरुष की आकांक्षाएँ समाप्त नहीं हो गई, उस मनुष्य की शुद्धि, न नंगे रहने से, न जटा से, न पङ्क (लपेटने) से, न फाका (= उपवास) करने से, न कड़ी भूमि पर सोने से, न घूल लपेटने से, न उकड़ू बैठने से होती है ।

Neither wandering naked, nor matted hair, nor filth, (bedaubing body with mud), nor fasting, nor lying on the ground, nor dust and dirt (rubbing the body with ashes), nor squatting on the heels, can purify a mortal who has not overcome desire.

P 143 (XXXIII, 2)

P 74 V 141

गठेन सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं ।

सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं ।

सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं ।

सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं ।

अलङ्कृतो चे अपि समं चरेय्य,
 सन्तो दन्तो नियतो ब्रह्मचारी ।
 सन्नेषु भूतेषु निधाय दण्डं,
 सो ब्राह्मणो सो समणो स भिक्षु ॥१४॥

जैतवन

सन्तति (महाभाष्य)

अलङ्कृतश्चेदपि शर्मं चरेत्
 शान्तो दान्तो नियतो ब्रह्मचारी ।
 सर्वेषु भूतेषु निधाय दण्डं
 स ब्राह्मणः स श्रमणः स भिक्षुः ॥

शुभं शुभं वशुभं वरं वृषं वृषं कृषं कृषं सुदं सुदं ।
 देवः देवः अरं देवः सुदं देवः कृषं वरं सुदं ।
 अरुदं वरं वृषं वरं कृषं वरं सुदं वरं दे ।
 देवः सुदं देवः सुदं देवः अरं वरं सुदं दे ।

अलङ्कृत रहते भी यदि वह शान्त, दान्त, नियमतरपर, ब्रह्मचारी सारे प्राणियों के प्रति दण्डत्यागी है, तो वही ब्राह्मण है, वही श्रमण (=संन्यासी) वही भिक्षु है ।

Even though he be adorned (with fine clothes etc), if he should live according to the Dharma, refined, controlled, celibate, and has ceased from injuring all other beings, then he indeed is a Brahman, an ascetic, a monk.

P 143 (XXXIII 1)

P 75 V 142

शुभं शुभं वशुभं वरं वृषं वृषं कृषं कृषं सुदं सुदं ।
 देवः देवः अरं देवः सुदं देवः कृषं वरं सुदं ।
 अरुदं वरं वृषं वरं कृषं वरं सुदं वरं दे ।
 देवः सुदं देवः सुदं देवः अरं वरं सुदं दे ।

हिरोनिसेधो पुरिसो, कोचि लाकेस्मि विज्जति ।

यो निन्दं अपबोधेति, अस्सो भद्रो कसामिव ॥१५॥

जेतवन्

विलोतिक (येर)

हीनिषेधः पुरुषः कश्चित् लोके विद्यते ।

यो निन्दां न प्रबुध्यति अश्वो भद्रः कसामिव ॥

मादं विना दं वज्जं वुवसां व विना ।

सुदं वरं व दं व विना व ।

दं व व व व व व व व ।

दं व व व व व व व व ।

लोक में कोई पुरुष होते हैं; जो (अपने ही) लज्जां करके निषिद्ध (कर्म) को नहीं करते, जैसे उत्तम घोड़ा कोड़े को नहीं सह सकता, वैसे ही वह निन्दा को नहीं सह सकते ।

Is there in the world any man so restrained by conscience that he avoids censure as a well-trained horse avoids the whip ?

P 63 (XIX, 2)

P 76 V 143

दं व व व व व व व व ।

सुदं वरं व दं व विना व ।

दं व व व व व व व व ।

दं व व व व व व व व ।

दं व व व व व व व व ।

दं व व व व व व व व ।

उदकं हि नयन्ति नेत्तिका,
 उसुकारा नमयन्ति तेजनं ।
 दाहं नमयन्ति तच्छका,
 भत्तानं दमयन्ति सुब्बता ॥१७॥

उदकं हि नयन्ति नेतृकाः, इषुकारा नमयन्ति तेजनम् ।
 दाहं नमयन्ति तक्षका आत्मानं दमयन्ति सुव्रताः ॥

धुवः वः सपन्नः प्रियः कृत्वा देवः ।

सदः सपन्नः कृत्वा देवः कृत्वा देवः ।

प्रियः सपन्नः कृत्वा देवः प्रियः देवः ।

सदः सपन्नः कृत्वा देवः सदः देवः ।

कृत्वा देवः कृत्वा देवः ।

कृत्वा देवः कृत्वा देवः ॥

नहरवाले पानी ले जाते हैं, बाण बनाने वाले बाण को ठीक करते हैं,
 बड़ई लकड़ी को ठीक करते हैं, सुन्दर व्रतवाले अपने को दमन करते हैं ।

Irrigators lead the waters, fletchers fashion the arrow shafts, carpenters bend the wood, and the wise control themselves.

११—जरावग्गो

को नु हासो किमानन्दो, निच्चं पज्जलिते सति ।

अन्धकारेण ओनद्धा, पदोपं न गवेसथ ॥१॥

जैतवन

बिसाखा की संगिनी

को नु हासः क आनन्दो नित्यं प्रज्वलिते सति ।

अन्धकारेणाऽवनद्धाः प्रदीपं न गवेषयथ ॥

कुयं भुंते ऋणं ॥

इणं दुःखं दुःखं दुःखं वदामि ।

तेन वदामि तेन तेन वदामि ।

सुखं वदामि सुखं वदामि सुखं वदामि ।

सुखं वदामि सुखं वदामि सुखं वदामि ।

जब नित्य ही (आग) जल रही हो, तो क्या हँसी है, क्या आनन्द है ?
अंधकार से घिरे तुम दीपक को (क्यों) नहीं ढूँढ़ते हो ?

Why this laughter, why this jubilation, while this world
is ever burning ? Why do you not seek the light, you who are
surrounded by the darkness (of ignorance).

P 1 (I, 2)

P 78 V 146

इणं दुःखं दुःखं दुःखं वदामि ।

तेन वदामि तेन तेन वदामि ।

सुखं वदामि सुखं वदामि सुखं वदामि ।

सुखं वदामि सुखं वदामि सुखं वदामि ।

पस्स चित्तकतं बिम्बं, अरुकायं समुत्सितं ।
आतुरं बहुसङ्कप्पं, यस्स नत्थि धुवं ठिति ॥२॥

राजगृह (वेणुवन)

सिरिमा

पश्य चित्रोक्तं बिम्बं अरु-कायं समुच्छितम् ।
आतुरं बहुसङ्कल्प यस्य नास्ति ध्रुवं स्थितिः ॥

ढुँसः सैवाः कसः चः सुः ऊँवाः सः वृत्तवाः ।
सः यैसः पुसः किः रवः वसुदः वा ।
कदः चः गुणः देवाः मरः यैः उवा ।
वाः यः वदः वदिः वाः कसः सः सऊँसः ।

देखो विचित्र शरीर को, जो व्रणों से युक्त, फूला, पीड़ित नाना संकल्पों से युक्त है, जिसकी स्थिति अनियत है ।

Behold this beautified form ! A mass of sores, full of sickness, much thought of, with nothing lasting nor stable about it,

परिजिण्णमिदं रूपं, रोगनील पभङ्गुरं ।
भिज्जति पूतिसन्देहो, मरणन्तं हि जीवितं ॥३॥

जेटवन

उत्तरी (बेरी)

परिजीर्णमिदं रूपं रोगनी पभङ्गुरम् ।
भिद्यते पूतिसन्देहो मरणान्तं हि जीवितम् ॥

ཀྱུ་ཤེད་ཚལ་དུའོ॥

གཞུགས་ནི་ཡོངས་སུ་གས་གུར་ཅིང་། ।

ནད་ཀྱི་ཚང་ཉེ་ཡང་བ། ।

ནག་གི་ཕུང་བོ་འདི་ཞིག་ནས། ।

གསོན་པའི་མཐའ་མར་འཆི་བ་ཉིད། ।

यह रूप जीर्ण-शीर्ण; रोग का घर, बीर भंगुर है, सड़कर देह भग्न होती है; जीवन मरणान्त जो ठहरा ।

This body is worn out, a nest of diseases and very frail.
This putrid mass breaks up. Truly life ends in death.

P 6 (I, 33)

P 79 V 148

གསོན་མཐའ་འཆི་བ་ཡིན་པའི་ཕྱིར། ।

ལུས་འདི་ཡོངས་སུ་ག་བ་དང་། ।

ནད་ཀྱི་ཚང་འདི་གུར་འཇིག་ཅིང་། ।

ནག་གི་ཚལ་སུང་འཇིག་པར་འགུར། ।

यानिमानि अपत्यानि, अलाबूनेव सारदे ।
कापोतकानि अट्टोनि, तानि दिस्वान का रति ॥४॥

जेटवन

अधिमस (मिक्षु)

यानिमान्यपथ्यान्यलाबूनीव

शरदि ।

कापोतकान्यस्थीति तानि दृष्ट्वा का रतिः ॥

ཀླུ་ཕྱེད་ཚལ་དུ་འོ།

གང་འདི་ནྐམས་ནི་སྒྲོན་ཀ་ཡི། 1

ཀླ་བ་བཞིན་དུ་འཕྱོར་གུར་བའི། 1

ཅུས་བ་བྱ་བའི་མདོག་ཅན་དེ། 1

དེ་ནྐམས་མཐོང་ན་དགའ་བཅི། 1 2

शरद काल की अगण्य लोकी की भाँति (फेंक दी गई), या कबूतरों की
सी (सफेद हो गई) हड्डियों को देखकर किसको इस (शरीर में) प्रेम होगा ?

Like gourds cast away in autumn are these dove-hued
bones. What pleasure is there in looking at them ?

P 2 (I, 3)

P 79 V 140

ཅུས་བ་བྱ་བའི་མདོག་འདྲ་བ། 1

བོར་བ་གང་ཡིན་འདི་དག་ནི། 1

ཕྱོགས་དང་ཕྱོགས་སུ་ནྐམ་འཕྱོར་བ། 1

དེ་མཐོང་འདི་ལ་ཅི་ཞིག་དགའ། 1

1 ཆོགས་བཅད་འདི་འདྲ་དྲག་བོ་ལྟ་འདྲི་བཞིན་དུ་ཡང་བྱུང་བར།

यानी मान्य परिधानि विक्षिप्तानि दिशोदशः ।

कपोतवर्णान्यस्थीनि तानि दृष्ट्वैहकारतिः ॥

གང་འདི་ནྐམས་ནི་མ་གཡོར་ཤིང་། ཕྱོར་དང་ཕྱོར་སུ་འཕྱོར་གུར་བའི།

ཅུས་བ་བྱ་བའི་མདོག་ཅན་དེ། མཐོང་ན་འདི་ལ་དགའ་བ་ཅི། ཅུ་བ་སོགས་
དེ། གཞན་ཡང་ཆོགས་བཅད་འདྲ་འབྲིག་འདི་འདྲ་མང་ཡང་མ་སྒྲོས་སོ།

अट्टीनं नगरं कृतं, मांसलोहितलेपनं ।
यत्थ जरा च मच्चु च, मानो मक्खो च ओहितो ॥५॥

जैतवन

रूपनन्दा (थेरी)

अस्थानां नगरं कृतं मांसलोहितलेपनम् ।
यत्र जरा च मृत्युश्च मानो अक्षश्चावहितः ॥

कुम्भेन कथं नृणां कण्ठेन दण्डेन च ।

एतद्वत्तु नृणां शरीरेण च ।

कृष्णं च श्वेतं च त्रैलोक्यं च ।

एतद्वत्तु नृणां शरीरेण च ।

एतद्वत्तु नृणां शरीरेण च ।

हड्डियों का (एक) नगर बनाया गया है, जो मांस और रक्त से लेपा गया है; जिसमें जरा और मृत्यु, अभिमान और डाह छिपे हुये हैं ।

In this city made of bones, plastered over with flesh and blood, reside old age and death, pride and deceit.

P 56 (XVI, 22)

P 80 V 150

एतद्वत्तु नृणां शरीरेण च ।

एतद्वत्तु नृणां शरीरेण च ।

एतद्वत्तु नृणां शरीरेण च ।

एतद्वत्तु नृणां शरीरेण च ।

जीरन्ति वे राजरथा सुचित्रा,
अथो सरोरं पि जरं उपेति ।
सतं च धम्मो न जरं उपेति,
सन्तो हवे सग्भि पवेदयन्ति ॥६॥

जेतवन

मल्लिका देवी

जीर्यन्ति वैराजरथाः सुचित्रा अथ शरीरमापि जरामुपेति ।
सतां च धर्मो न जरामुपेति सन्तो ह वै सद्भयः प्रवेदयन्ति ॥

शुभं भुवः कथं दुःखं सन्निवृत्तिं १॥

शुभं भुवः कथं दुःखं सन्निवृत्तिं १॥

द्वेष्टं दुःखं कथं सन्निवृत्तिं १॥

द्वेष्टं दुःखं कथं सन्निवृत्तिं १॥

द्वेष्टं दुःखं कथं सन्निवृत्तिं १॥

सुचित्रित राजरथ भी पुराने हो जाते हैं, और शरीर भी जरा को प्राप्त होता है; (किन्तु) सज्जनों का धर्म (=गुण) जरा को नहीं प्राप्त होता, सन्त जन सत्यपुरुषों के बारे में ऐसा ही कहते हैं ।

The ornamental royal chariots wear out. The body also approaches old age. But the Dharma of the Holy decays not. To be satisfied, is the real teaching of the Holy Ones (Buddha).

P 5 (I, 27)

P 80 V 151

शुभं भुवः कथं दुःखं सन्निवृत्तिं १॥

द्वेष्टं दुःखं कथं सन्निवृत्तिं १॥

द्वेष्टं दुःखं कथं सन्निवृत्तिं १॥

द्वेष्टं दुःखं कथं सन्निवृत्तिं १॥

1 भवः कथं दुःखं सन्निवृत्तिं (सन्निवृत्तिं) भवः कथं दुःखं सन्निवृत्तिं

भवः कथं दुःखं सन्निवृत्तिं (सन्निवृत्तिं) भवः कथं दुःखं सन्निवृत्तिं
भवः कथं दुःखं सन्निवृत्तिं (सन्निवृत्तिं) भवः कथं दुःखं सन्निवृत्तिं

अप्पस्सुतायं पुरिसो, बलिबद्धो व जीरति ।
मंसानि तस्स वड्ढन्ति, पञ्चा तस्स न वड्ढति ॥७॥

जैतवन

(काल) उदायी (धेर)

अल्पश्रुतोऽयं पुरुषो बलीवर्द इव जीर्यति ।
मांसानि तस्य वर्द्धन्ते प्रजा तस्य न वर्द्धन्ते ॥

अप्यस्सुतं कालं पुरुषो बलीवर्दो जीरति ।

अल्पश्रुतोऽयं पुरुषो बलीवर्द इव जीर्यति ।

मांसानि तस्य वर्द्धन्ते प्रजा तस्य न वर्द्धन्ते ॥

अल्पश्रुतोऽयं पुरुषो बलीवर्द इव जीर्यति ।

मांसानि तस्य वर्द्धन्ते प्रजा तस्य न वर्द्धन्ते ॥

अल्पश्रुत (= अज्ञानी) पुरुष बैल की भाँति जीर्ण होता है । उसका माँस ही बढ़ता है, प्रजा नहीं बढ़ती ।

A man who has learnt but little grows old like an ox;
his flesh increases but his knowledge does not grow.

अनेकजातिसंसारं, सन्धाविस्सं अनिब्बिसं ।
गृहकारं गवेसन्तो, दुक्खा जाति पुनप्पुनं ॥८॥

अनेकजातिसंसारं समधाविषं अनिविशमानः ।
गृहकारकं गवेषयन्, दुःखा जातिः पुनः पुनः ॥

अप्पिं वदिं सुं वदुं मं ह । १
अयं अण्णं वेदं उदं मज्झिमं वेदं वरं ॥
असिं अं वेदं वं अण्णं वं वं १
अयं अयं सुं वं अण्णं वं अण्णं वं १

बिना रुके अनेक जन्मों तक संसार में दौड़ता रहा । (इस काया रूपी)
कोठरी को बनाने वाले (=गृहकारक) को खोजते पुनः पुनः दुःख (-मय) जन्म
में पड़ता रहा ।

In many births in Samsara, without rest and without
break, I searched for the maker of this house (body). In this
way, again and again came the sorrow of birth.

P 121 (XXXI, 6)

P 81 V 153

अयं अण्णं वेदं वं अण्णं वं १
अयं अयं सुं वं अण्णं वं अण्णं वं १
असिं वं अण्णं वं अण्णं वं १
अण्णं वं अण्णं वं अण्णं वं १

गृहकारकं दिदृशे, पुनर्गेहं न कार्हासि ॥
 सम्बा ते फासुका भग्ना, गृहकूटं विसङ्खतं ॥
 विसङ्खारमतं चित्तं, तण्हानं खयमज्झगा ॥६॥

गृहकारकं दृष्टोऽसि पुनर्गेहं न करिष्यसि ।
 सर्वास्ति पार्श्विका भग्ना गृहकूटं विसङ्कतम् ।
 विसङ्कारगतं चित्तं तृष्णानां क्षयमध्यगात् ॥

हिमं ग्रीष्मे वीहिं वै मघ्ने । ।
 क्षीयं ऋतुं हिं वै हिमं शीतले । ।
 हिं ग्रीष्मे वसं विषयं क्षयं वै वत्सलं । ।
 हिमं ग्रीष्मे वै वत्सलं वत्सलं वत्सलं । ।
 वत्सलं वत्सलं वत्सलं वत्सलं वत्सलं । ।
 वत्सलं वत्सलं वत्सलं वत्सलं वत्सलं । ।

हे गृहकारक ! (अब) तुझे पहिचान लिया, (अब) फिर तू घर नहीं बना
 सकेगा । तेरी सभी कड़ियाँ भग्न हो गयीं, गृह का शिखर भी निर्बल हो गया ।
 संस्कार-रहित चित्त से तृष्णा का क्षय हो गया ।

O house builder, you are seen ! You shall build no
 house again. All your rafters are broken, your ridge-pole is
 shattered. To the unconditioned (Nirvana) goes my mind,
 the end of craving have I attained.

P 122 (XXXI, 7)

P 82 V 154

मघं हिमं वीहिं वै मघ्ने वत्सलं । ।
 हिमं ग्रीष्मे वीहिं वै मघ्ने वत्सलं । ।
 वत्सलं वत्सलं वत्सलं वत्सलं वत्सलं । ।
 वत्सलं वत्सलं वत्सलं वत्सलं वत्सलं । ।
 वत्सलं वत्सलं वत्सलं वत्सलं वत्सलं । ।
 वत्सलं वत्सलं वत्सलं वत्सलं वत्सलं । ।

अचरित्वा ब्रह्मचरियं, अलब्ध्वा योवने धनं ।
सेन्ति चापातिखीणा व, पुराणानि अनुत्थुनं ॥११॥

अचरित्वा ब्रह्मचर्यं अलब्ध्वा यौवने धनम् ।
शेरते चापोऽतिक्षोण इव पुराणान्यनुतन्वन्तः ॥

ཆངས་པར་སྤྱོད་པ་མ་སྤྱད་ཅིང་། །
གཞིན་དུས་ནོར་ནི་མ་རྟེན་པ། །
ཟད་ཅིང་ཆག་པའི་གཞུ་བཞིན་དུ། །
སྤོན་གྱི་ཇིས་སུ་འགྲོད་པར་འགྱུར། །

ब्रह्मचर्य को बिना पालन किये, जबानी में धन को बिना कमाये, (पुरुष) मरस्यहीन अलाशय में बूढ़े क्राँच पक्षी से जान पड़ते हैं ।

Men who have not practiced celibacy, during youth have not gained wealth. They lie useless like worn out bows, repenting after the past.

P 57 (XVII, 4)

P 83 V 156

ཆངས་པར་སྤྱོད་པ་མ་སྤྱད་ཅིང་། །
གཞིན་དུ་ནོར་ནི་མ་རྟེན་པ། །
སྤོན་ཆད་དུས་པ་ཇིས་རྒྱ་ཞིང་། །
སྤྱིས་བསྐུམས་ནས་ནི་ཉལ་པར་འགྱུར། །

१२—अतवगो

अत्तानं चे पियं जञ्जा, रक्खेय्य नं सुरक्खितं ।
तिण्णं अञ्जनरं यामं, पटिजग्गेय्य पण्डितो ॥१॥

सुसुमार (बुनार) गिरि (भेसकलावन) बोधि कुमार
आत्मानं चेत् प्रिय जानीयाद् रक्षेत् सुरक्षितम् ।
त्रयाणामन्यतमं यामं प्रतिजागृयात् पण्डितः ॥

गुँस'व'ण'सो'द'गुँ'द'र'क्रु'य'सु'द'ण'स'सु'र'य'ण'सु'र'स'व'
व'द'ण'स'द'ण'स'स'स'स'स'स'स' । ।
द'र'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स' । ।
द'र'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स' । ।
स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स' । ।

अपने को यदि प्रिय समझा है, तो अपने को सुरक्षित रखना चाहिए,
पंडित (जन) (रात के) तीनों यामों (=पहरों) में से एक में जागरण करें ।

Knowing that oneself is dear to one, one should take real
care. During the three watches (of the night) the wise man
should keep awake and vigilant.

P 22 (V, 16)

P 84 V 157

ग'य'द'व'द'ण'स'स'स'स'स'स' । ।
सु'द'ण'स'स'स'स'स'स'स'स'स' । ।
स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स' । ।
द'र'स'स'स'स'स'स'स'स'स' । ।

अत्तानमेव पठमं, पतिरूपे निवेशये ।
अथञ्जमनुसासेय्य न किलिस्सेय्य पण्डितो ॥२॥

जेतवन

(शाक्यपुत्र) उपनन्द (धेर)

आत्मानमेव प्रथमं प्रतिरूपे निवेशयेत् ।
अथान्यमनुशिष्यात् न किलिष्येत् पण्डितः ॥

शुभं भवेत्तु तेन भवति । ।

शुभं भवेत्तु तेन भवति । ।

शुभं भवेत्तु तेन भवति । ।

शुभं भवेत्तु तेन भवति । ।

शुभं भवेत्तु तेन भवति । ।

पहिले अपने को ही उचित (काम) में लगावे, (फिर) यदि दूसरे को उपदेश करे, (तो) पंडित क्लेश को न प्राप्त होगा ।

One should first establish oneself in what is proper, and only then should one instruct others. Such a wise man will not be reproached.

P 75 (XXIII, 6)

P 84 V 158

शुभं भवेत्तु तेन भवति । ।

शुभं भवेत्तु तेन भवति । ।

शुभं भवेत्तु तेन भवति । ।

शुभं भवेत्तु तेन भवति । ।

अत्तानं चे तथा कयिरा, यथाञ्जमनुसासति ।

सुदन्तो वत दमेथ, अत्ता हि किर दुद्दमो ॥३॥

जेतवन

(अभ्यासी) तिस्स (धेर)

आत्मानं चेत् तथा कुर्यात् यथाऽन्यमनुशास्ति ।

सुदान्तो वत दमयेद्, आत्मा हि किल दुर्दमः ॥

अस्मिन् क्रियमाणे । ।

इति ह्यस्मात्पुनरावृत्तिरिति । ।

देवदत्तः सः श्रेष्ठः श्रेष्ठः श्रेष्ठः । ।

वदन्ति श्रेष्ठः श्रेष्ठः श्रेष्ठः श्रेष्ठः । ।

वदन्ति श्रेष्ठः श्रेष्ठः श्रेष्ठः श्रेष्ठः । ।

अपने को वैसा बनावें, जैसा दूसरे को अनुशासन करना है; (पहले) अपने को भी भली प्रकार दमन करे; वस्तुतः अपने को दमन करना (हो) कठिन है ।

As he instructs others so he himself should act; with himself fully controlled, he should control others. For difficult indeed is the control of self.

P 75 (XXIII. 8)

P 85 V 159

वदन्ति श्रेष्ठः श्रेष्ठः श्रेष्ठः श्रेष्ठः । ।

वदन्ति श्रेष्ठः श्रेष्ठः श्रेष्ठः श्रेष्ठः । ।

वदन्ति श्रेष्ठः श्रेष्ठः श्रेष्ठः श्रेष्ठः । ।

वदन्ति श्रेष्ठः श्रेष्ठः श्रेष्ठः श्रेष्ठः । ।

अत्ता हि अत्तनो नाथो, को हि नाथो परो सिया ।
अत्तना हि सुदन्तेन, नाथं लभति दुल्लभं ॥४॥

जेतवन

कुमार कश्यप की माता (धेरी)

आत्मा^१ हि आत्मनो नाथः को हि नाथः परः स्यात् ।

आत्मनैव सुदान्तेन नाथं लभते दुर्लभम् ॥

देव सुतं पालेत् कुर्वीत स्यात् पालयिष्यति ।

वदन्ति वदन्ति सौम्यं विदुः ।

पालेत् सुतं पालयिष्यति ।

वदन्ति वदन्ति सौम्यं विदुः ।

देवः पालयिष्यति सौम्यं विदुः ।

(पुरुष) अपने ही आप मालिक है दूसरा कौन मालिक हो सकता है;
अपने को भली प्रकार दमन कर लेने पर (वह एक) दुर्लभ मालिक को पाता है ।

The self is the lord of self, who else could be the lord ?
By self-control a man finds a lord who is difficult to obtain.

१. भगवद्गीता (अध्याय ६) में—

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।

आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ॥४॥

बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्माना जितः ।

अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत् ॥५॥

P 85 V 160

वदन्ति वदन्ति सौम्यं विदुः ।

पालेत् सुतं पालयिष्यति ।

वदन्ति वदन्ति सौम्यं विदुः ।

देवः पालयिष्यति सौम्यं विदुः ।

[མཁས་པས་ཚཱ་མ་ས་ཐོབ་པར་འགྱུར། །
 མཁས་པས་གྲགས་པ་ཐོབ་པར་འགྱུར། །
 མཁས་པས་བདེ་བ་ཐོབ་པར་འགྱུར། །
 མཁས་པས་བདེ་འགྲོ་ཐོབ་པར་འགྱུར། །
 མཁས་པས་མཐོ་ངེས་དགའ་བར་འགྱུར། །
 གཉེན་གྱི་ནང་ན་ལམ་མེད་འབར། །
 བྱ་ངན་ནང་ན་གདུང་མི་འགྱུར། །
 རེ་ཆེང་བ་ཐམས་ཅད་གཅོད་པར་འགྱུར། །
 ངན་འགྲོ་ཐམས་ཅད་སྦྲེང་བར་འགྱུར། །
 སྤྱག་བསྐལ་ཀུན་ལས་རབ་དུ་ཐར། །
 བདག་ཉིད་མགོན་དུ་འགྱུར་བ་འཐོབ། །
 བྱ་ངན་འདས་ཉིད་ཉི་བར་འགྱུར། །
 རྩེད་པར་དགའ་བའི་མགོན་རྩེད་འགྱུར། །]

ཤད་གྲག་ནང་འཁོད་འདི་ནམས་ཚཱ་མ་ས་ཀྱི་ཚོག་སུ་བཅད་པར་མི་གསལ།

अत्तना हि कतं पापं, अत्तजं अत्तसम्भवं ।
अभिमन्यति दुम्मेधं, वजिरं वस्ममयं मणिं ॥५॥

जैतवन

महाकाल (उपासक)

आत्मनैव कृतं पापं आत्माजं आत्मसम्भवं ।
अभिमन्यति दुर्मैधसं वज्रमिवास्मय मणिम् ।

ནལ་བོ་ཆེན་པོ་ལའོ། །

རང་ཉིད་ཁོ་ཅས་སྒྲིག་པ་བྱས། །

རང་ལས་སྐྱེས་ཤིང་རང་ལས་བྱུང་། །

རྩི་རྩི་ཐོག་པའི་ཁྱུ་དྲིག་བཞིན། །

སྒྲོ་རྩ་མའོན་པར་བརྩི་བར་བྱེད། །

अपने से जात, अपने से उत्पन्न, अपने से किया पाप, (करने वाला)
दुर्बुद्धि को पाषाणमय वज्रमणि की (चोट की) भाँति मंथन (= पीड़ित)
करता है ।

By oneself alone is evil done, it is self-born and self-
caused. Evil grinds the unwise as does a diamond, a hard gem

P 86 V 161

ནལ་བོ་ཉིད་ཁྱེས་ཅེ་སྒྲིག་པ་དཔ། །

བྱས་ཤིང་ཉི་བར་བསྐྱེས་པ་ཡིས། །

བསྐྱེས་བརྒྱུག་མའོན་དུ་འཛིན་པ་བར་བྱེད། །

རྩི་རྩི་ཐོག་པའི་ཁྱུ་དྲིག་པ་བཞིན། །

यस्य भच्चन्तदुस्तोत्रं, मालुवा सालमिवोततं ।

करोति सो तथैतानं, यथा नं इच्छती दिसो ॥६॥

जेतवन

देवदत्त

यस्याऽऽयन्तदोःशील्यं मालुवा सालमिवाततम् ।

करोति स तथाऽमानं यथैनमिच्छति द्विषः ॥

अथःश्लो० ॥

मालुवाः शैवाः शैवः दुःखं यः कथयः ॥ १

मालुवाः शैवः शैवः यः शैवः यः शैवः ॥ २

मालुवाः शैवः शैवः यः शैवः यः शैवः ॥ ३

मालुवाः शैवः शैवः यः शैवः यः शैवः ॥ ४

मालुवालता से वेष्टित साल (वृक्ष) की भाँति जिसका दुराचार फैला हुआ है; वह अपने को वैसा ही कर लेता है, जैसा कि उसके शत्रु चाहते हैं ।

As a creeper overpowers the entwined sal tree, he whose wickedness is great, reduces himself to that very state which his enemy wishes for him.

P 38 (XI, 10)

P 86 V 162

मालुवाः शैवः शैवः यः शैवः यः शैवः ॥ १

मालुवाः शैवः शैवः यः शैवः यः शैवः ॥ २

मालुवाः शैवः शैवः यः शैवः यः शैवः ॥ ३

मालुवाः शैवः शैवः यः शैवः यः शैवः ॥ ४

- 1 मालुवाः शैवः शैवः यः शैवः यः शैवः ॥ १
मालुवाः शैवः शैवः यः शैवः यः शैवः ॥ २
मालुवाः शैवः शैवः यः शैवः यः शैवः ॥ ३
मालुवाः शैवः शैवः यः शैवः यः शैवः ॥ ४

सुकरानि असाधूनि, अत्तनो अहितानि च ।

यं वे हितं च साधुं च, तं वे परमदुष्करं । ७॥

राजगृह (वेणुवन)

संघ में फूट के समय

सुकराण्यसाधून्यात्मनोऽहितानि च ।

यद् वै हितं च साधु च तद् वै परमदुष्करम् ॥

འོད་མཁའ་ཚལ་དུ་འོ། །

བདག་ཉིད་ལ་ནི་གཞོན་འགྱུར་བའི། །

ཉེས་པ་མཁས་ནི་བྱེད་བར་སྒྲ། །

ཡན་དང་ཡེགས་པ་གང་ཡིན་པ། །

དེ་ནི་མཚོག་དུ་བྱ་བར་དགའ། །

अनुचित और अपने लिए अहित (कर्मों का करना) सुकर है; (लेकिन)
जो हित और उचित है; उसका करना परम दुष्कर है ।

Easy to do are things that are bad and harmful to oneself.
But exceedingly difficult to do is that which is beneficial
and good.

P 99 (XXVIII, 16)

P 87 V 163

བདག་ལ་མི་ཡན་བྱ་བ་དང་། །

ཡེགས་པ་མ་མ་ཡིན་བྱ་བར་སྒྲ། །

གང་དག་ཡན་ནིང་བདེ་འགྱུར་བ། །

དེ་ནི་མཚོག་དུ་བྱ་བར་དགའ། །

अत्तना हि कनं पापं, अत्तना सङ्किल्मिस्सति ।
 अत्तना अकतं पापं, अत्तना व विमुज्जति ।
 सुद्धी अमुद्धि पच्चत्तं, नाञ्जो अञ्जं विसोधये ॥६॥

जेतवन

(बूल) काल (उपासक)

आत्मनैव कृतं पाप आत्मना संकिलश्यति ।
 आत्मनाऽकृतं पापं आत्मनैव विशुध्यति ।
 शुद्धं च शुद्धी प्रत्यात्मं नाऽन्योऽन्यं विशोधयेत् ॥

कुयं भुएः कंयं कुंयं वं कुंयं वं यरे । ।

झेयं वं भुएः वं रं रं भुएः रं । ।

रं रं भुएः भुएः रं रं भुएः रं । ।

झेयं यं यं झेयं वं रं रं भुएः रं । ।

रं रं भुएः भुएः रं रं भुएः रं । ।

रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं । ।

रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं । ।

अपने से किया पाप अपने को ही मलिन करता है, अपने पाप न करे
 नो अपने ही शुद्ध रहता है; शुद्ध अशुद्धि प्रत्येक (आदमी) की अलग अलग है;
 दूसरा (आदमी) दूसरे को शुद्ध नहीं कर सकता ।

By oneself alone is evil done, by oneself is one defiled.
 By oneself is evil avoided, by oneself alone is one purified.
 Purity and impurity depend on oneself. No-one can purify
 another.

P 99 (XXVIII, 11)

P 88 V 165

रं रं यं यं रं रं यं यं रं रं यं यं । ।

रं रं यं यं रं रं यं यं रं रं यं यं । ।

रं रं यं यं रं रं यं यं रं रं यं यं । ।

रं रं यं यं रं रं यं यं रं रं यं यं । ।

रं रं यं यं रं रं यं यं रं रं यं यं । ।

रं रं यं यं रं रं यं यं रं रं यं यं । ।

अतदर्थं परत्थेन, बहुनाऽपि न हापये ।
अतदर्थमभिञ्जाय, सदर्थपमुतो सिया ॥१०॥

जेतवन

अतदर्थ (धेर)

आत्मनोऽर्थं परार्थेन बहुनाऽपि न हापयेत् ।
आत्मनोऽर्थमभिञ्जाय सदर्थप्रसितः स्यात् ॥

कुयः पुनः कथं नुते । ।

गणकः रिकः कः चो र्द ह्युनः नुते । ।
रः चो रिकः रिकः वरः कः नु । ।
रः रिकः कः वरः चो रः वः नु । ।
रः वरः रिकः रिकः ह्युनः कः नु । ।

वरः चो रिकः नुते ।

वरः वरः चो रिकः नुते । ।

पराये के बहुत हित के लिए भी अपने हित की हानि न करे; अपने हित को जानकर सच्चे हित में लगे ।

For the sake of others' (worldly) welfare, however great, one's own (spiritual) welfare should not be neglected. Well perceiving one's own welfare, be zealous regarding real benefit (i. e. release from sorrow).

P 75 (XXIII, 9)

P 88 V 166

वरः चो रिकः पुनः गणकः रिकः रिकः । ।
रः चो रिकः वरः वरः वरः नु । ।
वरः रिकः कः कः चो रः वरः वरः । ।
रः चो रिकः वरः कः कः वरः वरः । ।

१३—लोकवग्गो

हीनं धम्मं न सेवेय्य, प्रमादेन न संवसे ।
मिच्छादिष्टं न सेवेय्य, न सिया लोकवद्धुनो ॥१॥

जैतवन

कोई अल्पवयस्क मिश्र

हीनं धम्मं न सेवेत्, प्रमादेन न संवसेत् ।
मिच्छादिष्टं न सेवेत्, न स्यात् लोकवर्द्धनः ॥

पुण्यं पुण्यं कथं नृणां । ।

दमकं वरं कसं विं वसुधं विं नृणां । ।
वरा विं वरं विं वरा विं नृणां । ।
विं वरं विं वरं विं वरं विं नृणां । ।
विं वरं विं वरं विं वरं विं नृणां । ।

पाप (= नीच धर्म) को न सेवन करे, न प्रमाद से लिप्त होवे; झूठी धारणा को न सेवन करे, (आदमी को) लोक (जन्म मरण) बद्धक नहीं बनना चाहिए ।

Do not follow mean things, live not in heedlessness, Do not embrace false views. Do not increase worldly ties.

उत्तिष्ठे नप्पमज्जेय्य, धम्मं सुचरितं चरे ।
धम्मचारी सुखं सेति, अस्मि लोके परमिह च ॥२॥

कपिलवस्तु (न्यायोधाराम)

सुद्धोदन

उत्तिष्ठेत् न प्रभायेत् धर्मं सुचरितं चरेत् ।
धर्मचारी सुखं शेतेऽस्मिं लोके परमं च ॥

ཨེང་སྐུའི་ཀུ་གྲོ་རྒྱུ་ཀུ་དགའ་ར་བར་ཟས་གཙང་ཡའོ། །

འག་མེད་མི་བྱ་ཁྲང་བར་བྱ། །

ཆོས་ཀྱི་སྦྱོད་པ་བཟང་བོ་སྦྱད། །

འཇིག་རྟེན་འདི་དང་གཞན་དུ་ཡང་། །

ཆོས་ལ་སྦྱོད་པ་བདེ་བར་གཟིམ། །

उत्साही बने, आलसी न बने, सुचरित धर्म का आचरण करे, धर्मचारी
(पुरुष) इस लोक और परलोक में सुखपूर्वक सोता है ।

Be alert ! Be not heedless ! Act well and according to
the Dharma. The righteous live happily both in this world
and in the next.

- 1 ཀུ་ལྷོ་འཕུ་ (ཨེང་སྐུའི་གྲོང་) རྒྱུ་དྲང་སྦྱོང་མེད་སྐུ་བྱ་བས་
ཆུ་རྒྱུ་གྱིས་གྲོང་ཁྲོང་གི་ནས་བ་མྱིས་ནས་བཅིགས་སུ་བཅུག་བས་....
ཨེང་སྐུའི་གྲོང་ཁྲོང་ཁྲོང་མིང་ཆགས་པ་དང་། རྒྱུ་བའི་ཡབ་ཤུགས་ཀྱི་ལ་
བོ་ཟས་གཙང་མའི་རྒྱལ་ས་ཡིན་ནོ། ། ཟས་གཙང་མའི་རྒྱུ་དྲང་
ཤུ་རྒྱུ་དྲང་ཁྲོང་གི་ཡོད། །

धम्मं चरे सुचरितं, न तं दुच्चरितं चरे ।
धम्मचारी सुखं सेति, अस्मि लोके परमिह च ॥३७॥

धर्मं चरेत् सुचरितं न त दुश्चरितं चरेत् ।
धर्मचारी सुखं सेतेऽस्मिन् लोके परम च ॥३७॥

कसं गुं सुदं व वच्चं व सुदा ।
उसं वरं सुदं व दे वी सुदा ।
अस्मिं देव अस्मिं देव अस्मिं देव ।
कसं व सुदं व वरं व वरं व ।

सुचरित धर्म का आचरण करे, दुश्चरित कर्म (= धर्म) का सेवन न करे ।
धर्मचारी (पुरुष) इस लोक और परलोक में सुख पूर्वक सोता है ।

Lead a righteous life, and not one that is corrupt. The
righteous live happily both in this world and in the next.

P 113 (XXX, 5)

P 91 V 169

कसं सुदं व वरं व वरं व ।
उसं वरं सुदं व दे वी सुदा ।
अस्मिं देव अस्मिं देव अस्मिं देव ।
कसं सुदं व वरं व वरं व ।

यथा बुब्बुळकं पस्से, यथा पस्से मरीचिकं ।

एवं लोकं अवेक्खन्तं, मच्चुराजा न पस्सति ॥४॥

जैनवन

पाँच सौ श्रान्ती (मिथु)

यथा बुद्बुदकं पश्येद् यथा पश्येत् मरीचिकाम् ।

एवं लोकप्रेक्षमाणं मृत्युराजो न पश्यति ॥

श्रुयःप्रेरःकथापुत्रे । ।

हैःपुनःपुनःवःमर्षेदःवःदः । ।

हैःपुनःपुनःपुनःमर्षेदःपुनःवः । ।

मर्षेदःपुनःपुनःपुनःमर्षेदःवःदः । ।

मर्षेदःपुनःपुनःपुनःमर्षेदःमःदःपुनः । ।

जैसे बुलबुले को देखकर, जैसे (मर-) मरीचिका को देखता है, लोक को वैसे ही (जो पुरुष) देखता है, उसकी ओर यमराज (आँख उठाकर) नहीं देख सकता ।

Look upon the world as a bubble; look upon it as a mirage. One who looks thus upon the world cannot be seen by the king of death.

P 94 (XXVII, 14)

P 91 V 170

हैःपुनःपुनःपुनःमर्षेदःवःदः । ।

हैःपुनःपुनःपुनःमर्षेदःवःपुनः । ।

देःपुनःपुनःपुनःमर्षेदःपुनःपुनः । ।

मर्षेदःपुनःपुनःपुनःमर्षेदःमःदःपुनः । ।

एथ पस्सयिमं लोकं, चित्तं राजरथूपमं ।
यत्थ बाला विसीदन्ति, नत्थि सङ्खो विजानन्तं ॥५॥

राजगृह (वेणुवन)

अमय राजकुमार

एत पश्यतेमं लोकं चित्रं राजपथोपमम् ।
मत्र बाला विषीदन्ति नास्ति संगो विजानताम् ॥

देव.सदे.कथ.दु.अह्वेण.स.मेद.अदे. । ।

कुथ.पे.दे.मेद.दु.अ.व.व.व.व. ।

अह्वेण.देव.अदे.दे.व.व.व.व. ।

मद.अ.व.व.व.व.व.व.व.व. ।

अह्वेण.व.व.व.व.व.व.व.व. ।

आओ, विचित्र राजपथ के समान इस लोक को देखो, जिसमें मूढ़
आसक्त होते हैं, ज्ञानी जन आसक्त नहीं होते ।

Come, behold this world, alike an ornamented royal
chariot. Herein fools flounder, but for the wise there is
no attraction.

P 94 (XXVII, 17)

P 92 V. 171

मद.अ.व.व.व.व.व.व.व. ।

दे.अ.अ.अ.अ.अ.अ.अ. ।

कुथ.पे.दे.मेद.दु.अ.व.व.व. ।

अह्वेण.देव.अदे.दे.व.व.व. ।

यो च पुब्बे पमज्जित्वा, पच्छा सो नप्पमज्जति ।
सो इमं लोकं प्रभासेति, अब्भा मुत्तो व चन्दिमा ॥६॥

जितवन

सम्मुञ्जानि (थेर)

यश्च पूर्वं प्रमाद्य पश्चात् स न प्रभाद्यति ।
स इमं लोक प्रभासयत्येभ्रान्मुक्त इव चन्द्रमा ॥

གང་ཞིག་སྤོང་ཆད་བག་མེད་ཀྱང་། །
ཕྱིས་ནས་བག་དང་ལྡན་གུར་བ། །
སྤོང་ལས་གྲོལ་བའི་རྒྱ་བ་བཞིན། །
འཇིག་རྟེན་འདི་ན་དེ་གསལ་འགུར། །

जो पहले भूल कर फिर भूल नहीं करता, वह मेघ से उन्मुक्त चन्द्रमा की
भाँति इस लोक को प्रकाशित करता है ।

He who though formerly heedless later becomes heedful,
illuminates this world, like the moon freed from clouds.

P 53 (XVL 5)

P 92 V 172

འདི་ན་གང་སྤོང་བག་མེད་ལས། །
ཕྱི་ནས་བག་དང་ལྡན་འགུར་དེ། །
སྤོང་བྲམ་ཉི་མ་རྒྱ་བ་ལྟར། །
འཇིག་རྟེན་འདི་ན་ཀུན་དུ་གསལ། །

यस्स पापं कतं कम्मं, कुसलेन पिधीयति ।

सो इमं लोकं पभासेति, अब्भा मुत्तो व चन्दिमा ॥७॥

जेन्वम

अंगुलिमाल (थेर)

यस्य पापं कृतं कर्म कुशलेन विधीयते ।

स इमं लोकं प्रभासयत्यग्नान्मुक्त इव चन्द्रमा ॥

ཀྱུང་ཕྱིར་ཚལ་དུ་སོང་སྤང་ཅན་ལའོ། །

གང་གིས་སྤྱི་གུ་པའི་ལས་བྱས་པ།

དགེ་བས་གཡོགས་པར་གྱུར་པ་དེ།

ཕྱི་ན་ལས་གྲོལ་པའི་ལྷ་པ་བཞིན།

འཛིན་ཏེན་འཛིན་རབ་གསལ་འགྲུམ།

जो अपने किये पाप कर्मों को पुण्य से ढाँक देता है, वह मेघ से उन्मुक्त चन्द्रमा की भाँति इस लोक को प्रकाशित करता है।

Whoever, by good deeds, cover up the evil they have done, illuminate this world, like the moon freed from clouds.

P 54 (XVI, 9)

P 93 V 173

གང་ཞིག་སྒྲིག་པའི་ལས་བྱས་པ།

དགེ་བས་འགྲོ་བས་པར་ཁེར་བ་དེ།

॥ क. प्र. नं. १०५ व कुं. ।

འཛིན་ཏེན་འདི་ན་ཀུན་ཏུ་གསལ། །

1 གང་ཟག་ ཨོ་གུ་ལི་སྐ་ལྔ་ (སོར་སོའི་ཕྱིང་བ་ཅན) མི་ ཕྱི་རིམ་
བའི་བཤེས་གཉེན་གྱིས་ བསྐྱེད་བའི་རྒྱུན་གྱིས་མི་བསྐྱེད་བརྟུག་བ་ཅན་
དུ་གྱུར་དེ། མི་མཐོང་ཅད་གསོད་པའི་དམ་བཅའ་ལྟེ་ས་ས་རང་གི་ས་
ཡང་གསོད་ལ་ཁད་བ་ན། ལྟོན་བ་ཐུགས་རྩེ་ཅན་གྱིས་བྱམས་པའི་
ལྟོབས་ཀྱིས་བདུལ་དེ་ཆོས་བསྐྱེད་པས་བརྟན་བ་མཐོང་ལྟེ་གནས་བདྲན་
དགྲ་བཅོམ་པར་གྱུར་བ་དེའོ། །

अन्धभूतो अयं लोको, तनुकेत्थ विपस्सति ।
सकुणो जालमुत्तो व अप्पो सग्गाय गच्छति ॥८॥

आलवी

रगरेज की कन्या

अन्धभूतोऽयं लोकः तनुकोऽत्र विपश्यति ।
शकुन्तो जालमुक्त इवाल्पः स्वर्गाय गच्छति ॥

अण्णं देवदत्तं सुखं वदन्ति ।
अण्णं देवदत्तं सुखं वदन्ति ।
अण्णं देवदत्तं सुखं वदन्ति ।
अण्णं देवदत्तं सुखं वदन्ति ।

यह लोक अन्धे जैसा है, यहाँ देखनेवाले थोड़े ही हैं, जाल से मुक्त पक्षी
की भाँति बिरले ही स्वर्ग को जाते हैं ।

This world is in darkness, few are here who can clearly
see. As the birds that escape from a net are few, so are
they that go to heaven.

P 92 (XXVII, 4)

P 93 V 174

अण्णं देवदत्तं सुखं वदन्ति ।
अण्णं देवदत्तं सुखं वदन्ति ।
अण्णं देवदत्तं सुखं वदन्ति ।
अण्णं देवदत्तं सुखं वदन्ति ।

हंसादिच्चपथे यन्ति, आकासे यन्ति इद्धिया ।
नीयन्ति धीरा लोकम्हा, जेत्वा मारं सवाहिनि ॥६॥

जितवन

तीस भिक्षु

हंसा आदित्यपथे यन्ति, आकाशे यन्ति ऋद्धिया ।
नीयन्ते धीरा लोकात् जित्वा मारं सवाहिनीम् ॥

शुभ्रं सुदंठं सुसंशुभ्रं सुदंठं । ।

संशुभ्रं सुदंठं सुसंशुभ्रं सुदंठं । ।

सुदंठं सुदंठं सुसंशुभ्रं सुदंठं । ।

सुदंठं सुदंठं सुसंशुभ्रं सुदंठं । ।

सुदंठं सुदंठं सुसंशुभ्रं सुदंठं । ।

हंस सूर्यपथ (=आकाश) में जाते हैं, (योगी) ऋद्धि (-बल) -से आकाश
में जाते हैं, धीर (पुरुष) सेना-सहित मार को पराजित कर लोक से (निर्वाण को)
ले जाते हैं ।

Swans travel on the path of the sun, (men) travel
through air by physic powers. The wise are led away from the
world, having conquered Mara and his host.

P 56 (XVII, 2)

P 94 V 175

सुदंठं सुदंठं सुसंशुभ्रं सुदंठं । ।

सुदंठं सुदंठं सुसंशुभ्रं सुदंठं । ।

सुदंठं सुदंठं सुसंशुभ्रं सुदंठं । ।

सुदंठं सुदंठं सुसंशुभ्रं सुदंठं । ।

एकं धर्मं अतोतस्स, मुसावादिस्म जन्तुनो ।
वित्तिणपरलोकस्स, नत्थि पापं अकारियं ॥१०॥

जैतवन्न

चिन्ता (माणविका)

एकं धर्ममतीतस्य मृषवादिनो जन्तोः ।
वित्तीर्णपरलोकस्य नास्ति पापमकार्यम् ॥

सुअं सुदं ऊअं सुवे ॥

ऊअं सुउअं सुअं सुअं सुअं सुअं । ॥

सुअं सुअं सुअं सुअं सुअं सुअं । ॥

सुअं सुअं सुअं सुअं सुअं सुअं । ॥

सुअं सुअं सुअं सुअं सुअं सुअं । ॥

जो धर्म को अतिक्रमण कर चुका, जो प्राणी मृषावादी है, जो परलोक का खयाल छोड़ चुका है, उसके लिए कोई पाप अकरणीय नहीं ।

There is no evil that cannot be done by a lying person who has transgressed the Dharma (Truth), and who is not concerned with another world (the next rebirth).

P 94 V 176

ऊअं सुउअं सुअं सुअं सुअं सुअं । ॥

सुअं सुअं सुअं सुअं सुअं सुअं । ॥

सुअं सुअं सुअं सुअं सुअं सुअं । ॥

सुअं सुअं सुअं सुअं सुअं सुअं । ॥

न वे कदरिया देवलोकं व्रजन्ति,
 बाला हवे नप्पसंसन्ति दानं ।
 धीरो च दानं अनुमोदमानो,
 तेनेव सो होति सुखी परत्थ ॥११॥

जेतवन

(अयुक्त दान)

न [वै] कदर्या देवलोकं व्रजन्ति
 बाला ह वै न प्रशंसन्ति दानम् ।
 धीरश्च दानं अनुमोदमानस्तेनेव
 स भवति सुखी परत्र ॥

ཀུན་བྱེད་ཆལ་དུ་འོ།

འཇུངས་བ་མཐོ་རིས་འཛིག་རྟེན་མི་འགྲོ་སྟེ། །
 བྱིས་བ་སྦྱིན་བའི་པན་ཡོན་བཟོད་མི་བྱེད། །
 བསྟན་བ་སྦྱིན་ལ་ཆེས་སུ་ཡིད་རངས་བ། །
 དེ་ཡིས་དེ་ནི་གཞན་དུ་བདེ་བར་འགྱུར། །

कंजूस देवलोक नहीं जाते; मूढ़ ही दान की प्रशंसा नहीं करते; धीर दान का अनुमोदन कर, उसी (कर्म) से पर (लोक) में सुखी होता है ।

Truly, misers do not go to the celestial realms. Fools do not praise the benefits of liberality, but the wise man rejoices in giving, thereby becoming happy hereafter.

P 34 (X, 2)

P 95 V 177

འཇུངས་ནམས་ལྷ་ཡི་འཛིག་རྟེན་མི་འགྲོ་ཞིང་། །
 དེ་ཡི་བྱིས་བ་སྦྱིན་བའི་བསྟགས་མི་བཟོད། །
 བདན་ནམས་སྦྱིན་ལ་ཆེས་སུ་ཡི་རངས་བ། །
 དེས་ནི་དེ་དག་གཞན་དུ་བདེ་བ་སྟོང་། །

पृथिव्या एकरज्जेन, सगस्स गमनेन वा ।

सम्बलोकाधिपच्चेन, सोत्तापत्तिफलं वरं ॥१२॥

अेतवन्

अनाथपिण्डिक के पुत्र के सम्बन्ध में

पृथिव्या एकराज्यात् स्वर्गस्य गमनाद् वा ।

सर्बलोकाऽऽधिपत्याद् वा स्रोतापत्तिफलं वरम् ॥

संघेदं यदसंश्रितं क्षीयं नृणां ।

सर्वे रीतिर्युक्तं यद्विदुः सदा ।

अद्वैतं देवगुणं यद्विदुः सदा ।

क्षुद्रं तु भुक्तं यद्विदुः सदा ।

अद्वैतं देवगुणं देवैः ।

यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु ।

(सारी) पृथिवी की एक राजा होने से, या स्वर्ग के गमन से, (या) सभी लोकों के अधिपति होने से भी स्रोतापत्ति फल (का मिलना) श्रेष्ठ है ।

Better than absolute sovereignty over the earth, better than going to heaven and even better than lordship over all worlds. is the fruit of a Stream-winner. (Srota-apanna-one who has entered on the path to Nirvana).

१४—बुद्धवग्गो

यस्स जितं नावजीयति,
जितं यस्स नो याति कोचि लोके ।
तं बुद्धमनन्तगोचरं,
अपदं केन पदेन नेस्सथ ॥१॥

उद्देश्येला १

मागन्दिश (ब्राह्मण)

यस्य जितं नावजीयते ।
जितमस्य नं याति कश्चिल्लोके ।
तं बुद्धमनन्तगोचरं अपदं केन पदेन नेष्यथ ? ॥

ལྷུང་ཕྱིར་རྒྱལ་སྤྱུ་ཡུལ་མེ་ལ་གསུངས་པ།
གང་གི་རྒྱལ་བ་པམ་པར་མི་རྣམས་དྲི།
འདི་ཡི་རྒྱལ་བ་འཇིག་རྟེན་སྤྱུས་མི་བཟོད།
སངས་རྒྱལ་མཐའ་མེད་མྱོད་ལྷུང་གནས་མེད་དེ།
ལམ་ནི་གང་གིས་ཁྱོད་ཀྱིས་བཟོ་བར་ཟུ།

जिसका जीता बेजीता नहीं किया जा सकता, जिसके जीते (राग, द्वेष, मोह फिर) नहीं लौटते; उस अपद (= स्थान रहित), अनन्तगोचर (= अनन्त को देखने वाले) ब्रह्म को किस पथ से प्राप्त करने ?

He whose conquest (of ignorance, desire, anger etc.) is not turned into defeat, why should he not leave this world (i. e. for Nirvana)? That Buddha of limitless sphere of activity who is without fixed abode, by what path will you lead him astray ?

P 112 (XXIX, 55)

P 96 V 179

གང་ཞིག་རྒྱ་ལ་ཡས་མི་ཉམས་ཤིང་།
ཡའི་ག་རྟེན་མ་རྒྱ་ལ་ཁུང་ཐད་མེད།
སངས་རྒྱས་སྤོང་ལྷལ་མཐུན་ཡས་དེ།
འགྲོ་མེད་གོས་པ་གང་གིས་བཀྲི།

1 ལུ་ཅ་པེ་ལ (སྒྲེང་རྒྱལ་) བེལུལ་དབུས་ཀྱི་ཆར་གདོགས་པ་
 རང་ དེའི་གྲོང་ཁྱེར་སྒེ་ཅན་ འཆར་ག་སོགས་པཟང་སྒེའི་ཆོགས་རྒྱལ་
 ཅ་པེཅན་པར་ཆོགས་དེ་ཆོས་ཀྱི་མིག་ཐོབ་པའི་གནས་ཁྱད་ཅན་དེའོ། །

यस्स जालिनी विसत्तिका,
तण्हा नत्थि कुह्मिच्च नेतवे ।
तं बुद्धमनन्तगोचरं,
अपदं केन पदेन नेस्सथ ॥२॥

यस्य जालिनी विषात्मिका तृष्णा
नास्ति कुत्रचित् नेतुम् ।
तं बुद्धमनन्तगोचरं अपदं केन पदेन नेष्यथ ? ॥

स्येदं चरिं दू वं दुवा गी वदवा छिदं उवा ।
वाव अदं अस्मिदं वं वादं वा अदं सिदं वा ।
सदसं कुसं मसदं स्येदं सुदं सुअं वादसं स्येदं दे ।
असं किं वादं गीसं छिदं गीसं वगी सवं वा ।

जिसकी जाल फैलानेवाली विषरूपी तृष्णा कहीं भी ले जाने लायक नहीं रही; उस अपद (= स्थान रहित), अनन्तगोचर (अनन्त दृष्टा) बुद्ध को किस पथ से प्राप्त करोगे ?

In whom there is no entangling poisonous craving to lead to any involvement, that Buddha of limitless sphere of activity who is without fixed abode, by what path will you lead him astray ?

P 112 (XXIX, 57)

P 96 V 180

वादं वा सिदं छेदं स्येदं वं वा ।
सुअं स्येदं दू वं अवादं स्येदं वा ।
सदसं कुसं सुदं सुअं मसदं असं दे ।
अस्मिदं स्येदं वं वादं गीसं वगी ।

ये ज्ञानपसुता धीरा, नेक्खम्मूपसमे रता ।

देवा पि तेसं पिहयन्ति, सम्बुद्धानं सतीमतं ॥३॥

संकाश्य नगर

देव, मनुष्य

ये ध्यानप्रसिता धीरा नैष्कर्म्योपशमे रताः ।

देवा अपि स्पृहयन्ति संबुद्धानां स्मृतिमताम् ॥

བྱོར་ཁྱིའི་གསལ་ལྟ་ན་དཔྱོད།

གང་ཞིག་པས་མ་གཏན་རྒྱུ་ལེན་བདུན།

བྱ་མེད་ཉི་ཤར་ཞི་ལ་དབྱེས།

ཆོགས་པའི་སངས་ལྷན་པའ་ལ།

དེ་ནས་མ་ལ་ནི་ལྟ་ཡང་སྟོན།

जो धीर ध्यान में लगन, निष्कर्मता और उपशम में रत हैं, उन स्मृतिमन्त्र (= सचेत) बुद्धों की देवता भी स्पृहा (= होड़) करते हैं।

Even the gods emulate those wise ones who are devoted to meditation, who delight in the calm of non-activity, the mindful, perfect Buddhas.

किच्छो मनुस्सपटिलाभो, किच्छं मच्चान जीवितं ।

किच्छं सद्वम्मस्सवनं, किच्छो बुद्धानमुप्पादो ॥४॥

वाराणसी

एकपत्त (नामराज)

कृच्छो मनुष्यप्रतिलाभः कृच्छं मर्त्यानां जीवितम् ।

कृच्छं सद्वर्मश्रवणं कृच्छो बुद्धानां उत्पादः ॥

ལྷ་མོ་སྤྲོ་བའི་ལྷ་མོ་སྤྲོ་བའི་ལྷ་མོ་

མི་ཉིད་རབ་དུ་འབྱེད་དགའ་ལྟེ། ।

འཆི་བར་ངེས་ལྷ་མོ་གསོན་བར་དགའ། ।

དམ་པའི་ཆོས་ནི་ཐོས་བར་དགའ། ।

སངས་རྒྱས་ལྷ་མོ་སྤྲོ་བའི་ལྷ་མོ་སྤྲོ་བའི་ལྷ་མོ་

मनुष्य (योनि) का लाभ कठिन है, मनुष्य का जीवन (मिलना) कठिन है, सच्चा धर्म सुनने को मिलना कठिन है, बुद्धों (= परम ज्ञानियों) का जन्म कठिन है ।

Difficult to obtain is birth as a human being, difficult is the life of mortals. It is difficult to hear the Holy Dharma. Difficult (i. e. rare) is the appearance of the Buddhas (or, it is difficult for beings to make Buddhahood arise in themselves).

सब्वपापस्स अकरणं, कुसलस्स उपसम्पदा ।

सचित्तपरियोदपनं, एतं बुद्धान सासनं ॥५॥

जैतवन

आनन्द (थेर) का प्रश्न

सर्वपापस्याकरणं

कुशलभ्योपसम्पदा ।

स्वचित्तपर्यवदापनं एतद् बुद्धानां शासनम् ।।

གྲུ་ལ་བྱེད་ཚལ་དུ་གྱུན་དགའ་བོ་ལའོ།

ཕྱི་གཤམ་ཅི་ཡང་མི་བྱ་ཞིང་།

དགེ་བ་ལྷན་སྐྱེས་ཆོག་པ་པར་བྱ། །

རང་གི་སེམས་ནི་ཡོངས་སུ་འདལ། །

འདི་ནི་སངས་ཀྱིས་བསྟན་བཤམས། །

सारे पापों का न करना, पुण्य का संचय करना, अपने चित्त को परिशुद्ध करना, यह है बुद्धों की शिक्षा ।

Not to do any evil whatsoever, to cultivate virtue and everything admirable, and to fully purify one's mind-this is the teaching of the Buddha.

P 97 (XXVIII, 1)

P 98 V 183

ཕྱི་ག་བ་ཤམས་ཅན་མི་བྱ་ཏེ།

དགེ་བ་ལྷན་སྦྲེལ་ ཚེད་ས་པར་སྤྱད། །

རང་གི་སེམས་ནི་ཡོངས་སུ་འདུལ།

འདི་ནི་སངས་རྒྱལ་བུ་པོ་ཡིས།

खन्ती परमं तपो तितिक्षा,
निब्बानं परमं वदन्ति बुद्धा ।
न हि पब्बजितो परूपघातो,
समणो होति परं विहेठयन्तो ॥६॥

चेतवन

मानन्द (धेर)

क्षान्तिः परमं तपः तितिक्षा निर्वाणं परमं वदन्ति बुद्धाः ।
नहि प्रव्रजितः परोपघाती श्रमणो भवति परं विहेठयन् ॥

བཟོད་པ་དཀའ་ཐུབ་དམ་པ་བཟོད་པ་ནི།
སྤྱངས་འདས་པ་མཆོག་ཅེས་སངས་རྒྱས་གསུངས།
རབ་དྲུང་བ་གཞན་ལ་གནོད་པ་ངང་།
གཞན་ལ་འཆོ་བ་དག་སྤྱོད་མ་ཡིན་ནོ།

क्षमा परम तप और तितिक्षा है. बुद्ध निर्वाण को परम (= उत्तम)
बतलाते हैं; दूसरे का घात करने वाला; दूसरे को पीड़ित करने वाला प्रव्रजित
(= गृहत्यागी) श्रमण (= संन्यासी) नहीं हो सकता ।

Forbearing patience is the highest asceticism. The Buddha
said that it is the supreme Nirvana. For he is not a renunciate
who harms another, nor is he a virtuous ascetic who molests
others.

P 86 (XXVI, 2)

P 98 V 184

བཟོད་པ་དཀའ་ཐུབ་མཆོག་ཉིད་བཟོད་པ་ནི།
སྤྱངས་འདས་པ་མཆོག་ཅེས་སངས་རྒྱས་གསུངས།
རབ་དྲུང་བ་གཞན་ལ་འཆོ་བ་ནི།
གཞན་ལ་གནོད་པ་སྤྱོད་མ་ཡིན་ནོ།

अनूपवादो अनूपघातो, प्रातिमोक्खे च संवरो ।
 मत्तञ्जुता च भन्तस्मि, पन्तं च शयनासनं ।
 अधिचित्ते च आयोगो, एतं बुद्धान सासनं ॥७॥

अनूपवादोऽनूपघातः प्रातिमोक्षे च संवरः ।
 मात्राज्ञता च भक्ते प्राप्तं च शयनासनम् ।
 अधिचित्ते चायोग एतद् बुद्धानां शासनम् ॥

སྒྲོད་པར་མི་བྱ་བ་དེག་མི་བྱ། ।
 སོ་སོར་ཐར་བ་ཡང་དག་སྒྲོམ། ।
 ཟས་ཀྱི་ཆོད་ནི་རིག་བ་དང་། ।
 བས་མཐའ་དག་དུ་གནས་མཁ་བྱ། ।
 རྒྱལ་བའི་བསམ་བ་ཡང་དག་སྒྲུར། ।
 འདི་ནི་སངས་རྒྱས་བཟུན་བ་ཡིན། ।

निन्दा न करना, घात न करना, प्रातिमोक्ष (=भिक्षु-नियम, आचार-
 नियम) द्वारा अपने को सुरक्षित रखना, परिमाण जानकर भोजन करना,
 एकान्त में सोना-बैठना (=शयनासन=निवासगृह); चित्त को योग में लगाना,
 यह बुद्धों की शिक्षा है ।

Not to insult, not to harm, restraint according to Funda-
 mental precepts (Pratimoksa), moderation in food, secluded
 abode, to purely practise excellent thoughts, this is the teaching
 of the Buddha.

P 199 (XXXI, 54)

P 99 V 185

སྒྲུར་བ་མི་གནད་གནོད་མི་བྱ། ।
 སོ་སོར་ཐར་བས་བསྐྱམ་བར་བྱ། ।
 ཟས་ཀྱི་ཆོད་ཀྱང་ཤེས་བར་བྱ། ।
 བས་མཐའ་དགོན་བར་གནས་བྱ་ཞིང་། ।
 རྒྱལ་བའི་སེམས་ལ་རྣལ་འབྱོར་བྱ། ।
 འདི་ནི་སངས་རྒྱས་བཟུན་བ་ཡིན། ।

न कहापणवस्सेन, तित्ति कामेसु विज्जति ।

अप्पस्सादा दुस्सा कामा, इति विज्जाय पण्डितो ॥८॥

चेतवन

(उदास भिक्षु)

न कार्षापणवर्षेण तृप्तिः कामेषु विद्यते ।

अल्पास्वादा दुःख कामा इति विज्ञाय पण्डितः ॥

शुभं भवेत्कथं नृणां ।

गुरुं च भद्रं कुरु सर्वदा ।

भद्रं च कुरु सर्वदा ।

शुभं च कुरु सर्वदा ।

भद्रं च कुरु सर्वदा ।

यदि रूपयों (= कहापण) की वर्षा हो, तो भी (मनुष्य) की कामों (= भोगों) से तृप्ति नहीं हो सकती । (सभी) काम (= भोग) अल्प स्वाद (और) दुःख है ऐसा कह पंडित देवतार्थों के भोगों में रति नहीं करता ।

Even a shower of gold coins cannot satisfy the desires. The wise know that desire means little pleasure and long experience of suffering.

P 10 (II, 17)

P 99 V 186

गुरुं च भद्रं कुरु सर्वदा ।

भद्रं च कुरु सर्वदा ।

शुभं च कुरु सर्वदा ।

भद्रं च कुरु सर्वदा ।

अपि दिब्बेसु कामेसु, रतिं सो नाधिगच्छति ।
तण्हक्खयरतो होति, सम्मासम्बुद्धसावको ॥६॥

अपि दिव्येषु कामेषु रतिं सनाऽधिगच्छति ।
तृष्णक्षयरतो भवति सम्मासम्बुद्धसावको ॥

ལྷ་ཡི་འདི་བ་དག་ལ་ཡང་།
 དེ་ཡིས་དགའ་བ་མེད་པར་རྟོགས།
 རྟོགས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཉན་ཐོས་ནམས།
 མེད་བ་ཟད་བ་དག་ལ་དགའ།

***सम्यक् संबुद्ध का श्रावक (=अनुयायी) तृष्णा को नाश करने में सगता है।

(These wise ones) realise that even the pleasures of the gods are without (real) happiness. The disciples of the Fully Enlightened Buddha delight only in the destruction of craving.

P 10 (IL 18)

P 100 V 187

ལྷ་འོད་གསལ་མཁའ་ཡིང་།
ལྷ་ག་བར་དགའ་བར་སི་འགྱུར་གྱི།
རྒྱལ་ས་སངས་རྒྱས་དང་ཉན་ཐོས་རྣམས།
སྤྲོད་པ་ཟད་པས་དགྲེས་བར་འགྱུར།

बहुं वै शरणं यन्ति, पर्वतानि वनानि च ।
आरामवृक्षचैत्यानि, मनुस्सा भयतज्जिता ॥१०॥

जेतवन

अग्निदत्त (ब्राह्मण)

बहु वै शरणं यन्ति पर्वतान् वनानी च ।
आरामवृक्षचैत्यानि मनुष्या भयतज्जिता ॥

शुभं भूयः शरणं यन्ति पर्वतान् वनानी च ।

शुभं भूयः शरणं यन्ति पर्वतान् वनानी च ।

शुभं भूयः शरणं यन्ति पर्वतान् वनानी च ।

शुभं भूयः शरणं यन्ति पर्वतान् वनानी च ।

शुभं भूयः शरणं यन्ति पर्वतान् वनानी च ।

मनुष्य भय के मारे पर्वत, वन, आराम (= उद्यान), वृक्ष, चैत्य
(= चौरा) (आदि को देवता मान उसकी) शरण में जाते हैं; किन्तु ये शरण
मंगलदायक नहीं ।

To many a refuge do men go when tormented by fear, to
hills and woods, to gardens, trees, and shrines.

P 96 (XXVII, 28)

P 100 V 188

शुभं भूयः शरणं यन्ति पर्वतान् वनानी च ।

शुभं भूयः शरणं यन्ति पर्वतान् वनानी च ।

शुभं भूयः शरणं यन्ति पर्वतान् वनानी च ।

शुभं भूयः शरणं यन्ति पर्वतान् वनानी च ।

नेतं खो सरणं खेमं, नेतं सरणमुत्तमं ।
नेतं सरणमागम्य, सब्बदुक्खा पमुच्चति ॥११॥

नैतत् खलु शरणं खेमं नैतत् शरणमुत्तमम् ।
नैतत् शरणमागम्य सर्वदुःखात्प्रमुच्यते ॥

अरिं दणं दणो वरिं सुवसं खिं दे ।
सुवसं गुं मघं सुणं अरिं दणं खिं ।
अरिं दणं सुवसं सुं सोदं वं यीस ।
सुणं वसुधं गुं वसं सोदं वं यीस ।

...ये शरण उत्तम नहीं; (क्योंकि) इन शरणों में जाकर सब दुःखों से छुटकारा नहीं मिलता ।

But such are no secure refuge, such are no refuge supreme. Resorting to such a refuge one is not released from all sorrow.

P 96 (XXVII, 29)

P 101 V 189

सुवसं दे वरिं वरिं वरिं वरिं ।
सुवसं दे मघं सुणं वरिं वरिं ।
दे वरिं सुवसं सुं सोदं वं यीस ।
सुणं वसुधं गुं वसं सोदं वं यीस ।

यो च बुद्धं च धम्मं च, सङ्घं च शरणं गतो ।

चत्तारि अरियसच्चानि, सम्मप्यञ्जाय पस्सति ॥१२॥

यश्च बुद्धं च धर्मं च संघं च शरणं गतः ।

चत्वार्यार्यसत्यानि सम्यक् प्रज्ञया पश्यति ॥

सदसः कुसः कॅसः ददः दमोः अदुक्कः ।

मदः मीसः सुवसः सुः सोदः वः प्यीसः ।

सुमः वसुअः सुमः वसुअः गुक्कः अमुदः ददः ॥

सुमः वसुअः रवः दुः अदसः वः ददः ।

जो बुद्ध (= परमज्ञानी), धर्म (= सत्यवान) और संघ (= परम-
ज्ञानियों के अनुयायियों के समुदाय) की शरण गया, जो चारों आर्य सत्त्यों को
प्रज्ञा से भली प्रकार देखता है ।

He who takes refuge in the Buddha, the Dharma and the
Sangha, perceives, in his clear wisdom, the four noble Truths.

P 96 (XXVII, 30)

P 101 V 190

मदः विमः सदसः कुसः कॅसः ददः कि ।

दमोः अदुक्कः अः कि सुवसः सोदः विदः ।

सुमः वसुअः सुमः वसुअः गुक्कः अमुदः ददः ॥

सुमः वसुअः पदः दमः अदसः वः ददः ।

दुःखं दुःखसमुत्पादं, दुःखस्स च अतिक्रमं ।
अरियं चट्ठङ्गिकं मार्गं, दुःखोपशमगामिनं ॥१३॥

दुःखं दुःखसमुत्पादं दुःखस्य चातिक्रमम् ।
आर्याष्टांगिकं मार्गं दुःखोपशमगामिनम् ॥

सुणं वसुधं उरं विंशं चत्तुदं वरं ।
असवणं अमं अणं अणं चत्तुदं वं श्वे ।
असवणं वरं वदेणं वं वरं वं णं सण ।
अणं वणं मेषं वणं मेषं वणं वणं ॥

(१) दुःख, (२) दुःख की उत्पत्ति, (३) दुःख का अतिक्रमण, और
(४) दुःख नाशक आर्य अष्टांगिक मार्ग—जो दुःख को शमन करने की ओर ले
जाता है ।

'There are suffering, the origin of suffering, the cessation
of suffering and the Noble Eightfold Path, which leads to the
cessation of suffering. (right views, right aspirations, right
speech, right action, right living, right exertion, right
recollection and right meditation).

P 96 (XXVII, 30)

P 101 V 191

वदे वं सुं उरं अणं अणं वरं ।
असवणं अमं अणं अणं चत्तुदं वं श्वे ।
असवणं वरं वदेणं वं वरं वं णं सण ॥
अणं वं मेषं वं मेषं वं मेषं वं ॥

एतं खो सरणं खेमं, एतं सरणमुत्तमं ।
एतं सरणमागम्य, सब्बदुक्खा पमुच्चति ॥१४॥

एतत् खलु शरणं क्षेमं एतत् शरणमुत्तमम् ।
एतत् शरणमागम्य सर्वदुःखात् प्रमुच्यते ॥

ॠद्वैद्वणद्वणोद्वैद्वणवस्यैवद्वै । ।
सुवस्यैवद्वैद्वणवस्यैवद्वै । ।
ॠद्वैद्वणसुवस्यैवद्वैद्वै । ।
सुवस्यैवद्वैद्वणवस्यैवद्वैद्वै । ।

ये हैं मंगलप्रद शरण, ये हैं उत्तम शरण, इन शरणों को पाकर (मनुष्य)
सारे दुःखों से छूट जाता है ।

That indeed is a secure refuge, that is the supreme refuge.
On having gone to that refuge a man is freed from all sorrows.

P 96 (XXVII, 30)

P 101 V 192

ॠद्वैद्वणवस्यैवद्वैद्वै । ।
ॠद्वैद्वणवस्यैवद्वैद्वै । ।
ॠद्वैद्वणवस्यैवद्वैद्वै । ।
सुवस्यैवद्वैद्वैद्वैद्वै । ।

दुर्लभो पुरिसाजञ्जो, न सो सम्बत्थ जायति ।
यत्थ सो जायति धीरो, तं कुलं सुखमेधति ॥१५॥

जितवन

आनन्द (धेर)

दुर्लभः पुरुषाजानेयो न स सर्वत्र जायते ।
यत्र स जायते धीरः तत् कुलं सुखमेधते ॥

ཀྱུང་བྱེད་ཚལ་དུ་འོ།

སྤྱིས་བྱ་ཅང་ཤེས་རྟེན་བར་དཀའ། །
ཐམས་ཅད་ཀྱན་དུ་དེ་མི་འབྱུང་ས། །
གང་དུ་བདན་བ་དེ་འབྱུང་ས་བའི། །
རིགས་དེ་རྣམས་ལ་བདེ་བ་འཕྲེལ། །

उत्तम पुरुष दुर्लभ है, वह सर्वत्र उत्पन्न नहीं होता; वह धीर (पुरुष) जहाँ उत्पन्न होता है, उस कुल में सुख की वृद्धि होती है ।

Hard to find is an intelligent man. He is not born everywhere. Where such a wise man is born that family thrives happily.

P 117 (XXX, 28)

P 103 V 193

སྤྱིས་བྱ་ཅང་ཤེས་དཀོན་བ་ལྟེ། །
དེ་དག་ཀྱན་དུ་འབྱུང་ས་ཡིན། །
བདན་བ་རྣམས་དང་འབྲོགས་བ་དག། །
གཉེན་དང་འབྲུད་བ་ལྟ་བུར་བདེ། །
གང་དུ་བདན་བ་དེ་སྤྱིས་བ། །
དེ་ཡི་རིགས་ཀྱིས་བདེ་བ་ཐོབ། །

सुखो बुद्धानमुप्पादो, सुखा सद्धम्मदेसना ।

सुखा सङ्घस्स सामग्गो, समग्गानं तपो सुखो ॥१६॥

जेतवन

बहुत से भिक्षु

सुखो बुद्धानां उत्पादः सुखा सद्धर्म-देशना ।

सुखा संघस्य सामग्गी समग्गाणां तपः सुखम् ॥

सदसं क्रुसं अणुदं वं वदे वं ह्ये । ।

दसं वदे क्खं के वसुदं वं वदे । ।

दणे अणुदं वसुदं वं वदे वं ह्ये । ।

वसुदं वं वसुदं वं वदे वं ह्ये । ।

सुखदायक है बुद्धों का जन्म, सुखदायक है सच्चे धर्म का उपदेश, संघ में एकता सुखदायक है और सुखदायक है एकतायुक्त हो तप करना ।

Joyful is the birth of the Buddha (or the arising of Buddhahood). Joyful is the teaching of the Holy Dharma. Joyful is the harmony of the Sangha. Joyful is the Dharma practice of those who live in harmony.

P 116 (XXX, 23)

P 103 V 194

सदसं क्रुसं वसुदं वं वदे वं ह्ये । ।

दं वदे क्खं के वसुदं वं वदे वं ह्ये । ।

दणे अणुदं वसुदं वं वदे वं ह्ये । ।

वसुदं वं वसुदं वं वदे वं ह्ये । ।

पूजारहे पूजयतो, बुद्धे यदि व सावके ।

पपञ्चसमतिक्कन्ते, तिण्णसोकपरिट्ठवे ॥१७॥

चारिका के समय

कस्सप बुद्ध का सुवर्ण चैत्य

पूजार्हादि पूजयतो बुद्धान् यदि वा श्रावकान् ।

प्रपञ्चसमतिक्रान्तान् तीर्णशोकपरिद्रवान् ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

श्रीसंघं कृष्णं च शिष्यं च शिष्यान् ।

श्रीसंघं कृष्णं च शिष्यं च शिष्यान् ।

श्रीसंघं कृष्णं च शिष्यं च शिष्यान् ।

श्रीसंघं कृष्णं च शिष्यं च शिष्यान् ।

पूजनीय बुद्धों, अथवा (उनके) अनुगामियों—जो संसार को अतिक्रमणकर गये हैं, जो शोक भय को पारकर मये हैं ।

He who pays homage to those who are worthy of homage, whether the Buddhas or their disciples, who having completely gone beyond all relative positions (of existence, non-existence etc), have totally finished with craving and sorrow.

१५—सुखवग्गो

सुसुखं वत जीवाम, वेरिनेसु अवेरिन्नो ।
वेरिनेसु मनुस्सेसु, विहराम अवेरिन्नो ॥१॥

शाक्य नगर

जाति-कलह के उपशमनार्थ

सुसुखं वत ! जीवामो वैरिष्ववैरिणः ।
वैरिषु मनुष्येषु विहरामोऽवैरिणः ॥

मृगुदिंमोदंनुवे ।

दग्गंअदग्गंउअंअदग्गं ।
अग्गंअदग्गंअग्गंअदग्गंअग्गं ।
दग्गंअदग्गंअग्गंअदग्गंअग्गं ।
अदग्गंअग्गंअदग्गंअग्गंअदग्गंअग्गं ।

वैरियों के प्रति (भी) अवैरी हो, अहो ! हम (जैसा) सुखपूर्वक जीवन बिता रहे हैं; वैरी मनुष्यों के बीच अवैरी होकर हम विहार करते हैं ।

Happily do we live free from enmity amongst those who hate. Amidst hateful men we dwell without hate.

P 119 (XXX, 46)

P 105 V 197

अग्गंअदग्गंअग्गंअदग्गंअग्गं ।
अग्गंअदग्गंअग्गंअदग्गंअग्गं ।
अग्गंअदग्गंअग्गंअदग्गंअग्गं ।
अग्गंअदग्गंअग्गंअदग्गंअग्गं ।

सुमुखं वत जीवाम, आतुरेसु अनातुरा ।
आतुरेसु मनुस्सेसु विहराम अनातुरा ॥२॥

सुमुखं वत ! जीवाम आतुरेष्वनातुराः ।
आतुरेषु मनुष्येषु विहरामोऽनातुराः ॥

གཞན་ལ་གཞན་བར་མི་བྱེད་པ། ।
ཤེས་བདག་ཅག་བདེ་བར་འཆོ། ।
གཞན་བྱེད་མི་ཡི་ནང་དུ་ཡང་། ।
བདག་ཅག་གཞན་བ་མེད་བར་གནས། ।

वैरियों के प्रति (भी) अवैरी हो, अहो ! हम (जैसा) सुखपूर्वकं जीवन बिता रहे हैं; वैरी मनुष्यों के बीच अवैरी होकर हम विहार करते हैं ।

Happily do we dwell in good health amongst the diseased.
Amidst diseased men we dwell in good health. (The diseases here are the troublesome passions of desire, hatred, ignorance and their kindred.)

P 119 (XXX. 45)

P 105 V 198

ནད་ཀྱིས་ཐེགས་བའི་མི་ནང་ན། ।
ནད་མེད་བར་ནི་གནས་བ་དང་། ।
ནད་བའི་ནང་ན་ནད་མེད་པ། ।
ཀྱི་མའོ་ཤིན་དུ་བདེ་བར་འཆ། ।

सुमुखं वत जीवाम, उत्सुकेषु अनुस्मुका ।
उत्सुकेषु मनस्सेषु, विहराम अनुस्मुका ॥३॥

सुमुखं वत ! जीवाम उत्सुकेष्वनुस्मुकाः ।
उत्सुकेषु मनुष्येषु विहराम अनुस्मुकाः ॥

दमसः पः दमसः पः सः सः पः ।
सः सः पः पः पः पः पः पः ।
दमसः पः सः सः सः सः पः ।
पः पः पः पः पः पः पः पः ।

भयभीत मनुष्यों में अभय हो, कहो ! हम सुखपूर्वक जीवन बिता रहे हैं; भयभीत मनुष्यों के बीच निर्भय होकर हम विहार करते हैं। उत्सुकों (=आसक्तों) में उत्सुका रहित हो।

Happily do we dwell without yearning (for sensual pleasures) amongst those who yearn (for them). Amidst those who yearn (for them) we dwell without yearning.

P 119 (XXX, 44)

P 106 V 199

लेखः पः पः पः सः सः पः ।
लेखः पः सः पः पः पः पः पः ।
लेखः पः सः सः सः लेखः पः ।
लेखः पः सः पः पः पः पः ।

सुमुखं वत जीवाम, येसं नो नत्थि किञ्चनं ।
यीतिभक्ता भविस्साम, देवा आभस्सरा यथा ॥४॥

संयशाला (ब्राह्मणग्राम, मयघ)

यह

सुसुखं वत ! जीवामो येषां नो नास्ति किञ्चन ।
प्रीतिभक्ष्या भविष्यामो देवा आभास्वरा यथा ॥

གང་ལ་ཅི་ཡང་མེད་ཀྱང་བ།
ཨི་མ་བདག་ཅག་བདེ་བར་འཛོ།
འདྲ་གསལ་གྱི་ནི་ལྷ་བཞིན་དུ།
བདག་ཅག་དགར་བ་ཟ་བར་གྱུར།

जिन हम (लोगों) के पास कुछ नहीं, अहो ! अहो ! वह हम कितना
खुश से जीवन बिता रहे हैं । हम आभासवर देवताओं की भक्ति प्रीतिभक्ष्य
(प्रीति ही भोजन है जिनका) हैं ।

Happily do we dwell, we who are without anything (ie. without any involment in the cycle of conditioned existence). Let us live feeding on happiness like the radiant gods.

P 120 (XXX, 50)

P 106 V 200

གང་ལ་ཅི་ཡང་མེད་པོད་ཀྱི།
དགའ་བ་ཟ་བར་བྱེད་བས་ན།
འོད་གསལ་གྱི་ནི་ལྟ་བཞིན་དུ།
ཀྱེ་མའོ་ཤིན་དུ་བདེ་བར་འཛོ།

जय वैरं पसवति, दुःखं सेति पराजितो ।
उपशान्तो सुखं सेति, हित्वा जयपराजयं ॥५॥

जैतवन

कोसलराज

जयो वैरं प्रसूते दुःखं शेते पराजितः ।
उपशान्तः सुखं शेते हित्वा जयपराजयो ॥

མཉེན་ཡོད་དུ་གསལ་ཀྱང་ཡོད།

ཀྱང་བ་ཡིས་ནི་དགྲ་བོ་འབྱིན། ।

མ་རྩོལ་ཀྱང་བ་སྐྱུག་བསྐྱལ་ཉལ། ।

ཀྱང་དང་མས་བ་བོར་བྱས་ནས། ।

ཉེ་བར་ཞི་བ་བདེ་བར་གཟིན། ।

विजय वैर को उत्पन्न करती है, पराजित (पुरुष) दुःख की (नींद) सोता है; (राग आदि दोष जिसके) शान्त (हैं, वह पुरुष) जय और पराजय को छोड़ सुख की (नींद) सोता है ।

Victory breeds hatred; the defeated live in pain. Happily the peaceful live, having giving up victory and defeat.

P 113 (XXX, 1)

P 107 V 201

ཀྱང་བ་ཡིས་ནི་ཁོན་འབྱུང་གིང་། ।

མ་རྩོལ་མས་བ་སྐྱུག་བསྐྱལ་བྲོལ། ।

ཀྱང་དང་མ་རྩོལ་འཕམ་སྤངས་ནས། ।

ཉེ་བར་ཞི་བའི་བདེ་བ་བྲོལ། ।

नत्थि रागसमो अग्नि, नत्थि दोससमो कलि ।

नत्थि खन्धसमा दुक्खा, नत्थि सन्तिपरं सुखं ॥६॥

जैतवन

कोई कुलकन्या

नास्ति रागसमोऽग्निः, नास्ति द्वेषसमा कलिः ।

नास्ति स्कन्धसमा दुःखाः, नास्ति शान्तिपरं सुखम् ॥

सअग्निं अग्निं न रागसमं अग्निं ।

अग्निं कलं अग्निं अग्निं अग्निं ।

अग्निं अग्निं अग्निं अग्निं ।

अग्निं अग्निं अग्निं अग्निं ।

अग्निं अग्निं अग्निं अग्निं ।

राग के समान अग्नि नहीं, द्वेष के समान मल नहीं, (पाँच) स्कन्धों
(ॐ समुदाय) के समान दुःख नहीं, शान्ति से बढ़कर सुख नहीं ।

There is no fire like lust, no crime like hatred. There is no misery like physical existence, no bliss higher than peace (Nirvana).

जिघच्छा परमा रोगा, सङ्खरा परमा दुखा ।
एतं ज्ञत्वा यथाभूतं, निब्बानं परमं सुखं ॥७॥

आलवी

एक उपासक

जिघत्सा परमो रोगः, संस्कारः परमं दुःखम् ।
एतं ज्ञात्वा यथाभूतं निर्वाणं परमं सुखम् ॥

सग्गेश्वरं वदन्ति सुखं मेव ।
अस्मिन् वदन्ति सुखं मेव ।
अस्मिन् वदन्ति सुखं मेव ।
अस्मिन् वदन्ति सुखं मेव ।

भूख सबसे बड़ा रोग है, संस्कारों से बड़ा दुःख है, यह जान, यथार्थ निर्वाण को सबसे बड़ा सुख (कहा जाता) है ।

Insatiability is the greatest disease. Propensities (samskara the organising attitudes of mind) are the greatest sorrow. Knowing this as it really is, the wise realise Nirvana, the bliss supreme.

P 87 (XXVI, 7)

P 108 V 203

अस्मिन् वदन्ति सुखं मेव ।
अस्मिन् वदन्ति सुखं मेव ।
अस्मिन् वदन्ति सुखं मेव ।
अस्मिन् वदन्ति सुखं मेव ।

आरोग्यपरमा लाभा, सन्तुष्टिपरमं धनं ।

विस्सासपरमा वाति, निब्बानं परमं सुखं ॥८॥

जैतवन

(पसेनदि कोसलराज)

आरोग्यं परमो लाभः, सन्तुष्टिः परमं धनम् ।

विश्वासः परमा ज्ञातिः, निर्वाणं परमं सुखम् ॥

ཁོ་ས་ལར་གསལ་རྒྱལ་ལའོ།

ནད་མེད་པ་ནི་རྟེན་པའི་མཆོག།

ཆོག་ཤེས་པ་ནི་ནོར་བུ་མཆོག་།

མཛེལ་བའི་གྲོགས་ཅི་གཉིད་ཀྱི་མཆོག

ཕུ་ངན་འདས་པ་བདེ་བའི་མཚོ་ག

निरोग होना परम लाभ है, सन्तोष परम धन है, विश्वास सबसे बड़ा बन्धु है, निर्वाण परम (=सबसे बड़ा) सुख है।

Health is the highest gain, contentment is the greatest wealth. Reliable friends are the best kinsmen, Nirvana is the supreme happiness.

P 87 (XXVI, 6)

P 108 V 204

ནད་མེད་རྩེད་པའི་དམ་པ་ཕྱེ།

ཆོག་ཤིས་བ་ནི་ནོར་ཕྱི་དབྱིག

ཡིད་གཙུག་ས་བཤེས་བའི་མཆོག་ཡིན་དེ།

ཕྱ་ངན་འདས་པ་བདེ་བའི་ཐུགས།

प्रविवेकरसं पित्वा, रसं उपसमस्स च ।
निर्दरो होति निष्पापो, धम्मप्रीतिरसं पिवं ॥६॥

वैशाली

(तिस्स थेर)

प्रविवेकरसं पीत्वा रसं उपशमस्य च ।
निर्दरो भवति निष्पायो धर्मप्रीतिरसं पिवन् ॥

एकस्य च तद्वद्विषयस्य च ।

एवमुक्तं तस्मै च तस्मै च ।

तस्मै च तस्मै च तस्मै च ।

तस्मै च तस्मै च तस्मै च ।

तस्मै च तस्मै च तस्मै च ।

एकान्त (चिन्तन) के रस, तथा उपशम (= शान्ति) के रस को पीकर
(पुरुष) निडर होता है, (और) धर्म का प्रेमरस पानकर निष्पाप होता है ।

Having tasted the flavour of complete solitude, and the
flavour of tranquility, by then imbibing the bliss of Dharma's
flavour one becomes free from fear and sin.

साहु दस्सनमरियानं, सन्निवासो सदा सुखो ।

अदस्सनेन बालानं निच्चमेव सुखी सिया ॥१०॥

वेलुवग्राम (वेणुग्राम, वैशाली के पास)

सक (देवराज)

साधु दर्शनमार्थाणां सन्निवासः सदा सुखः ।

आदर्शनेन बालानां नित्यमेव सुखी स्यात् ॥

अथणसं वं ऋससं किं सस्येदं वं अथणसं । ।

अदं दणं अण्णोणसं वं दणं दू वदे । ।

वृषं वं ऋससं किं सस्येदं वं । ।

दणं दू वदे वं दणं दू अण्णसं । ।

आर्यों (सत्पुरुषों) का दर्शन सुन्दर है, सन्तों के साथ निवास सदा सुखदायक होता है; मूर्खों के अदर्शन होने से (मनुष्य) सदा सुखी रहता है ।

It is good to see the noble ones (Aryas), their pure company is always happy. By not seeing fools always be happy.

P 116 (XXX, 26)

P 109 V 206

अथणसं वं ऋससं किं सस्येदं वं वदे । ।

दसं वं दणं ददं अण्णोणसं वं वदे । ।

वृषं वं ऋससं किं सस्येदं वं । ।

दणं दू वदे वं दणं दू अण्णसं । ।

बालसङ्गतचारी हि, दीर्घमद्धान सोचति ।
 दुःखो बालेहि संवासो, अमित्तेनेव सब्बदा ।
 धीरो च सुखसंवासो, ज्ञातीनं व समागमो ॥ ११ ॥

बालसंगतिचारी हि दीर्घमध्वानं शोचति ।
 दुःखो बालैः संवासोऽमित्रैर्नैव सर्वदा ।
 धीरश्च सुख संवासो ज्ञातीनामिव समागमः ॥

सुखं न च दुःखं न च भयं न च मृत्युः ।

पुनः न च दुःखं न च भयं न च मृत्युः ।

सुखं न च दुःखं न च भयं न च मृत्युः ।

पुनः न च दुःखं न च भयं न च मृत्युः ।

पुनः न च दुःखं न च भयं न च मृत्युः ।

पुनः न च दुःखं न च भयं न च मृत्युः ।

मूर्खों की संगति में रहनेवाला दीर्घकाल तक शोक करता है, मूर्खों का सहवास शत्रु की तरह सदा दुःखदायक होता है, बन्धुओं के समागम की भाँति धीरों का सहवास सुखद होता है ।

If one consorts with fools one will suffer for a long time. Association with fools, as with foes, is always painful. The company of the steadfast is pleasurable, like meeting with kinsmen.

P 85 (XXV, 24)

P 110 V 207

सुखं न च दुःखं न च भयं न च मृत्युः ।

पुनः न च दुःखं न च भयं न च मृत्युः ।

सुखं न च दुःखं न च भयं न च मृत्युः ।

पुनः न च दुःखं न च भयं न च मृत्युः ।

पुनः न च दुःखं न च भयं न च मृत्युः ।

पुनः न च दुःखं न च भयं न च मृत्युः ।

तस्मा हि-

धीरं च प्राज्ञं च बहुश्रुतं च,
धोरहसीलं व्रतवन्तमार्यम् ।
तं तादिसं सत्पुरिसं सुमेधं,
भजेय नक्षत्रपथं व चान्दिमा ॥१२॥

तस्माद्वि धीरं च प्राज्ञं च बहुश्रुतं च धुर्यशीलं व्रतवन्तमार्यम् ।
तं तादृशं सत्पुरुषं सुमेधसं भजेत नक्षत्रपथमिव चन्द्रमा ॥

देसः कः पञ्चदः सप्तदः सप्तदः सप्तदः सप्तदः ।
ऊँचः सप्तदः सप्तदः सप्तदः सप्तदः सप्तदः सप्तदः ।
देः सप्तदः सप्तदः सप्तदः सप्तदः सप्तदः सप्तदः ।
सप्तदः सप्तदः सप्तदः सप्तदः सप्तदः सप्तदः ।

सप्तदः सप्तदः सप्तदः सप्तदः

सप्तदः सप्तदः सप्तदः सप्तदः

इसलिए धीर, प्राज्ञ, बहुश्रुत, उद्योगी, व्रती, आर्य एवं सुबुद्धिसत्पुरुष को
बैसे ही सेवन करे, जैसे चन्द्रमा नक्षत्र पथ का (सेवन करता है) ।

Therefore, even as the moon follows the path of the stars,
intelligent and saintly people should follow those who are wise
and steady, of extensive learning, moral, of great endurance
and noble.

P 85 (XXV, 25)

P 110 V 208

देः सप्तदः सप्तदः सप्तदः सप्तदः सप्तदः ।
सप्तदः सप्तदः सप्तदः सप्तदः सप्तदः सप्तदः ।
ऊँचः सप्तदः सप्तदः सप्तदः सप्तदः सप्तदः सप्तदः ।
सप्तदः सप्तदः सप्तदः सप्तदः सप्तदः सप्तदः ।

१६—पियवग्गो

अयोगे युञ्जमत्तानं, योगस्मि च अयोजयं ।
अत्थं हित्वा पियग्गाही, पिहेतत्तानुयोगिनं ॥१॥

जेतवन

तीन भिक्षु

अयोगे युञ्जन्नात्मानं योगे चायोजयन् ।
अत्थं हित्वा प्रिय-ग्गाही स्पृहयेदात्मानुयोगिनम् ॥

अयं अयोगे युञ्जन्नात्मानं योगे चायोजयन् ।

अत्थं हित्वा प्रिय-ग्गाही स्पृहयेदात्मानुयोगिनम् ॥

अयं अयोगे युञ्जन्नात्मानं योगे चायोजयन् ।

अत्थं हित्वा प्रिय-ग्गाही स्पृहयेदात्मानुयोगिनम् ॥

अयं अयोगे युञ्जन्नात्मानं योगे चायोजयन् ।

अयोग (=अनासक्ति) में अपने को लगाने वाले; योग (=असक्ति) में न योग देने वाले; अर्थ (=स्वर्ग) छोड़ प्रिय का ग्रहण करनेवाले आत्मानुयोगी (पुरुष) की स्पृहा करें ।

By devoting oneself to that which should be shunned, not devoting oneself to the practice of meditation, and giving up the quest, one who is thus attached to pleasure will envy him who exerts himself in meditation.

मां पियेहि समागच्छि, अपियेहि कुदाचनं ।
पिमानं भदस्सनं दुक्खं, अपियाणं च दस्सनं ॥२॥

मा प्रियैः समागच्छ, अप्रियैः कदाचन ।
प्रियाणां अदर्शनं दुःखं, अप्रियाणां च दर्शनम् ॥

दग्गल्लं वल्लं किं मल्लं वल्लं । ।
सिं दग्गल्लं वल्लं मल्लं वल्लं । ।
दग्गल्लं वल्लं मल्लं वल्लं वल्लं । ।
सिं दग्गल्लं वल्लं मल्लं वल्लं वल्लं । ।

प्रियों का संग मत करो, और न कभी अप्रियों ही (का संग करो),
प्रियों का न देखना दुःखद होता है, और अप्रियों का देखना (भी) ।

Never seek intimacy with what is pleasant or unpleasant.
Not to see the pleasant, and the sight of the unpleasant are
both painful.

P 21 (V, 5)

P 111 V 210

सुग्गल्लं वल्लं मल्लं वल्लं वल्लं । ।
सिं सुग्गल्लं वल्लं मल्लं वल्लं वल्लं । ।
मल्लं वल्लं सुग्गल्लं वल्लं वल्लं । ।
सिं सुग्गल्लं वल्लं मल्लं वल्लं वल्लं । ।

तस्मा प्रियं न कयिराथ, प्रियापायो हि पापको ।
गन्था तेषां न विज्जन्ति, येषां नत्थि प्रियाप्पियं ॥३॥

तस्मात् प्रियं न कुर्यात्, प्रियापायो हि पापकः ।
अन्याः तेषां न विद्यन्ते येषां नास्ति प्रियाप्रियम् ॥

देसं कं दमार् वरं खिं पुं धे ।
दमार् वं वरं वं खिं वं ११ ।
मार् वं दमार् वरं खिं १२ ।
दे वं खिं वं १३ ।

“इसलिए प्रिय न बनावे, प्रिय का नाश बुरा लगता है; उनके (दिल में)
गँठ नहीं पड़ती, जिसके प्रिय अप्रिय नहीं होते ।

Hence hold nothing dear, for separation from what is
liked is painful. Bonds do not exist for those by whom nought
is liked or disliked.

प्रियतो जायतो सोको, प्रियतो जायतो भयं ।
प्रियतो विप्रमुक्तस्त, नत्थि सोको कुतो भयं ॥५॥

जैतवन

कोई कुटुम्बी

प्रियतो जायते शोकः प्रियतो जायते भयम् ।
प्रियतो विप्रमुक्तस्य नास्ति शोकः कुतो भयम् ॥

सुखं भवेत्तु भयं ।

दण्णं वं कम्मसं यत्तुं दण्णं । ।
दण्णं वं कम्मसं यत्तुं दण्णं वं । ।
दण्णं वं कम्मसं वेत्तुं दण्णं । ।
सुं दण्णं वेत्तुं दण्णं वं । ।

प्रिय (वस्तु) से शोक उत्पन्न होता है, प्रिय से भय उत्पन्न होता है;
प्रिय (के बंधन) से जो मुक्त है, उसे शोक नहीं है, फिर भय कहाँ से (हो) ?

From liking springs grief, from liking springs fear. For
him who is wholly free from liking is no grief or fear.

P 20 (V, 1)

P 112 V 212

सुखं वं कम्मसं यत्तुं दण्णं । ।
सुखं वं कम्मसं यत्तुं दण्णं वं । ।
सुखं वं दण्णं वेत्तुं दण्णं । ।
सुं दण्णं वेत्तुं दण्णं वं । ।

प्रेमतो जायती सोको, प्रेमती जायती भयं ।
 प्रेमती विष्णुमुत्तस्स, नत्थि सोको कुतो भयं ॥४॥

चैतवन

विशाखा (उपासिका)

प्रेमतो जायते शोकः प्रेमती जायते भयम् ।
 प्रेमती विष्णुमुक्तस्य नास्ति शोकः कुतो भयम् ॥

प्रेमतेसं वं कससं वसं कुं दं कं भुं ।
 प्रेमतेसं वं कससं वसं दं विवसं वं भुं ।
 प्रेमतेसं वं कससं वं कसं वसं वसं वं ।
 कुं दं कं भुं दं दं दं विवसं वं भुं ।

प्रेम से शोक उत्पन्न होता है, प्रेम से भय उत्पन्न होता है, प्रेम से मुक्त को शोक नहीं, फिर भय कहाँ से ?

From affection springs grief, from affection springs fear.
 For him who is wholly free from affection there is no grief
 or fear.

रतिया जायती सोको, रतिया जायती भयं ।

रतिया विष्पमुत्तस्स, नत्थि सोको कुतो भयं ॥६॥

वैशाली (कूटागारशाला)

लिच्छविलोक

रतिया (रत्या) जायते शोको रत्या जायते भयम् ।

रत्या विप्रमुक्तस्य नास्ति शोकः कुतो भयम् ॥

कणसं वं क्खसं वसं सुं दं सुं । ।

कणसं वं क्खसं वसं दं विसं वं सुं । ।

कणसं वं क्खसं वं सुं दं विसं वं सुं । ।

सुं दं विसं वं सुं दं विसं वं सुं । ।

रति (= राग) से शोक उत्पन्न होता है, रति से भय उत्पन्न होता है, राग से मुक्त को शोक नहीं, फिर भय कहाँ से ?

From attachment springs grief, from attachment springs fear. For him who is wholly free from attachment there is no grief or fear.

कामतो जायती सोको, कामतो जायतो भयं ।
कामतो विप्पमुत्तस्स, नत्थि सोको कुतो भयं ॥७॥

चेतवन

अनित्थिगन्धकुमार

कामतो जायते शोकः कामतो जायते भयम् ।
कामतो विप्रमुक्तस्य नास्ति शोकः कुतो भयम् ॥

अरेदं वं कम्मसं व्यसं सुदं वं भुं । ।
अरेदं वं कम्मसं व्यसं अरेदं वं भुं । ।
अरेदं वं कम्मसं वै सुदं वं भुं । ।
सुदं वं भुं उदं अरेदं वं भुं । ।

काम से शोक उत्पन्न होता है । रति से भय उत्पन्न होता है । काम से मुक्त को शोक नहीं, फिर भय कहाँ से ?

From desire springs grief, from desire springs fear. For him who is wholly free from desire there is no grief or fear.

तण्हाय जायती सोको, तण्हाय जायती भयं ।
तण्हाय विप्पमुत्तस्स, नत्थि सोको कुतो भयं ॥८॥

चेतवन

कोई ब्राह्मण

तृष्णाया जायते शोकः तृष्णाया जायते भयम् ।
तृष्णाया विप्रमुक्तस्य नास्ति शोकः कुतो भयम् ॥

स्येदं पद्मसंयसं सुदं स्ये । १
स्येदं पद्मसंयसं दहिनसं पद्मे ।
स्येदं पद्मसंयसं सुदं सुदं । १
सुदं स्येदं उदं दहिनसं पद्मे । १

तृष्णा से शोक उत्पन्न होता है । तृष्णा से भय उत्पन्न होता है । तृष्णा
से जो मुक्त व्यक्ति है उसे शोक और भय कहाँ ?

From craving springs grief, from craving springs fear.
For him who is wholly free from craving there is no grief
or fear.

शीलदस्सनसम्पन्नं, धम्मट्ठं सच्चवेदिनं ।

अत्तनो कम्म कुब्बानं, तं जनो कुरुते पियं ॥६॥

राजगृह (वेणुवन)

पाँच सौ बालक

शीलदर्शनसम्पन्नं धर्मिष्ठं सत्यवादिनम् ।

आत्मनः कर्म कुर्वाणं तं जनः कुरुते प्रियम् ॥

देहं धर्माद्विदुः । ।

हृदयं प्रियं धर्मात्पुत्रं सुखं कर्मात् । ।

कर्म धर्मात्पुत्रं धर्मात्पुत्रं धर्मात्पुत्रं । ।

धर्मं धर्मात्पुत्रं धर्मात्पुत्रं धर्मात्पुत्रं । ।

धर्मं धर्मात्पुत्रं धर्मात्पुत्रं धर्मात्पुत्रं । ।

जो शील (=आचरण) और दर्शन (=विद्या) से सम्पन्न, धर्म में स्थित, सत्यवादी और अपने काम को करनेवाला है, उस (पुरुष) को लोग प्रेम करते हैं ।

People hold dear one who is perfect in virtue and views, who is established in the Dharma, is truthful, and performs his own duty.

छन्दजातो अनवखाते, मनसा च फुटो सिया ।

कामेषु च अप्पटिबद्धचित्तो, उद्धंसोतो ति वुच्चति ॥१०॥

चैतवस

(अनागामी)

छन्दजातोऽनाख्याते मनसा च स्फूर्तिः स्यात् ।

कामेषु चाऽप्रतिबद्धचित्त उद्धंसोता इत्युच्यते ॥

श्रुमं सुदेवं ऋषिं सुप्रसन्नं सौमित्रं ।

सर्वदेवस्य सुप्रसन्नं सौमित्रं ।

सर्वदेवस्य सुप्रसन्नं सौमित्रं ।

सर्वदेवस्य सुप्रसन्नं सौमित्रं ।

सर्वदेवस्य सुप्रसन्नं सौमित्रं ।

जो अकथ्य (= वस्तु = निर्माण) का अभिलाषी है, (उसमें) जिसका ध्यान लगा है, कामों (= भोगों) में जिसका चित्त बद्ध नहीं, वह उर्ध्वस्रोत कहा जाता है ।

One who has developed a longing for the inexpressible (Nirvana), and whose mind has become clear and turned from involvement with desire, is called "one bound upstream". (One who goes against the current of habitual ignorance and sin, thus moving out of saṃsāra).

चिरप्पवासिं पुरिसं, दूरतो स्रोत्यिमागतं ।

आतिमिता सुहृज्जा च, अभिनन्दन्ति आगतं ॥११॥

ऋषिपत्तन

नन्दिपुत्त

चिरप्रवासिनं पुरुषं दूरतो स्वस्त्यागतम् ।

ज्ञातिमित्राणि सुहृदश्चऽभिनन्दन्त्यागतम् ॥

ཡང་ཕྱོད་ལྷུང་བར་དགའ་མེད་ལྷ་ལའོ། །

ཕྱིས་བུ་ཕྱུག་རིང་འཁུམས་གཏུར་དེ།

གྱིང་ནས་བདེ་བར་སྒྲེབས་བ་ལ།

གཉིས་དང་བཤེས་དང་སྒྲིང་གྲོགས་ལྷན་ས།

འདི་མ་པ་མཛོན་པར་དགའ་བར་བྱེད།

चिर-प्रवासी (=चिरकाल तक परदेश में रहे) दूर (देश) से सानन्द लौटे पुरुष का, जातिवाले, मित्र और सुहृद अभिनन्दन करते हैं।

A man long absent and returned safe from a far, is welcomed on his arrival by kinsmen, friends, and well-wishers.

P 23 (V, 20)

P 116 V 219

གྲུངས་ཐུག་ཆད་བར་སྒྲུག་པའི་མེ།

རིང་ནས་ཉེ་ཞེ་མེད་འོངས་ན།

གཉེན་བསེས་མཛེན་བོ་ལྷ་གས་ནས་སུ། །

ཨ་ལ་ལ་ཞེས་མངོན་པར་དགའ།

तथेव कतपुञ्जं पि, अस्मा लोका परं गतं ।
पुञ्जानि पटिगण्हुन्ति, पियं आतीव आगतं ॥१२॥

तथैव कृतपुण्यमप्यस्मात् लोकात् परं गतम् ।
पुण्यानि प्रतिगृह्णन्ति पियं जातिमिवागतम् ॥

དེ་བཞིན་བསོད་ནམས་བྱེད་པ་ཡང་། །
 འཇིག་རྟེན་འདི་ནས་གཞན་སྡོང་ན། །
 མཇེན་པོ་སྐྱབས་ལ་གཉེན་གྱིས་བཞིན། །
 བསོད་ནམས་དག་གིས་བསྐྱབས་པར་བྱེད། །

དགའ་བའི་མཆོད་རྟེན་།

ལེན་བཅུ་དྲུག་པའོ།།

पुण्यकर्म (पुरुष) को इस लोक से पर (लोक) में जानें पर, (उसके) पुण्य (कर्म) प्रिय जाति (वालों) की भाँति स्वीकार करते हैं ।

In a similar way, a man's good deeds will welcome him when he has gone from this world to the next, as kinsmen will welcome a dear one on his return.

P 23 (V, 20)

P 116 V 220

དེ་བཞིན་བསོད་ནམས་བྱས་པའི་མི།
 འཇིག་རྟེན་འདི་ནས་པ་རྩལ་དུ།
 ལྷན་ཆེ་གཉེན་བཞིན་བསོད་ནམས་དག།
 འོངས་ནས་མངོན་པར་དགའ་བར་བྱེད།

१७—कोधवग्गो

कोषं जहे विष्पजहेय्य मानं,
संयोजनं सत्त्वमतिक्रमेय्य ।
तं नामरूपस्मिमसज्जमानं,
अकिञ्चनं नानुपतन्ति दुःखा ॥१॥

कपिलवस्तु (न्यग्रोधाराम)

रौहिणी

क्रोधं जह्याद् विप्रजह्यान् मानं
संयोजनं सर्वमतिक्रमेत् ।
तं नाम - रूपयोरसज्यमानं
अकिञ्चनं नाऽनुपतन्ति दुःखानि ॥

ཉུ་ལྷོ་རྩོམ་པ་ཀུན་དགའ་རྩེ་བར་དམར་མོ་ལ་གསུངས་པ།
 ཁྱིེ་བ་སྤངས་ཤིང་ང་ལྷུ་པ་རབ་རྩེ་སྤངས།
 རབ་རྩེ་སྤོར་བ་ཀུན་ལས་རིང་རྩེ་བཟུལ།
 མིང་དང་གཞུགས་ལ་ས་ཁེམ་ཅི་ཡང་མེད།
 སྤྲུག་བཟུལ་ནས་ས་མི་རྩེ་སྤོར་བ་མི་རྩུལ།

क्रोध को छोड़े, अभिमान का त्याग करे, मारे संयोजनों (=बन्धनों) से पार हो जाये, ऐसे नाम-रूप में आसक्त न होनेवाले, तथा परिग्रह रहित (पुरुष) को दुःख सन्ताप नहीं देते ।

One should give up anger, one should renounce pride, one should overcome all fetters (of worldly attachment). Sorrow never befalls one who does not cling to name (nama) and form (rupa) and who calls nothing his own.

P 65 (XX, 1)

P 117 V 221

ཁོ་བ་སྒྲངས་ཤིང་རྒྱལ་ནམ་སྒྲངས་ན།
 ཀུན་སྦྱོར་ཀུན་ལས་ཤིན་དུ་འདས་གྱུར་ཞིང་།
 ཡིང་དང་གཟུགས་ལ་ཆགས་པ་མེད་དེ་དག།
 ཅི་ཡང་མེད་པས་ཆགས་པའི་རྗེས་མི་རྩེང་།

[illegible]

यो वै उत्पतितं क्रोधं, रथं भ्रन्तं व धारये ।

तमहं सारथिं ब्रूमि, रश्मिग्राहो इतरो जनो ॥२॥

आलवी (अम्मालव चैत्य)

कोई मिथु

यो वै उत्पतितं क्रोधं रथं भ्रान्तमिव धारयेत् ।

तमहं सारथिं ब्रवीमि, रश्मिग्राह इतरो जनः ॥

གང་གིས་ཁྱོ་བ་ལངས་བ་ལ། ।

ཤིང་དྲེ་འཁོར་བཞིན་འཛིན་པ་དེ། ।

ཁ་ལོ་བ་ཞེས་བདག་གིས་སྟེ། ।

སྟེ་བོ་གཞན་ནི་སྟབ་སྟོགས་འཛིན། ।

जो चढ़े क्रोध को भ्रमण करते रथ की भाँति पकड़ ले, उसे मैं सारथी कहता हूँ, दूसरे लोग लगाम पकड़नेवाले (मात्र) हैं ।

Whoever checks his rising anger like a rolling chariot, him I call a true charioteer. Other people are only holding the reins.

P 67 (XX, 22)

P 117 V 222

གང་ཞིང་ཁྱོ་བ་བྱང་བ་དང་། ।

ཤིང་དྲི་འཁྱམས་ལས་འཛིན་ཅེད་དེ། ।

འདུལ་སྟོང་མཁན་དྲེ་ངས་གསུངས་ཀྱི། ।

ཞགས་འདེགས་སྟེ་བོ་བལ་བ་ཡིན། ।

अक्कोधेन जिने कोधं असाधुं साधुना जिने ।

जिने कदरियं दानेन, सच्चेनालिकवादिनं ॥३॥

राजगृह (वेणुवन)

उत्तरा (उपासिका)

अक्रोधेन जयेत् क्रोधं, असाधुं साधुना जयेत् ।

जयेत् कदर्यं दानेन सत्येनाऽलीकवादिनम् ॥

འོད་མཛི་ཚེ་དུ་དགེ་བཅུ་གཟུང་ལྷ་མ་ལའོ། །

སྤང་མེད་ཁྱོ་བ་པམ་བར་གྱིས།

ལེགས་པས་ཉེས་བ་པས་བར་གྱིས། །

བདེན་པ་ཡིས་ནི་བརྟན་ཆོག་དང་། །

ལྟོན་གས་སེར་མ་ལམ་པར་གྱིས།

अक्रोध से क्रोध को जीते, असाधु को साधु (= भलाई) से जीते, कृपण को दान से जीते, झूठ बोलनेवाले को सत्य से (जीते) ।

Overcome another's anger by being oneself without anger,
another's evil by goodness. Overcome the stingy by generosity,
and liars by truth.

P 67 (XX, 19)

P 118 V 223

ཁྱོ་བ་མེད་པ་མ་ཁྱོ་བ་ལྟུང་།

ལེགས་པས་ལེགས་པ་མ་ཡིན་ཐུབ།

ཡོན་པ་ཡིས་ནི་འདྲུང་བ་ལྷན།

བདེན་བས་བདེན་བ་ས་ཡིན་ལུག་།

सच्चं भणे न कुञ्जेय्य, दज्जा अप्पं पि याचितो ।

एतेहि तीहि ठानेहि, गच्छे देवान सन्तिके ॥४॥

जैतवन

महामोगल्लान (थेर)

सत्तयं भणेत् न क्रुध्येत्, दद्यादल्पेऽपि याचितः ।

एतैस्त्रिभिः स्थानैः गच्छेद् देवानामन्तिके ॥

वदेकं वदंस्सुखं भवेत्तु वसो ।

सुखं वदंस्सुखं भवेत्तु वसो ।

वदंस्सुखं वदंस्सुखं भवेत्तु वसो ।

सुखं वदंस्सुखं भवेत्तु वसो ।

सच बोले, क्रोध न करे, थोड़ा भी माँगने पर दे, इन तीन बातों से
(पुरुष) देवताओं के पास जाता है ।

One should speak the truth, one should not be angry, and
one should give from what little one has to him who asks. By
these three things one may go the presence of the gods.

P 67 (XX. 16)

P 113 V 224

वदेकं वदंस्सुखं भवेत्तु वसो ।

सुखं वदंस्सुखं भवेत्तु वसो ।

वदंस्सुखं वदंस्सुखं भवेत्तु वसो ।

सुखं वदंस्सुखं भवेत्तु वसो ।

अहिंसका ये मुनयो, निच्चं कायेन संवृता ।
ते यन्ति अच्युतं ठानं, यत्थ गत्वा न सोचरे ॥५॥

साकेत = अयोध्या

ब्राह्मण

अहिंसका ये मुनयो नित्यं कायेन संवृताः ।
ते यन्ति अच्युतं स्थानं यत्र गत्वा न शोचन्ति ॥

मन्त्रः ॥ १ ॥

सुवः ॥ १ ॥

५॥ ॥ १ ॥

५॥ ॥ १ ॥

५॥ ॥ १ ॥

जो मुनि (लोग) अहिंसक, सदा काया में संयम करनेवाले हैं, वह
(उस) अच्युत स्थान (= जिस स्थान पर पहुँच फिर गिरना नहीं होता) को
प्राप्त होते हैं, जहाँ जाकर फिर नहीं शोक किया जाता ।

Those sages who, injuring none, are ever restrained in
body, go to the changeless state (Nirvana), whither gone they
never grieve.

१ सुवः (मन्त्रः) ॥ १ ॥ ५॥ ॥ १ ॥
(५॥ ॥ १ ॥) ५॥ ॥ १ ॥ ५॥ ॥ १ ॥
(५॥ ॥ १ ॥) ५॥ ॥ १ ॥ ५॥ ॥ १ ॥

सदा जागरमानानं, अहोरत्तानुसिक्खिनं ।
निब्बानं अधिमुत्तानं, अत्थं गच्छन्ति आसवा ॥६॥

राजगृह (गृध्रकूट)

राजगृह-श्रेष्ठी की दासी

सदा जाग्रतां अहोरात्रं अनुशिक्षमाणानाम् ।
निवार्यं अधिमुत्तानां अस्तं गच्छन्ति आसवा ॥

ཏཱ་ལའི་བླ་མ་པོ་འདི་རྒྱུ་ལོ། །

རྒྱུ་ལོ་དང་མཚན་མོ་སྤྱོད་གྱུར་ཅིང་། །

དྲམ་དུ་རྩེས་སུ་སློབ་བྱེད་བ། །

བྱ་ངན་འདས་པ་ལྟར་ལེན་ནམས། །

ཁྱད་ཀྱིས་ཟླ་པ་ཟད་པར་འགྱུར། །

जो सदा जागता (=सचेत) रहता है, रात-दिन (उत्तम) सीख सीखनेवाला होता है, और निवारण (प्राप्तकर) मुक्त हो गया है, उसके आसव (=चित्त मल) अन्त हो जाते हैं ।

Those who are ever vigilant, who train themselves day and night and who are wholly bent on Nirvana, it is they who bring their defiling taints to an end.

पोराणमेतं अतुल, नेतं अज्जतनामिव ।
 निन्दन्ति तुण्हिमासीनं, निन्दन्ति बहुभाणिनं ।
 मितभाणिं पि निन्दन्ति, नत्थि लोके अनिन्दितो ॥७॥

जेतवन

अतुल (उपासक)

पुरणामेतद् अतुल ! नैतद् अद्यतनमेव ।
 निन्दन्ति तूष्णीमासीनं निन्दन्ति बहुभाणिनाम् ।
 मितभाणिनमपि निन्दन्ति नास्ति लोकेऽनिन्दितः ॥

५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५००

५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५००
 ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५००
 ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५००
 ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५००
 ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५००
 ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५००

हे अतुल ! यह पुरानी बात है, आज की नहीं—(लोग) चुप बैठे हुये
 की निन्दा करते हैं, और बहुत बोलनेवाले की भी, मितभाषी की भी निन्दा
 करते हैं ।

This is an old saying, o Atula, and not merely one of the
 present day. "They blame those who sit in silence, they blame
 those who speak much, and those who speak little they also
 blame. There is no one who is not blamed in this world."

P 111 (XXIX, 49)

P 120 V 227

५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५००
 ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५००
 ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५००
 ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५०० ५००

न चाहु न च भविस्सति, न चेतर्हि विज्जति ।
एकन्तं निन्दितो पोसो, एकन्तं वा पसंसितो ॥८॥

न चाऽभूत् न च भविष्यति व चैतर्हि विद्यते ।
एकान्त निन्दितः पुरुष एकान्तं वा प्रशंसितः ॥

མཐའ་གཅིག་དུ་ནི་སྒྲོན་བ་འཇམ། ।
མཐའ་གཅིག་བསྟོན་བའི་སྐྱེས་བུ་ནི། ।
མ་བྱེང་འབྱེང་བར་མི་འགྱུར་དེ། ।
ད་ལྟ་ཡང་ནི་ཡོད་མ་ཡིན། ।

दुनिया में अनिन्दित कोई नहीं है । बिल्कुल ही निन्दित या बिल्कुल ही प्रशंसित पुरुष न था, न होगा, न आजकल है ।

'There never was, there never will be, nor is there now, a person who is wholly blamed or wholly praised.

P 111 (XXIX, 50)

P 120 V 228

གཅིག་དུ་སྒྲོན་བར་བྱ་བ་དང་། ।
གཅིག་དུ་བསྟོན་བར་བྱ་བའི་མི། ।
ད་ལྟ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་དེ། ।
བྱེང་བར་མ་གྱུར་འབྱེང་མི་འགྱུར། ।

यं चे विज्जू पसंसन्ति, अनुविच्च सुवे सुवे ।
अच्छिद्दवृत्तिं मेधाविं, पज्जासोलसमाहितं ॥६॥

यश्चेद् विज्ञाः प्रशंसन्ति अनुविच्य श्व श्वः ।
अच्छिद्रवृत्तिं मेधाविनं प्रज्ञाशीलसमाहितम् ॥

देवोऽप्युच्यते ननु विज्जूः कस्य ।
विज्जूः केन विज्जूः ननु विज्जूः केन ।
विज्जूः केन विज्जूः ननु विज्जूः केन ।
विज्जूः केन विज्जूः ननु विज्जूः केन ।

अपने-अपने (दिल में) जान कर विज्ञ लोग अच्छिद्र वृत्ति (=दोषरहित स्वभाववाले) मेधावी; प्रज्ञा-शील-संयुक्त जिस (पुरुष) की प्रशंसा करते हैं.....

Observing him day by day, the intelligent praise one who is of flawless character, wise, and endowed with wisdom and virtue.

P 111 (XXIX, 52)

P 121 V 229

विज्जूः केन विज्जूः ननु विज्जूः केन ।
विज्जूः केन विज्जूः ननु विज्जूः केन ।
विज्जूः केन विज्जूः ननु विज्जूः केन ।
विज्जूः केन विज्जूः ननु विज्जूः केन ।

निक्खं जम्बोनदस्सेव, को तं निन्दितुमरहति ।

देवा पि नं पसंसन्ति, ब्रह्मणा पि पसंसितो ॥१०॥

निष्कं जम्बूनदम्येव कस्तं निन्दितुमर्हति ।

देवा अपि त प्रशंसन्ति ब्रह्मणाऽपि प्रशंसितः ॥

འཇམ་བུ་རྒྱུ་གསེར་གྱི་རྩོམ་ཅོ་བཞིན། ।

སྤྱ་ཞིག་དེ་ལ་སྒྲོད་པར་རིགས། ।

ལྷ་ཡང་དེ་ལ་བཟློད་པར་བྱེད། ।

ཚངས་བཤམ་ནི་དེ་ལ་བཟློད། ।

“जम्बूनाद (सुवर्ण) की अशर्फी के समान उसकी कौन निन्दा कर सकता है; देवता भी उसकी प्रशंसा करते हैं, ब्रह्मा द्वारा भी वह प्रशंसित होता है ।

Who dares blame such a person, who is like a coin of refined gold ? Even the gods praise him, and by Brahma too he is praised.

P 111 (XXIX, 52)

P 121 V 230

དེ་དག་སྤྱ་གྲུ་སྒྲོད་པར་རིགས། ।

འཇམ་བུ་རྒྱུ་གསེར་གྱི་གསེར་གྱི་བཟློད། ।

कायप्रकोपं रक्षेय्य, कायेन संवृतो सिया ।

कायदुश्चरितं हित्वा, कायेन सुचरितं चरे ॥११॥

वेणुवन

वज्जिय (सिद्ध)

कायप्रकोपं रक्षेत् कायेन संवृतः स्यात् ।

कायदुश्चरितं हित्वा कायेन सुचरितं चरेत् ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

काया की चंचलता से रक्षा करें, काया से संयत रहे, कायिक दुश्चरित की छोड़ कायिक सुचरित का आचरण करें !

One should guard against uncontrolled actions of body, one should be restrained in body. Abandoning evil conduct of body, one should practice virtue with one's body.

वचोपकोपं रक्षेय्य, वाचाय संवृतो सिया ।

वचोदुश्चरितं हित्वा, वाचाय सुचरितं चरे ॥१२॥

वचः प्रकोपं रक्षेद् वाचा संवृतः स्यात् ।

वचो दुश्चरितं हित्वा वाचा सुचरितं चरेत् ॥

वचोऽपि रक्षेत् वाचा संवृतः स्यात् ।

वचोऽपि रक्षेत् वाचा संवृतः स्यात् ।

वचोऽपि रक्षेत् वाचा संवृतः स्यात् ।

वचोऽपि रक्षेत् वाचा संवृतः स्यात् ।

वाणी की चंचलता से रक्षा करें, वाणी से संयत रहें, वाचिक दुश्चरित को छोड़, वाचिक सुचरित का आचरण करें ।

One should guard against uncontrolled actions of speech, one should be restrained in speech. Abandoning evil conduct of speech, one should practice virtue with one's speech.

मनोपकोपं रक्खेय्य, मनसा संवृतो सिया ।
मनोदुच्चरितं हित्वा, मनसा सुचरितं चरे ॥ १३ ॥

मनः प्रकोपं रक्षेत् मनसा संवृतः स्यात् ।
मनोदुश्चरितं हित्वा मनसा सुचरितं चरेत् । १३

मैनं गैः प्रोचं वसुधं वरं गैः ।
मैनं गैः प्रोचं वरं गैः ।
मैनं गैः प्रोचं वरं गैः ।
मैनं गैः प्रोचं वरं गैः ।

मन की चंचलता से रक्षा करें, मन से संयत रहें, मानसिक दुश्चरित को छोड़, मानसिक सुचरित का आचरण करें ।

One should guard against uncontrolled actions of mind, one should be restrained in mind. Abandoning evil conduct of mind, one should practice virtue with one's mind.

कायेन संवृता धीरा, अथो वाचाय संवृता ।

मनसा संवृता धीरा, ते वै सुपरिसंवृता ॥१४॥

कायेन संवृता धीरा अथ वाचा संवृताः ।

मनसा संवृता धीराः ते वै सुपरिसंवृताः ॥

मदङ्गमः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः । १

मदङ्गमः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः । १

मदङ्गमः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः । १

मदङ्गमः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः । १

मदङ्गमः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः ।

मदङ्गमः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः ।

जो धीर पुरुष काय से संयत, वाणी से संयत और मन से संयत रहते हैं,
वे ही पूर्ण रूप से संयत हैं ।

The steadfast are restrained in body, in speech also they are restrained. They are restrained in mind as well. Indeed, they are perfectly restrained.

१८—मलवगो

षण्डुपलासो व दानिसि, यमपुरिसा पि च ते उपट्टिता ।
उय्योगमुखे च तिष्ठसि, पाथेय्यं पि च ते न विज्जति ॥१॥

जैतवन

गोधातक-पुत्र

पाण्डुपलासमिवेदानीमसियमपुरुषाअपि च त्वां उपस्थिताः ।
उद्योगमुखे च तिष्ठसि पाथेयमपि च ते न विद्यते ॥

कुमः ॐ नः कः ॐ नः । ।

ॐ नः कः ॐ नः कः ॐ नः । ।

नः कः ॐ नः कः ॐ नः कः ॐ नः । ।

ॐ नः कः ॐ नः कः ॐ नः कः ॐ नः । ।

ॐ नः कः ॐ नः कः ॐ नः कः ॐ नः । ।

पीले पत्ते के समान इस वक्त तू है, यमदूत तेरे पास खड़े हैं, तू प्रयाण के लिए तैयार है और पाथेय तेरे पास कुछ नहीं है ।

Like a withered leaf are you now, the messengers of death wait for you. On the threshold of death you stand, without provisions for the journey.

अनुपूर्व्वेन मेधावी, थोकथोकं खणे खणे ।
कम्मारो रजतस्सेव, निद्धमे मलमत्तनो ॥५॥

जेतवन

कोई ब्राह्मण

अनुपूर्व्वेण मेधावी तोकं स्मोकं क्षणे क्षणे ।
कर्मारो रजतस्येव निर्धमेत् मलमात्मनः ॥

रिसं गुणं तुदं ३५ तुदं ३५ ५८ । ।
सप्तसं वसं सप्तं तेषां सप्तं तेषां वीसं ॥
सप्तसं वं वीसं तेषां ५८ वं वीसं ५ । ।
५८ वं वीसं वसं वं ५ । ।

बुद्धिमान (पुरुष) क्षण क्षण क्रमशः थोड़ा थोड़ा अपने मल को (वैसे हो)
(जलावे), जैसे कि सोनार चाँदी को (मल को) जलाता है ।

By degrees, little by little, from moment, a wise man
should remove his own impurities, as a smith removes the dross
of silver.

P 9 (II, 10)

P 126 V 239

सप्तसं वं वीसं तेषां ५८ वं वीसं ५ । ।
सप्तं तेषां सप्तं तेषां तुदं ३५ ५८ । ।
५८ वं वीसं वसं वं ५ । ।

अयसा व मलं समुद्धृतं, तदुद्धृत्य तमेव खादति ।
एवं अतिघोनचारिनं, सानि कम्मानि नयन्ति दुर्गतिं ॥६॥

जैतवन

तिस्स (थेर)

अयस इव मलं समुत्थितं त (स्मा) इ
उत्थाय तदेव खादति ।
एवं अतिघावनचारिणं स्वानि
कर्माणि नयन्ति दुर्गतिम् ॥

शुभ्रं घृतेः कथं दुर्गतिः । ।

शुभ्रं कथं कथं कथं कथं कथं कथं । ।
कथं कथं कथं कथं कथं कथं । ।
कथं कथं कथं कथं कथं कथं । ।
कथं कथं कथं कथं कथं कथं । ।

लोहे से उत्पन्न मल (=मुर्चा) जैसे जिससे उत्पन्न होता है, उसे ही खा डालता है; इसी प्रकार अति चंचल (पुरुष) के अपने ही कर्म उसे दुर्गति को ले जाते हैं ।

As rust, sprung from iron, eats its source away when arisen, even so his own deeds lead the transgressor to states of woe.

P 34 (IX, 19)

P 126 V 240

शुभ्रं कथं कथं कथं कथं कथं कथं । ।
कथं कथं कथं कथं कथं कथं । ।
कथं कथं कथं कथं कथं कथं । ।
कथं कथं कथं कथं कथं कथं । ।

असज्ज्ञायमला मन्त्रा, अनुष्ठानमला घरा ।
मलं वर्णस्स कोसज्जं, प्रमादो रक्खतो मलं ॥७॥

जैतवन

(लाल) उदायी (घेर)

अस्वाध्यायमला मन्त्रा अनुत्थानमसा गृहाः ।

मलं वर्णस्य कौसीद्यं, प्रमादो रक्षतो मलम् ॥

¹ अकरं गं दमरं वो च वसुधं स व ।

ऊं वा मेदं वं शुभासं ग्रीं दी ।

अदवां वलं मेदं वं हिमं ग्रीं दी ।

वे वे री वासं ग्रीं दी मं श्वे ।

व वा मेदं वं रं वसुधं वदीं दी ।

स्वाध्याय (=स्वरपूर्वक पाठ की आवृत्ति) न करना (वेद-) मन्त्रों का मल (-मुर्चा) है । शरीर का मुर्चा आलस्य है, असावधानी रक्षक का मुर्चा है ।

Non-repetition is the taint of mantra, lack of maintenance is the taint of homes. Sloth is the taint of beauty and carelessness is the taint of a watcher.

1 सुदं कृषं शिषसं दपदीं कृदं श्रोतं अकरं गं दवां वो दं । वासं दं वेदं श्रुतं वं अकरं गं दमरं वो वेसं वासं वदं वं दवां व श्रुतं दे रं रेदीं सुदं रं शि वासं ॥

मल्लित्थिया दुच्चरितं, मच्छेरं ददतो मलं ।
मला वे पापका धम्मा, अस्मिं लोके परमिह च ॥८॥

राजगृह (वेणुवन)

कोई कुलपुत्र

मलं स्त्रिया दुश्चरितं मात्सर्यं ददतो मलम् ।
मलं वै पापका धर्म्मा अस्मिन् लोके परम च ॥

सुद.सेद.दे.म.सुदे.दक.दे। ।
सुदे.वद.दे.दे.म.सेद.सु.ये.दे। ।
दे.दे.दे.दे.दे.दे.दे.दे.दे.दे.दे.दे. ।
दे.दे.दे.दे.दे.दे.दे.दे.दे.दे.दे.दे. ।

स्त्री का मल दुराचार है, कृपणता (=कंजूसी) दाता का मल है, पाप इस लोक और पर लोक (दोनों) में मल है ।

Misconduct is the taint of women and niggardliness is the taint of a benefactor. Taints indeed are all evil things both in this world and in the next.

ततो मला मलतरं, अविज्जा परमं मलं ।
एतं मलं पहन्त्वान, निम्मला होथ मिक्खवो ॥६॥

ततो मलं मलतरं अविद्या परमं मलम् ।
एतत् मलं प्रहाय निर्मला भवत भिक्षवः ॥

द्विंशत्तमः पद्यः ।
द्विंशत्तमः पद्यः ।
द्विंशत्तमः पद्यः ।
द्विंशत्तमः पद्यः ।

फिर मलों में भी सबसे बड़ा मल—महामल अविद्या है । हे भिक्षुओ !
इस (अविद्या) मल को त्याग कर निर्मल बनो ।

But there is a taint greater than all taints. Ignorance of the true nature of Reality is the greatest taint. By completely abandoning this taint, be taintless, O Bhikshus !

सुजीवं अहिरिकेन, काकसूरेन धंसिना ।
पक्खन्दिना पगब्भेन, सङ्किलिट्ठेन जीवितं ॥१०॥

जेतवन

(चुल्ल) सारी

सुजीवितं अह्रीकेण काकसूरेण धवसिना ।
प्रस्कन्दिना प्रगल्भेन संकिलष्टेन जीवितम् ॥

ཀྱལ་བྱེད་ཚལ་དུ་སྤྱོད་པ་ཡི། །

ཁ་ཡི་དབང་བོ་ས་རབས་དང་། །

ཐོ་ཅ་ཅན་དང་སྤྱི་བརྟེན་ཅན། །

ཀྱན་ཉོན་གྱིས་ནི་འཛོ་བ་སྤྱེ། །

ངོ་ཚ་མེད་ལ་འཛོ་བ་སྤྱེ། །

(पापाचार के प्रति) निर्लज्ज, कीए के समान (स्वार्थ में) शूर;
(परहित-) विनाशी, पतित, उच्छृङ्खल और भलिन (पुरुष) का जीवन सुख-
पूर्वक बीतता (देखा जाता) है ।

Easy is the life a shameless one who is as impudent as
a crow, a mischief-maker, a back-biter, arrogant, and corrupt.

P 92 (XXVII, 2)

P 128 V 224

སྤྱི་བརྟེན་ལྱེད་ཅིང་འབྲོག་རྩིས་ཅན། །

སི་གཙང་ལས་ལྷན་ཁྲ་ལྷ་བྱ། །

ཤན་དུ་ཉོན་མོངས་འཛོ་བ་ཅན། །

ངོ་ཚ་མེད་པའི་འཛོ་བ་སྤྱེ། །

हिरीमता च दुज्जोवं, निच्चं सुच्चिगवेसिना ।
अलीनेनाप्पगम्भेन, सुद्धाजोवेन पस्सता ॥११॥

हीमता च दुर्जीवितं नित्यं शुचिगवेषिणा ।
अलीनेनाऽप्रगल्भेन शुद्धजीवेन पश्यता ॥

इमां दुग्गात्तं सत्तमं वदं । ।
सुक्खं मेदं सत्तमं मेदं वदं । ।
इमां वदं सत्तमं वदं सत्तमं । ।
इत्थं सत्तमं सत्तमं सत्तमं । ।

(पापाचार के प्रति) लज्जावान्, नित्य ही पवित्रता का ख्याल रखने-
वाले, निरालस, अनुच्छिन्न, शुद्ध जीविका वाले सचेत (पुरुष) के जीवन को
कठिनाई से बीतते देखते हैं ।

Hard is the life of a modest one who ever seeks purity,
is detached, humble, lives in purity, and is intelligent.

P 92 (XXVII, 3)

P 129 V 245

इमां दुग्गात्तं सत्तमं वदं । ।
सुक्खं मेदं सत्तमं मेदं वदं । ।
इत्थं सत्तमं सत्तमं सत्तमं । ।
इत्थं सत्तमं सत्तमं सत्तमं । ।

यो पाणमतिपातेति, मृषावादं च भासति ।
लोकेऽदित्तं आदत्ते परादाराश्च गच्छति ॥१२॥

जैतवन

पाँच उपासक

यः प्राणमतिपातयति मृषावादं च भाषते ।
लोकेऽदत्तं आदत्ते परादाराश्च गच्छति ॥

मरुत्तैः शैलैः मत्तैः प्रेयैः च ।
मृगैः शैलैः मत्तैः प्रेयैः च ।
मृगैः शैलैः मत्तैः प्रेयैः च ।
मृगैः शैलैः मत्तैः प्रेयैः च ।

जो हिंसा करता है, झूठ बोलता है, लोक में चोरी करता है (= बिना
दिये को लेता है), परस्त्रीगमन करता है ।

Those who in this world destroys life, utter lies, takes
what is not given, go to the other's wives.

सुरामैरेयपानं च, यो नरो अनुबुज्जति ।
इधेव मेषां लोकस्मिं, मूलं खणति अत्तनो ॥१३॥

सुरामैरेयपानं च यो नरोऽनुबुज्जति ।
इहैवमेष लोके मूलं खनयामनः ॥

मै.मद.सुख.मद.मद.म.प्या ।
मद.म.है.स.सु.सु.सु.सु.पा ।
दे.कम.म.म.दे.म.दे.दे.पा ।
म.म.म.म.म.म.म.म.पा ।

जिस पुरुष का मद्यपान में लगन होता है, वह उस प्रकार इसी लोक में अपनी जड़ खोदता है ।

And those who are addicted to intoxicating drinks, such people cut their own root in this very world.

एवं भो पुरिस जानाहि, पापधम्मा असञ्जता ।
मा तं लोभो अधम्मो च, चिरं दुक्खाय रन्धयुं ॥१४॥

एवं भो पुरुष ! जानीहि पापधर्माणोऽसंयतान् ।
मा त्वां लोभोऽधर्मश्च चिरं दुःखाय रन्धरेत् ॥

ཀྱ་ཡེ་ཕྱེས་བུ་རེ་ལྔ་བུར། །
 སྒྲིག་ཆོས་མ་བསྐྱམ་ཤེས་བྱས་ནས། །
 འདོད་དང་ཆོས་མ་ཡིན་བས་ཁྱོད། །
 དུན་རིང་སྤྲུག་དྲ་མི་འདུག་འཆའ། །

हे पुरुष ! संयम रहित पाप कर्म ऐसे ही होते हैं, ऐसा जान । तुझे लोभ और अधर्म चिरकाल तक दुःख में न रांधे ।

Know this, O good man ! Evil habits are not easy to restrain. Do not let desire and wickedness drag you to protracted misery.

ददाति वे यथाश्रद्धं, यथाप्रसादनं जनो ।
 तत्थ यो मङ्गु भवति, परेसं पानभोजने ।
 न सो दिवा वा रत्तिं वा, समाधिमधिगच्छति ॥१५॥

जेटवन

तिस्स (बालक)

ददाति वै तथाश्रद्धं यथाप्रसादनं जनः ।
 तत्र यो मूढो भवति परेषां पानभोजने ।
 न स दिवा वा रत्तिं वा समाधिं अधिगच्छति ॥

ཀུལ་ཤེད་ཆལ་དུངོ། ।

སྐྱེ་བོ་ཆེ་ལྟར་དད་པ་དང་། ।
 ཆེ་ལྟར་དུངས་པ་བཞིན་དུ་སྦྱིན། ।
 དེ་ལ་གང་ཞིག་གཞན་ལ་ཕྱི་ལྟར་གྱི། ।
 ཟས་དང་སྒྲིམ་ལ་རེ་གྱུར་བ། ।
 དེས་ནི་ཉིན་དང་མཚན་མོ་ཡང་། ।
 དྲིང་ངེ་འཛོན་ལ་འཇུག་མི་འགྱུར། ।

लोग अपनी श्रद्धा और प्रसन्नता के अनुसार दान देते हैं, दूसरों के खाने-पीने में जो (असन्तोष के कारण) खिन्न होता है; वह रात-दिन (कभी) भी एकाग्रता को नहीं प्राप्त करता ।

People give (alms) according to their faith and whoever becomes displeased with the food and drink given by others, does not attain concentration either by day or by night.

P 36 (X, 12)

P 131 V 249

སྐྱེ་བོ་རྣམས་ནི་ཆེ་རེགས་པར། ।
 དད་པ་ཆེ་བཞིན་སྦྱིན་ཤིང་ཆོང་། ।
 གཞན་གྱི་ཟས་དང་སྒྲིམ་དེ་ལ། ।
 གང་ཞིག་ཡིད་ནི་མི་བདེ་བ། ।
 དེས་ནི་ཉིན་དང་མཚན་རྣམས་ས། ।
 དྲིང་འཛོན་སྐྱོབ་པར་མི་འགྱུར་རོ། ।

यस्तु चेतं समुच्छिन्ना, मूलवृत्तं गमूहत्वं ।
स वै दिवा वा रात्रौ वा, समाधिमाधिगच्छति ॥१६॥

यस्य यत्तु समुच्छिन्नं मूलवृत्तं समुद्धतम् ।
स वै दिवा रात्रौ वा समाधिमाधिगच्छति ॥

गद'मीस'दे'व'दे'वउद'दे । ।
उ'व'दुदस'कस'दुद'दुस'व । ।
दे'कस'दे'क'दद'स'क'स'अद' । ।
दे'द'दे'क'द'द'द'द'व'द'द'गुद' । ।

...किन्तु जिसने ऐसी मनोवृत्ति जड़ मूल से पूरी तरह उच्छिन्न हो गयी,
वह रात-दिन (सर्वदा) एकाग्रता को प्राप्त होता है ।

But he who has fully cut off, uprooted and destroyed this
(selfseeking concern), attains concentration by day and
by night.

P 36 (X, 13)

P 131 V 250

गद'मीस'दू'अदे'स'व'उद'द'द' । ।
दे'द'द'गुद'दू'ग'उद'दे'द'व । ।
दे'स'दे'क'दे'क'दद'स'क'क'स'स' । ।
दे'द'दे'क'द'द'द'द'व'द'द'गुद' । ।

नत्थि रागसमो अग्नि, नत्थि दोससमो गहो ।
नत्थि मोहसमं जालं, नत्थि तण्हासमा नदी ॥१७॥

जेतवन

पाँच उपासक

नास्ति रागसमोऽग्निः नास्ति द्वेषसमो ग्राहः ।
नास्ति मोहसमं जालं, नास्ति तृष्णा समा नदी ॥

शुभं भवेत्तत्त्वम् । ।

अग्निं न रागसमं न दोससमं गहो ।
मोहसमं जालं न तृष्णासमा नदी ।
अग्निं न दोससमं गहो न मोहसमं जालं ।
मोहसमं जालं न तृष्णासमा नदी ।

राग के समान आग नहीं, द्वेष के समान ग्रह (=भूत, जुड़ल) नहीं;
मोह के समान जाल नहीं, तृष्णा के समान नदी नहीं ।

There is no fire like lust and no grip like hate. There is no
net like delusion and no torrent like craving.

P 109 (XXIX, 41)

P 132 V 251

अग्निं न रागसमं न दोससमं गहो ।
मोहसमं जालं न तृष्णासमा नदी ।
अग्निं न दोससमं गहो न मोहसमं जालं ।
मोहसमं जालं न तृष्णासमा नदी ।

सुदस्सं वज्जमज्जेसं, अत्तनो पन दुद्दसं ।
परेसं हि सो वज्जानि, ओपुनाति यथा भुसं ।
अत्तना पन छादेति, कलिं व कित्वा सठो ॥१८॥

महियनगर (जातियावन)

मेण्डक (श्रेष्ठी)

सुदर्शं वक्ष्यमन्येषां आत्मनः पुनर्दुर्दशम् ।
परेषां हि स वक्ष्यानि अवपुणाति यथानुष्मम् ।
आत्मनः पुनः छादयति कलिमिव कितवान् शठः ॥

བཟང་མོ་ནི་གྲོང་དུ་འོ། །

གཞན་གྱི་རྟེན་པ་མཐོང་སྒྲི་ཏེ།
 གྱི་ནས་རང་ལས་ཐོང་བར་དགའ།
 གཞན་གྱི་ཁ་ན་མ་མཐོ་བ།
 དེ་ཡིས་སྤྱན་པ་བཞིན་དུ་འཕྱར།
 རང་གི་ཁ་ན་མ་མཐོ་བ།
 གྱིན་བོས་ཐོང་ན་བཞིན་དུ་བསྐྱང་།

दूसरे का दोष देखना आसान है, किन्तु अपना (दोष) देखना कठिन है, वह (पुरुष) दूसरों के ही दोषों को भुसे की भाँति उड़ाता फिरता है, किन्तु अपने दोषों को वैसे ही ढाँकता है, जैसे शठ जूआरी से पासे को ।

Easily seen are the faults of others, but hard indeed to see are one's own. Like chaff one winnows others faults, but one's own one hides as a crafty gambler conceals a bad throw.

P 91 (XXVII, 1)

P 132 V 252

བདག་ལས་གཞན་པའི་སྒྲིན་དག་ནི།
 ལུས་མ་གཏོང་བ་རྩི་བཞིན་དུ།
 གཞན་གྱི་སྒྲིན་མཐོང་སྒྲ་བ་སྟེ།
 རང་གི་སྒྲིན་ནི་མཐོང་བ་དཀའ།
 གཡོན་ཅན་ཆོ་ལོ་འཛོ་བ་ལྟར།
 རང་གི་དེ་ནི་སྟེད་པ་དང་།

परवज्जानुपस्सिस्स, निच्चं उज्जानसज्जिनो ।

आसवा तस्स बह्वन्ति, आरा सो आसवक्खया ॥१६॥

अतयन

उज्झानसज्जी (धेर)

परवधाऽनुदिशनां नित्यं उद्धानसंज्ञिनः ।

आस्रवास्तस्य वृद्धन्ते आराद् स आस्रवक्षयात् ।।

གཞན་གྱི་མེས་པ་རྗེས་མཐོང་ན།

ཏུག་ཏུ་འདྲ་ཤིས་འཇུགས་པར་འགྱུར། །

དེ་ལ་ཟག་པ་འཕེལ་བར་འགྱུར།

དེ་ནི་ཐག་པ་ཟད་ལ་རིང་།

दूसरे के दोषों की खोज में रहने वाले, सदा हाय हाय करने वाले, पुरुष के आस्रव (=चित्तमल) बढ़ते हैं, वह आस्रवों के विनाश से दूर हटा हुआ है।

The taints of one who is observant of the faults of others and who is ever irritable go on increasing. He is far from exhausting the taints.

P 91 (XXVII, 1)

P 132 V 253

མཁའ་མི་སྒྲོན་ལ་ལྟ་བུ་ཅེང་།

དྲུག་ཏུ་འབྱུང་ཡོང་འདྲུ་གིས་ཅན།

དེ་ཡིས་རིང་ད་ཆོས་མི་མགོང་།

གཡོན་སྤྱིགས་རྩིས་ནི་རབ་དྲ་འཕེལ།

आकाशेव पदं नत्थि, समणो नत्थि बाहिरे ।

पपञ्चाभिरता पजा, निप्पपञ्चा तथागता ॥२०॥

कुशीनगर

(सुमद् परित्राजक)

आकाशे च पद नास्ति श्रमणो नास्ति बहिः ।

प्रपञ्चाभिरताः प्रजा निष्प्रपञ्चास्तथागताः ॥

^१ ལྷ་མཚོག་གོང་དེ། ।

ནམ་མཁའ་ལ་ན་ལམ་མེད་ད། ।

ཕྱི་རིལ་བ་ལ་དག་སྟོང་མེད། ।

འཇིག་རྟེན་སྟོན་ལ་མངོན་པར་དགའ། ।

དེ་བཞིན་གསེགས་པ་སྟོན་དང་བྲལ། ।

आकाश में पद (=चिह्न) नहीं, बाहर में श्रमण (=संन्यासी) नहीं रहता, लोग प्रपञ्च में लगे रहते हैं...। किन्तु तथागत बुद्ध प्रपञ्च-रहित होते हैं ।

There is no trace to be found in the sky. The religious practice of virtue is not to be found in outer things (i. e. neither of these is to be found by looking in the wrong place for them). Mankind delights in worldliness. The Tathagatas (Buddhas) are free from worldliness.

^१ ལྷ་མཚོག་གོང་ (ལྷ་མཚོག་གོང་) ལྷ་མཚོག་གོང་ལ་ན་ལམ་མེད་པར་དགའ་བའི་
ལྷ་མཚོག་གོང་ལ་དག་སྟོང་མེད་པར་དགའ་བའི་ལྷ་མཚོག་གོང་། ।

आकासेव पदं नत्थि, समणो नत्थि बाहिरे ।

सङ्खारा सस्सता नत्थि, नत्थि बुद्धानमिङ्गितं ॥२१॥

आकाशे च पदं नास्ति श्रमणो नास्ति बहिः ।

संस्काराः शाश्वता न सन्ति, नास्ति बुद्धानामिङ्गितम् ॥

कममपदं नत्थि नत्थि समणे ।

सुखं च नत्थि नत्थि बुद्धे ।

अनुसुखं कस्य नत्थि नत्थि ।

सदसं कस्य नत्थि नत्थि ।

इति ।

अनुसुखं नत्थि नत्थि ॥

आकाश में पद (=चिह्न) नहीं, बाहर में श्रमण (=संन्यासी) नहीं रहता, संस्कार शाश्वत नहीं है, (किन्तु) तथागत (=बुद्ध) में चंचलता नहीं होते हैं ।

There is no trace to be found in the sky. The religious practice of virtue is not to be found in outer things. There is no compounded thing that is eternal. There is no instability in the Buddhas (i. e. they are not subject to change).

१६—धम्मट्ठवग्गो

न तेन होति धम्मट्ठो, येनत्थं सहसा नये ।
यो च अत्थं अनत्थं च, उभो निच्छेय्य पण्डितो ॥१॥

जेतवन

विनिच्छयमहामच्च (= न्यायाधीश)

न तेन भवति धर्मस्थो येनार्थं सहसा नयेत् ।
यश्चाऽर्थं अनर्थं च उभौ निश्चिनुयात् पण्डितः ॥

कुमः सुदेः क्वः सुदे । ।

सुवः क्वः सुदेः क्वः सुदेः क्वः । ।

देः क्वः क्वः सुदेः क्वः सुदेः । ।

क्वः क्वः सुदेः क्वः सुदेः क्वः । ।

क्वः क्वः सुदेः क्वः सुदेः क्वः । ।

सहसा जो अर्थ (= काम की वस्तु) को करता है, वह धर्म में अवस्थित नहीं कहा जाता । जो अर्थ-अनर्थ दोनों विचार कर काम करता है वही पण्डित है ।

One is not just if one gives one's verdict arbitrarily. The wise man should investigate both right and wrong.

असाहसेन धर्मेण, समेन नयती परे ।
धम्मस्स गुत्तो मेघावी, धम्मट्ठो ति पवुच्चति ॥२॥

असाहसेन धर्मेण समेन नयते परम् ।
धर्मेण गुप्तो मेघावी धर्मस्थ इत्युच्यते ॥

धुवः केंद्रेण वरः यः रत्नः कस्य ।
केंद्रेण वरः सधुवः वरः पदेन देवः वा ।
केंद्रेण ग्रीष्मः सधुवः वरः सधुवः कः ।
केंद्रेण वरः सधुवः वरः पदेन देवः वा ।

सहसा जो अर्थ (= काम की वस्तु) को करता है, वह धर्म में अवस्थित नहीं कहा जा सकता । पण्डित को चाहिए कि वह अर्थ, अनर्थ दोनों का विचार (करके) करे ।

Considerately leading others according to the Dharma, the wise one is protected by the Dharma. He is said to be a guardian of the Dharma.

न तेन पण्डितो होति, यावता बहु भासति ।
खेमी अवेरी अभयो, पण्डितो ति पवुञ्चति ॥३५॥

वेतवन

सुबिग्निय (मिश्र)

न तावता पंडितो भवति यावता बहु भाषते ।
क्षेमी अवैरी अभयः पंडित इत्युच्यते ॥

རི་ཅམ་མང་དུ་སྒྲུབ་ཅིང་པ།
 དེ་ཅམ་དུ་ནི་མཁས་པ་མིན།
 བརྗོད་སྒྲུབ་ཁྱོ་མེད་འཛིགས་མེད་ནི།
 མཁས་པ་ཞེས་བྱུང་བརྗོད་པ་ཡིན།

बहुत भाषण करने से पण्डित नहीं होता। जो क्षेमवान् अवैरी और अभय होता है, वही पण्डित कहा जाता है।

A man is not learned simply because he talks much. He who is patient, friendly and fearless is said to be learned.

न तावता धम्मधरो, यावता बहु भासति ।
 यो च अप्पं पि सुत्वान, धम्मं कायेन पस्सति ।
 स वे धम्मधरो होति, यो धम्मं नप्पमज्जति ॥४१॥

जैतवन

एकदान (केर)

न तावता धर्मधरो यावता बहु भाषते ।
 यश्चाल्पमपि श्रुत्वा धर्मं कायेन पश्यति ।
 स वै धर्मधरो भवति यो धर्मं न प्रमाद्यति ॥

ई० ठ० ष० ५० ५० ५० ५० ।
 ५० ठ० ५० ५० ५० ५० ५० ।
 ५० ५० ५० ५० ५० ५० ।
 ५० ५० ५० ५० ५० ५० ।
 ५० ५० ५० ५० ५० ५० ।
 ५० ५० ५० ५० ५० ५० ।

बहुत बोलने से धर्मधर (= धार्मिक ग्रन्थों का ज्ञाता) नहीं होता, जो थोड़ा भी सुनकर शरीर से धर्म का आचरण करता है, और जो धर्म में असावधानी (= प्रमाद) नहीं करता, वही धर्मधर है ।

A man is not a holder of the 'Dharma' simply because he talks much. But whoever, although of little learning, looks at the Dharma through his body (i. e. puts in into practice) and is not heedless towards the Dharma, is indeed a holder of the Dharma.

न तेन थेरो सो होति, येनस्स पलितं सिरो ।
परिपक्को वयो तस्स, मोघजिण्णो ति वुच्चति ॥५॥

जेतवन

लकुण्टक महिय (थेर)

न तेन स्थविरो भवति येनाऽस्य पलितं शिरः ।
परिपक्वं वयस्तस्य मोघजीर्ण इत्युच्यते ॥

पा०-पी०-स०-वै०-सु०-गु०-व । ।
दे०-पी०-स०-व०-स०-सि०-र०-गु०-दे । ।
दे०-पी०-स०-वै०-सि०-सि०-गु०-व । ।
दे०-सि०-सि०-वै०-सि०-व०-वै०-दे । ।

शिर (बाल के) पकने से थेर (=स्थविर, वृद्ध) नहीं होता, उसकी आयु परिपक्व हो गई (सही), (किन्तु) वह व्यर्थ का वृद्ध कहा जाता है ।

A man is not an Elder simply because his head is grey.
His age is ripe, but he is called "grown old in-vain".

P 38 (XI. 11)

P 137 V 260

स०-वै०-सु०-वै०-गु०-व०-व । ।
दे०-गु०-सि०-व०-सि०-सि०-व । ।
दे०-सि०-सि०-वै०-सि०-सि०-व । ।
दे०-सि०-सि०-सि०-सि०-व । ।

यमिह सच्चं च धम्मो च, अहिंसा संयमो दमो ।

स ये वन्तमलो धीरो, थेरो इति पवुच्चति ॥६॥

यस्मिन् सत्यं च धर्मश्चाहिंसा संयमो दमः ।

स वै वान्तमलो धीरः स्थविर इत्युच्यते ॥

གང་ལ་བདེན་དང་ཚུལ་དག་དང་།

འཆོ་མེད་སྤྲེལ་དང་བྱིས་ས་ཡོད་པ།

ཀྱི་མེད་བཅུན་པ་དེ་ཉིད་ནི།

གནས་བརྟན་ཞེས་པུར་རྗེས་སུ་བརྗོད།

जिसमें सत्य, धर्म, अहिंसा, संयम और दम हैं, वही विगतमल, धीर और स्थविर कहा जाता है।

In whom there is truth, virtue, harmlessness, restraint and control, the wise man who has cast out the impurities, he is indeed called an Elder.

P 38 (XI, 12)

P 137 V 261

མང་ཤིས་དག་དང་སྒྲིབ་པ་དག།

ཡུལ་གྱི་ཆོས་པར་སྒྲིབ་པ་དང་།

ཏེ་ཆོག་ལ་སྤྱོད་ལ་ནས་སྤྱོད་པུར་བ། །

དེ་ནི་གྲག་རབས་ཁྱིམ་བུ་འོ།

न वाक्करणमत्तेन, वर्णपोक्खरताय वा ।
साधुरूपो नरो होति, इस्सुकी मच्छरी सठो ॥७॥

जेतवन

बहुत से मिथु

न वाक्करणमात्रेण वर्णपुष्कलतया वा ।
साधुरूपो नरो भ को मत्सरी शठः ॥

।। ५०० ॥ ५०० ॥ ५०० ॥ ५०० ॥ ।
।। ५०० ॥ ५०० ॥ ५०० ॥ ५०० ॥ ।
।। ५०० ॥ ५०० ॥ ५०० ॥ ५०० ॥ ।
।। ५०० ॥ ५०० ॥ ५०० ॥ ५०० ॥ ।

(यदि वह) ईर्ष्यालु, मत्सरी और शठ है; तो वक्ता होनेमात्र से, सुन्दर रूप होने से, आदमी साधु-रूप नहीं होता है ।

The jealous, ignoble, common man, even if he has a beautiful face and great eloquence, does not there by gain a holy and inspiring presence.

यस्य चेतं समुच्छिन्नं, मूलघञ्चं समूहतं ।
 स वन्तदोषो मेधावी, साधुरूपो ति वुच्यति ॥८॥

यस्य चैतत् समुच्छिन्नं मूलघातं समुद्रघतम् ।
 स वान्तदोषो मेधावी साधुरूप इत्युच्यते ॥

मूलघातं समुद्रघतम् ।
 स वान्तदोषो मेधावी ।
 साधुरूप इत्युच्यते ।
 स वान्तदोषो मेधावी साधुरूप इत्युच्यते ।

जिसके यह जड़मूल से बिलकुल उच्छिन्न हो गये हैं; जो विगतदोष, मेधावी है, वही साधु-रूप कहा जाता है ।

But in whom these bad qualities are wholly cut off, uprooted and extinct, that intelligent man who has cast out his faults, he is known to have a holy and inspiring presence.

न मुण्डकेन समणो, अब्बतो अलिकं भणं ।
इच्छालोभसमापन्नो, समणो किं भविस्सति ॥६॥

जैतवन

हृत्थक (मिथु)

न मुण्डकेन श्रमणोऽव्रतोऽलीकं भणन् ।
इच्छालाभसमापन्नः श्रमणः किं भविष्यति ॥

चट्ठमं ब्रुवाणं सदेदं चट्ठमं सुव ।।
समो वेत्तुं ससं दमो सुदं सिक । ।
अदेदं दं देदं च ब्रुवाणं सुव । ।
दमो सुदं दं देदं च सुव । ।

जो व्रतरहित, मिथ्याभाषी है, वह मुण्डित होने मात्र से श्रमण नहीं होता । इच्छा लाभ से भरा (पुरुष), क्या श्रमण होगा ?

Not by a shaven head does an undisciplined man who utters lies become a saint. How will he be a saint, who is full of desire and greed ?

P 38 (XI, 13)

P 139 V 264

चट्ठमं ब्रुवाणं सदेदं चट्ठमं सुव । ।
समो वेत्तुं ससं दमो सुदं सिक । ।
अदेदं दं देदं च ब्रुवाणं सुव । ।
दमो सुदं दं देदं च सुव । ।

यो च समेति पापानि, अणुं थूलानि सब्बसो ।
समितत्ता हि पापानं, समणो ति पवुच्चति ॥१०१॥

यश्च शमयति पापानि अणूनि स्थूलानि सर्वशः ।
शमितत्त्वाद्धि पापानां श्रमण इत्युच्यते ॥

གང་ཞིག་སྒྲིག་པ་རྣམས་པ་དང་། །
སྤ་མོ་ཐམས་ཅད་ཞི་བྱེད་པ། །
སྒྲིག་པ་ཞི་བ་ཉིད་ཀྱིས་ལྷིང་། །
དག་སྤོང་ཞི་བ་ཞེས་བྱུང་བཟྃ་། །

जो छोटे-बड़े पापों को सर्वथा शमन करनेवाला है; पाप को शमित होने के कारण वह समण (=श्रमण) कहा जाता है ।

He who wholly subdues all his sins both crude and subtle is called a saint, because he has pacified all evil.

P 38 (XI, 15)

P 139 V 265

བདུལ་བྱུགས་མེད་ཅིང་རྩལ་སྤྲོ་ན། །
མགོ་བོ་བྲེགས་ཅམ་དག་སྤོང་མིན། །
གང་དག་སྒྲིག་པ་ཆེ་སྤྲ་དག །
ཀྱན་པ་བདུགས་ནས་བྱེད་པ་དང་། །
སྒྲིག་པ་ཞི་བ་དེ་དག་ནི། །
དག་སྤོང་ཉིད་ཅེས་བཟྃ་བར་དུ། །

न तेन भिक्षु सो होति, यावता भिक्षते परे ।

विस्सं घम्मं समादाय, भिक्षु होति न तावता ॥११॥

जेतवन

कोई ब्राह्मण

न तावता भिक्षुः [स] भवति यावता भिक्षते परान् ।

विश्वं धर्मं समादाय भिक्षुर्भवति न तावता ॥

दे० ठस० ग० ल० च० स्तो० ३५० ॥ १ ॥

दे० ठस० १०० ॥ १ ॥

ऊ० स० १०० ॥ १ ॥

१०० ॥ १ ॥

दूसरों से भिक्षा माँगने मात्र से भिक्षु नहीं होता, (अपितु) सारे धर्मों का ग्रहण करके भिक्षु होता है, उतने मात्र से नहीं ।

Therefore one is not a Bhikshu (a developer of virtue) simply because one begs. Only he who completely adopts all of the Dharma is a Bhikshu, and not any others.

योध पुञ्जं च पापं च, बाहेत्वा ब्रह्मचरियथा ।
संख्याय लोके चरति, स वै भिक्षू ति वुच्चति ॥१२॥

जैतवन

कोई ब्राह्मण

य इह पुण्यं च पापं च बाहयित्वा ब्रह्मचर्यवान् ।
संख्याय लोके चरति स वै भिक्षुरित्युच्यते ॥

मादं विना वसोदं कस्यसं क्षीमा वदमा ।
वैरं कसं कदसं वरं सुदं द्वाकं विदं ।।
वद्विना देव मादसं सु सुदं सुदं वा ।
देव दमा सुदं विना सुदं वद्विदं ।

जो यहाँ पुण्य और पाप को छोड़ ब्रह्मचारी बन ज्ञान के साथ लोक में
विचरता है, वह भिक्षु कहलाता है ।

He who has abandoned both merit and demerit, he who
is chaste, he who lives with understanding in the world, he
indeed, is called a Bhikshu.

न मोनेन मुनी होति, मूढरूपो अविदुसु ।
यो च तुलं व पग्गय्ह, वरमादाय पण्डितो ॥१३॥

जेतवन

तीर्थिक

न मोनेन मुनिर्भवति मूढरूपोऽविद्वान् ।
यश्च तुलामिव प्रगृह्य परमादाय पण्डितः ॥

मुनं यो दिदं छेत्तं रीतिं वृत्तं च । ।
स्त्वन्मत्तं वृत्तं वृत्तं वृत्तं च वृत्तं । ।
स्त्वन्मत्तं वृत्तं वृत्तं वृत्तं च वृत्तं । ।
स्त्वन्मत्तं वृत्तं वृत्तं वृत्तं च वृत्तं । ।

अविद्वान् और मूढ़समान (पुरुष सिर्फ) मौन होने से मुनि नहीं होता,
जो पण्डित तुला की भाँति पकड़कर उत्तम (तत्त्व) को ग्रहण कर.....

Not by silence (alone) does he who is dull and ignorant
become a sage. But the wise man who, as if holding a pair of
scales, embraces the best,

पापानि परिवर्ज्येति, स मुनि तेन सो मुनि ।
यो मुनाति उभो लोके, मुनि तेन पवृच्चति ॥१४॥

पापानि परिवर्जयति स मुनिस्तेन स मुनिः ।
यो मनुत उभो लोको मुनिस्तेन प्रोच्यते ॥

श्रीमद्भगवद्गीता ॥ १४ ॥
येनैवमुनिः कश्चिद्वापि ।
यत्तन्मोक्षं ददाति तेनैव ।
देहि मुनिः सुखं च पुण्यं च वै ।

....पापों का परित्याग करता है, वह मुनि है, और उक्त प्रकार से मुनि होना है । चूँकि वह दोनों लोकों का मनन करता है, इसलिए वह मुनि कहा जाता है ।

And shuns evil, is a sage, he is for that very reason a sage. He that understands both worlds, (of good and bad) is on that very account called a sage.

न तेन अरियो होति, येन पाणानि हिंसति ।
अहिंसा सब्बपाणानं, अरियो ति पवुच्चति ॥१५॥

जैतवन

अरिय बालिसिक

न तेनाऽऽर्यो भवति येन प्राणान् हिनस्ति ।
अहिंसया सर्वप्राणानां आर्य इति प्रोच्यते ॥

एतन्मार्गो हिंसायाः ।
न हिंसायाः मार्गो हिंसायाः ।
न हिंसायाः मार्गो हिंसायाः ।
न हिंसायाः मार्गो हिंसायाः ।

प्राणियों का हिंसा करने से (कोई) आर्य नहीं होता, सभी प्राणियों की हिंसा न करने से (उसे) आर्य कहा जाता है ।

By killing living beings one does not become an Arya. By nonkillingness towards all living beings one is called an Arya.

न शीलव्रतमत्तेन, बाहुसच्चेन वा पन ।
अथ वा समाधिलाभेन, विविक्तसयनेन वा ॥१६॥

जैतवन

बहुत से शील आदि-युक्त भिक्षु

न शीलव्रतमात्रेण बाहुश्रुत्येन वा पुनः ।
अथवा समाधिलाभेन विविच्य शयनेन वा ॥

हृद्यं प्रियं सद्गुरुं श्रुत्वा सत्तमं श्रुत्वा ।
सत्तमं श्रुत्वा श्रुत्वा सत्तमं श्रुत्वा ।
सत्तमं श्रुत्वा श्रुत्वा सत्तमं श्रुत्वा ।
सत्तमं श्रुत्वा श्रुत्वा सत्तमं श्रुत्वा ।

केवल शील और व्रत से, बहुश्रुत होने (मात्र) से, या (केवल)
समाधिलाभ से, या एकान्त में शयन करने से.....

Not only by morality and firm discipline, not only by
much learning, not by attainment of concentration, nor by
lonely lodging,

२०—मगवग्गो

मगानट्ठङ्गिको सेट्ठो, सच्चानं चतुरो पदा ।

विरामो सेट्ठो धम्मानं, द्विपदानं च चक्षुमा ॥१॥

नैतवन

पांच सौ भिक्षु

मागणिमष्टांगिकः श्रेष्ठः सत्यानां चत्वारि पदानि ।

विरागः श्रेष्ठो धर्माणां द्विपदानां च चक्षुमान् ॥

कुयं भुदं कयं सुवे । ।

असं कससं दणं असं अदं अणं वक्रुदं । ।

वदेदं वं कससं असं क्कणसं क्कदं ववे । ।

क्कसं कससं असं वे कणसं सुअं ददं । ।

क्कदं वक्किसं कससं असं सुदं ददं मक्कणं । ।

मार्गों में अष्टांगिक मार्ग श्रेष्ठ है, सत्यों में चार पद (=चार आर्यसत्य) श्रेष्ठ हैं, धर्मों में वैराग्य श्रेष्ठ है, द्विपदों (=मनुष्यों) में चक्षु मान (=ज्ञान-नेत्रधारी, बुद्ध) श्रेष्ठ हैं ।

The best of paths is the Eightfold Path. (The eight fold path consists of 1. Right knowledge, 2. Right thoughts, 3. Right speech, 4. Right action, 5. Right livelihood, 6. Right effort, 7. Right mindfulness, and 8. Right concentration). The best of truths are the Four Noble Truths. (The Four Noble Truths are the Noble Truths of Suffering, of the Cause of Suffering, of the Destruction of Suffering, and the Path leading to the Destruction of Suffering, which is the Eightfold Path) The best of conditions is freedom from attachment. The best of bipeds (men) is the Seeing One (the Buddha).

एतच्छि तुम्हें पटिपन्ना, दुःखस्सन्तं करिस्सथ ।
अक्खातो वो मया मग्गो अञ्जाय सल्लकन्तनं ॥३॥

जैतवन

पाँच सौ मिष्ठु

एतं हि यूयं प्रतिपन्ना दुःखस्यान्तं करिष्यथ ।
आख्यातो वै मया मार्गं आजाय शल्य-संस्थानम् ॥

हेतुं उवाच भगवन् ।
शृणु मया श्रुतं मया श्रुतं मया श्रुतं ।
हेतुं मया श्रुतं मया श्रुतं मया श्रुतं ।
मया श्रुतं मया श्रुतं मया श्रुतं ।

इस (मार्ग) पर आरुढ़ हो तुम दुःख का अन्त कर सकोगे, (स्वयं)
जानकर (राग आदि के विनाश में) शल्य समान मार्ग को मैंने उपदेश
कर दिया ।

By staying on this Path you will make an end of your sorrows. I teach this path after having removed all the thorns (of the troublesome passions).

तुम्हेहि किञ्चमात्पपं अक्खातारो तथागता !
पटिपन्ता पमोक्खन्ति, ज्ञायिनो मारबन्धना ॥४॥

पुष्पाभिः कार्यं आप्त्यं आख्यातारस्तथागताः ।
प्रतिपन्नाः प्रमोक्ष्यन्ते ध्यायिनो मारबन्धनात् ॥

དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་གསུངས་ཅས་མེ།
 ཁྱེད་ཅག་ལས་ལ་འབད་བར་མཛོད།
 བསྐྱེམ་པས་སྐྱོམས་པར་བྱགས་པ་ཡིས།
 བདུད་ཀྱི་འཛིང་བ་ནས་གྲོལ་འགྱུར།

कार्य के लिए तुम्हें उद्योग करना है, तथागतों (=बुद्धों) का कार्य उपदेश कर देना है, (तदनुसार मार्ग पर) आरुढ़ हो ध्यान में रत पुरुष मार के बन्धन से मुक्त हो जायेंगे ।

You yourselves must strive. The Tathagatas (Buddhas, those who have gone from samsara) only teach (it is you who must put it into practice). Those who by meditation enter deep awareness (samadhi) are freed from the bonds of Mara.

सन्ने सङ्कारा अनिच्चा ति, यदा पञ्चाय पस्सति ।

अथ निब्बिन्दति दुक्खे, एस मग्गो विसुद्धिया ॥५॥

जेतवन

पांच सौ शिष्ट

[अनित्य-लक्षणम्]

सर्वे संस्कारा अनित्या इति यदा प्रज्ञया पश्यति ।

अथ निर्विन्दति दुःखानि, एष मार्गो विशुद्धये ॥

अनुसुसंस्ससत्तदंस्सिद्वयत्तेस ।

मादंकेप्पेसंस्सवग्गिस्ससत्तदंस्स ।

सुवावसुत्तदंस्सवग्गिस्ससत्तदंस्स ।

अदंस्सिद्वयत्तेसत्तदंस्सिद्वयत्तेस ।

सभी संस्कृत (=कृत, निर्मित, बनी) चीजें अनित्य हैं; यह जब प्रज्ञा से देखता है, तब सभी दुःखों से निर्वेद (=विराग) को प्राप्त होता है, यही मार्ग (चित्त) शुद्धि का है।

“All compounded things are impermanent”. When through wisdom this is realised, one cannot then be harmed by suffering. This is the Path of purity.

P 5 (277)

P 146 V 277

अनुसुसंस्ससत्तदंस्सिद्वयत्तेस ।

मादंकेप्पेसंस्सवग्गिस्ससत्तदंस्स ।

देकेप्पेसंस्सवग्गिस्ससत्तदंस्सिद्वयत्तेस ।

अदंस्सिद्वयत्तेसत्तदंस्सिद्वयत्तेस ।

सन्ने सङ्खारा दुक्खा ति, यदा पञ्चाय पस्सति ।
अथ निर्विन्दति दुक्खे, एस मग्गो विसुद्धिया ॥६॥

[दुःख-लक्षणम्]

सर्व संस्कारा दुःखा इति यदा प्रज्ञया पश्यति ।
अथ निर्विन्दति दुःखानि, एष मार्गो विशुद्धये ॥

अनुसुसंयमसं उदङ्गुणवसुधवेस ।
मादंकेपेसंरवगुणसंमवेदं ।
सुगंयसुधंरवगुणसंमवेदं ।
अदंकेपेसंरवगुणसंमवेदं ।

सभी संस्कृत (चीजे) दुःखमय हैं । यह सब जब प्रज्ञा से देखता है, तब सभी दुःखों से निर्वेद (=विराग) को प्राप्त होता है, यही मार्ग (चित्त-) शुद्धि का है ।

“All compounded things are sorrowful.” When through wisdom this is realised, one cannot then be harmed by suffering. This is the Path of purity.

P 9 (278)

P 147 V 278

अनुसुसंयमसं उदङ्गुणवसुधवेस ।
मादंकेपेसंरवगुणसंमवेदं ।
देकेपेसंरवगुणसंमवेदं ।
अदंकेपेसंरवगुणसंमवेदं ।

सब्बे धम्मा अनत्ता ति, यदा पञ्चाय पस्सति ।
अथ निर्विन्दति दुक्खे, एस मग्गो विमुद्धिया ॥७॥

[अनात्म-लक्षणम्]

सर्वे धर्मा अनात्मान इति यदा प्रज्ञया पश्यति ।
अथ निर्विन्दति दुःखानि एष मार्गो विशुद्धये ।

कैसं क्खसं प्रससं उदं वदवां सें उंसा ।
वाटं कें मेसं रवं गुंसां सव्वेदं व ।
हुंवां वसुअं दवां वांसां उंवांसां सें उंसा ।
अदं कै क्खं दवां असां अदं कै ।

सभी धर्म (=पदार्थ) बिना आत्मा के हैं, यह जब प्रज्ञा से देखा है,
तब सभी दुःखों से निर्वेद (=विराग) को प्राप्त होता है, यही मार्ग (चित्त-)
शुद्धि का है ।

“All phenomena are without inherent self-nature.” When
through wisdom this is realised, one cannot then be harmed by
suffering. This is the Path of purity.

P 8 (279) .

P 147 V 279

अदं उदं प्रससं उदं वदवां सें वसा ।
वाटं कें मेसं रवं गुंसां सव्वेदं व ।
दें कें हुंवां वसुअं असां अदं उंसा ।
असां अदं क्खं वदं दवां वदं उंसा ।

उठानकालम्हि अनुठ्ठानो,
 युवा बली आलसियं उपेतो ।
 संसन्नसङ्कप्पमनो कुसीतो,
 पञ्चाय मगं अलसो न विन्दति ॥८॥

जितवन

(योगी) तिस्स (धेर)

उत्थानकालेऽनुत्तिष्ठान् युवा बली आलस्यमुपेतः ।
 संसन्न-संकल्प-मनः कुसीदः प्रजया मार्गं अलसो न विन्दति ॥

कुपंहेदं कथं भवे । ।

इदं वदिं दुसं सुखं इदं व । ।

मात्रेणं कुं सुवसं इदं वदिं वदि । ।

दुसं वदिं गुणं इदं वदिं वदि । ।

वदिं वदिं वदिं वदिं वदिं वदि । ।

जो उठान (=उद्योग) के समय उठान न करनेवाला, युवा और बली होकर (भी) आलस्य से युक्त होता है, मन के संकल्पों को जिसने गिरा दिया है, और जो कुसीदी (=दीर्घसूत्री) है, वह आलसी (पुरुष) प्रजा के मार्ग को नहीं प्राप्त कर सकता ।

One who does not rouse himself when it is time to rise, who though young and strong, is slothful and weak in his understanding of pure thoughts, that lazy, idle man will not find the Path of Wisdom.

P 126 (XXXI, 33)

P 148 V 280

इदं वदिं दुसं कें इदं वदिं वदिं वदिं वदि । ।

वदिं कें सुवसं इदं वदिं वदिं वदिं वदि । ।

वसं वदिं वदिं कें वदिं वदिं वदिं वदि । ।

वदिं वदिं वदिं वदिं वदिं वदिं वदि । ।

वाचानुरक्खी मनसा सुसंवृत्तो,
 कायेन च अकुसलं न कयिरा ।
 एते तयो कम्मपथे विसोधये,
 आराधये मग्गामिसिप्पवेदितं ॥६॥

राजशृङ्ग (वेणुवन)

(शूकर-व्रत)

वाचाऽनुरक्षी मनसा सुसंकृतः
 कायेन चाऽकुशलं न कुर्यात् ।
 एतान् त्रीन् कर्मपथान् विशोधयेत्,
 आराधयेत् मार्गं ऋषिप्रवेदितम् ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

जो बाणी की रक्षा करनेवाला, मन से संयमी रहे, तथा काया से पाप न करे; इन (मन, वचन, काय) तीनों कर्मपथों की शुद्धि करे, और ऋषि (= बुद्ध) के जतलाये धर्म का सेवन करे ।

Watchful of speech and well restrained in mind, let him do nothing unvirtuous with his body. Let him purify these three ways of action, and win the Path realised by the Sages.

योगा वे जायती भूरि, अयोगा भूरिसङ्ख्यो ।
 एतं द्वेधापथं ज्ञत्वा, भवाय विभवाय च ।
 तथाऽत्मानं निवेशयेद् यथा भूरि पवङ्गति ॥१०॥

ज्येष्ठवन

पोठिल (के)

योगाद् वै जायते भूरि अयोगाद् भूरिसंख्यः ।
 एतं द्वेधापथं ज्ञत्वा भवाय विभवाय च ।
 तथाऽऽत्मानं निवेशयेद् यथा भूरि पवङ्गति ॥

सुखं सुखं सुखं । ।

कृत्वा सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं । ।

कृत्वा सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं । ।

सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं । ।

सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं । ।

सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं । ।

सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं । ।

(मन के) योग (=सयोग) से भूरि (=ज्ञान) उत्पन्न होता है, अयोग से भूरि का क्षय होता है। लाभ और विनाश के इन दो प्रकार के मार्गों को जानकर, अपने को इस प्रकार रखें, जिससे कि भूरि की वृद्धि होवे।

From meditation wisdom rises, without meditation wisdom wanes. Knowing this twofold path of gain and loss, let a man so conduct himself that wisdom may increase.

वनं छिन्दय मा रुक्खं, वनतो जायते भयं ।
छेत्वा वनं च वनयं च, निब्बना होथ भिक्खवो ॥११॥

जैतवन

कौई वृद्ध भिक्षु

वनं छिन्धि मा वृक्षं वनतो जायते भयम् ।
छित्त्वा वनं च वनयं च निर्वाणा भवत भिक्षवः ॥

वृक्षं च वृक्षं च वृक्षं च वृक्षं च ।
वृक्षं च वृक्षं च वृक्षं च वृक्षं च ।
वृक्षं च वृक्षं च वृक्षं च वृक्षं च ।
वृक्षं च वृक्षं च वृक्षं च वृक्षं च ।

वन की काटी, वृक्ष को मत; वन से भय उत्पन्न होता है, भिक्षुओ ! वन
और झाड़ी को काटकर निर्वाण को प्राप्त हो जाओ ।

Cut down the forest (of troublesome defilements), not
just a single tree. From the forest springs fear. Cutting the
forest and its undergrowth, O Bhikshus, you will gain Nirvana.

P 58 (XVIII, 3)

P 149 V 283

वृक्षं च वृक्षं च वृक्षं च वृक्षं च ।
वृक्षं च वृक्षं च वृक्षं च वृक्षं च ।
वृक्षं च वृक्षं च वृक्षं च वृक्षं च ।
वृक्षं च वृक्षं च वृक्षं च वृक्षं च ।

याव हि वनथो न छिज्जति,
अणुमत्तो पि नरस्स नारिसु ।
पटिबद्धमनो व ताव सो,
वच्छो खीरपको व मातरि ॥१२॥

यावद्धि वनथो न छिद्यतेऽणुमात्रोऽपि नरस्य नारीषु ।
प्रतिबद्धमनाः नु तावत् स वत्स-क्षीरप इव मानरि ॥

ॐ श्रैरुं मीरुं सुदुं मेरुं वा । ।
ॐ रुरुं वरुं सुदुं मेरुं वा । ।
ॐ रुरुं सुदुं मेरुं वा । ।
ॐ रुरुं सुदुं मेरुं वा । ।

जब तक अणुमात्र भी स्त्री में पुरुष की कामना अखण्डित रहती है, तब तक दूध पीनेवाला बछड़ा जैसे माता में आवद्ध रहना है, वैसे ही वह पुरुष बंधा रहता है ।

For as long as a man's desire for women, however slight, is not destroyed, then for just so long is his mind attached to phenomenal existence, like a sucking calf to its mother.

P 58 (XVIII, 4)

P 150 V 284

ॐ रुरुं सुदुं मेरुं वा । ।
ॐ रुरुं सुदुं मेरुं वा । ।
ॐ रुरुं सुदुं मेरुं वा । ।
ॐ रुरुं सुदुं मेरुं वा । ।

उच्छिन्न सिनेहमतनो, कुमुदं सारदिकं व पाणिना ।
सन्तिमगमेव ब्रूह्य, निब्बानं सुगतेन देसितं ॥१३॥

जैतवन

सुवण्णकार (थेर)

उच्छिन्धि स्नेहमात्मनः कुमुदं शारदिकमिव पाणिना ।
शान्तिमार्गमेव ब्रूह्य निर्वाणं सुगतेन देशितम् ॥

झुंक्कं गदिं गुक्कं दं अणं वसं वल्लिक्कं ।
वदणं विदं वत्तेसं अहंक्कं वत्तेदं वरं वत्तेदं ।
वदे वरं वत्तेणसं वत्तेणसं वत्तेणसं वत्तेणसं ।
विं वदिं वसं विदं वत्तेदं वत्तेदं वत्तेदं ।

हाथ से शरद् (ऋतु) के कुमुद की भाँति आत्मस्नेह को उच्छिन्न कर
डालो, सुगत (= बुद्ध) द्वारा उपदिष्ट (इस) शान्तिमार्ग का आश्रय लो ।

Cut off the love of self as you would pluck an autumn
lily with the hand. Cultivate that very Path to the peace of
Nirvana that has been taught by the Sugata (Buddha).

P 38 (XVIII, 5)

P 150 V 285

अणं वसं झुंक्कं गदिं वल्लिक्कं ।
वदणं वदं वत्तेदं वत्तेदं वत्तेदं वत्तेदं ।
वत्तेदं वत्तेदं वत्तेदं वत्तेदं वत्तेदं वत्तेदं ।
विं वदिं वसं विदं वत्तेदं वत्तेदं वत्तेदं ।

इध वस्सं वसिस्सामि, इध हेमन्तगिम्हिमु ।
इति बालो विचिन्तेति, अन्तरायं न बुज्जति ॥१४॥

जेतवन

(महाधनो वणिक)

इह वर्षासु वसिष्यामि इह हेमन्तग्रीष्मयोः ।
इति बालो विचिन्तयति, अन्तरायं न बुध्यते ॥

ཨ་རྒྱ་ཡོད་ཏུ་ཆོང་བ་ཡོད། ।

འདིར་ནི་བཟུང་དང་འདི་ཉིད་ཏུ། ।

བཟུན་དང་བཟིན་ཏུས་ང་ཟློན་ཅེས། ।

ཟུན་པོ་དག་ནི་སེམས་བྱེད་དེ། ।

བར་ཏུ་གཅོད་བ་རིག་མི་འགྱུར། ।

यहाँ वर्षा में बसूंगा, यहाँ हेमन्त और ग्रीष्म में (बसूंगा)—मूढ़ इस प्रकार सोचता है, (और) अन्तराय (=विघ्न) को नहीं बूझता ।

“Here will I live in the (mon-oon) rains, here in autumn and summer.” Thus the fool muses, thinking not of the obstacle (of death).

P.7 (I, 37)

P 151 V 236

བཟུན་ཀ་དང་ནི་བཟིན་ཀ་དང་། ।

བཟུང་ཀ་འདི་དག་བྱེད་ཞེས། ।

བྱིས་བ་ནམ་བར་སེམས་བྱེད་བས། ।

བར་ཆད་མཐོང་བར་མ་གྱུར་ཏི། ।

तं पुत्रपशुसम्मतं, व्यासक्तमनसं नरं ।
सुप्तं ग्रामं महोघो व, मच्चु आदाय गच्छति ॥१५॥

जेतवन

किसा गोतमी (बेरी)

तं पुत्र-पशु-सम्मतं व्यासक्तमनसं नरम् ।
सुप्तं ग्रामं महोघो इव मृत्पुत्रादाय गच्छति ॥

ཡོངས་སུ་ཆགས་པའི་ཡིད་ལྷན་སྟེ།
བྱ་དང་ཕྱུགས་རྣམས་རྣམ་ཅེག་དུ།
གཤེད་ཆེན་པོས་གཉིད་ཡོག་པའི།
གྲོང་པལ་ལ་འཆི་བས་འབྱེད་དེ་འགྲོ།

सोये गाँव को जैसे बड़ी बाढ़ (बहा ले जाये), वैसे ही पुत्र और पशु में
लिप्त आसक्त (-चित्त) पुरुष को मौत ले जाती है ।

As a great flood carries off a sleeping village, death
carries off the man whose mind is set on children and cattle.

P 7 (I, 38)

P 151, V 287

བྱ་དང་ཆེན་པོས་ཕྱུགས་འབྱེད་པ་ལ།
སྟེ་ཡི་ཡིད་ནི་རྣམ་ཆགས་པ།
འཆི་བདག་གིས་ནི་གྲོང་ས་ནས་འགྲོ།
ཆལ་གྲོང་ལ་འཆི་བས་འབྱེད་པ་པལ་ལ།

न सन्ति पुत्रा ताणाय, न पिता ना पि बन्धवा ।

अन्तकेनाधिपन्नस्स, नस्ति जातीसु ताणता ॥१६॥

जितक्क

पटाचार (बेरी)

न सन्ति पुत्रास्त्राणाय न पिता नाऽपि बान्धवाः ।

अन्तकेनाऽधिपन्नस्य नाऽस्ति जातिषु त्राणता ॥

सु'अँस'सुँव'व'म'अँक'ने। १

स'अँस'म'अँक'ग'दे'क'गुँस'सँक। १

अँक'व'स'द'व'द'दु'सु'स'व'कँ। १

क'अ'व'क'स'स'गुँस'सुँव'व'सँक। १

पुत्र रक्षा नहीं कर सकते, न पिता, न बन्धुलोग ही । जब मृत्यु पकड़ती है तो जातिवाले रक्षक नहीं हो सकते ।

Sons provide no protection, nor does father nor relations.
For him who is overcome by death there is no protection in kinsmen.

P 7 (I, 39)

P 152 V 288

अँक'व'दँ'दु'स'अ'व'व'व'कँ। १

सु'क'स'स'सुँव'स'सु'सँ'अ'सु'द'कँ'द'। १

स'अ'द'म'अँक'ग'दे'क'अ'द'क'सँक। १

सुँद'अ'सुँव'स'सु'अ'सु'द'व'सँक। १

एतमर्थवशं ज्ञात्वा, पण्डितो सीलसंवृतो ।
निव्वानगमनं मार्गं, खिप्पमेव विसोधये ॥१७॥

एतमर्थवशं ज्ञात्वा पण्डितः शीलसंवृतः ।
निर्वाणगमनं मार्गं क्षिप्रमेव विशोधयेत् ॥

देवः श्रुत्वा दण्डं दत्तं शेषं पुनः कथा ।

तत्र प्रियं त्वं त्वं त्वं त्वं त्वं त्वं त्वं त्वं ।

तुं दत्तं दत्तं दत्तं दत्तं दत्तं दत्तं दत्तं ।

तुं दत्तं दत्तं दत्तं दत्तं दत्तं दत्तं दत्तं ।

दत्तं श्रुत्वा त्वं त्वं ।

तुं दत्तं दत्तं दत्तं ।

इसे बात को जानकर पण्डित (नर) शीलवान् हो, निर्वाण की ओर
ले जानेवाले मार्ग को शीघ्र ही साफ करे ।

Understanding this fact, let the wise man, restrained by
morality, quickly clear the way that leads to freedom from
suffering (Nirvana).

२१—दक्षिणकवगो

मत्तासुखपरिच्छागा, पस्से चे विपुलं सुखं ।
चजे मत्तासुखं धीरो, सम्पस्सं विपुलं सुखं ॥१॥

राजगृह (वेणुवन)

गङ्गाबरोहण

मात्रासुखपरित्यागात् पश्येच्चेत् विपुलं सुखं ।
त्यजे नमात्रासुखं धीरः संपश्यन् विपुलं सुखम् ॥

འདྲ་མཉམ་ཆུང་པོ། ।

བདེ་བ་ཅམ་ཞིག་བོང་བ་ལས། ।

ཀྱ་ཆེན་བདེ་བ་མཐོང་ན་ནི། ।

བདེན་ནམས་བདེ་བ་ཅམ་བོང་ལ། ।

ཀྱ་ཆེན་བདེ་བ་བཟུ་བར་མཐོང་། ।

थोड़े से सुख के परित्याग से यदि बुद्धिमान विपुल सुख (का लाभ)
देखे, तो विपुल सुख का ख्याल करके थोड़े से सुख को छोड़ दे ।

If, by renouncing some slight happiness, one beholds a
larger one, the wise man will renounce the smaller (happiness)
in consideration of the greater happiness.

P 117 (XXX, 31)

P 153 V 290

གང་ཞིག་བདེ་བ་ཡངས་འདོད་ཅིང་། ।

བདེ་བ་ཆུང་པོ་གཏོང་འདོད་བཞི། ।

བདེན་པས་བདེ་ཆུང་སྤང་བྱས་ན། ।

བདེ་བ་ཡངས་པ་ལྟགས་པར་མཐོང་། ।

परदुःखोपादानेन, अत्तनो सुखमिच्छति ।
 वेरसंसर्गसंसृष्टो, वैरा सो न परिमुच्चति ॥२॥

जैतवन

कोई पुरुष

परदुःखोपादानेन य आत्मनः सुखमिच्छति ।
 वेरसंसर्गसंसृष्टो वैरात् स न प्रमुच्यते ॥

ལྷན་ཕྱིན་ཆེ་ལ་བྱུང་། །

གཞན་ལ་སྐྱུག་བསྐྱུལ་བསྐྱེད་བྱས་ནས། །
 རང་ཉིད་བདེ་བར་འདོད་པ་དེ། །
 དགྲ་ཡི་ཚྲིགས་ནི་འབྱིན་པ་སྟེ། །
 དེ་ནི་དགྲ་ལས་ཐར་མེ་འགྲུར། །

दूसरे को दुःख देकर जो अपने लिए सुख चाहता है, वैर के संसर्ग में पड़कर वह वैर से नहीं छूटता ।

By inflicting pain on others, he who wishes his own happiness creates enemies for himself. He does not become free from enemies.

P 113 (XXX, 2)

P 153 V291

གཞན་ལ་སྐྱུག་བསྐྱུལ་བསྐྱེད་པ་ཡིས། །
 རང་ཞིག་བདག་གི་བདེ་འདོད་པ། །
 དགྲ་དང་མི་འབྲུལ་འབྲོགས་པ་དང་། །
 དེ་ནི་སྐྱུག་བསྐྱུལ་ལས་མི་འགྲུལ། །

यं हि किञ्चं अपविद्धं, अकिञ्चं पन कयिरति ।

उन्नत्तानं पमत्तानं, तेसं वड्डन्ति आसवा ॥३॥

मदियनगर (जातियावन)

मदिय (भिक्षु)

यद्धि कृत्य तद् अपविद्धं, अकृत्य पुनः कुर्युः ।

उन्नत्तानां प्रमत्तानां तेषां वर्द्धन्ते आसवा ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

जो कर्त्तव्य है, उसे (तो वह) छोड़ता है, जो अकर्त्तव्य है उसे करता है, ऐसे बड़े मलवाले प्रमादियों के आसव (=चित्तमल) बढ़ते हैं ।

Giving up whatever should be done and encouraging what should not be done, thus do unrestrained and heedless people increase their taints.

1 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

येसं च सुसमारब्धा, निच्चं कायगता सति ।
 अकिच्चं ते न सेवन्ति, किच्चे, सातच्चकारिनो ।
 सतानं सम्प्रजानानं, अत्थं गच्छन्ति आसवा ॥४॥

येषाञ्च सुसमारब्धा नित्यं कायगता स्मृतिः ।
 अकृत्यं ते न सेवन्ते कृत्ये सातत्यकारिणः ।
 स्मरतां सम्प्रजानानां अस्तं गच्छन्त्यास्रवाः ॥

ग० जै० ५० ५० ५० ५० ५० ।
 सु० ५० ५० ५० ५० ५० ।
 ५० ५० ५० ५० ५० ५० ।
 ५० ५० ५० ५० ५० ५० ।
 ५० ५० ५० ५० ५० ५० ।
 ५० ५० ५० ५० ५० ५० ।

जिन्हें काया में (अगभगुरता, मलिनता आदि दोष सम्बन्धी) स्मृति तैयार रहती है, वह अकर्तव्य को नहीं करते, और कर्तव्य के निरन्तर करनेवाले होते हैं । जो स्मृति, और सम्प्रजन्य (= सचेतपन) को रखनेवाले होते हैं, उनके आस्रव अस्त हो जाते हैं ।

They who always earnestly practise the "awareness of body" (Vipashana meditation) and who, not relying on what should not be done, always do what should be done, the taints of those mindful and reflective ones come to an end.

मातरं पितरं हत्वा, राजानो द्वे च खत्तिये ।

रुष्टं सानुचरं हत्वा, अनीघो याति ब्राह्मणो ॥५॥

जेतवन

लकुष्ठक भक्ष्य (थेर)

माता (=तृष्णा), पिता (=अहंकार)

मातरं पितरं हत्वा राजानो द्वौ च क्षत्रियो ।

राष्ट्रं सानुचरं हत्वाऽनघो याति ब्राह्मणः ॥

ཀླུ་པ་ཅེན་ཚལ་དུ་ཡག་ཤུག་པའོ།།

མ་དང་པ་ནི་བསད་བྱས་ཤིང་། ।

ཀླུ་པ་པོ་ཀླུ་པ་རགས་གཉིས་པ་དང་། ।

ཡུལ་འཁོར་འབངས་བཅས་བསད་བྱས་ན། ।

ཉེས་མེད་བྱས་ཟེ་ཉིད་དུ་འགྱུར། ।

माता (=तृष्णा), पिता (=अहंकार), दो क्षत्रिय राजाओं [= (१) आत्मा, ब्रह्म प्रकृति आदि की नित्यता का सिद्धान्त, (२) मरणान्त जीवन मानना या जड़वाद], अनुचर (=राग) सहित राष्ट्र (=रूप, विज्ञान आदि संसार के उपादान पदार्थ) को मार कर ब्राह्मण (=ज्ञानी) निष्पाप होता है ।

Having slain mother (desire), father (anger), two warrior kings (the extreme views of eternalism and nullity), and having destroyed a country (all sense objects) together with its revenue officer (attachment) the Brahman becomes free of faults.

(Note : In this book the word "Brahman" always denotes the following three qualities; 1. Pure, without any sin or obscuration, 2. Possessed of wisdom, 3. Being a yogi of the tenth Bodhisattva Bhumi).

མ་དང་པ་ནི་བསད་བྱས་ཤིང་། ।

ཀླུ་པ་པོ་གཙང་སྒྲུ་ཅན་གཉིས་དང་། ।

ཡུལ་འཁོར་འཁོར་དང་བཅས་བསད་བྱས་ན། ।

ཉེས་མེད་གང་ཡིན་བྱས་ཟེ་ཡིན། ।

1 ཉེས་མེད་ཤེས་རབ་ཅན་དུ་འགྱུར། །བྱས་ཟེ་བྱ་བ་ནི། སྒྲུ་ཅན་འཁོར་
དག་པ་དང་། ཤེས་རབ་ཅན་དང་ས་བཅུ་དང་ནི་ཀླུ་པ་པོ་ཉེས་སྒྲུ་
ཤེས་དགོས།

मातरं पितरं हत्वा, राजानो द्वे च मोक्षिये ।

वेयम्घपञ्चमं हत्वा, अनीघो याति ब्राह्मणो ॥६॥

मातरं पितरं हत्वा राजानो द्वौ च श्रोत्रियो ।

व्याघ्रपञ्चमं हत्वाऽनीघो याति ब्राह्मणः ॥

མ་དང་པ་ནི་བསད་བྱས་ཤིང་། ।

རྒྱལ་པོ་གྲོས་པ་ཅན་གཉིས་དང་། ।

སྐྱལ་ནི་ལྔ་པོ་བསད་བྱས་ན། ।

ཉིས་མེད་བྱས་ཟེ་ཉིད་དུ་འགྱུར། ।¹

माता, पिता, दो श्रोत्रिय राजाओं [= (१) नित्यतावाद, (२) जड़वाद] और पाँचवें व्याघ्र (= पाँच ज्ञान के आवरणों) को मारकर, ब्राह्मण निष्पाप हो जाता है ।

Having killed mother (desire) and father (anger) and two holy kings (ego and jealousy), and destroying the tiger, the fifth one (ignorance), the Brahman becomes free of faults.

P 152 (XXXII. 73)

P 155 V 295

མ་དང་པ་ནི་བསད་བྱས་ཤིང་། ।

རྒྱལ་པོ་གཅང་སྐྱེ་ཅན་གཉིས་དང་། ।

མི་བཟེད་པ་ཡི་སྐྱལ་བསད་བ། ।

སྐྱལ་མེད་གང་ཡིན་བྱས་ཟེ་ཡིན། ।

1 ཆོག་འདི་དགག་དོན་འཆད་པ་ན་མདོ་སྡེ་ལང་ཀར་གཤེར་བ་ལས་

तृष्णा हि माता इत्युक्ता अविद्या च तथा पिता ।

विषयावबोधाद्विज्ञानं बुद्ध इत्युपदिश्यते ॥

སྡེད་པ་མ་ཞེས་བརྗོད་བ་སྡེ། | རི་བཞིན་མ་རྟེན་པ་ནི་པ། ལྷ་པ་

ཆམས་ཤེས་ཕྱིར་ཆམ་ཤེས་ན། | སངས་རྒྱས་ཞེས་བྱུང་ཉི་བར་བརྟན། སྐྱལ་ས་
གསུངས་སོ། ॥

सुपबुद्धं पबुज्जन्ति, सदा गोतमसावका ।

येसं दिवा च रत्तो च, निच्चं बुद्धगता सति ॥७॥

राजगृह (वेणुवन)

(दारुसाकटिकपुत्त)

सुप्रबुद्धं प्रबुध्यन्ते सदा गौतमश्रावकाः ।

येषां दिवा च रात्रौ च नित्यं बुद्धगता स्मृतिः ॥

འོད་མའི་ཚལ་དུའོ། །

གོ་ཐུ་ད་མའི་ཉམ་ཐོས་རྣམས།

ལེགས་པར་རབ་སད་ཏྲུག་ཏུ་སད། །

དེ་ནམས་ཉིན་དང་མཚན་མོ་ཡང་།

སངས་རྒྱས་རྒྱུ་ཏུ་ཏུ་པར་བྱེད། །

जिनको दिन-रात बुद्ध-विषयक स्मृति बनी रहती है, वह गौतम बुद्ध के शिष्य खूब जागरूक रहते हैं।

Well awake, the disciples of Gotama are ever vigilant. By day and by night they constantly remember the Buddha.

P 50 (XV, 12)

P 156 V 296

གང་ཞིག་ཅིན་དང་མཚན་རྒྱུ་སྟེ།

མངས་ཀྱིས་རྗེས་སྤྱོད་བྱེད་པ།

གཤིས་མེད་ལོ་རྒྱུས་བཅའ་ཁྲིམས།

ལེགས་པར་སདྱ་བས་སདྱ་པར་འབྱུང། །

सुप्पबुद्धं पबुज्जन्ति, सदा गोतमसावका ।
येसं दिवा च रत्तो च, निच्चं धम्मगता सति ॥५॥

सुप्रबुद्धं प्रबुध्यन्ते सदा गोतमश्रावकाः ।
वेषां दिवा च रात्रौ च नित्यं धर्मगता स्मृतिः ॥

मोत्तुं मदीं भवसेसं कम्मसा ।
येमसा मरुत्तं सदा दमं दुत्तं सदा ।
दे कम्मसा भवसेसं मदीं मदीं ।
मदीं मदीं मदीं मदीं मदीं मदीं ।

जिनकी दिन-रात धर्म-विषयक स्मृति बनी रहती है, वह गोतम (बुद्ध) के शिष्य खूब जागरूक रहते हैं ।

Well awake, the disciples of Gotama are ever vigilant.
By day and by night they constantly remember the Dharma.

P 50 (XV, 13)

P 156 V 297

मदीं मदीं मदीं मदीं मदीं मदीं ।
मदीं मदीं मदीं मदीं मदीं मदीं ।
मदीं मदीं मदीं मदीं मदीं मदीं ।
मदीं मदीं मदीं मदीं मदीं मदीं ।

सुप्पबुद्धं पबुज्जन्ति, सदा गोतमसावका ।
येसं दिवा च रत्तो च, निच्चं सङ्खगता सति ॥६॥

सुप्रबुद्धं प्रबुध्यन्ते सदा गौतमश्रावकाः ।
येषां दिवश्च रात्रौ च नित्यं संघगता स्मृतिः ॥

मोत्तुं दमदिं ऊक्खं षोसं ऊक्खसं । ।
येणसं वरं वरं सनं दमं दुं सनं । ।
दे ऊक्खसं ऊक्खं दमं मळकं सो षणं । ।
दमो दमं ऊक्खं दुं दमं वरं सुदं । ।

जिनको दिन-रात संघ-विषयक स्मृति बनी रहती है, वे गौतम (बुद्ध) के शिष्य खूब जागरूक रहते हैं ।

Well awake, the disciples of Gotama are ever vigilant.
By day and by night they constantly remember the Sangha.

P 51 (XV, 14)

P 157, V 298

मोत्तुं दमदिं ऊक्खं षोसं ऊक्खसं सु । ।
दमो दमं ऊक्खं सु दमं सुदं व । ।
मोत्तुं दमदिं ऊक्खं षोसं दे । ।
येणसं वरं सनं वरं सनं वरं वरं । ।

सुप्पबुद्धं पबुज्जन्ति, सदा गीतमसावका ।
 येसं दिवा च रत्तो च, निच्चं कायगता सति ॥१०॥

सुप्रबुद्धं प्रबुध्यन्ते सदा गीतमश्रावकाः ।
 येषां दिवा च रात्रौ च नित्यं कायगता स्मृतिः ॥

मोदुं ५ मदीं ५ वीं ५ वीं ५ वीं ५ वीं ।
 वेणुसं वरं वरं वरं वरं वरं वरं ।
 वे ५ वरं वरं वरं वरं वरं वरं वरं ।
 वे ५ वरं वरं वरं वरं वरं वरं वरं ।

जिनको रात-दिन काय विषयक स्मृति बनी रहती है, वे गौतम बुद्ध के शिष्य सदा जागरूक रहते हैं ।

Well awake, the disciples of Gotama are ever vigilant. By day and by night they constantly remember the Body (practice Vipassana meditation of constant heedfulness of the body's movement).

P 51 (XV, 18)

P 157 V 299

वरं वीं ५ वीं ५ वीं ५ वीं ५ वीं ।
 वरं वीं ५ वीं ५ वीं ५ वीं ५ वीं ।
 वे ५ वरं वरं वरं वरं वरं वरं वरं ।
 वे ५ वरं वरं वरं वरं वरं वरं वरं ।

मुपबुद्धं पबुज्जन्ति, सदा गोतमसावका ।
 येसं दिवा च रत्तो च, अहिंसाय रतो मनो ॥११॥

सुप्रबुद्धं प्रबुध्यन्ते सदा गोतमश्रावकाः ।
 येषां दिवा च रात्रौ च अहिंसायां रतं मनः ॥

གོ་ཏུ་ད་མ་ཡི་རྩན་ཐོས་རྣམས། ।
 ལེགས་པར་རབ་སད་དག་དུ་སད། ।
 དེ་རྣམས་རྩན་དང་མཚན་མོ་ཡང་། ।
 འཚོ་བ་མེད་ལ་ཡིད་དགའ་བྱེད། ।

जिनका मन रात-दिन अहिंसा में रत रहता है, वह गोतम (बुद्ध) के
 शिष्य सदा जागरुक रहते हैं ।

Well awake, the disciples of Gotama are ever vigilant.
 By day and by night their minds delight in harmlessness.

P 52 (XX, 21)

P 158 V 309

གང་ཞིག་རྩན་དང་མཚན་རྣམས་སུ། ।
 གཞོད་མེད་སེམས་ལ་ཡིད་དགའ་བ། ।
 གོ་ད་མ་ཡི་རྩན་ཐོས་དེ། ।
 ལེགས་པར་སད་བས་སད་བར་འགྱུར། ।

सुप्पबुद्धं पवुज्जन्ति, सदा गौतमसावका ।
 येसं दिवा च रत्तो च, भावनाय रतो मनो ॥१२॥

सुप्रबुद्धं प्रबुध्यन्ते सदा गौतमश्रावकाः ।
 येषां दिवा च रात्रौ च नित्यं भावनायां रतं मनः ॥

॥ वसं वोचसिं व ॥

मोदुं न मदिं न वं प्रोसं न मसं ।
 मेवसं वरं वरं सनं न वं नुं सनं ।
 दे न मसं न वं न वं म न वं म न वं ।
 म न वं म न वं न वं न वं न वं ।

जिनका मन रात-दिन भावना (= चिन्ता) में रत रहता है वे गौतम के शिष्य खूब जागरुक होते हैं ।

Well awake, the disciples of Gotama are ever vigilant.
 By day and by night their minds delight in meditation.

P 52 (XV, 22)

P 158 V 301

म न वं म न वं न वं न वं न वं ।
 म न वं म न वं न वं न वं न वं ।
 म न वं म न वं न वं न वं न वं ।
 म न वं म न वं न वं न वं न वं ।

दुष्प्रव्रज्जं दुरभिरमं, दुरावासा घरा दुखा ।

दुक्खोऽसमानसंवासो, दुक्खानुपतितद्वगू ।

तस्मा न चद्वगू सिया, न च दुक्खानुपतितो सिया ॥१३॥

वैशाली (महावन)

धज्जिपुत्तक (मिथु)

दुष्प्रव्रज्यां दुरभिरामं दुरावासं गृहं दुःखम् ।

दुःखोऽसमानसंवासो दुःखानुपतितोऽध्वगः ।

तस्मान्न चाऽध्वगः स्यान्न च दुःखानुपतितः स्यात् ॥

अस्मन्मन्त्रः ॥

मन्त्रः ॥ १ ॥

मन्त्रः ॥ २ ॥

मन्त्रः ॥ ३ ॥

मन्त्रः ॥ ४ ॥

मन्त्रः ॥ ५ ॥

मन्त्रः ॥ ६ ॥

कष्टपूर्णं प्रव्रज्या (= संन्यास) में रत होना दुष्कर है, न रहने योग्य घर दुःखद है, असमान के साथ बसना दुःखद है, मार्ग का बटोही होना दुःखद है, इसलिए मार्ग का बटोही न बने, न दुःख में पतित होवे ।

Difficult is the renunciation for ordination (of a Tirthika, non-Buddhist), difficult is to delight therein. Difficult is it to live with unequals. The wandering life is also painful. Therefore do not be a wanderer, do not be a pursuer of pain.

सद्धो शीलेन सम्पन्नो, यसोभोगसमपितो ।
यं यं पदेसं भजति, तत्थ तत्थेव पूजितो ॥१४॥

जेतवन

चित्त (गृहपति)

श्रद्धः शीलेन सम्पन्नो यशोभोगसमपितः ।
यं यं प्रदेशं भजते तत्र तत्रैव पूजितः ॥

सुखं भवेत्कथं नुते । ।

ददं च सुखं विमलं सुखं केषां नृणां ।
सुखं ददं च सुखं सुखं सुखं च सुखं ।
सुखं च सुखं ददं च सुखं च सुखं च ।
ददं ददं च सुखं सुखं च सुखं ।

श्रद्धावान्, शीलवान् यश और भोग से युक्त (पुरुष) जिस जिस स्थान में जाता है, वहीं पूजित होता है ।

Those who are possessed of faith and morality, wealth and renoun, are respected wherever they may stay.

दूरे सन्तो प्रकासेन्ति, हिमवन्तो व पञ्चतो ।
असन्तेऽत्र न दिस्सन्ति, रत्तिं खित्ता यथा सरा ॥१५॥

नेतवन

(चुल्ल) सुमदा

दूरे सन्तः प्रकाशन्ते हिमवन्त इव पर्वताः ।
असन्तोऽत्र न दृश्यन्ते रात्रिक्षिप्ता यथा शराः ॥

दस'व'न'न'स'उ'र'र'व'वै'र'नु । 1
सु'र'र'र'नु'न'स'व'र'नु । 1
र'र'र'र'र'र'र'र'र'र'र'र'र'र'र' । 1
दस'व'र'र'र'र'र'र'र'र'र'r'र' । 1

सन्त (जन) दूर होने पर भी हिमालय पर्वत (की) धवल चोटियों की भाँति प्रकाशते हैं, और असन्त यहीं (पास में भी) होने पर, रात में फँके बाण की भाँति नहीं दिखलाई देते ।

The good shine even from a far like the Himalaya mountain, but the wicked are though near, not seen, like an arrow thrown at night.

P 107 (XXIX, 19)

P 160 V 304

दस'व'र'र'र'र'र'र'र'r'र' । 1
न'र'र'उ'र'र'र'र'r'र' । 1
र'र'र'र'r'र'r'r' । 1
सु'र'र'र'र'r'r'r'r' । 1

एकासनं एकसेय्यं, एको चरमतन्द्रितो ।

एको दमयमत्तानं, वनन्ते रमितो सिया ॥१६॥

त्रेतवम

अकेले विहरनेवाले (घेर)

एकामन एकशय्य एकश्चरन्तन्द्रितः ।

एको दमयन्नात्मानं वनान्ते रतः स्यात् ॥

एकैवाऽसुप्तः एकैवाऽसुप्तः ।

एकैवाऽसुप्तः सुखं विन्देति ।

एकैवाऽसुप्तः स्वयं ।

एकैवाऽसुप्तः स्वयं ।

एकैवाऽसुप्तः स्वयं ।

एकैवाऽसुप्तः स्वयं ।

एक ही आसन रखनेवाला, एक शय्या रखनेवाला, अकेला विचरनेवाला,
(वन), आलस्य रहित हो, अपने को दमन कर अकेला ही वनान्त में रमण करे ।

He who sits alone, he who rests alone, he who walks alone, he who is strenuous, he who subdues himself alone, should seek delight in the extinction of desires (literally, the end of the forest).

२२—निरयवग्गो

अभूतवादी निरयं उपेति,
यो वा पि क्त्वा न करोमि चाह ।
उभो पि ते पेच्च समा भवन्ति,
निहीनकम्मा मनुजा परत्थ ॥१॥

सुन्दरी (परिव्राजिका)

अभूतवादी निरयमुपेति, योवाऽपि कृत्वा 'न करोमी' ति चाह ।
उभावपि तो प्रेत्य समा भवतो निहीनकर्मणि मनुजोः परत्र ॥

ཕྱི་ལོ་ཕྱི་ཚེས་ཉེ་མཇུག་ལ་གསུངས་པ།

མི་བདེན་སྡེ་པ་དཔུང་པར་འགྲོ་བ་ཏུ།

གང་གིས་ལྷན་ནས་མ་ལྷན་པ་ཡང་། །

གཤིས་པོ་འདི་དག་གི་ན་མཉམ་པར་འགྱུར། །

གཞན་དུ་དམན་པའི་ལས་བྱེད་མི་དག་ཡིན། །

असत्यवादी नरक में जाते हैं, और वह भी जो कि करके 'नहीं किया'— कहते हैं। दोनों ही प्रकार के नीचकर्म करनेवाले मनुष्य सरकर समान होते हैं।

The liar goes to hell, and also he who, having done a thing says—"I did not do it." Both on departing become equal as men of base actions in the other world.

P 161 V 306

གང་དག་ཡིན་པ་ཞིན་མ་ཤིང་ཟེར་བ་དེས།

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

མེ་རེ་གཉི་ག་མུ་པ་པ་མོ་པ་ཏུ།

[illegible]

कासावकण्ठा बहवो, पापघम्मा असञ्जता ।
पापा पापेहि कम्मेहि, निरयं ते उपपज्जरे ॥२॥

राजगृह (वेणुवन)

(पाप कलानुभवो प्राणी)

काषायकंठा बहवः पापघर्मा असंयताः ।
पापाः पापैः कर्मभिर्निरयं त उत्पद्यन्ते ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

कण्ठ में काषाय (= वस्त्र) डाले कितने ही पापी असंयमी हैं, जो पापी
पाप के कर्मों से नरक में उत्पन्न होते हैं ।

Many of those who wear the yellow robe are ill-natured
and uncontrolled and these sinners, on account of their bad
deeds will be born in hell.

सेध्यो अयोगुहो भुत्तो, तत्तो अग्निशिखोपमो ।
यच्चे भुञ्जेय्य दुस्सीलो, रट्टपिण्डमसञ्जतो ॥३॥

वैशाली

(वग्गुमुदात्तीरवासी भिक्षु)

श्रेयान् अयोगो लो भुक्तस्तप्तोऽग्निशिखोपमः ।
यच्चेद् भुञ्जीत दुःशीलो राष्ट्रपिण्ड असंयतः ॥

अदस'व'उ'र'दु'र' । ।

ऊ'र'अ'क'अ'अ'द'द'ग'अ'अ'अ'अ' । ।

अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ' । ।

अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ' । ।

अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ' । ।

असंयमी दुराचारो हो राष्ट्र का पिण्ड [=देश का अन्न] खाने से
अग्नि-शिखा के समान तप्त लोहे का गोला खाना उत्तम है ।

It is better for an immoral, uncontrolled person to
swallow a ball of red-hot iron than to eat alms gathered from
the country.

P 163 V 308

अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ' । ।

अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ' । ।

अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ' । ।

अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ' । ।

चत्वारि ठानानि नरो प्रमत्तो,
 आपज्जति परदारूपसेवी ।
 अपुञ्जलाभं न निकामसेय्यं,
 निन्दं ततीयं निरयं चतुत्थं ॥४॥

जेटवन

खेम (श्रेष्ठीपुत्र)

चत्वारि स्थानानि नरः प्रमत्त आपद्यते परदारोपसेवी ।
 अपुञ्जलाभं न निकामसेय्यां
 निन्दां तृतीयां निरयं चतुर्थम् ॥

सुखं भुङ्क्ते न च निद्रां । ।

मज्झिमे सुखं भुङ्क्ते न च निद्रां । ।
 मज्झिमे सुखं भुङ्क्ते न च निद्रां । ।
 मज्झिमे सुखं भुङ्क्ते न च निद्रां । ।
 मज्झिमे सुखं भुङ्क्ते न च निद्रां । ।

प्रमादी परस्त्रीगामी मनुष्य की चार गतियाँ हैं— अपुण्य का लाभ,
 सुख से न निद्रा, तीसरा निन्दा और चौथा नरक ।

Four misfortunes befall a heedless man who commits
 adultery-acquisition of demerit, disturbed sleep, blame and hell.

P 16 (IV, 13)

P 162 V 309

मज्झिमे सुखं भुङ्क्ते न च निद्रां । ।
 मज्झिमे सुखं भुङ्क्ते न च निद्रां । ।
 मज्झिमे सुखं भुङ्क्ते न च निद्रां । ।
 मज्झिमे सुखं भुङ्क्ते न च निद्रां । ।

कुशो यथा दुग्गहितो, हत्थमेवानुकन्तति ।
सामञ्जं दुष्परामट्ठं, निरयायुपकड्ढति ॥६॥

जेतवन

(कटुभाषी भिक्षु)

कुशो यथा दुग्ग हीतो हस्तमेवाऽनुकन्तति ।
श्रामण्यं दुष्परामट्ठं निरयायोपवर्षति ॥

गुप्तं उद्वेगं नृपः ।

दमेरुं नृपः नृपः नृपः नृपः ।
दमेरुं नृपः नृपः नृपः नृपः ।
दमेरुं नृपः नृपः नृपः नृपः ।
दमेरुं नृपः नृपः नृपः नृपः ।

जैसे ठीक से न पकड़ने से कुश हाथ को ही छेदता है, (इसी प्रकार)
श्रमणपन (= सन्यास) ठीक से ग्रहण न करने पर नरक में ले जाता है ।

Just as Kusa grass cuts the hand when wrongly caught,
even so the saint life when wrongly handled, drags one
to hell.

P 37 (X, 4)

P 163 V 311

दमेरुं नृपः नृपः नृपः नृपः ।
दमेरुं नृपः नृपः नृपः नृपः ।
दमेरुं नृपः नृपः नृपः नृपः ।
दमेरुं नृपः नृपः नृपः नृपः ।

ये किञ्चि सिथिलं कर्म, सङ्कलितं च यं वतं ।
सङ्कस्सरं ब्रह्मचरियं, न तं होति महत्फलं ॥७॥

यत् किञ्चित् शिथिलं कर्मं सक्लिष्टं च यद् व्रतम् ।
संकृच्छं ब्रह्मचर्यं न तद् भवति महत्फलम् ॥

ཨོན་པའི་བྱ་བ་གང་ཡིན་དང་། ༡

ཀུན་ཉོན་བདུལ་ལྷགས་གང་ཡིན་དང་། ༡

ཚངས་བར་སྟོན་བ་རལ་བ་དེ། ༡

འབྲས་བུ་ཆེན་པོར་འགྱུར་མ་ཡིན། ༡

जो कर्म शिथिल है, जो व्रत क्लेश (=मल)-युक्त है, और जो ब्रह्मचर्य
अशुद्ध है, वह महाफल (-दायक) नहीं होता ।

Any loose act, any corrupt observance, a false Holy Life,
none of these are of much fruit.

P 37 (X, 3)

P 164 V 312

ཨོན་པའི་ལས་ནི་ཨོན་པ། ༡

ཀུན་ནས་ཉོན་མེས་དཀར་ཐུབ་དང་། ༡

ཚངས་སྟོན་ཡོངས་སུ་མ་དག་དེ། ༡

དོན་ཆེན་འགྱུར་སྐྱམ་མི་ཡེན་དོ། ༡

अकृतं दुष्कृतं सेव्यो, पच्छा तप्पति दुष्कृतं ।
कृतं च सुकृतं सेव्यो, यं कत्वा नानुत्पत्ति ॥६॥

जितवन

(कोई ईर्ष्यालु स्त्री)

अकृतं दुष्कृतं श्रेयः पश्चात् तप्ति दुष्कृतम् ।
कृतं च सुकृतं श्रेयो यत् कृत्वा नानुत्पत्ति ॥

दुष्कृत (= पाप) का न करना श्रेष्ठ है, दुष्कृत करनेवाला पीछे अनुताप करता है; सुकृत का करना श्रेष्ठ है, जिसको करके (मनुष्य) अनुताप नहीं करता ।

क्रियं दुष्टं कर्तुं दुष्टं श्रेयं च । ।

श्रेयं च दुष्टं कर्तुं श्रेयं च दुष्टं कर्तुं । ।

श्रेयं च दुष्टं कर्तुं श्रेयं च दुष्टं कर्तुं । ।

श्रेयं च दुष्टं कर्तुं श्रेयं च दुष्टं कर्तुं । ।

श्रेयं च दुष्टं कर्तुं श्रेयं च दुष्टं कर्तुं । ।

An evil deed is better left undone, for a misdeed torments One hereafter. A good deed is better done, since one does not suffer later for having done it.

नगरं यथा पचन्तं, गुप्तं सन्तरबाहिरं ।
 एवं गोपेथ अत्तानं, खणो वो मा उपचचमा ।
 खणातीता हि सोचन्ति, निरयमिह समप्पिता ॥१०॥

जैतवन

बहुत से मिश्र

नगरं यथा प्रत्यन्तं गुप्तं सान्तर्बाह्यम् ।
 एव गोपयेदात्मानं क्षणं वै मा उपातिगाः ।
 क्षणाऽनीता हि शोचन्ति निरये समर्पिताः ॥

ལྷན་སྐྱོད་ཚལ་དུ་དག་སྒྲོང་ཡོད། །

དཔེར་ན་བས་མཐའི་གྲོང་དག་ནི། །

ཕྱི་ནང་ནང་ནས་བསྐྱང་གྱུར་བ། །

དེ་ལྟར་བདག་ཉིད་བསྐྱང་བྱ་སྟེ། །

སྒྲོང་ཅིག་ཚལ་ཡང་མ་འདྲེན་ཞིག། །

སྒྲོང་ཅིག་དག་ལ་གཡེལ་བ་ནམས། །

དུས་བར་ཆུད་དེ་འགྱོད་པར་འགྱུར། །

जैसे सीमान्त का नगर भीतर बाहर से खूब रक्षित होता है, उसी प्रकार अपने को रक्षित रखे, क्षण भर भी न छोड़े, क्षण झुक जाने पर नरक में पड़कर शोक करना पड़ता है ।

Just as a border city is guarded within and without, you should similarly guard yourself. Do not let even a moment pass by (unused), for those who are careless with the (passing) moments regret it when they are consigned to hell.

P 22 (V, 17)

P 165 V 315

དཔེར་ན་དགོན་པའི་གྲོང་ཁྱེར་དག། །

ཕྱི་ནང་སྐྱང་བར་བྱེད་བ་ལྟར། །

དལ་འགྱོད་ཆུད་ནི་མི་ཚེས་ལ། །

དེ་ལྟར་བདག་ནི་བསྐྱང་བར་བྱ། །

སེམས་ཅན་དུས་བར་སྐྱོད་ན་ཡང་། །

དལ་འགྱོད་ཐལ་བས་འགྱོད་པར་འོང་། །

अलज्जिताये लज्जन्ति, लज्जिताये न लज्जरे ।

मिच्छादिद्विसमादाना, सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं ॥११॥

जैतवन

(जैन साधु)

अलज्जिता ये लज्जन्ते लज्जिता ये न लज्जन्ते ।

मिथ्यादृष्टि समादानाः सत्त्वागच्छन्ति दुर्गतिम् ॥

कठेसुवचम् । ।

दोसो कच दोसो जेद । ।

दोसो वच दोसो मेद । ।

वहुवचो वच वच वच वच । ।

सोसो वच वच वच वच वच । ।

अलज्जा (के काम) में जो लज्जा करते हैं और लज्जा (के काम) में जो लज्जा नहीं करते, वह झूठी धारणा वाले प्राणी दुर्गति को प्राप्त होते हैं ।

Beings who are ashamed at what is not shameful, and who are unashamed at the shameful, embrace false views and go to a woeful state (the three lower realms of rebirth).

P 53 (XVI, 4)

P 166 V 316

दोसो कच दोसो जेद । ।

दोसो वच दोसो मेद । ।

[सो वच वच वच वच वच । ।

वच वच वच वच वच वच । ।]

वच वच वच वच वच वच । ।

सोसो वच वच वच वच वच । ।

अभये भयदस्सिनो, भये चाभयदस्सिनो ।
मिच्छादिद्विसमादाना, सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं ॥ १२ ॥

अभये च भयदर्शिनो भये चाऽभयदर्शिनः ।
मिध्याद्विद्विसमादानाः सत्त्वा गच्छन्ति दुर्गतिम् ॥

अहिंसा-प-मेद-प-अहिंसा-प-व-वृत्ति ।
अहिंसा-प-अहिंसा-प-मेद-प-व-वृत्ति ।
वृत्ति-प-व-व-वृत्ति-प-व-वृत्ति ।
संसर्ग-प-वृत्ति-प-वृत्ति-प-व-वृत्ति ।

भयरहित (काम) में जो भय देखते हैं, और भय (के काम) में भय को नहीं देखते, वही झूठी धारणा वाले प्राणी दुर्गति को प्राप्त होते हैं ।

Beings who are afraid at what is not fearful, and who are without fear for what is fearful, embrace false views and go to a woeful state.

P 53 (XVI, 5)

P 166 V 317

[अ-हिंसा-प-अ-हिंसा-प-व-वृत्ति ।
अ-हिंसा-प-अ-हिंसा-प-व-वृत्ति ।]
अ-हिंसा-प-अ-हिंसा-प-व-वृत्ति ।
अ-हिंसा-प-अ-हिंसा-प-व-वृत्ति ।
अ-हिंसा-प-अ-हिंसा-प-व-वृत्ति ।
अ-हिंसा-प-अ-हिंसा-प-व-वृत्ति ।

अवज्जे वज्जमतिनो, वज्जे चावज्जदस्सिनो ।

मिच्छादिद्विसमादाना, सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं ॥१३॥

वैतवन्न

(तीर्थिक-शिष्य)

अवद्ये वज्जमतयो वद्ये चाऽवद्यदर्शिनः ।

मिथ्यादृष्टिसमादानाः सत्त्वा गच्छन्ति दुर्मतिम् ॥

अ०क०स०म०सो०कु०म०सो०स० ।

कु०म०अ०क०स०म०सो०म० ।

म०कु०म०सो०म०स०म०स०म० ।

सो०स०कु०क०स०म०स०सो०म० ।

जो अदोष में दोषबुद्धि रखने वाले हैं, (और) दोष में अदोष दृष्टि रखने वाले, वह झूठी धारणा वाले प्रणी दुर्मति को प्राप्त होते हैं ।

Beings who imagine wrong in what is not wrong, and who view as not wrong what is wrong, embrace false views and go to a woeful state.

वज्जं च वज्जतो ज्ञत्वा, अवज्जं च अवज्जतो ।

सम्मादिद्विसमादाना, सत्ता गच्छन्ति सुगतिं ॥१४॥

वद्यं (वज्ज्यम्) च वद्यतो ज्ञात्वाऽवद्यं चावद्यतः ।

सम्यग्दृष्टिसमादानाः सत्त्वा गच्छन्ति सुगतिम् ॥

उद्वं वद्वं वी उद्वं वद्वं । ।

वी उद्वं वद्वं वी उद्वं वद्वं । ।

वद्वं वद्वं वद्वं वद्वं वद्वं । ।

वद्वं वद्वं वद्वं वद्वं वद्वं । ।

वद्वं वद्वं वद्वं वद्वं ।

वद्वं वद्वं वद्वं वद्वं । ।

दोष को दोष जानकर और अदोष को अदोष जानकर, ठीक धारणा वाले प्राणी सुगति को प्राप्त होते हैं ।

Beings who know what is wrong to be wrong, and what is right to be right, embrace right views and go to a happy state.

अहं नागो व सङ्ग्रामे, चापतो पतितं सरं ।
अतिवाक्यं तितिविखस्सं, दुस्सीलो हि बहुज्जनो ॥१॥

जैतवन

आनन्द (थेर)

अहं नाग इव संग्रामे चापतः पतितं शरम् ।
अतिवाक्यं तितिक्षिष्ये, दुःशीला हि बहुजनाः ॥

कुम'सुद'कम'नु'गुण'दण'द'वो'य'ग'सुद'स'वा ।
वद'मा'के'सु'य'नु'ह'न'वो'के । ।
मा'त्रु'य'स'द'य'न'व'द'स'द'य'न'व'द'स' । ।
के'ग'दु'व'क'स'स'य'न'व'द'स'द'स' । ।
सु'वो'य'न'के'र'कु'म'द'क'द'स' । ।

जैसे युद्ध में हाथी घनुष के गिरे शर को सहन करता है वैसे ही मैं
कटुवाक्यों को सहन करूँगा, (संसार में तो) दुःशील आदमी ही अधिक हैं ।

I shall be patient towards abuse even as an elephant in
the battlefield withstands the arrows shot from a bow. Truly
most people are ill-natured.

P 107 (XXIX, 21)

P 168 V 320

मा'त्रु'य'स'स'द'य'न'व'द'स'द'स' । ।
मा'य'न'द'स'के'र'के'र'के'र'के'र' । ।
कु'म'द'क'म'सु'वो'य'न'व'द'स' । ।
सु'वो'य'न'के'र'कु'म'द'क'द'स' । ।

- 1 आ'क'द' (गु'ण'द'ण'द'वो') के' सु'वो'य'न'के'र'कु'म'द'क'द'स' । ।
सु'वो'य'न'के'र'कु'म'द'क'द'स'के'र'कु'म'द'क'द'स' । ।
सु'वो'य'न'के'र'कु'म'द'क'द'स'के'र'कु'म'द'क'द'स' । ।

दान्तं नयन्ति समितिं, दन्तं राजाभिरुहति ।
 दन्तो सेट्ठो मनुस्सेसु, योतिवाक्यं तितिक्षति ॥२॥

दान्तं नयन्ति समितिं दान्तं राजाऽभिरुहति ।
 दान्तः श्रेष्ठो मनुष्येषु योतिवाक्यं तितिक्षते ॥

दुय्यवः क्वेणसः सुअस्सिदः वः सु ।
 दुय्यवः कुय्यवोसः वेणवः सु ।
 एअवोसः केणवः सुअस्सिदः सुवः सु ।
 दुय्यवः मीअः क्वेणवः सुअस्सिदः सु ।

दान्त (= शिक्षित) (हाथी) को युद्ध में ले जाते हैं तो दान्त पर राजा चढ़ता है, मनुष्य में भी दान्त (= सहनशील) श्रेष्ठ है, जो कि कटुवाक्यों को सहन करता है ।

They lead the trained elephant into the crowd. The king mounts the trained elephant. Best among men are the trained who are patient towards abuse.

P 63 (XIX, 6)

P 108 V 321

दुय्यवः अदुवः सः अस्सिदः सुअ ।
 दुय्यवः कुय्यवोसः वेणवः सु ।
 एअवोसः केणवः सुअस्सिदः सुवः सु ।
 दुय्यवः मीअः क्वेणवः सुअस्सिदः सु ।

वरमस्सतरा दन्ता, आजानीया च सिन्धवा ।
कुञ्जरा च महानागा, अत्तदन्तो ततो वरं ॥३॥

वरमश्वतरा दान्ता आजानीयाश्च सिन्धवः ।
कुंजराश्च महानागा आत्मदान्तस्ततो वरम् ॥

दुय'वदि'देउ'कसस'कि'स'कै'वा ।
सि'क'दु'दि'उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ' ।
उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ' ।
उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ' ।

खचवर, उत्तम खेत के सिन्धो घोड़े, और महानाग हाथी दान्त=(शिक्षित)
होने पर श्रेष्ठ हैं और अपने को दमन किया (पुरुष) उनसे भी श्रेष्ठ है ।

Excellent are trained mules, so are thorough-breds of
Sindh and the leaders of the elephant herds, but better still is
one who trains himself.

P 63 (XIX, 7)

P 169 V 322

उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ' ।
सि'क'दु'दि'उ'उ'उ'उ'उ'उ' ।
उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ' ।
उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ'उ' ।

न हि एतेहि यानेहि, गच्छेद्य अगर्तं दिशम् ।
यथात्तना सुदन्तेन, दन्तो दन्तेन गच्छति ॥४॥

जेतवन

भूतपूर्व महावत निक्षु

नहि एतैर्यनैः गच्छेदगतां दिशम् ।
यथाऽऽत्मना सुदान्तेन दान्तो दान्तेन गच्छति ॥

बदगं ठिदं सुयं वदिं दुयं वं यीस । ।
दुयं वं वृक् क्खसं वग्गेदं दग्गुदं वदि । ।
सं सोंदं पुयं वं सुवसं वं की । ।
वलेक्कं वं ददिं दगं क्खसं ग्गिसं वीक्क । ।

इन (हाथी, घोड़े आदि) यानो से, बिना गई दिशा वाले (निर्वाण की ओर) नहीं जाया जा सकता, संयमी पुरुष अपने को संयम कर संयत (इन्द्रियों) के साथ (वहाँ) जाता है ।

For with these animals one cannot go to the untrodden land (Nirvana) where goes a disciplined person due to the discipline of self-control.

P. 64 (XIX, 8)

P 169 V 323

बदगं ठिदं वेषसं ददुयं वादं यीक्कं वदि । ।
क्खसं वे ले वं व्वेव दग्गुदं व्वा । ।
वलेक्कं वं ददिं दगं क्खसं ग्गिसं वी । ।
सं दं सोंदं वरं व्वेव वी सिदं । ।

I दं सोंवसं वलेक्कं वं ददिं दगं वीसं वरं वदिं व्वेव वी सिदं । ।

धनपालो नाम कुञ्जरो,
कटुकभेदनो दुन्निवारयो ।
बद्धो कबळं न भुञ्जति,
सुमरति नागवनस्स कुञ्जरो ॥५॥

अेतवने

(परिजिण्ण ब्राह्मणपुत्त)

धनपालको नाम कुंजरो कटक प्रभेदनो दुन्निवार्यः ।
बद्धः कवलं न भुक्ते, स्मरति नागवनं कुंजरः ॥

कुण्डलं सुन्दरं ॥

कुण्डलं सुन्दरं सुन्दरं सुन्दरं ॥ १
कुण्डलं सुन्दरं सुन्दरं सुन्दरं सुन्दरं ॥ १
कुण्डलं सुन्दरं सुन्दरं सुन्दरं सुन्दरं ॥ १
कुण्डलं सुन्दरं सुन्दरं सुन्दरं सुन्दरं ॥ १

सेना को तितर-वितर करने वाला, दुर्घर्ष धनपालक नामक हाथी,
(आज) बन्धन में पड़ जाने पर कवल नहीं खाता, और (अपने) हाथियों के
जंगल को स्मरण करता है ।

The elephant called Dhanapalak is uncontrollable at the
time of rut. When tied up, he eats not a morsel, for he is
remembering the elephant forest.

कुण्डलं सुन्दरं सुन्दरं सुन्दरं सुन्दरं ॥ १
कुण्डलं सुन्दरं सुन्दरं सुन्दरं सुन्दरं सुन्दरं ॥ १
कुण्डलं सुन्दरं सुन्दरं सुन्दरं सुन्दरं सुन्दरं ॥ १
कुण्डलं सुन्दरं सुन्दरं सुन्दरं सुन्दरं सुन्दरं ॥ १

मिद्धी यदा होति महग्वसो च,
निद्रायिता सम्परिवत्तसायी ।
महावराहो व निवापपुटो,
पुनः पुनं गढममुपेति मन्दो ॥६॥

जैतवन

पसेनदी (कोसलराज)

मृद्धो यदा भवति महाघसश्च निद्रावितः सपरिवर्तसायी ।
महावराह इव निवाप पुष्टः पुनः पुनः गर्भमुपैति मन्द ॥

गो'स'अर'ग'स'अ'कु'अ'अ'र' ।

अ'ग'अ'र'ग'स'अ'कु'अ'अ'र' । ।

ग'अ'र'ग'स'अ'कु'अ'अ'र' । ।

अ'ग'अ'र'ग'स'अ'कु'अ'अ'र' । ।

अ'ग'अ'र'ग'स'अ'कु'अ'अ'र' । ।

जो (पुरुष) आलसी, बहुत खाने वाला, निद्रालु, करबट बदल-बदल सोने वाला, तथा दाना देकर पले मोटे सुअर की भाँति होता है; वह मन्द बार-बार गर्भ में पड़ता है ।

He who is torpid and gluttonous, always asleep whether sleeping or walking, like a great hog nourished on pig's swill, that stupid one is born again and again.

P 106 (XXIX, 18)

P 170 V 325

ग'अ'र'ग'स'अ'कु'अ'अ'र' । ।

ग'अ'र'ग'स'अ'कु'अ'अ'र' । ।

ग'अ'र'ग'स'अ'कु'अ'अ'र' । ।

ग'अ'र'ग'स'अ'कु'अ'अ'र' । ।

इदं पुरे चित्तमचारि चारिकं,
येनिच्छकं यत्थकामं यथामुखं ।
तदज्जहं निग्गहेस्सामि योनिसो,
हत्थिण्णभिन्नं विय अङ्कुसग्गहो ॥७॥

जैतवन

(सामणेर)

इदं पुरा चित्तमचरत् चारिकां
यथेच्छं यथाकामं यथामुखम् ।
तदद्याहं निग्रहीष्यामि योनिसो
हस्तिनं प्रभिन्नमिवाङ्कुशग्राहः ॥

शुभ सुदं कथं सुदमं सुदं ॥ ५ ॥

सोमसं २६ सुदं कथं सुदं सुदं सुदं ॥ ५ ॥

सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं ॥ ५ ॥

सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं ॥ ५ ॥

सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं ॥ ५ ॥

यह (मेरा) चित्त पहले यथेच्छा = यथाकाम, जैसे सुख मालूम होता है
वैसे विवरने वाला था; सो आज महावत जैसे मतवाले हाथी को (पकड़ता है,
वैसे) मैं उसे जड़ से पकड़ूँगा ।

Formerly this mind went wandering as it liked, where it
wished, as it pleased. Now from today I will fully control it,
as the rider, holding a goad, controls an elephant which is in a
state of rut.

P 121 (XXXI, 5)

P 171 V 326

सोमसं २६ सुदं कथं सुदं सुदं सुदं सुदं ॥ ५ ॥

सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं ॥ ५ ॥

सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं ॥ ५ ॥

सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं ॥ ५ ॥

सचे लभेथ निपकं सहायं,
सद्धिं चरं साधुविहारिघोरं ।
अभिभूय सब्बानि परिस्सयानि,
चरेय्य तेनत्तमनो सतीमा ॥६॥

पारिलेखक

बहुत से भिक्षु

सचेत् लभेत निपक्वं सहायं
सद्धिं चरन्तं साधुविहारिणं धीरम् ।
अभिभूय सर्वान् परिश्रयान्
चरेत् तेनाऽऽत्तमनाः स्मृतिमान् ॥

ने के क्लेक्कं ठेअं येणसं सुत्तं चरं चरं चरं चरं ।
सवसं चरं सुत्तं चरं चरं के क्लेक्कं चरं चरं ।
¹ अत्तसं सुत्तं चरं चरं चरं चरं चरं चरं चरं ।
अत्तं चरं चरं चरं चरं चरं चरं चरं चरं चरं ।

यदि परिपक्व (-बुद्धि) बुद्धिमान साथ में विहरनेवाला (=शिष्य) सहचर मित्र मिले तो सभी परिश्रयों (=विघ्नों) को हटाकर सचेत प्रसन्नचित्त हो उसके साथ विहार करे ।

If you find a good companion to live with you, who is of similar practice, who behaves well, and is wise, then you should live with him joyfully and mindfully, overcoming all difficulties.

P 48 (XIV, 13)

P 172 V 328

चरं चरं चरं चरं चरं चरं चरं चरं चरं चरं ।
चरं चरं चरं चरं चरं चरं चरं चरं चरं चरं ।
चरं चरं चरं चरं चरं चरं चरं चरं चरं चरं ।
चरं चरं चरं चरं चरं चरं चरं चरं चरं चरं ।

नो चे लभेथ निपकं सहाय,
 सद्धिं चरं साधुविहारिधीरं ।
 राजा व रट्ठं विजितं पहाय,
 एको चरे मातङ्गरञ्जे व नागो ॥१०॥

न चेत् लभेत निपक्व सहायं सार्द्धचरन्तं साधुविहारिण धीरम् ।
 राजेव राष्ट्रं विजितं प्रहाय, एकश्चेत् मातमोऽरण्य इव नागः ॥

देवदेवैश्च तेन देवसंस्तुतं वदन् वरिष्ठं च ।
 सवसन्नातेन स्तुतं च दत्तं चैव भिक्षुः ।
 पुनरपि तेन वसन्नातेन वसन्नातेन वसन्नातेन ।
 पुनरपि तेन वसन्नातेन वसन्नातेन वसन्नातेन ।

यदि परिपक्व, बुद्धिवान् साथ में विहरनेवाला सहचर मित्र न मिले, तो
 राजा की भाँति पराजित राष्ट्र को छोड़ गजराज की तरह अकेला विचरे ।

If you do not get a good companion who is of similar
 practice to live with you, one who behaves well and is wise,
 then you should live alone like a king who leaves his conquered
 kingdom, or as an elephant in the forest.

P 48 (XIV, 14)

P 172 V 329

वदन् वरिष्ठं च दत्तं चैव भिक्षुः ।
 पुनरपि तेन वसन्नातेन वसन्नातेन वसन्नातेन ।
 पुनरपि तेन वसन्नातेन वसन्नातेन वसन्नातेन ।
 पुनरपि तेन वसन्नातेन वसन्नातेन वसन्नातेन ।

एकस्स चरितं सेव्यो, नत्थि बाले सहायता ।
 एको चरे न च पापानि कयिरा,
 अप्पोत्सुक्को मातङ्गरञ्जे व नागो ॥११॥

एकस्य चरितं श्रेयो नास्ति बाले सहायता ।
 एकश्चरेत न च पापानि कुर्याद्
 अल्पोत्सुको मातङ्गोऽरण्य इव नागः ॥

एतन्नाम सुत्तं सुत्तं वत्तं सुत्तं सुत्तं ।
 सुत्तं वत्तं सुत्तं सुत्तं सुत्तं सुत्तं ।
 सुत्तं वत्तं सुत्तं सुत्तं सुत्तं सुत्तं ।
 एतन्नाम सुत्तं सुत्तं सुत्तं सुत्तं सुत्तं ।

अकेला विचरना उत्तम है, किन्तु मूढ़ की मित्रता अच्छी नहीं, मातंगराज हाथी की भाँति अनासक्त हो अकेला विचरे और पाप न करे ।

Better is to live alone. There is no fellowship with the foolish. You should live alone, doing no evil and with few desires, like an elephant in the forest.

P 48 (XIV, 16)

P 173 V 330

सुत्तं वत्तं सुत्तं सुत्तं सुत्तं सुत्तं ।
 एतन्नाम सुत्तं सुत्तं सुत्तं सुत्तं सुत्तं ।
 सुत्तं वत्तं सुत्तं सुत्तं सुत्तं सुत्तं ।
 सुत्तं वत्तं सुत्तं सुत्तं सुत्तं सुत्तं ।

अथमिह जातमिह सुखा सहाया,
तुष्टी सुखा या इतरीतरेन ।
पुञ्जं सुखं जीवितसङ्ख्यमिह,
सर्वस्व दुःखस्व सुखं प्रहानं ॥१२॥

हिमवत्-प्रवेश

मार

अर्थ जाते सुखाः सहायाः, तुष्टिः सुखायेतरेतरेण ।
पुण्यं सुखं जीवितसंख्ये
सर्वस्य दुःखस्य सुखं प्रहाणम् ॥

मि.व.ठक.रु.व.रु.व.म.सु.स.व।

कै.रु.व.क.मो.स.क.स.व.रे।

कै.म.मे.स.व.व.कै.व.व.रे।

कै.रु.व.क.व.स.व.क.स.व.रे।

¹कु.म.व.रु.व.स.व.स.व.कै.व.व.रे।

काम पड़ने पर मित्र सुखद (लगते हैं), परस्पर सन्तोष हो (यह भी / सुखद (वस्तु) है, जीवन के अन्त्य होने पर (किया हुआ) पुण्य सुखद (होता है)। सारे दुःखों का विनाश (= अर्हत् होना) (यह सबसे अधिक) सुखद है ।

It is a joy to have friends when need arises. It is a joy to have contentment with just whatever there is. It is a joy to have merit when life is at an end. It is a joy to abandon all sorrow.

¹ कु.म.व.रु.व.स.व.स.व.कै.व.व.रे।

सुखा मत्तेय्यता लोके, अथो पेत्तेय्यता सुखा ।

सुखा सामञ्जता लोके, अथो ब्रह्मञ्जता सुखा ॥१३॥

सुखा मात्रीयता लोकेऽथ पित्रीयता सुखा ।

सुखा श्रमणता लोकेऽथ ब्राह्मणता सुखा ॥

^१ २३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ।

^२ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ।

३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ।

^३ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ।

लोक में माता की सेवा सुखकर है, और पिता की सेवा (भी) सुखकर है, श्रमणभाव (= संन्यास) लोक में सुखकर है, और ब्राह्मणपन (= निष्पाप होना) सुखकर है ।

It is a joy in this world to serve one's mother, it is also a joy to serve one's father. Joyful in this world are the practicers of virtue(renunciation), joyful also are the sages.

P 116 (XXX, 22)

P 174 V 332

३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ।

३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ।

३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ।

३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ।

१ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ।

२ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ।

३ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ।

सुखं याव जरा शीलं, सुखा सदा पतिष्ठिता ।

सुखो पञ्चाय पटिलाभो, पापान् अकरणं सुखं ॥१॥

सुखं यावद् जरा शीलं सुखा श्रद्धा प्रतिष्ठिता ।

सुखः प्रज्ञायाः प्रतिलाभः पापानां अकरण सुखम् ॥

གས་བའི་བར་དུ་ཚལ་ཁྲིམས་བདེ། ।

དད་པ་བདུན་བར་གྱུར་བ་བདེ། ।

ཤེས་རབ་རབ་དུ་ཐོབ་པ་བདེ། ।

སྒྲིག་པ་ནམས་ནི་ས་བུས་བདེ། ।

ཁྱེད་པོ་དེ་སྡོམ་དེ།

མེད་ཅེས་གསུམ་བའོ།

बुढ़ापे तक आचार का पालन करना सुखकर है, और स्थिर श्रद्धा (सत्य में विश्वास) सुखकर है, प्रज्ञा का लाभ सुखकर है, और पापों का न करना सुखकर है ।

Joyful is virtue practiced till old age. Joyful is steadfast faith. Joyful is the acquisition of wisdom. Joyful is abstinence from evil.

P 116 (XXX, 21)

P 174 V 388

གས་ཁར་ཚལ་ཁྲིམས་ལྷན་བ་བདེ། ।

དད་ལ་རབ་དུ་གནས་བ་བདེ། ।

དོན་ལྷན་ཆོག་ལ་དགའ་བ་བདེ། ।

སྒྲིག་པ་དག་སྡིང་བ་བདེ། ।

२४—तण्हावगो

मनुजस्स पमत्तचारिनो,
तण्हा वड्ढति मालुवा विय ।
सो प्लवतो हुरा हुरं,
फलमिच्छं व वनस्मि वानरो ॥१॥

जेतवन

कपिलमञ्ज

मनुजस्स प्रमत्तचारिणः तृष्णा बद्धते मालुवेव ।
स प्लवतेऽहरहः फलमिच्छन् इव वने वानरः ॥

कुचुत्तेन क्वचुत्ते । ।

वणं भेदं सुदं वदे सै क्वससं य । ।

अस्मि सैव वदे क्व सुदं वदयेय । ।

वणसं क्व सुदं वदयेय अस्मि वदे क्व । ।

दे सै वदे क्व सुदं वदयेय । ।

प्रमत्त होकर आचरण करनेवाले मनुष्य की तृष्णा मालुवी (लता) की भाँति बढ़ती है, वन में वानर की भाँति फल की इच्छा करते दिनों दिन वह भटकता रहता है ।

The craving of those who live carelessly grows like a creeper. They rush from day to day like a monkey searching for fruit in the forest.

1 वदे क्व दे सै वदे क्व अस्मि वदयेय ।

यं एसा सहते जम्मी, तण्हा लोके विसत्तिका ।
 सोका तस्स पवडुन्ति, अभिवट्ठं व बीरणं ॥२१॥

यं एसा साहयति जन्मिनी तृष्णा लोके विषात्मिका ।
 शोकास्तस्य प्रबद्धन्तेऽभिवर्द्धमानं इव बीरणम् ॥

दुग्धा-मौ-वदग्धा-श्रुत-स्य-व-ददिसा ।
 ददिसा-देव-ददिस-व-ददिस-व ।
 ददिस-ददिस-ददिस-व-ददिस-व-ददिस ।
 दे-व-ददिस-व-ददिस-व-ददिस-व ।

यह (बराबर) जनमते रहनेवालो विषहणो तृष्णा जिसको पकड़नी है,
 बर्द्धनशील बीरण (= चटाई बनाने का एक तृण) की भाँति उसके शोक बढ़ते हैं ।

Due to craving the chief of poisons one is oppressed by
 the varied afflictions of this world. Due to it one's sorrows
 increase like the abounding birana grass.

P 13 (II, 10)

P 175 V 335

दुग्धा-मौ-वदग्धा-श्रुत-स्य-व-ददिसा ।
 ददिस-व-ददिस-व-ददिस-व-ददिस-व ।
 दे-व-ददिस-व-ददिस-व-ददिस-व ।
 दुग्धा-मौ-वदग्धा-श्रुत-स्य-व-ददिसा ।

यो चेत्तं सहते जग्मिं, तण्हं लोके दुरच्चयं ।

शोका तस्मा पपतन्ति, उदबिन्दु व पोक्खरा ॥३॥

यण्चैनां साहयति जग्मिनिं तृष्णा लोके दुरत्ययाम् ।

शोकाः तस्मात् प्रपतन्त्युदबिन्दुरिव पुष्करात् ॥

यण्चैनां साहयति जग्मिनिं तृष्णा लोके दुरत्ययाम् ।

शोकाः तस्मात् प्रपतन्त्युदबिन्दुरिव पुष्करात् ॥

यण्चैनां साहयति जग्मिनिं तृष्णा लोके दुरत्ययाम् ।

शोकाः तस्मात् प्रपतन्त्युदबिन्दुरिव पुष्करात् ॥

इस बराबर जनमते नहनेवाली, दुस्तयाज्य तृष्णा को जो लोक में परास्त करता है, उससे शोक (वैसे ही) गिर जाते हैं, जैसे कमल (-पत्र) से जल का बिन्दु ।

Whoever in the world overcomes this unruly vicious craving, sorrows fall away from him, like water-drops from a lotus-leaf.

P 13 (III, 11)

P 176 V 336

यण्चैनां साहयति जग्मिनिं तृष्णा लोके दुरत्ययाम् ।

शोकाः तस्मात् प्रपतन्त्युदबिन्दुरिव पुष्करात् ॥

यण्चैनां साहयति जग्मिनिं तृष्णा लोके दुरत्ययाम् ।

शोकाः तस्मात् प्रपतन्त्युदबिन्दुरिव पुष्करात् ॥

तं वो वदामि भद्रं वो, यावन्तेत्य समागता ।
 तण्हाय मूलं खणथ, उसीरत्यो व बीरणं ।
 मा वो नलं व सोतो व, मारोभञ्जि पुनप्पुनं ॥४॥०

तद् वो वदामि भद्रं वो यावन्त इह समागताः ।
 तृष्णाया मूलं खनतोशीरार्थो व बीरणम् ॥४॥०

वदन् वीर्यं त्रिदशं त्रिदशं वदन् ॥ १
 वदन् त्रिदशं त्रिदशं वदन् ॥ २
 त्रिदशं त्रिदशं त्रिदशं वदन् ॥ ३
 त्रिदशं त्रिदशं त्रिदशं वदन् ॥ ४

इसलिए तुम्हें कहता हूँ, जितने यहाँ आये हो, तुम्हारा सबका मंगल हो,
 जैसे खस के लिए उषीर को खोदते हैं, वैसे ही तुम तृष्णा की जड़ को खोदो ।

I give you this good advice. All of you should dig up
 the root of craving as one digs up the birana grass to find the
 usira root. Do not let Mara crush you again and again, like
 the flood which crushes the reeds on the river bank.

P 13 (III, 12)

P 176 V 387

देवैः त्रिदशं त्रिदशं वदन् ॥ १
 त्रिदशं त्रिदशं त्रिदशं वदन् ॥ २
 त्रिदशं त्रिदशं त्रिदशं वदन् ॥ ३
 त्रिदशं त्रिदशं त्रिदशं वदन् ॥ ४

यथा पि मूले अनुपद्दे दहे,
छिन्नो पि रुक्खो पुनरेव रुहति ।
एवं पि तण्हानुसये अनूहते,
निब्बत्तती दुक्खमिदं पुनप्पुनं ॥५॥

जैतवन

शूष सूकर-पौतिक

तथाऽपि मूलेऽनुपद्रवे दहेछिन्नोऽपि वृक्षः पुनरेव रोहति ।
एवमपि तृष्णाऽनशयेऽनिहते निर्वतते दुःखमिदं पुनः पुनः ॥

दवेर'क'ल्लो'क'वा'वउर'वर'गु'र'क'अ'द' । ॥ १ ॥

उ'वा'वउर'वर'अ'उ'अ'क'ल्ल'र'अ'द'ल्ले ॥ ॥ २ ॥

दे'अ'ल्ल'ल्लो'क'अ'उ'अ'वर'अ'अ'अ'अ' ॥ ॥ ३ ॥

अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ' ॥ ॥ ४ ॥

जैसे जड़ के दूढ़ और न कटी होने पर कटा हुआ वृक्ष भी फिर उग आता है, इसी प्रकार तृष्णारूपी अनुशय (=मल) के न नष्ट होने पर, यह दुःख फिर-फिर पैदा होता है ।

As a tree, even though it has been cut down, grows again, if its root is firm and uninjured, even so, if the latent propensities of craving are not destroyed, then this suffering recommences again and again.

P 14 (III, 18)

P 177 V 338

दवेर'क'ल्लो'क'अ'उ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ' ॥ ॥ १ ॥

वउर'गु'र'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ' ॥ ॥ २ ॥

दे'अ'ल्ल'ल्लो'क'अ'उ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ' ॥ ॥ ३ ॥

अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ' ॥ ॥ ४ ॥

यस्स छत्तिंसति स्रोता, मनापसवना भुसा ।

बाहा वहन्ति दुद्दिट्ठिं सङ्कप्पा रागनिस्सिता ।.६।।

यस्य षट्त्रिंशत् स्रोतांसि मनापसवणानि भूयासुः ।

बाहा वहन्ति दुदृष्टिं संकल्पा रागनिःसृता ॥

माद'मीस'कु'कु'स'दु'मा'मीस' । ।

१'यी'द'कै'द'द'द'व'व'द'द'द'द' । ।

कु'द'क'गु'द'द'द'व'द' । ।

कु'मा'स'कु'स'व'कु'द'मीस'द'द' । ।

जिसके, छत्तीस स्रोत (अखि, कान, नाक, जीभ, काया, मन, रूप, गन्ध, शब्द, रस, स्पर्श, धर्म, अखि का विज्ञान आदि) मन को अच्छी लगनेवाली (चीजों) को ही लानेवाले हों, (उसके लिए) रागलिप्त संकल्प रूपी बाहन बुरी धारणाओं को बहन करते हैं ।

Whoever's mind is unsettled by desire due to the thirty-six streams will be carried off by the torrent of bad thoughts and great attachment. (The thirty-six streams are the six organs of sense and the six objects of sense in relation to a desire for sensual pleasures, a desire for existence, and a desire for prosperity).

P 125 (XXXI, 30)

P 177 V 339

गु'द'द'व'व'द'द'द'द'व'यी'स' । ।

कु'द'क'सु'स'कु'कु'द'द'व'मी' । ।

कु'व'द'कु'कु'कै'मा'यी'स' । ।

यी'द'गु'कु'कु'स'स'व'द'द'व' । ।

1 यी'द'कै'स'व'द'द'द'व'व'मा'यी' ।

स्रवन्ति स्रग्बधि सोता, लता उन्निभज्ज तिष्ठति ।
तं च दिस्वा लतं जातं, मूलं पञ्चाय छिन्दथ ॥७॥

स्रवन्ति स्रवतः स्रोतांसि लता उन्निभज्ज तिष्ठति ।
तं च दिष्ट्वा लतं जातं, मूलं प्रज्ञया छिन्दत ॥

कुर्वेत्स्रवन्ति स्रोतांसि लता उन्निभज्ज तिष्ठति ।
तं च दिष्ट्वा लतं जातं, मूलं प्रज्ञया छिन्दत ॥
स्रवन्ति स्रवतः स्रोतांसि लता उन्निभज्ज तिष्ठति ।
तं च दिष्ट्वा लतं जातं, मूलं प्रज्ञया छिन्दत ॥

(यह) स्रोत चारों ओर बहते हैं, (जिनके कारण) (तृष्णा रूपी) लता
अंकुरित रहती है; उस उत्पन्न हुई लता को जानकर, प्रज्ञा से (उसकी)
जड़ को काटे ।

The streams flow everywhere; the creeper (of desire)
keeps on springing up. If you see that the creeper has sprung
up, cut its root by means of wisdom.

तसिणाय पुरवखता पजा,
परिसप्पन्ति ससो व बन्धितो ।
संयोजनसङ्गसत्तका
दुक्खमुपेन्ति पुनप्पुनं चिराय । ६॥

तृष्णया पुरस्कृताः प्रजाः रिसर्पन्ति शश इव बद्धः ।
संयोजनसंगसत्तका दुःखमुपयन्ति पुनः पुनः चिराय ॥

स्रोदं वसं दह्मिदं वरं भुवो ऋमसा ।
दं वदं छेदं यस्स वैदं वल्लिदं दमोदं ।
गुणं दुस्सुदं यं कण्ठसं घेणसं ठव ।
यदं यदं हृणं वल्लुयं य्मुदं दं सुदं ।

तृष्णा के पीछे, पड़े प्राणी, बंधे खरगोश की भाँति चक्कर काटते हैं,
संयोजनो (मन के बन्धनों) में फँसे (जन) पुनः पुनः चिरकाल तक दुःख को
पाते हैं ।

Being entwined in craving revolve like harestried in a trap.
Held fast by worldly attachments, they experience protracted
sorrow again and again.

P 12 (III, 6)

P 179 V 342

सोदं वसं दह्मिदं वरं भुवो ऋमसा ।
स्रोदं वदं छेदं यस्स वैदं वल्लिदं दमोदं ।
स्रोदं वसु स्रोदं वं ऋमसा गुणं कण्ठसं घेणसं ठव ।
गुणं दं दं वदं यदं यस्स सुदं वल्लुयं य्मुदं दं सुदं ।

तसिणाय पुरस्वता पजा,
 परिसप्पन्ति ससो व बन्धितो ।
 तस्मा तसिणं विनोदये,
 आकल्लन्त विरागमत्तनो ॥१०॥

तृष्णया पुरष्कृताः प्रजाः
 परिसर्पन्ति शश इव बद्धः ।
 तस्मात् तृष्णां विनोदयेद् ।
 भिक्षुराकांक्षी विरागमात्मनः ॥

श्लेः'वस'अस्मिन्'वदि'क्षे'वो'कसस' ।
 दि'वो'क्षे'यस'अस्मिन्'वदि'क्षे'वो'कसस' ।
 'देस'अ'वद'व'अस्मिन्'वदि'क्षे'वो'कसस' ।
 द'वो'क्षे'यस'अस्मिन्'वदि'क्षे'वो'कसस' ।

तृष्णा के पीछे पड़े प्राणी बंधे खरगोश की भाँति चक्कर काटते हैं इसलिए भिक्षु को चाहिए कि वह अपने वैराग्य की इच्छा रखे, तृष्णा को दूर करे ।

Beings entwined in craving revolve like hare-tied in a trap
 Therefore a Bhikshu who wishes himself to be free from desire
 (Nirvana), should discard craving.

१ 'देस'अ'वद'व'अस्मिन्'वदि'क्षे'वो'कसस'

यो निब्वनथो वनाधिमुक्तो,
 वनमुक्तो वनमेव धावति ।
 तं पुग्गलमेथ पस्सथ,
 मुक्तो बन्धनमेव धावति ॥११॥

वेणुवन

विभन्तक (मिथु)

यो निर्वाणार्थी वनाऽधिमुक्तो
 वनमुक्तो वनमेव धावति ।
 तं पुद्गलमेव पश्यत मुक्तो
 बन्धनमेव धावति ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सुन्दरः कश्चिन्मनसः कश्चिन्मनसः ॥
 सुन्दरः कश्चिन्मनसः कश्चिन्मनसः ॥
 सुन्दरः कश्चिन्मनसः कश्चिन्मनसः ॥
 सुन्दरः कश्चिन्मनसः कश्चिन्मनसः ॥

जो निर्वाण की इच्छा वाला (पुरुष) वन (तृष्णा) से मुक्त हो, वन से सुमुक्त हो, फिर वन (= तृष्णा) ही की ओर दौड़ता है, उस व्यक्ति को (वैसे ही) जानो जैसे कोई (बन्धन से) मुक्त (पुरुष) फिर बन्धन ही की ओर दौड़े ।

Whoever desiring to pass from sorrow (to gain Nirvana) leaves the forest (of the afflictions like craving) and then runs back to that same forest was freed only to rush back to bondage. Look at that man !

P 95 (XXVII, 26)

P 180 V 344

सुन्दरः कश्चिन्मनसः कश्चिन्मनसः ॥
 सुन्दरः कश्चिन्मनसः कश्चिन्मनसः ॥
 सुन्दरः कश्चिन्मनसः कश्चिन्मनसः ॥
 सुन्दरः कश्चिन्मनसः कश्चिन्मनसः ॥

1 सुन्दरः कश्चिन्मनसः कश्चिन्मनसः कश्चिन्मनसः ॥

न तं द०हं बन्धनमाहु धीरा,
यदायसं दारुजं बब्वजं च ।
सारत्तरत्ता मणिकुण्डलेषु,
पुत्तेसु दारेसु च या अपेक्खा ॥१२॥

जैतवन

बन्धनागार

न तद् दृढं बन्धनमाहुर्धीरा यद् आयसं दारुजं पर्वजं च ।
सारवद्-रक्ता मणिकुण्डलेषु पुत्रेषु दारेषु च याऽपेक्षा ॥

मु० सु० ऋ० सु० । ।

के० सु० म० सु० गे० सु० द० ह० म० वा । ।

हृ० स० व० क० ग० स० व० द० ग० के० सु० व० हृ० । ।

हृ० ग० स० द० म० द० द० म० व० म० व० म० व० म० व० । ।

म० स० क० म० स० सु० व० म० म० क० म० व० म० सु० म० म० म० । ।

(यह) जो लोहे लकड़ी या रस्सी का बन्धन है, उसे बुद्धिमान (जन) दृढ बन्धन नहीं कहते, (वस्तुतः दृढ बन्धन है जो वह) धन (=सारवत्) में रक्त होना, या मणि, कुण्डल, पुत्र स्त्री में इच्छा का होना है ।

It is not a strong fetter, say the wise, that is made of iron, wood or hemp. Far greater a bond is the longing for jewels and ornaments, children and wives.

P 8 (II, 5)

P 180 V 345

के० सु० क० क० सु० द० सु० म० वा । ।

म० स० सु० क० ग० स० म० म० म० म० म० म० म० म० । ।

हृ० ग० स० म० म० म० म० म० म० म० म० म० म० म० । ।

के० सु० म० म० म० म० म० म० म० म० म० म० म० । ।

एतं दृढं बन्धनमाहु धीरा,
 ओहारिनं सिथिलं दुष्प्रमुखं ।
 एतं पि छेत्वा न परिव्रजन्ति,
 अनपेक्षितो कामसुखं प्रहाय ॥१३॥

एतद् दृढं बन्धनमाहुर्धीरा
 अपहारि सिथिलं दुष्प्रमोचम् ।
 एतदपि छित्त्वा परिव्रजन्त्यन-
 पेक्षितः कामसुखं प्रहाय ॥

ॐ नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः । १
 नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः । १
 नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः । १
 नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः । १

धीर पुरुष इसी को दृढ़ बन्धन, अपहारक, सिथिल और दुस्तयाज्य कहते हैं। (वह) अपेक्षा रहित हो, तथा काम-सुखों को छोड़, इस (दृढ़) बन्धन को छिन्नकर, प्रव्रजित होते हैं ।

That fetter is strong, say the wise for it binds easily and is hard to loosen. This too they cut off, and, renouncing the world, they abandon without regret the pleasures of worldly desires.

P 8 (II, 6)

P 181 V 346

ॐ नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः । १
 नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः । १
 नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः । १
 नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः । १

ये रागरक्तानुपतन्ति स्रोत,
 सयंकतं मक्कटको व जालं ।
 एतं पि छेत्त्वान व्रजन्ति धीरा,
 अनपेक्षिनो सब्बदुक्खं पहाय ॥१४॥

राजगृह (वेणुवन)

सेमा (बिम्बिसार-महिषी)

ये रागरक्ता अनुपतन्ति स्रोतः
 स्वयंकृत मर्कटक इव जालम् ।
 एतदपि छित्त्वा व्रजन्ति धीरा
 अनपेक्षिणः सर्वदुःखं प्रहाय ॥

मद'दण'क'स'द'द'वे'स'स'स'स'स'स'स' ।
 स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स' ।
 स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स' ।
 स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स' ।

जो राग में रक्त है, वह जैसे मकड़ी अपने बनाये जाल में पड़ती है,
 (वैसे ही) अपने बनाए, स्रोत में पड़ते हैं, धीर (पुरुष) इस (स्रोत) को भी
 छेदकर सारे दुःखों को छोड़ आकांक्षा-रहित हो चल देते हैं ।

Those who fall into the streams of attachment and craving
 are bound like spiders in the nets they have made for themselves.
 The wise cut off this craving and renouncing the world, they
 abandon all sorrows without regret.

मुञ्च पुरे मुञ्च पच्छतो,
मज्झे मुञ्च भवस्स पारमू ।
सब्बत्थ विमुत्तमानसो,
न पुनं जातिजरं उपेहिस्सि ॥१५॥

राजगृह (वेणुवन)

उग्रसेन (श्रेष्ठी)

मुंच पुरो मुंच पश्चात् मध्ये मुंच भवस्य पारगः ।
सर्वत्र विमुक्तमानसो न पुनः जातिजरे उपैषि ॥

अनुक्कसं वण्णं त्थिं कुवन्कसं वण्णं ।
द्वुसं कसं वण्णं दे स्येदं व वक्कं ।
गुक्कसं कसं वरं म्मोयं वदिं यीदं ।
सुक्कं क्कं सुक्कं क्कं क्कं क्कं क्कं ।

आगे पीछे और मध्य की (सभी वस्तुओं को) त्याग दो, (और उन्हें छोड़)
भव (सागर) के पार हो जाओ, जिसका मन चारों ओर से मुक्त हो गया,
(वह) फिर जन्म और जरा को प्राप्त नहीं होता ।

Let go the future, let go the past, let go the present
(literally front, back and middle) and cross over the realm of
conditioned existence. With your mind totally freed you will
not again undergo birth and decay.

P 112 (XXIX. 60)

P 182 V 348

सुक्कं वुसं सुक्कं क्कं वुसं त्थिं ।
द्वुसं वुसं सुक्कं वदिं व वक्कं ।
क्कं व गुक्कं व सक्कं व म्मोयं व ।
सुक्कं क्कं सुक्कं क्कं क्कं क्कं क्कं ।

वितर्कप्रमथितस्स जन्तुनो,
 तिब्बरागस्स सुभानुपस्सिनो ।
 भिय्यो तण्हा पवड्ढति,
 एस खो दढ्हं करोति बन्धनं ॥१६॥

जैतवन

(चुल्ल) धनुस्सगह षण्डिक

वितर्क-प्रमथितस्य जन्तोः
 तीव्ररागस्य शुभानुदर्शिनः ।
 भूयः तृष्णः प्रबद्धते एषखलु दृढं करोति बन्धनम् ॥

सुखं सुखं चरं सुखं चरं सुखं चरं सुखं चरं ।
 सुखं चरं सुखं चरं सुखं चरं सुखं चरं ।
 सुखं चरं सुखं चरं सुखं चरं सुखं चरं ।
 सुखं चरं सुखं चरं सुखं चरं सुखं चरं ।

जो प्राणी सन्देह से मथित, तीव्र राग से युक्त, सुन्दर ही सुन्दर को देखने-
 वाला है, उसकी तृष्णा और भी अधिक बढ़ती है, वह (अपने लिए) और भी
 दृढ़ बन्धन तैयार करता है ।

For the person who is agitated by thoughts, who is of
 strong passions and who seeks after the pleasurable, craving
 steadily grows. Indeed, he makes the fetters strong.

वितक्कूपसमे च यो रतो,
 असुभं भावयते सदा सतो ।
 एस खो व्यन्ति काहिति,
 एस छेच्छति मारबन्धनं ॥१७

वितर्कपशमे च यो रतोऽशुभं भावयते सदा स्मृतः ।
 एष खलु व्यन्तीकरिष्यति एष छेत्स्यति मारबन्धनम् ॥

एतं वै म' क्ख' ण' उ' व' र' वै म' द' म' । ।
 अ' सु' म' व' स' म' वि' र' म' ह' उ' म' व' र' ह' । ।
 दे' क' म' स' व' स' म' उ' र' म' उ' र' वै म' ह' । ।
 दे' क' म' स' म' उ' र' म' उ' र' म' उ' र' म' उ' र' । ।

सन्देह के शान्त करने में जो रत है, सचेत रह (जो) अशुभ (दुनिया के अन्धेरे पहलू) की भी सदा भावना करता है । वह मार के बन्धन को छिन्न करेगा, विनश करेगा ।

He who delights in quieting his thoughts, who meditates on what is unpleasant, and who is ever mindful, will make an end of craving. He cut the fetters of Mara.

निवृज्जतो असन्तासी, वीततण्हो अनज्जणो ।
अच्छिन्दि भवसल्लानि, अन्तिमोयं समुत्सयो ॥ १८ ॥

चेतवन

मार

निष्ठांगतोऽसंत्रासी वीततृष्णोऽनंगणः ।
उत्सृज्य भवशल्यानि, अन्तिमोऽयं समुद्ययः ॥

सुदुःखमश्रुदश्व

देसं वरं सौंदर्यं क्षणं च मेव ।
श्रेयं च श्रुदश्वं मे सुखं ददति च ।
श्रेयं च मे सुखं ददति मे सुखं च ।
मदं मे सुखं च मे सुखं च मे सुखं ।

जिसके (पार-पुण्य) समाप्त हो गये; जो त्रास-उत्पादक नहीं है, जो तृष्णारहित और मलरहित है, वह भव के शल्यों को उखाड़ेगा, यह उसका अन्तिम देह है ।

He who has fully gone (from all limitation), he who is fearless, devoid of craving, without faults, and who has cast out the thorns of conditioned existence, is in his final birth.

सब्बदानं धम्मदानं जिनाति,
 सब्बरसं धम्मरसो जिनाति ।
 सब्बरतिं धम्मरति जिनाति,
 तण्हक्खयो सब्बदुक्खं जिनाति ॥२१॥

जेतवन

सक्क देवराज

सर्वदानं धर्मदानं जयति सर्वरसं धर्मरसो जयति ।
 सर्वरतिं धर्मरतिर्जयति तृष्णाक्षय सर्वदुःखं जयति ॥

शुभं भूतं कथं भूतं । ।

कैसं गुं सुं वं सुं वं गुं वं सुं । ।

कैसं गुं रं रं रं सुं वं गुं वं सुं । ।

कैसं गुं दं दं वं दं दं वं गुं वं सुं । ।

सुं वं वं वं सुं वं सुं वं सुं । ।

धर्म का दान सारे दानों से बढ़कर है, धर्मरस सारे रसों से प्रबल है, धर्म में रति सब रतियों से बढ़कर है, तृष्णा का विनाश सारे दुःखों को जीत लेता है ।

The gift of the Dharma excels all gifts. The flavour of the Dharma excels all flavours. The delight of the Dharma excels all delights. The destruction of craving conquers all sorrows.

P 91 (XXVI, 29)

P 185 V 354

सुं वं गुं सुं वं सुं वं सुं । ।

दं दं गुं सुं वं दं दं वं सुं । ।

सुं वं गुं सुं वं सुं वं सुं । ।

वं वं सुं वं वं वं सुं । ।

हनन्ति भोगा दुम्मेधं, नो च पारगवेसिनो ।

भोगतृणाय दुम्मेधो, हन्ति अञ्जेव अत्तनं ॥२२॥

जेतवन

(अपुत्रक श्रेष्ठी)

हनन्ति भोगा दुर्मेधसं न चेत् परागवेषणः ।

भोगतृणया दुर्मेधा हन्त्यन्य इवात्मनः ॥

शुभं सुदं कथं नृपे । ।

शुभं सुदं कथं नृपे । ।

शुभं सुदं कथं नृपे । ।

शुभं सुदं कथं नृपे । ।

शुभं सुदं कथं नृपे । ।

(संसार को) पार करने की कोशिश न करनेवाले दुर्बुद्धि (पुरुष) को भोग नष्ट करते हैं, भोगों की तृष्णा में पड़कर (वह) दुर्बुद्धि पराये की भाँति अपने ही को हनन करता है ।

Not searching for a way out of Samsara those of poor intelligence are destroyed by riches. By their craving for riches those of poor intellect are killed as if by another.

तिणदोसानि खेत्तानि, रागदोसा अयं प्रजा ।

तस्मा हि वीतरागेषु, दिन्नं होति महप्फलं ॥२३॥

पाण्डुकम्बलशिला (देवलोक)

अङ्कुर

तृणदोषाणि क्षेत्राणि रागदोषेयं प्रजा ।

तस्माद्धि वीतरागेषु दत्तं भवति महाफलम् ॥

ཡ་བ་དཀར་པོ་ལྟ་བུ་རྩི་དོ་ཡེ་བ་དུ་འདྲེ། ।

རྩ་རྒྱམས་ཞིང་གི་སྒྲིན་ཡིན་དེ། ।

འདྲོད་ཆགས་སྒྲེ་བོ་འདི་ཡི་སྒྲིན། ।

དེ་སྒྲིན་འདྲོད་ཆགས་བྲལ་བ་ལ། ।

སྒྲིན་བ་འབྲས་བྱ་ཆེན་པོ་འབྱུང་། ।

खेतों का दोष तृण है, इस प्रजा (= मनुष्यों) का दोष राग है, इसलिये (दान) वीतराग (पुरुष) को देने में महाफलप्रद होता है ।

Weeds are the blemish of the fields, and desire is the blemish of mankind. Hence what is given to those freed from desire yields abundant fruit.

P 55 (XVI, 15)

P 186 V 356

ཞིང་གི་སྒྲིན་ནི་རྩ་ཡིན་ཏུར། ।

སྒྲེ་དགུ་འདི་ལ་འདྲོད་ཆགས་སྒྲིན། ।

དེ་བས་འདྲོད་ཆགས་བྲལ་རྒྱམས་ལ། ।

སྒྲིན་ནི་འབྲས་བྱ་ཆེན་པོར་འབྱུང་། ।

तिणदोसानि खेनानि, दोसदोसा अयं पजा ।
तस्मा हि वीतदोसेसु, दिन्नं होति महप्फलं ॥२४॥

तृणदोषाणि क्षेत्राणि दूषदोषेयं प्रजा ।
तस्माद्दि वीतदूषु दत्तं भवति महाफलम् ॥

कुं कससं जेनं मी सुक्कं यी क रं । ।
वे ससं सुक्कं यो रं यी सुक्कं । ।
रं सुक्कं वे ससं सुक्कं यो रं । ।
सुक्कं यो रं सुक्कं सुक्कं यो रं । ।

खेतों का दोष तृण है, इस प्रजा का दोष द्वेष है; इसलिए वीतद्वेष =
(द्वेषरहित) को दान देने में महाफल होता है ।

Weeds are the blemish of the fields, and hatred is the blemish of mankind. Hence what is given to those freed from hatred yields abundant fruit.

P 55 (XVI, 16)

P 186 V 357

जेनं मी सुक्कं यी क रं । ।
सुक्कं यो रं यी सुक्कं । ।
रं सुक्कं वे ससं सुक्कं यो रं । ।
सुक्कं यो रं सुक्कं सुक्कं यो रं । ।

तिणदोसानि खेत्तानि, मोहदोसा अयं पजा ।
तस्मा हि बीतमोहेसु, दिन्नं होति महप्फलं ॥२५॥

तृणदोषाणि क्षेत्राणि मोहदोषेयं प्रजा ।
तस्माद्दि बीतमोहेषु दत्तं भवति महाफलम् ॥

तृणदोषाणि क्षेत्राणि मोहदोषेयं प्रजा ।
तस्माद्दि बीतमोहेषु दत्तं भवति महाफलम् ॥
तृणदोषाणि क्षेत्राणि मोहदोषेयं प्रजा ।
तस्माद्दि बीतमोहेषु दत्तं भवति महाफलम् ॥

खेतों का दोष तृण है, इस प्रजा का दोष मोह है इसलिए बीतमोह
(= मोहरहित) को दान देने में महाफल होता है ।

Weeds are the blemish of the fields and delusion is the
blemish of mankind. Hence what is given to those freed from
delusion yields abundant fruit.

P 55 (XVI, 17)

P 187 V 358

तृणदोषाणि क्षेत्राणि मोहदोषेयं प्रजा ।
तस्माद्दि बीतमोहेषु दत्तं भवति महाफलम् ॥
तृणदोषाणि क्षेत्राणि मोहदोषेयं प्रजा ।
तस्माद्दि बीतमोहेषु दत्तं भवति महाफलम् ॥

तिणदोसानि खेत्तानि, इच्छादोसा अयं पजा ।
तस्मा हि विगतिच्छेसु, दिन्नं होति महप्फलं ॥२६॥

तिणदोसानि खेत्तानि, तण्हादोसा अयं पजा ।
तस्मा हि वीततण्हेसु, दिन्नं होति महप्फलं ॥

तृणदोषाणि क्षेत्राणि, इच्छादोषेयं प्रजा ।
तस्माद्वि विगतेच्छेषु दत्तं भवति महाफलम् ॥

हुं क्खसंखेदं पी सुं क्खं पी क्खं ॥ १

सुं क्खं वं सुं वं रं पी सुं क्खं ॥ १

देव सुं सुं वं सुं वं सुं वं ॥ १

सुं क्खं वं सुं वं सुं क्खं वं सुं वं ॥ १

सुं क्खं वं सुं क्खं ॥

मेव सुं वं सुं वं ॥ १

खेतों का दोष तृण है, इस प्रजा का दोष इच्छा है, इसलिए विगतेच्छा
(=इच्छारहित) को दान देने में महाफल होता है ।

Weeds are the blemish of the fields, and craving is the blemish of mankind. Hence what is given to those freed from craving yields abundant fruit.

P 55 (XVI, 20)

P 187 V 359

खेदं पी सुं क्खं क्खं सुं क्खं सुं क्खं ॥ १

सुं क्खं सुं क्खं सुं क्खं सुं क्खं ॥ १

देव सुं सुं सुं सुं सुं सुं सुं सुं ॥ १

सुं क्खं सुं क्खं सुं क्खं सुं क्खं ॥ १

२५—भिक्षुवर्गो

वक्खुना संवरो साधु, साधु सोतेन संवरो ।
घानेन संवरो साधु, साधु जिह्वाय संवरो ॥१॥

जेतवन

पाँच भिक्षु

चक्षुषा संवरः साधुः, साधुः श्रोत्रेण संवरः ।
घ्राणेन संवरः साधुः, साधुः जिह्वाय संवरः ॥

अथ उवाच ॥

सिक्खिं सुमं वदंति स वदंति ।
कं वदंति स वदंति स वदंति ।
सुं सुं सुं सुं सुं सुं सुं सुं ।
सुं सुं सुं सुं सुं सुं सुं सुं ।

अंख का संवर (=संयम) ठीक है, ठीक है कान का संवर, घ्राण
(=नाक) संवर ठीक है, ठीक है जीभ का संवर ।

Good is restraint of the eye, good is restraint of the ear,
good is restraint of the nose, and good is restraint of the tongue.

कायेन संवरो साधु, साधु वाचाय संवरो ।
 मनसा संवरो साधु, साधु सब्बत्थ संवरो ।
 सब्बत्थ संवृतो भिक्खु, सब्बदुक्खा पमुच्चति ॥२॥

कायेन संवरः साधुः साधुः वाचा संवरः ।
 मनसा संवरः साधुः साधुः सर्वत्र संवरः ।
 सर्वत्र संवृतो भिक्षुः सर्वदुःखात् प्रमुच्यते ॥

सुखं कैः सुखं च वेणुसं वंशे ।
 मणिकैः सुखं च वेणुसं वंशे ।
 यौनिकैः सुखं च वेणुसं वंशे ।
 वससं च नृपैः सुखं च वेणुसं ।
 वससं च नृपैः सुखं च नृपैः सुखं ।
 सुखं च नृपैः सुखं च नृपैः सुखं ।

काया का संवर (=संयम) ठीक है, ठीक है वचन का संवर; मन का संवर ठीक है, ठीक है सर्वत्र (इन्द्रियों) का संवर, सर्वत्र संवर-युक्त भिक्षु सारे दुःखों से छूट जाता है ।

Good is restraint in body, good is restraint in speech, good is restraint in mind, good is restraint in all things. The monk restrained in all things is freed from all sorrow.

हृत्थसंयतो पादसंयतो,
 वाचासंयतो संयतुत्तमो ।
 अज्ज्ञत्तरतो समाहितो,
 एको सन्तुसितो तमाहु भिक्खुं ॥३॥

जैतवन

हंसवातक (भिक्षु)

हृत्थसंयतः पादसंयतो वाचा संयतः संयतोत्तमः ।
 अध्यात्मरतः समाहित एकः संतुष्टस्तमाहुर्भिक्षुम् ॥

अणं वं श्लेष्मं ज्ञेयं कणं वं अणं दणं श्लेष्मं ।
 दणं कं अणं दणं श्लेष्मं वं श्लेष्मं वं दं सत्तणं ।
 कणं वं वं दणं ज्ञेयं दणं वं ज्ञेयं सत्तणं वं ।
 वं दणं वं कणं ज्ञेयं वं श्लेष्मं वं वं वं वं वं ।

जिसके हाथ, पैर और वचन में संयम है (जो) उत्तम संयमी है, जो
 घट के भीतर (= अध्यात्म) रत, समाधियुक्त, अकेला (और) सन्तुष्ट है, उसे
 भिक्षु कहते हैं ।

He who is controlled in foot, in speech, and in the most
 important to control (mind) he who delights in meditation
 and is composed, who is solitary and contented, that man is
 called a Bhikshu.

P 132 (XXXII, 8)

P 189 V 362

अणं वं अणं वं वं वं कणं वं अणं वं वं वं ज्ञेयं ।
 कणं वं वं अणं वं वं वं दणं वं अणं वं वं वं ज्ञेयं ।
 वं दणं वं कणं वं वं वं वं वं वं वं वं वं दणं ।
 कणं वं वं वं वं वं वं वं वं वं वं वं वं वं वं ।

यो मुखसंयतो भिक्खु, मन्तभाणी अनुद्धतो ।
अत्थं घम्मं च दीपेति, मधुरं तस्स भासितं ॥४॥

उत्तराखण्ड

कोकालिय

यो मुखसंयतो मिक्षुर्मंत्रभाणी अनुदतः ।
अर्थं धर्मं च दीपयति मधुरं तस्य भाषितम् ॥

གང་ཞིག་ཁ་ནི་ཕྱི་ཕྱོད་ཅིང་།

རན་པར་སྒྲིང་རྟེན་པ་མེད། །

དོན་དང་ཆོས་ནི་གསལ་བྱེད་པ།

དགེ་ལྷན་དེ་ཡི་ཆོག་སྟེན་འགྲུས།

जो मुख में संयम रखता है, मनन करके बोलता है, उद्धत नहीं है, अर्थ और धर्म को प्रगट करता है, उसका भाषण मधुर होता है ।

The Bhikshu who keeps control of his tongue, says only what is needed without pride and makes both the meaning and the Dharma clear, his words are sweet.

धम्मारामो धम्मरतो, धम्मं अनुविचिन्तयं ।

धम्मं अनुस्सरं भिक्खु, सद्धम्मा न परिहायति ॥५॥

अेतवन्न

धम्माराम (धेर)

धम्मारामो धम्मरतो धर्मं अनुविचिन्तयन् ।

धर्ममनुस्मरन् भिक्षुः सद्धर्मान् परिहीयते ॥

कॅसं'ल'ण'क'स'पै'कॅसं'ल'द'ण'द । ।

कॅसं'ल'हॅस'सु'सॅस'स'पु'द'व । ।

द'णो'सु'कॅसं'कॅ'हॅस'द'क'व । ।

द'स'व'द'कॅसं'ल'स'क'स'स'स'द'गु'द । ।

धर्म में रमण करनेवाला, धर्म में रत, धर्म का चिन्तन करते, धर्म का अनुस्मरण करते भिक्षु सच्चे धर्म से च्युत नहीं होता ।

The Bhikshu who dwells in the Dharma, who delights in the Dharma, who meditates on the Dharma, and who attunes his mind to the Dharma, goes not fall away from the Holy Dharma.

P 132 (XXXII, 9)

P 190 V 364

द'णो'सु'कॅसं'ल'ण'क'द'ण'द'लै'द । ।

कॅसं'द'ण'द'कॅसं'ल'सॅस'स'व'द'ण । ।

कॅसं'ल'हॅस'सु'द'क'व'द'ण । ।

कॅसं'ल'स'हॅस'सु'क'स'स'स'द'गु'द । ।

सनाभं नातिमञ्जेय्य, नाञ्जेसं पिहयं चरे ।
अञ्जेसं पिहयं भिक्षु, समाधि नाधिगच्छति ॥६॥

राजगृह (वेणुवन)

विपक्ख सेवक (भिक्षु)

स्वलाभनातिमन्येत्, नाऽन्येषां स्पृहयन् चरेत् ।
अन्येषां स्पृहयन् भिक्षुः समाधिं नाऽधि गच्छति ॥

२८० श्री कृष्णाय नमः ॥ ॥ ॥

२८१ श्री कृष्णाय नमः ॥ ॥ ॥

२८२ श्री कृष्णाय नमः ॥ ॥ ॥

२८३ श्री कृष्णाय नमः ॥ ॥ ॥

अपने लाभ की अवहेलना नहीं करनी चाहिए । दूसरों के (लाभ) की स्पृहा न करनी चाहिए । दूसरों के (लाभ की) स्पृहा करने वाला भिक्षु समाधि (-चित्त की एकाग्रता) को नहीं प्राप्त करता ।

He should not be proud of what he has received nor should he envy the gains of others. The Bhikshu who envies the gains of others does not attain concentration.

P 44 (XIII, 7)

P 190 V 365

२८० श्री कृष्णाय नमः ॥ ॥ ॥

२८१ श्री कृष्णाय नमः ॥ ॥ ॥

२८२ श्री कृष्णाय नमः ॥ ॥ ॥

२८३ श्री कृष्णाय नमः ॥ ॥ ॥

अप्यलाभोऽपि चेन्निवृत्तः, सलाभं नातिमञ्जति ।
तं वे देवाः पश्यन्ति, सुद्धाजोविं अतन्द्रितं ॥७॥

अल्पलाभोऽपि चेद् भिक्षुः स्वलाभं नाऽतिमन्यते ।
तं वै देवाः प्रशंसन्ति शुद्धाऽऽजीवं अतश्चित्तम् ॥

རྩེད་པ་རྒྱང་ཡང་དག་སྟོང་ནི།
 རང་གི་རྩེད་པས་མི་ཁེངས་པ།
 ག་ཡང་མེད་དག་པའི་འཆོ་བ་ཅན།
 དེ་ལ་ལྷ་ཉམས་བསྐྱེད་པས་བར་བྱེད།

चाहे अल्प ही हो, मिक्षु अपने लाभ की अवहेलना न करे। उसी की श्रेयता प्रशंसा करते हैं, (जो) शुद्ध जीविकावाला और आलस्य रहित है।

Though a recipient of little, if a Bhikshu is contented with what he has received, and is free of laziness in his way of life he will be praised by the gods.

ལེ་ལེ་མེད་པ་དེ་འཕྲོ་བ་ཅན།

सब्रसो नामरूपस्मिं, यस्स नत्थि ममायितं ।
असता च न सोचति, से वे भिक्खू ति वुच्चति ॥८॥

जेतवन

(पाँच अग्रदायक भिक्षु)

सर्वज्ञो नामरूपे यस्य नास्ति ममायितम् ।
असति च न शोचति सर्वे भिक्षु रित्युच्यते ॥

सिद्धं दमं च त्वत्तुल्यं किं प्रसन्नं उदयं ।

मदं विना वदन् मीरं सै प्रेदं उदं ।

सिद्धं वदन् अदं सुदं उदं ।

देवि दमो ह्येदं विना सुदं वदं ।

नाम-रूप (= जगत) में जिसकी बिल्कुल ही ममता नहीं, न होने पर (जो) शोक नहीं करता, वही भिक्षु कहा जाता है ।

He indeed is called a Bhikhu who does not attach the notion of self to any name (nama) and form (rupa) (here name and form stands for the 5 Skandhas, aggregates of form, feelings, conceptions, associations and consciousness), and who does not grieve at the absence of self nature.

मेताविहारी यो भिक्खु, पसन्नो बुद्धसासने ।
अधिगच्छे पदं सन्तं, सङ्खारूपसमं सुखं ॥६॥

जेतवन

बहुत से मिथु

मैत्री विहारी यो भिक्षुः प्रसन्नो बुद्धशासने ।
अधिगच्छेत् पदं शान्त संस्कारोपशमं सुखम् ॥

ॐ नमो भगवते बुद्धाय ।
सर्वसंसारमोक्षाय नमः ।
ॐ नमो भगवते बुद्धाय ।
सर्वसंसारमोक्षाय नमः ।

मैत्री (-भावना) से विहार करता जो भिक्षु बुद्ध के उपदेश में प्रसन्न (श्रद्धावान्) रहता है । (वह) सभी संस्कारों को शमन करने वाले शान्त और सुखमय पद को प्राप्त करता है ।

The Bhikshu who dwells in loving, kindness and has clear faith and understanding of the Buddha's Teaching, attains to the stage of peace and happiness which is the stilling of associating activity (sanskara the constructing of phenomena by association).

सिञ्च भिक्षु इमं नावं, सिक्ता ते लघुमेस्सति ।
छेत्वा रागं च दोसं च, ततो निब्बानमेहिसि ॥१०॥

सिञ्च भिक्षो ! इमां नावं सिक्ता ते लघुत्वं एष्याति ।
छित्त्वा रागं च द्वेषं च ततो निर्वाणमेष्यसि ॥

ॠणोऽस्मिन्नुदरिः सुदं वरः प्रीतिः ।
सुदं वरः सुदं वरः सुदं वरः ।
कृष्णं वरं वरं वरं वरं वरं ।
सुदं वरं वरं वरं वरं वरं ।

हे भिक्षु ! इस नाव को उलीचो, उलीचने पर यह तुम्हारे लिए हल्की हो जायेगी । राग और द्वेष को छेदन कर, फिर तुम निर्वाण को प्राप्त होगे ।

Empty this boat, O Bhikshu. By emptying it you will move swiftly. Cutting out lust and hatred you will attain the end of sorrow (Nirvana).

P. 97 (XXVI, 12)

P 192 V 369

सुदं वरः सुदं वरः सुदं वरः ।
सुदं वरः सुदं वरः सुदं वरः ।
कृष्णं वरं वरं वरं वरं वरं ।
सुदं वरः सुदं वरः सुदं वरः ।

पञ्च छिन्दे पञ्च जहे, पञ्च चुत्तरि भावये ।

पञ्च सङ्गातिगो भिक्खु, ओघतिण्णो ति वुच्चति ॥११॥

पञ्च छिन्धि पञ्चं जहीहि पचोत्तरं भावये ।

पञ्च सगाऽतिगो भिक्षुः 'ओघतीर्ण' इत्युच्यते ॥

अ·वि·मर्त्यं उ·च्यते अ·वि·मर्त्यं ।

अ·वि·मर्त्यं अ·वि·मर्त्यं अ·वि·मर्त्यं ।

अ·वि·मर्त्यं अ·वि·मर्त्यं अ·वि·मर्त्यं ।

अ·वि·मर्त्यं अ·वि·मर्त्यं अ·वि·मर्त्यं ।

(जो रूप, राग, मान, उद्धतपना और अविद्या इन) पाँच को छेदन करे;
(जो नित्य आत्मा की कल्पना, सन्देह, शील-व्रत पर अधिक जोर, भोगों में राग,
और प्रतिहिंसा इन) पाँच को त्याग करे; उपरान्त (जो श्रद्धा, वीर्य, स्मृति,
समाधि और प्रज्ञा) इन पाँच की भावना करे; (जो राग, द्वेष, मोह, मान और
झूठी धारणा इन) पाँच के संसर्ग को अतिक्रमण कर चुका हो; (वह काम, भव
दृष्टि अविद्यारूपी) ओघों (= बाढ़ों) से उत्तीर्ण हुआ कहा जाता है ।

Cutting off five*, getting rid of five**, meditate on the five***. A Bhikshu who has freed himself from the five constraints is called "one who has crossed the flood".

* self illusion; doubt; false ascetism; or indulgence in wrongful rites; sensual desire; hatred.

** longing for the realm of form; longing for formless realms; conceit or self-will; vanity; and ignorance.

*** faith; manliness; mind-fulness; concentration or meditation; and wisdom.

ज्ञाय भिक्षु मा प्रमादो,
 मा ते कामगुणे रमेस्सु चित्तं ।
 मा लोहगुलं गिली प्रमत्तो,
 मा कन्दि दुक्खमिदं ति डय्हमानो ॥१२॥

ध्याय भिक्षो ! मा च प्रमादः, मा ते कामगुणे भ्रमतु चित्तम् ।
 मा लोहगोलं गिल प्रमत्तः, मा क्रन्दीः दुःखमिदमिति दह्यमानः ॥

दग्धोऽहोऽहो नैवमाभेदं सः सङ्गं वञ्छेत् ।
 सोमसं नैवरेण्यं नैवरेण्यं नैवरेण्यं नैवरेण्यं ।
 वमाभेदं वमाभेदं नैवरेण्यं नैवरेण्यं नैवरेण्यं ।
 नैवरेण्यं नैवरेण्यं नैवरेण्यं नैवरेण्यं नैवरेण्यं ।

हे भिक्षु ! ध्यान में लगे, मत गफलत करो, तुम्हारा चित्त मत भोगों के
 चक्कर में पड़े, प्रमत्त होकर मत लोहे के गोले को निगलो '(हाय) यह दुःख'
 कहकर दग्ध होते (पीछे) मत तुम्हें क्रन्दन करना पड़े ।

Meditate, O Bhikshu ! Do not be heedless. Do not let
 your mind whirl on sensual pleasures. Do not allow the
 red-hot iron ball of heedlessness, and cry not as you burn "This
 is sorrow !"

P 125 (XXXI, 32)

P 193 V 371

सोमसं नैवरेण्यं नैवरेण्यं नैवरेण्यं नैवरेण्यं ।
 नैवरेण्यं नैवरेण्यं नैवरेण्यं नैवरेण्यं नैवरेण्यं ।
 नैवरेण्यं नैवरेण्यं नैवरेण्यं नैवरेण्यं नैवरेण्यं ।
 नैवरेण्यं नैवरेण्यं नैवरेण्यं नैवरेण्यं नैवरेण्यं ।

नत्थि ज्ञानं अणञ्जस्स, पञ्ञा नत्थि अझायतो ।

यम्मिह ज्ञानं च पञ्ञा च, स वे निब्बानसन्तिके ॥१३॥

नास्ति ध्यानमप्रज्ञस्य प्रज्ञा नास्त्यध्यायतः ।

यस्मिन् ध्यानं च प्रज्ञा च सवै निर्वणाऽन्तिके ॥

ऐसं न च खेदं वा वससं न्हनं अदं खिन्नं । ।

वससं न्हनं खेदं वा ऐसं न च अदं स अखि । ।

न च वा वससं न्हनं ऐसं न च अदं न्हनं वा । ।

देवं सुं न च न्हनं वदं न्हनं न्हनं न्हनं । ।

प्रज्ञाविहीन (पुरुष) को ध्यान नहीं (होता) है, ध्यान (एकाग्रता) न करनेवाले को प्रज्ञा नहीं हो सकती । जिसमें ध्यान और प्रज्ञा (दोनों) हैं, वही निर्वान के समीप है ।

There is no concentration for him who lacks wisdom, nor is there wisdom for him who lacks concentration. The one who has both concentration and wisdom is indeed close to Nirvana.

P 135 (XXXII, P)

P 194 V 372

दं न्हनं खेदं वा ऐसं न च खेदं । ।

ऐसं न च खेदं वा दं न्हनं खेदं । ।

ऐसं न च दं न्हनं अदं न्हनं वा । ।

सुं न्हनं न्हनं न्हनं न्हनं न्हनं । ।

सुञ्जागारं पविष्टस्य, शान्तचित्तस्य भिक्षुनो ।
अमानुषी रतिरिति, सम्यग् धर्मं विवस्सतो ॥१४॥

शून्यागारं प्रविष्टस्य शान्तचित्तस्य भिक्षोः ।
अमानुषी रतिर्मवति सम्यग् धर्मं विषयतः ॥

सुँद'परी'ह्रैस'क'रव'ग'कस'परी । ।
दगो'सुँद'जै'परी'सोमस'इ'क'वा । ।
'अद'दग'कैस'रव'स'सुँद'व'वा । ।
सै'पस'द'दस'परी'दग'द'व'द'द' । ।

शून्य (= एकान्त) गृह में प्रविष्ट, शान्तचित्त भिक्षु को भली प्रकार धर्म का साक्षात्कार करते, अमानुषी रति (= आनन्द) होती है ।

The Bhikshu who with a peaceful mind has retired to a lonely abode, and who clearly perceives the really pure Dharma (gaining the first Bothsattva Bhumi on the Path of Seeing), experiences a joy transcending that of man.

P 132 (XXXII, 10)

P 194 V 373

दगो'सुँद'मद'सुँद'ब्रुगस'कस'सु । ।
कद'वा'इ'वद'सुँद'व'द' । ।
कैस'कस'द'गस'पद'स'सुँद'व'द' । ।
सु'अ'दग'द'द'इ'क'वद'द'ग' । ।

१ सुँद'रस'परी'स'द'व'सुँद'व'इ'इ'

यतो यतो नम्मसति, खन्धानं उदयव्ययम् ।
लभते प्रीतिप्रामोद्यं, अमृतं तं विजानतं ॥१५॥

यतो यतः समृशति स्कन्धाना उदयव्ययम् ।
लभते प्रीतिप्रामोद्यं अमृतं तद् विजानताम् ॥

१ गद'दद'गद'दस'सुद'सो'क्षस। ।
क्षेस'सैद'सद'स'स'स'स'स'स'स' ।
दगद'सगु'सै'स'स'स'स'स'स' ।
दे'सै'स'स'स'स'स'स'स'स'स' ।

(पुरुष) जैसे-जैसे (रूप, वेदना, संज्ञा, सस्कार विज्ञान इन) पाँच स्कन्धों की उत्पत्ति और विनाश पर विचार करता है. (वैसे ही वैसे, वह) ज्ञानियों की प्रीति और प्रमोद (रूपी) अमृत को प्राप्त करता है ।

When one examines and understands the origin and destruction of the Aggregates (the five skandhas) in detail then one obtains joy and happiness. For the wise that is ambrosia itself (giving eternal life).

P 132 (XXXII, 11)

P 195 V 374

दे'सुद'दे'सुद'सुद'सो'क्षस। ।
क्षे'दद'क्षे'द'स'स'स'स'स'स'स' ।
दे'सुद'दे'सुद'दे'सै'स'स' ।
दगद'स'स'स'स'स'स'स'स'स' ।
दगो'क्षे'द'दगद'स'स'स'स'स' ।
सुग'स'स'स'स'स'स'स'स'स' ।

तत्रायमादि भवति, इधं पञ्चस्म भिक्खुनो ।
इन्द्रियगुप्ति सन्तुट्ठि. पातिमोक्खे च संवरो ॥१६॥
मित्ते भजस्सु कल्याणे, सुद्धाजीवे अतन्दिते ।

तत्राऽयमादिर्मवतीह प्राज्ञस्य भिक्षोः ।
इन्द्रियगुप्तिः सन्तुष्टिः प्राप्तिमोक्षे च संवरः ।
मित्राणि भजस्व कल्याणानि शुद्धाजीवान्यतन्द्रितानि ॥

[illegible]

यहाँ प्राज्ञ भिक्षु को आदो (में करना) है—इन्द्रिय संयम, सन्तोष और प्रतिमोक्ष (=भिक्षुओं के आचार) को रक्षा। (वह, इसके लिए) निरालस, शुद्ध जीविकावाले, अच्छे मित्रों का सेवन करे।

There are necessary at the beginning for a wise Bhikshu :— self-control, contentment, restraint with regard to the Fundamental Precepts (Pratinidisha*) and association with noble and energetic friends whose lives are pure.

* See note on verse 247.

P 132 (XXII, 7)

P 196 V 375-376

འཛོ་གཙང་རྩིས་པས་མེད་པ་ཡི།
གྲོགས་པོ་ཐུན་པ་བཞེན་ཏུ་ཞིང་།
མེ་མོར་བཤོ་བཤམ་ཏུ་བ་དང་།
ལྷོད་ལུས་ཚོ་ག་ཁམས་པར་བ།
ལྷོད་ལུས་ཚོ་ག་ཁམས་པ་ཡིས།
ཆ་ག་པར་ལ་ཟད་པ་བཅོ་བར་ཉམས།

पटिसन्धारवृत्तस्स, आचारकुसलो सिया ।
ततो पामोज्जबहुलो, दुक्खस्सन्तं करिस्सति ॥१७॥

प्रतिसंस्तारवृत्तस्याऽऽचारकुशलः स्यात् ।
ततः प्रामोद्यबहुलो दुःखस्याऽन्तं करिष्यति ॥

सो'सो'कुस'अ'ब्रुण'स'व'अ' ।
गु'अ'दु'सु'अ'व'द'वो'अ'अ'गु'अ' ।
द'वो'सु'अ'द'व'अ'अ'अ'अ' ।
सु'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ'अ' ।

जो सेवा सत्कार स्वभाववाला तथा आचार (पालन) में निपुण है,
सानन्द दुःख का अन्त करेगा ।

By being open and friendly to all and virtuous in his conduct, the Bhikshu will have much joy and will make an end of suffering.

वस्त्रिका विय पुष्पानि, मद्वानि प्रमुञ्चति ।
 एवं रागं च दोषं च, दिप्रमुञ्चेथ भिक्खवो ॥१८॥

जैतवन

पाँचसी भिक्षु

वर्षिका इव पुष्पाणि मदितानि प्रमुञ्चति ।
 एवं रागं च द्वेषं च विप्रमुञ्चत भिक्षवः ॥

ཐུ་ཁར་གྱིས་ནི་མེ་དྲོག་གི།

འདས་མ་རྫོང་བ་རྒྱང་ཐུང་བ།

དེ་བཞིན་ཆགས་དང་སྡང་བ་ཡང་།

དག་སྡོང་ཆགས་གྱིས་སྡོང་ས་བར་བྱིས།

जैसे जूही कुम्हलाये फूलों को छोड़ देती है, वैसे ही हे भिक्षुओं ! (तुम)
 राग और द्वेष छोड़ दो ।

As the Jasmine creeper sheds its withered flowers, even
 so, O Bhikshu, should you discard desire and hatred.

सन्तकायो सन्तवाचो, सन्तवा सुसमाहितो ।
वन्तलोकामिसो भिक्षु, उपसन्तो ति वुच्चति ॥१६॥

जेतवन

(शान्तकाय धेर)

शान्तकायो शान्तवाक् शान्तिमान् सुसमाहितः ।
वान्तलोकाऽमिषो भिक्षु 'उपशान्त' इत्युच्यते ॥

त्रैःवरीःसुखंयःत्रैःवरीःद्वयं ।
त्रैःवरीःअदःत्रैःसद्वयःसुखंयः ।
अद्वयःत्रैःसुखंयःअद्वयःसुखंयः ।
अद्वयःसुखंयःअद्वयःसुखंयः ।

काया (और) वचन से शान्त, भली प्रकार समाधियुक्त शान्ति सहित
(तथा) लोक के आमिष को वमन कर दिये हुए भिक्षु को 'उपशान्त' कहा
जाता है ।

That Bhikshu is said to be calm, who is calm in body,
calm in speech, calm in mind, who is well-composed, and who
has abandoned worldly things.

P 135 (XXXII, 33)

P 197 V 378

अद्वयःसुखंयःअद्वयःसुखंयः ।
अद्वयःसुखंयःअद्वयःसुखंयः ।
अद्वयःसुखंयःअद्वयःसुखंयः ।
अद्वयःसुखंयःअद्वयःसुखंयः ।

अत्तना चोदयत्तानं, पटिमंसेथ अत्तना ।
सो अत्तगुत्तो सत्तिमा, सुखं भिक्खु विहाहिसि ॥२०॥

जेतवम

लङ्गूल (येर)

आत्मना चोदयेदात्मानं प्रतिवसेदात्मानं आत्मना ।
स आत्मगुप्तः स्मृतिमानु सुखं भिक्षो ! विहरिष्यसि ॥

२८.वीस.२८.८.वसुध.व२.५ । ।

२८.वीस.२८.८.व५५.व२.५ । ।

२८.११५.सु८.१६.५५.५५.व२. । ।

५५.११५.व२.८.११५.व२.५५. । ।

(जो) अपने ही आप को प्रेरित करेगा, अपने ही आप को संलग्न करेगा,
वह आत्म-गुप्त (=अपने द्वारा रक्षित) स्मृति संयुक्त भिक्षु सुख से विहार करेगा ।

Rouse yourself by yourself, examine yourself by yourself.
Thus guarded by yourself and attentive, O Bhikshu, you will
live happily.

पामोज्जबहुलो भिक्खु, पसन्नो बुद्धसासने ।
अधिगच्छे पदं सन्नं, सङ्खारूपसमं सुखं ॥२२॥

राजगृह (वेणुवन)

वफ्फल (थेर)

प्रामोद्यबहुलो भिक्षुः प्रसन्नो बुद्धशासने ।
अधिगच्छेत् पदं शान्तं संस्कारोपशमं सुखम् ॥

ॐ नमो भगवते बुद्धाय ॥

ॐ नमो भगवते बुद्धाय ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते बुद्धाय ॥ २ ॥

ॐ नमो भगवते बुद्धाय ॥ ३ ॥

ॐ नमो भगवते बुद्धाय ॥ ४ ॥

बुद्ध के उपदेश में प्रसन्न बहुत प्रमोदयुक्त भिक्षु संस्कारों को उपशमन करनेवाला सुखमय शान्त पद को प्राप्त करता है ।

Full of joy and clearly understanding and believing in the Teaching of the Buddha, the Bhik-hu will attain the happiness of the calm stage, the stilling of the dualistic associating activity of mind.

यो हवे दहरो भिक्षु, युञ्जति बुद्धसासने ।
सो इमं लोकं प्रभासेति, अट्ठा मृत्तो व चन्द्रिमा ॥२३॥

श्रावस्ती (पूर्विराम)

मुमन (सामणेर)

यो ह वै दहरो भिक्षुर्युक्ते बुद्धशासने ।
स इमं लोकं प्रभासयत्यभ्रान् मुक्त इव चन्द्रमा ॥

ཡང་གྱི་ནགས་སུ་འོ།།

དགེ་སྤྱོད་གང་ཞིག་གཞིན་ན་ཡང་། །

སངས་རྒྱལ་བཤམ་ལ་བཅོམ་བ་དེ། །

སྤྱིན་ལས་ལྷོ་ལ་བའི་ཆུ་བ་བཞིན། །

འཇིག་རྟེན་འདི་ན་རབ་གསལ་འགྱུར། །

དགེ་སྤྱོད་གྱི་སྤེ་ཆུ་ལོ།

ཡེ་ཟུ་ཉིས་ལྷ་བའོ།།

जो भिक्षु यौवन में बुद्ध-शासन (=बुद्धोपदेश, बुद्ध-धर्म) में संलग्न होता है, वह मेघ से मुक्त चन्द्रमा की भाँति इस लोक को प्रकाशित करता है ।

That Bhikshu who, though young, devotes himself to the Buddha's Teaching, illuminates this world as does the moon freed from clouds.

P 54 (XVI, 7)

P 199 V 382

གང་ཞིག་གཞིན་ན་རབ་བྱུང་ནས། །

སངས་རྒྱལ་བཤམ་ལ་འཇུག་བ་དེ། །

སྤྱིན་ལས་ལྷོ་ལ་བའི་ཆུ་བ་ལྟར། །

འཇིག་རྟེན་འདི་ན་ཀླན་ནས་གསལ། །

॥ नमः शिवाय ॥

सङ्खारानं खयं जत्वा, अकतञ्जूसि ब्राह्मण ॥१॥

(एक बहुत श्रद्धालु ब्राह्मण)

संस्काराणां क्षयं ज्ञात्वाऽकृतज्ञोऽसि ब्राह्मण ! ॥

ཡམ་མེ་ཆུ་བོའི་རྒྱ་ནག་བཅད་ནས།

འདུས་བྱས་ཟད་པ་གིས་ནས་ཀྱང་། །

ཡས་མེ་འདུས་མ་བུས་གེས་འདུས། །

O Brahman, cut off the stream (of craving) and overcome the objects of desire by your inner strength. Knowing the destruction of all that is made, O Brahman, be a knower of the unmade (Nirvana).

[illegible]

यदा द्वयेषु धम्मेसु, पारगू होति ब्राह्मणो ।
अथस्स सब्बे संयोगा, अत्थं गच्छन्ति जानतो ॥२॥

जैतवन

(बहुत से भिक्षु)

यदा द्वयोर्धर्मयोः पारगो भवति ब्राह्मणः ।
अथाऽस्य सर्वे संयोगा अस्तं गच्छन्ति जानतः ॥

सुखं वे कं स कं पणिसंघो न वा ।
पादं कं च रं च सं कं गुणं वा ।
दे कं स पणिसंघं कं न दे पणिसंघं ।
गुणं सुखं पणिसंघं कं न गुणं वा ।

जब ब्राह्मण दो धर्मों (=चित्त-संयम और भावना) में पारंगत हो जाता है, तब उस जानकार के सभी संयोग (=बन्धन) अस्त हो जाते हैं ।

When a Brahman fully develops the two practices (samatha and vipassana, calming and insight, meditation) then all the fetters of that knowing one fall away.

यस्स पारं अपारं वा, पारापारं न विज्जति ।
वीतदरं विसंयुक्तं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥३॥

जितवन

भार

यस्य पारं अपारं वा पारापारं न विद्यते ।
वीतदरं विसंयुक्तं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

གང་ལ་ས་རྩ་ཚུ་རྩ་དམ། ।
སེམས་ཀྱི་སྒྲིལ་མ་མཆིས་པ། ।
འཛིགས་པ་བྲལ་ཞིང་ཀུན་སྦྱོར་མེད། ।
དེ་ལ་བདག་ནི་བྲམ་ཟེར་བཟོད། ।

जिसके पार (= अंख, कान, नाक, जीभ, काया, मन), अपार (= रूप, शब्द, गन्ध, रस, स्पर्श, धर्म) और पारपार (= मैं और मेरा) नहीं हैं, (जो) निर्भय और अनासक्त हैं, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

For whom there exists neither this shore nor that shore, nor both this shore and that shore, and who is fearless and unfettered, I call that man a Brahman.

P 146 (XXXII, 27)

P 201 V 385

གང་ཞིག་ས་རྩ་ཚུ་རྩ་དམ། ।
ས་རྩ་ཚུ་རྩ་གཉིས་མེད་ཅིང་། ।
ཆོས་རྣམས་ཀུན་གྱི་མཐར་ཕྱིན་དེ། ।
བྲམ་ཟེ་ཡིན་པར་ངས་གསུངས་སོ། །

ज्ञायिं विराजमासीनं, कतकिच्चमनासवं ।

उत्तमत्थमनुपपत्तं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥४॥

जेतवन

(कोई ब्राह्मण)

ध्यायिनं विरजसमासीनं कृतकृत्यं अनास्रवम् ।

उत्तमार्थमनुप्राप्तं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

वसन्तं पश्यन्तु यः प्रयत्नं यत्नं यत्नं ॥

पुनः पुनः प्रयत्नं यत्नं यत्नं ॥

सर्वेषां यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं ॥

देवः सर्वेषां यत्नं यत्नं यत्नं ॥

(जो) ध्यानी, निर्मल आसनबद्ध (= स्थिर), कृतकृत्य आस्रव (= चित्तमल) रहित है, जिसने उत्तम अर्थ (= सत्य) को पा लिया है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

He who is meditative, stainless, and settled, whose work is done and who is free from taints, he who has attained the highest goal (Nirvana), I call that man a Brahman.

दिवा तपति आदिच्छो, रत्तिमाभाति चन्दिमा ।

सन्नद्धो खत्तियो तपति, ज्ञायो तपति ब्राह्मणो ॥

अथ सन्बमहोरत्तिं, बृद्धोत्पति तेजसा ॥५॥

श्रावस्ती (पूर्वाराम)

मानन्द (थेर)

दिवा तपत्यादित्यो रात्रावाभाति चन्द्रमा ।

सन्नद्धः क्षत्रियस्तपति ध्यायी तपति ब्राह्मणः ।

अथ सर्वमहोरात्र बुद्धस्तपति तेज सा ॥

ཀུན་དབང་པོ་ལ་གསུངས་པ།

ཉིན་མོ་ཉི་མ་གཟི་ལྡན་ཞིང་།

མཆན་མོ་རྒྱ་པ་ཉེ་ཟེང་འཕྱོ།

ཕྱི་ལོ་རིགས་བཅུ་དྲུག་པའི་ལོ་ནི།

ཐག་མེད་ན་ཡུལ་ཟི་གཞི་དང་ལྷན།

འོན་ཀྱང་རྒྱལ་པོ་ལ་མཁུ་སྤྱོད་ཀྱིས་མི།

ཉིན་མཚན་ཀན་ད་གཟི་བུ་དེ་ལས།

दिन में सूर्य तपता है, रात को चन्द्रमा प्रकाशता है, कवचबद्ध (होने पर) क्षत्रिय तपता है, ध्यामी (होने पर) ब्राह्मण तपता है, और बुद्ध रात-दिन (अपने) तेज से (सब से अधिक तपता है)।

The sun is bright by day, the moon shines by night.
Armoured shines the warrior, and while meditating the Brahman
shines, but the Buddha shines in his glory all the day and night.

P 154 (XXXII, 85)

P 202 V 387

ཉིན་མོ་ཉི་མ་གསལ་བར་བྱེད།

མཚན་མེད་པ་ལ་ཡོད་ཀྱིང་།

ཏྲུལ་རིགས་གོ་ཆས་ཆས་ལ་གསལ།

ཡུལ་མི་མེས་མ་པར་ཕྱིར་ན་གསལ།

ཉིན་མོ་ཉི་མ་གསལ་བར་བྱེད།

མཚན་མེད་པ་སྒྲུང་བྱེད་ལྟར།

དྲུག་ཏུ་སངས་ཀྱིས་གཞི་བརྟེན་ཅན།

ཉིན་དང་མཚན་ཏེ་གསལ་བར་བྱེད།

वाहितपापो ति ब्राह्मणो,
 समचरिया समणो ति वुच्चति ।
 पब्बाजयमत्तनो मलं,
 तस्मा पब्बजितो ति वुच्चति ॥६॥

जेतवन

(कोई प्रब्रजित)

वाहितपाप इति ब्राह्मणः समचर्यः श्रमण इत्युच्यते ।
 प्राब्रजयन्नाऽऽत्मनो मल तस्मात् प्रब्रजित इत्युच्यते ॥

जुअं पुं० ङ० ५० ॥

सुखं व० सुखं व० सुखं व० सुखं व० सुखं व० ।
 सुखं व० सुखं व० सुखं व० सुखं व० सुखं व० ।
 सुखं व० सुखं व० सुखं व० सुखं व० सुखं व० ।
 सुखं व० सुखं व० सुखं व० सुखं व० सुखं व० ।

जिसने पाप को (धोकर) बहा दिया, वह ब्राह्मण है; जो समता का आवरण करता है, वह श्रमण है, (चूँकि) उसने अपने (चित्त) मलों को हटा दिया, इसलिए वह प्रब्रजित कहा जाता है ।

Because he has discarded evil he is called a Brahman.
 Because his conduct is pure he is called a Samana because he has renounced his impurities he is called a renunciate.

न ब्राह्मणस्स पहरेय्य, नास्स मुञ्चेथ ब्राह्मणो ।
 धी ब्राह्मणस्स हन्तारं, ततो धी यस्स मुञ्चति ॥७॥

जेतवन

सारिपुत्त (थेर)

न ब्राह्मणं प्रहरेत् नाऽस्मै मुञ्चेद् ब्राह्मणः ।
 धिग् ब्राह्मणस्य हन्तारं ततो धिग् यस्मै मुञ्चति ॥

मू. री. सु. अ. ग. सु. अ. व।

अस. जे. अ. के. वदे. ग. मी. सु। ।

दे. अ. अस. जे. मी. मी. सु। ।

ग्रे. म. अस. जे. वदे. ग. व. अ. व। ।

दे. अ. स. दे. अ. मी. व. अ. व। ।

ब्राह्मण (= निष्पाप) पर प्रहार नहीं करना चाहिए, और ब्राह्मण को भी उस (प्रहारदाता) पर (कोप) नहीं करना चाहिए; ब्राह्मण को जो मारता है, उसे धिक्कार है, और धिक्कार उसको भी है, जो (उसके लिए) क्रोध करता है ।

One should not strike a Brahman. Nor should a Brahman be angry with this attacker. Alas for evil one who strikes a Brahman. Yet even worse than he, is the Brahman who shows his anger.

P 153 (XXXII, 74)

P 203 V 389

ग. अ. ग्रे. म. अस. जे. वदे. ग. व. अ. व। ।

म्री. दे. व. अ. दे. व. दे. अ. व. अ. व। ।

अस. जे. अस. अ. वदे. ग. मी. सु। ।

अस. जे. म्री. दे. व. मी. सु. अ. । ।

यस्य कायेन वाचाय, मनसा नस्थि दुष्कृतं ।
संवृतं तोहि ठानेहि, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥६॥

जेतवन

महाप्रजापती गौतमी

यस्य कायेन वाचा मनसा नास्ति दुष्कृतम् ।
संवृतं त्रिभिः स्थानैः तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

གོ་ཏུ་ད་མི་ལ་གསུངས་པ།

གང་གི་ལུས་དང་ངག་དང་ནི། ।
ཡིད་ཀྱིས་ཉེས་པར་མི་བྱེད་པ། ।
གནས་སྐབས་གསུམ་གྱིས་སྡོམ་པ་ཅན། ।
དེ་ལ་བདག་ནི་བྲམ་ཟེར་བཟོད། ।

जिसके मन वचन काय से दुष्कृत (= पाप) नहीं होते, (जो इन) तीनों ही स्थानों से संवर (= संयम) -युक्त है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

He who does no evil through body, speech or mind, who is restrained in these three respects, I call that man a Brahman.

P 155 (XXXII, 19)

P 204 V 391

གང་ཞིག་ལུས་དང་ངག་དང་ནི། ।
ཡིད་ཀྱིས་ཉེས་བྲམ་མི་བྱེད་ཅིང་། ।
གང་ཞིག་གནས་གསུམ་ལེགས་བསྡུམས་དེ། ।
བྲམ་ཟེ་ཡིན་པར་ངས་གསུངས་སོ། ।

यम्हा धम्मं विजानेय्य, सम्मासम्बुद्धदेसितं ।
सक्कच्चं तं नमस्सेय्य, अग्निहुत्तं व ब्राह्मणो ॥१०॥

जेतवन

सारिपुत्त (थेर)

यस्माद् धर्मं विजानीयात् सम्यक्-संबुद्ध देशितम् ।
सत्कृत्य तं नमस्येद् अग्निहोत्रमिव ब्राह्मणः ॥

मू. रेरे. सु. ल. म. सु. ल. म.

ई. ग. स. व. री. स. ल. स. कृ. स. व. सु. र. व. यी. ॥

ऊ. स. री. सु. ल. स. म. स. म. सु. र. व. ॥

व. ग. र. व. सु. र. म. सु. र. व. सु. र. ॥

सु. र. म. सु. र. म. सु. र. म. सु. र. म. सु. र. ॥

जिस (उपदेशक) से सम्यक्संबुद्ध (= बुद्ध) द्वारा उपदिष्ट धर्म को जाने,
उसे (वैसे ही) सत्कारपूर्वक नमस्कार करें, जैसे अग्निहोत्र को ब्राह्मण ।

If from some person one should understand the Doctrine
preached by the Fully Enlightened One, then one should
reverence him devoutly as a Brahman reveres the sacrificial fire.

P 153 (XXXII, 77)

P 204 V 392

म. ल. री. म. ई. ग. स. व. री. स. ल. स. कृ. स. व. सु. र. व. यी. ॥

व. सु. र. व. यी. ऊ. स. री. सु. ल. स. म. स. म. सु. र. व. ॥

दे. ल. व. ग. र. व. सु. र. म. सु. र. व. सु. र. ॥

सु. र. म. सु. र. म. सु. र. म. सु. र. म. सु. र. म. सु. र. ॥

न जटाहि न गोत्तेन, न जच्चा होति ब्राह्मणो ।
यस्मिह सच्चं च धम्मो च, सो सुची सो च ब्राह्मणो ॥११॥

जैतवन

जटिल ब्राह्मण

न जटाभिनं गोत्रेनं जात्या भवति ब्राह्मणः ।
यस्मिन् सत्यं च धर्मश्च स शुचिः स च ब्राह्मणः ॥

कुपं सुदेकं सुदे । ।

सुदेकं सुदेकं सुदेकं सुदेकं सुदेकं । ।

सुदेकं सुदेकं सुदेकं सुदेकं सुदेकं । ।

सुदेकं सुदेकं सुदेकं सुदेकं सुदेकं । ।

सुदेकं सुदेकं सुदेकं सुदेकं सुदेकं । ।

न जटा से, न गोत्र से; न जन्म से ब्राह्मण होता है, जिसमें सत्य और धर्म हैं, वही शुचि (=पवित्र) है, और वही ब्राह्मण है ।

Not by matted hair, nor by family, nor by birth does one become a Brahman. It is that pure one who has both Truth and Dharma he is the Brahman.

किं ते जटाहि दुम्मेघ, किं ते अजिनसाटिया ।
अब्धन्तरं ते गहनं, बाहिरं परिमज्जसि ॥१२॥

वैशाली (कूटागारशाला)

(पाखंडी ब्राह्मण)

किं ते जटाभिः दुर्मेघ ! किं ते अजिनशाट्या ।
आभ्यन्तरं ते गहनं बाहिः परिमार्जयसि ? ॥

ཡངས་པ་ཅན་དུ་འོ། །

སྐྱ་པོ་རལ་བས་ཁྱོད་ལ་ཅི། །

བགས་པའི་གཡང་གཞིས་ཁྱོད་ལ་ཅི། །

ཁྱོད་ཀྱི་ནང་ནི་གཙོག་བས་གང་། །

ཕྱི་རོལ་ཡངས་སུ་བཀྱ་བར་བྱེད། །

हे दुर्बुद्धि ! जटाओं से तेरा क्या (बनेगा), (और) मृगचर्म के पहिने
से तेरा क्या ? भीतर (दिल) तो तेरा (राग आदि मलों से) परिपूर्ण है,
बाहर क्या घोता है ?

What is the use of your matted hair, O witless man ! What
is the use of your antelope garment ? You beautify the outside,
while within you are full of filth.

P 140 (XXXII, 8)

P 205 V 394

ཁྱོད་ན་ཁྱོད་ཀྱི་རལ་བ་ཅི། །

ཁྱོད་ཀྱི་གཡང་གཞི་ཕྱི་ན་ཅི། །

ཁྱོད་ནང་གི་བས་པོར་འདུག་བཞིན་དུ། །

ཕྱི་རོལ་ཡགས་བར་བྱི་དོར་བྱེད། །

पंसुकूलधरं जन्तुं, किसं धमनिसन्त्यतं ।
एकं वनस्मिं ज्ञायन्तं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥१३॥

राजगृह (वृधकूट)

किसा गोतमी

पांसुकूलधरं जन्तुं कृशं धमनिसन्त्यतम् ।
एकं वने ध्यायन्तं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

‘सुर्कैरुत्तुं धरं जन्तुं ।

कुलधरं कृशं धमनिसन्त्यतम् ।

एकं वने ध्यायन्तं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ।

कृशं धमनिसन्त्यतम् ।

एकं वने ध्यायन्तं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ।

जो प्राणी फटे जीवड़ों को धारण करता है, जो दुबला पतला और नसों से मढ़े शरीरवाला है, जो अकेला वन में ध्यानरत रहता है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

The person who wears dust-stained rags, who is emaciated, who is over-spread with veins, who meditates alone in the forest. I call that man a Brahman.

1 सुर्कैरुत्तुं धरं (सुर्कैरुत्तुं धरं) कृशं धमनिसन्त्यतम् ।
एकं वने ध्यायन्तं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ।

न चाहं ब्राह्मणं ब्रूमि, योनिजं मत्तिसम्भवं ।
भोवादि नाम सो होति, सचे होति सकिञ्चनो ।
अकिञ्चनं अनादानं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥१४॥

जेतवन

न चाऽहं ब्राह्मणं ब्रवीमि योनिज मातृसंभवम् ।
 'भो वादी' नाम स भवति स वै भवति सकिञ्चनः ।
 अकिञ्चनं अनादानं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

བྲམ་ཟེ་ཡིན་པ་ཞིན་ཏེ་གནས་དང་།
 མ་ལས་འདྲུང་ཞེས་པ་དག་མི་སྟེ།
 དེ་ནི་ཟླ་ཟླ་གསུམ་བུ་པ་དང་།
 དེ་ནི་ཉེས་ཅན་ཡིན་དུ་ཟད།
 ཅི་ཡང་མེད་ཅིང་མི་ཡིན་པ།
 དེ་ལ་བདག་ནི་བྲམ་ཟེ་པ་ཡོད།

माता और योनि से उत्पन्न होने से मैं (किसी को) ब्राह्मण नहीं कहता वह भी वादी है, वह (तो) संग्रही है; मैं ब्राह्मण उसे कहता हूँ, जो अपरिग्रही और लेने की (इच्छा) न रखनेवाला है ।

I do not call him a Brahman merely because of his birth or his mother, nor on account of his being saluted as a Brahman nor because of his wealth. But one who is without possessions and who, abandoning desire, takes nothing, I call that man a Brahman.

P 145 (XXXII, 18)

P 206 V 396

གང་ཞིག་མ་ཡི་མངལ་སྤྱི་མ་ནས།
གལ་དེ་འཛིན་པ་དང་བཅས་ན།
དེ་མིང་ལྷ་ཞེས་སྐྱེ་བར་བརྟེན།
འཇམ་ཐེ་ཡིན་པར་ང་མི་སྤྱ།
ཡོངས་སུ་འཛིན་མེད་ལེན་མེད་པ།
འཇམ་ཐེ་ཡིན་པར་ངས་གསུངས་སོ།

1. கருண ப.புரந.அர.அ.யே.ப.

सर्वसंयोजनं छेत्वा, यो वै न परितस्सति ।

सङ्गातिगं विसंयुक्तं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥१५॥

राजगृह (वेणुवन)

उगसेन (श्रेष्ठीपुत्र)

सर्वसंयोजनं छित्त्वा यो वै न परितस्सति ।

संगाऽतिगं विसंयुक्तं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

गुणं दुःखं च गुणं भयं च ।

मादं विना भयं च सुखं च ।

१ सुखं च भयं च ।

देव्यं च भयं च ।

जो सारे संयोजनों (=बन्धनों) को काटता है, जो कि भय नहीं खाता,
जो संग और आसक्ति से विरत है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

Having cut off all fetters he is completely without fear, the one who has finished with sin and who is unfettered, I call that man a Brahman.

1 सुखं च भयं च ।

छेत्वा नद्धिं वरत्तं च, सन्दानं सहनुक्कमं ।

उक्खित्तपलिघं बुद्धं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥१६॥

चेतवन

दो ब्राह्मण

छित्त्वा नन्दिं वरत्रां च सन्दानं सहनुक्रमम् ।

उत्क्षिप्तपरिधं बुद्धं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

ཁྱོ་བའི་དྲ་བ་སྟེང་བའི་གཟེབ།

མེ་ཚེས་ལྷོ་ག་ནི་འཁོར་བཅས་བཅད།

ཐཱི་པ་བའི་གེ་བླ་ས་བསལ་སངས་རྒྱས་པ། །

དེ་ལ་བདག་ཉི་ལྔ་མེད་བརྟེན།

नन्दी (= क्रोध), वरत्रा (= तृष्णा रूपी रस्सी), सन्दान (= ६२ प्रकार के मतवाद रूपी पगहे), और हनुक्रम (= मुँह पर बाँधने के जाबे) को काट एवं परिध (= छूए) को फेंक जो बुद्ध (= ज्ञानी) हुआ, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ।

He who has cut the strap of hatred, the thong of craving and the manacles and chain of doubt, who has cleared away the hindrances of the obscurations (of the emotions of wrong understanding), and who is Enlightened (Buddha), I call that man a Brahman.

अक्कोसं वधबन्धं च, अदुष्टो यो तितिक्षति ।
खन्तीबलं बलानीकं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥१७॥

राजगृह (वेणुवन)

(अक्कोस) भारद्वाज

अक्कोशन् वध-बंधं च अदुष्टो यस्तितिक्षति ।
क्षान्तिबलं बलानीकं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

¹ दग्धा दग्धा भवेत्तु यः सौमित्रो विदुः । ।

² यत्तु विदुः सौमित्रो भवेत्तु यः सौमित्रो विदुः । ।

सौमित्रो भवेत्तु यः सौमित्रो भवेत्तु यः सौमित्रो विदुः । ।

देवः सौमित्रो भवेत्तु यः सौमित्रो भवेत्तु यः सौमित्रो विदुः । ।

जो बिना हूषित (चित्त) किए गाली, बध और बन्धन को सहन करता है, क्षमा बल ही जिसके बल (=सेना) का सेनापति है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

Abaondoning evil dispositions and being patient towards abuse, tying and binding, the one who has the strength of the army of patience, I call that man a Brahman.

P 146 (XXXII, 21)

P 208 V 399

यत्तु विदुः सौमित्रो भवेत्तु यः सौमित्रो विदुः । ।

सौमित्रो भवेत्तु यः सौमित्रो भवेत्तु यः सौमित्रो विदुः । ।

सौमित्रो भवेत्तु यः सौमित्रो भवेत्तु यः सौमित्रो विदुः । ।

सौमित्रो भवेत्तु यः सौमित्रो भवेत्तु यः सौमित्रो विदुः । ।

1 दग्धा दग्धा भवेत्तु यः सौमित्रो विदुः ।

2 सौमित्रो भवेत्तु यः सौमित्रो भवेत्तु यः सौमित्रो विदुः ।

अक्रोधनं वतवन्तं, सीलवन्तं अनुस्सदं ।

दन्तं अन्तिमसारीरं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥१८॥

राजगृह (वेणुवन)

सारिपुत्त (थेर)

अक्रोधनं व्रतवन्तं शीलवन्तं अनुश्रुतम् ।

दान्तं अन्तिमशरीरं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

མི་ཁྱོ་བ་དང་བདུལ་ཞུགས་ཅན།

ཨོ་ཡ་གྲིས་ས་ལྷན་གྱིང་མང་དུ་བློས།

རྒྱལ་ཁོང་མཐུན་པའི་ཕུས་འཛིན་པ།

དེ་ཡང་པར་གཤམ་གྱི་ཡུལ་ཟེར་པ་རྒྱུ་རྒྱུ་།

जो अक्रोध, व्रती, शीलवान, बहुश्रुत, संयमी (=दान्त) और अन्तिम शरीर वाला है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ।

He who is not hateful, but is disciplined, moral, learned, gentle, and bearing his final body (before Nirvana), I call that man a Brahman.

P 146 (XXXII, 23)

P 208 V 400

གང་ཞིག་རབ་ལུང་ཁྲིམ་པ་དང་། །

རེ་ཕྱིར་གཉི་པར་མི་འདྲ་ཞིང་། །

འདོད་ལྟར་ཁྱེད་ཀྱི་མ་ཉམས་མ་ལྟར་དེ།

ཡུལ་ཐེ་ཡིན་པར་ངས་གསུངས་སོ། །

1 དཔ་ཞིང་དམར་བའི་ཕྱུང་འཛིན་གཤམ།

वारि पोक्खरपत्ते व, आरग्गेरिव सामपो ।
यो न लिम्पति कामेसु, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥१६॥

राजगृह (वेणुवन)

उप्पलवण्णा (थेरी)

वारि पुक्करपत्र इव, आराग इव सर्षपः ।
यो न लिप्यते कामेषु तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

खे.दे.मा.अ.द.व.अ.कु.व.वि.द. । ।
अ.व.गु.के.अ.अ.अ.अ.अ.अ.अ. । ।
सु.वि.मा.अ.दे.द.अ.अ.अ.अ.अ. । ।
दे.अ.अ.अ.अ.अ.अ.अ.अ.अ.अ. । ।

कमल के पत्ते पर जल, और आरे के नोक पर सरसों, की भाँति जो
भोगों में लिप्त नहीं होता, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

As with water on a lotus leaf, as with a mustard seed on
the point of the needle, one whom desires cannot affect, I call
that man a Brahman.

P 147 (XXXII, 35)

P 209 V 401

अ.अ.अ.अ.अ.अ.अ.अ.अ.अ. । ।
अ.अ.अ.अ.अ.अ.अ.अ.अ.अ. । ।
अ.अ.अ.अ.अ.अ.अ.अ.अ.अ. । ।
अ.अ.अ.अ.अ.अ.अ.अ.अ.अ. । ।

यो दुःखस्स पजानाति, इधेव खयमत्तनो ।

पन्नभारं विसंयुत्तं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥२०॥

जेतवन

(कोई ब्राह्मणी)

यो दुःखस्य प्रजानाती हैव क्षयमात्मनः ।

पन्नभारं विसंयुक्तं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

शु.विण.रद.क.वदण.हि.गु.स. ।

हु.ण.व.सु.अ.र.व.र.व.दु.मे.स. ।

म.र.के.वे.र.वि.गु.क.सु.र.अ. ।

दे.अ.वदण.के.सु.अ.वे.र.व.दे. ।

जो यहीं (= इसी जन्म में) अपने दुःखों के विनाश को जान लेता है, जिसने अपने बोझ को उतार फेंका, और जो आसक्तिरहित है उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

He who realises here in this world the destruction of sorrow, who has laid the burden aside and is fully emancipated, I call that man a Brahman.

गम्भीरपञ्चं मेधावि, मग्गामग्गस्स कोविदं ।
उत्तमत्थमनुपत्तं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥२१॥

राजगृह (गृध्रकूट)

हेमा (मिश्रणी)

गम्भीरप्रज्ञं मेधाविनं मार्गमार्गस्य कोविदम् ।
उत्तमार्थमनुप्राप्तं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

अमसं वच्चं मेधाविं कोविदम् ।
असं ददं असं सन्निवत्तं मेधावि ।
असं निवत्तं मेधाविं कोविदम् ।
असं निवत्तं मेधाविं कोविदम् ।

जो गम्भीर प्रज्ञावाला, मेधावी, मार्ग अमार्ग का ज्ञाता, उत्तम पदार्थ
(= सत्य) को पाये है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

The learned one of profound wisdom who knows the
right and the wrong way, who has reached the highest goal, I
call that man a Brahman.

P 149 (XXXII, 44)

P 210 V 403

असं ददं असं सन्निवत्तं मेधावि ।
असं ददं असं सन्निवत्तं मेधावि ।
असं निवत्तं मेधाविं कोविदम् ।
असं निवत्तं मेधाविं कोविदम् ।

असंसृष्टं गृहस्थैः अनागारैश्चोभाभ्याम् ।
अनोकसारिमपिच्छं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥२२॥

जेतवन

(पञ्जारवासी) तिस्स (थेर)

असंसृष्टं गृहस्थैः अनागारैश्चोभाभ्याम् ।
अनोकसारिणं अल्पेच्छं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

ह्रिस्-व-द-क्-र-व-सु-द-श्च । ।
गृहस्थ-ग-व-अ-द-व-स-सु-द- । ।
द-व-स-सु-द-व-स-सु-द- । ।
द-व-स-सु-द-व-स-सु-द- । ।

घर वाले (= गृहस्थ) और बेघरवाले दोनों ही में जो लिप्त नहीं होता,
जो बिना ठिकाने के घूमता तथा बेचाह है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

He who is intimate with neither householders nor homeless
ones, who wanders without a fixed abode, and who has few
desires, I call that man a Brahman.

P 146 (XXXII, 23)

P 210 V 404

ग-व-स-सु-द-व-स-सु-द- । ।
द-व-स-सु-द-व-स-सु-द- । ।
द-व-स-सु-द-व-स-सु-द- । ।
द-व-स-सु-द-व-स-सु-द- । ।

निधाय दण्डं भूतेषु, तसेषु थावरेषु च ।
यो न हन्ति न घातेति, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥२३॥

जेतवन

(कोई भिक्षु)

निधाय दण्डं भूतेषु तसेषु स्थावरेषु च ।
यो न हन्ति न घातयति तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

གང་གིས་རྩུ་དང་མི་རྩུ་བརྒྱུ་ ।

འབྲུང་པོ་རྣམས་ལ་ཆད་བ་སྤངས། ।

གསོད་པར་མི་ཉེད་བདེག་མི་ཉེད། ।

དེ་ལ་བདག་ནི་བྲམ་ཟེར་བཟོད། ।

चर-अचर (सभी) प्राणियों में प्रहारविरत हो, जो न मारता है, न मारने की प्रेरणा करता है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

He who has laid aside the cudgel towards beings, whether moving or stationary. who neither kills nor beats others, I call that man a Brahman.

अविरुद्धं विरुद्धेषु, अत्तदण्डेषु निवृत्तं ।
सादानेषु अनादानं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥२४॥

जेतवन

चार श्रामणेर

अविरुद्धं विरुद्धेषु, आत्तदण्डेषु निवृत्तम् ।
सादानैष्वनादानं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

मामेवमिदं कसिं मामेवैदं । ।
दण्डमसमासं कसिं विसंहरं । ।
असंहरं कसिं असंहरं । ।
देवमसमासं कसिं विसंहरं । ।

जो विरोधियों के बीच विरोध रहित रहता है; जो दण्डधारियों के बीच
(दण्ड) रहित है, संग्राहियों में जो संग्रहरहित है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

He who is friendly amongst the hostile, who is peaceful amongst those with upraised clubs, and who is unattached amongst the attached, I call that man a Brahman.

यस्य रागो च दोषो च, मानो मक्खो च पातितो ।
सासपोरिव आरग्गा, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥२५॥

राजगृह (वेणुवन)

महापण्डक (थेर)

यस्य रागश्च द्वेषश्च मानो म्रक्षश्च पातितः ।
सर्षप इलाऽऽराग्नात् तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

ཁབ་ཀྱི་ཚེ་ནས་ཡུངས་ཀར་བཞིན། །
གང་གི་འདོད་ཆགས་ཞེ་སྒང་དང་། །
ང་ཀྱལ་ལྷག་དོག་སྤུང་ལྷུང་བ། །
དེ་ལ་བདག་ནི་བྲག་རྩེར་བཞོད། །

आरे के ऊपर सरसों की भाँति; जिसके (चित्त से) राग, द्वेष, मान, डाह
फेंक दिये गये हैं, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

From whom desire, hatred, pride, jealousy are fallen off,
like a mustard seed from the point of a needle, I call that man
a Brahman.

P 149 (XXXII, 49)

P 212 V 407

སྤུང་ལྷུང་ལྷུང་ལྷུང་ལྷུང་ལྷུང་། །
གང་ཞེ་གི་འདོད་ཆགས་ཞེ་སྒང་དང་། །
ང་ཀྱལ་འཆབ་པ་འཛོམས་པ་དེ། །
བྲག་རྩེ་ཡིན་པར་ངས་གསུངས་སོ། །

अकक्कसं विज्जापनिं, गिरं सच्चमुदीरये ।
याय नाभिसजे कच्चि, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥२६॥

राजगृह (वेणुवन)

पिलिन्द वच्छ (घेर)

अकर्कशां विज्ञापनीं गिरं सत्थां उदीरयेत् ।
यथा नाभिसजेत् किञ्चित् तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

हुं व रेणं सुयं वैदं योसं सुणसं गुं ।
वदेणं वदेणं वदेणं वैदं सुणसं वसं ।
सुं यं यदं वैदं वैदं वदेणं वदेणं ।
देयं वदेणं वैदं सुयं वैदं वदेणं ।

(जो इस प्रकार की) अकर्कश, आदरयुक्त (तथा) सच्ची वाणी को
बोले कि, जिससे कुछ भी पीड़ा न होवे, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

Whoever utters gentle, clearly spoken, true words and by
this gives offence to none, I call that man a Brahman.

योध दीर्घं व रस्सं वा, अणु थूलं सुभासुभं ।
लोकेऽदत्तं नादयति, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥२७॥

जितवन

कोई स्थविर

य इह दीर्घं वा ह्रस्वं वाऽणु स्थूलं शुभाऽशुभम् ।
लोकेऽदत्तं नादत्ते तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

गदःकोशःरिदःपुनःहुःदस्य । ।
सुःसुखःदेषःरिदःकोशःदस्य । ।
देषःरिदःकोशःदेषःरिदःकोशः । ।
देषःरिदःकोशःदेषःरिदःकोशः । ।

(चीज) चाहे दीर्घ हो या लघु, छोटी हो या मोटी, शुभ हो या अशुभ,
जो संसार में (किसी भी) बिना दी चीज को नहीं लेता, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

He who in this world takes nothing that is not given to
him, be it long or short, small or great, good or bad, I call that
man a Brahman.

P 147 (XXXII, 29)

P 213 V 409

गदःकोशःरिदःपुनःहुःदस्य । ।
सुःसुखःदेषःरिदःकोशःदस्य । ।
देषःरिदःकोशःदेषःरिदःकोशः । ।
देषःरिदःकोशःदेषःरिदःकोशः । ।

आशा यस्स न विज्जन्ति, अस्मिं लोके परमिह च ।
निरासासं विसंयुतं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥२८॥

जैतवन

सारिपुत्त (थेर)

आशा यस्व न विद्यन्तेऽस्मिन् लोके परस्मिन् च ।
निराशयं विसंयुक्तं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

२३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ।
३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ।
३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ।
३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ।

इस लोक और परलोक के विषय में जिसकी आशाएँ (=चाह) नहीं रह गई हैं, जो आशारहित और आसक्तिरहित है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ।

He who has no basis for desires, whether in this world or in the next, who has no basis for desires and is free from all fetters, I call that man a Brahman.

P 150 (XXXII)

P 213 V 410

३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ।
३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ।
३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ।
३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ३३॥ ।

यस्सालया न विज्जन्ति, अज्जाय अकथङ्कथी ।

अमृतोगघमनुप्पत्तं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥२६॥

जेतवन

महामोग्गलान (थेर)

यस्याऽऽलया न विद्यन्त आज्ञायाऽकथंकथी ।

अमृतावगाधमनु प्राप्तं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

यादंयं गुणं भाविंसेदं गुणं उदं । ।

गुणं येन घेऽहं भवेदं । ।

यदुदं उदं विदं दुःखं यं घेव । ।

देयं यदभावेन घेव भवेदं । ।

जिसको आलय (=तृष्णा) नहीं है, जो भली प्रकार जानकर अकथ (-पद) का कहनेवाला है, जिसने गाढ़े अमृत को पा लिया; उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

He who has no basis at all (from which samsara can develop, i. e. no ignorance), who, knowing all, is free from doubts, who has realised the Deathless (Nirvana), I call that man a Brahman.

चन्द्रं च विमलं शुद्धं, विप्रसन्नमनाविलं ।
नन्दीभवपरिक्खीणं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥३१॥

जितवन

चन्द्राम (धेर)

चन्द्रमिव विमलं शुद्धं विप्रसन्नमनाविलम् ।
नन्दीभवपरिक्खीणं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

རྩི་མ་མེད་པ་རྒྱ་པ་བཞེན། ।
 དག་ཅིང་དྲངས་ལ་ར་རི་མེད། ।
 དགའ་བའི་སྤྲེད་པ་ཡོངས་སུ་ཟད། ।
 རེ་ལ་བདག་ནི་བྲམ་ཟེར་བཟྩ། ।

जो चन्द्रमा की भाँति विमल, शुद्ध, स्वच्छ = अनाविल है, (तथा जिमकी) सभी जन्मों की तृष्णा नष्ट हो गई है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

He who is spotless as the moon, who is pure, clear and without fault, and who has destroyed desire for worldly joy, I call that man a Brahman.

P 148 (XXXII, 39)

P 215 V 413

རྒྱ་པ་དག་ཅིང་རྩི་མེད་ལ། ।
 སྤྲེད་བྲམ་རབ་དྲླངས་བ་ཟད། ।
 སྤྲེད་ལ་དགའ་བ་ཡོངས་སྤངས་དེ ।
 བྲམ་ཟེ་ཡིན་པར་ངས་བསྐྱུངས་སོ། །

यो इमं पलिपथं दुग्गं, संसारं मोहमच्चगा ।
तिण्णो पारगतो जायी, अनेजो अकथङ्कथी ।
अनुपादाय निव्वुतो, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥३२॥

कुण्डिया (कौलिय)

सीवलि (थेर)

य इमं प्रतिपथं दुर्गं संसारं मोहमत्यगात् ।
तीर्णं पारगतो ध्याय्यनेजोऽकथकथी ।
अनुपादाय निर्वृतः तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

གང་འདིར་ཡོག་ལ་མ་བཟོད་དཀར་བའི།
 འཁོར་བ་མེད་མ་བཟོད་མ་བཟོད།
 བཞུ་མ་ཅིང་མ་རོམ་སོན་གྱུར་བ།
 བསམ་གདན་གཡོ་མེད་ཐེ་ཚོམ་ཚོད།
 ཉེ་བར་ལེན་པ་མེད་ཅིང་ཞི།
 དེ་མ་བདག་ནི་ཐུམ་ཟེར་བཟོད།

जिसने इस दुर्गम संसार (=जन्म मरण) के चक्कर में डालनेवाले मोह (रुपी) उलटे मार्ग को त्याग दिया, जो (संसार से) पारंगत, ध्यानी तथा तीर्ण (=तर गया) है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ।

He who in this world has left behind the difficult to traverse misleading path of the delusions of the cycle of conditioned rebirth, who has crossed over and gone beyond, who has unagitated meditation free of doubts, and who, free of grasping, is pacified, I call that man a Brahman.

योध कामे पृहन्त्वान्, अनागारो परिब्रजे ।
कामभवपरिक्षीणं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥३३॥

जेतवन

सुन्दर समूह (धेर)

य इह कामान् प्रहायाऽनागारः परिव्रजेत् ।
कामभवपरिक्षीणं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

ॠ॒न्॒क॒ण॒न्॒त्रि॒ण॒ॠ॒न्॒व॒क्ष॒स्य॒ । ।
क्ष॒न्॒क्ष॒न्॒त्रि॒ण॒ॠ॒न्॒व॒क्ष॒स्य॒ । ।
ॠ॒न्॒क॒ण॒न्॒त्रि॒ण॒ॠ॒न्॒व॒क्ष॒स्य॒ । ।
ॠ॒न्॒क॒ण॒न्॒त्रि॒ण॒ॠ॒न्॒व॒क्ष॒स्य॒ । ।

जो यहाँ भोगों को छोड़, बेघर हो प्रव्रजित (=संन्यासी) हो गया है,
जिसके भोग और जन्म नष्ट हो गए, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

He who in this world, giving up desires renounces and
becomes a homeless one, and who has finished his tendency
towards desire, I call that man a Brahman.

P 149 (XXXII, 46)

P 216 V 415

ॠ॒न्॒क॒ण॒न्॒त्रि॒ण॒ॠ॒न्॒व॒क्ष॒स्य॒ । ।
क्ष॒न्॒क्ष॒न्॒त्रि॒ण॒ॠ॒न्॒व॒क्ष॒स्य॒ । ।
ॠ॒न्॒क॒ण॒न्॒त्रि॒ण॒ॠ॒न्॒व॒क्ष॒स्य॒ । ।
ॠ॒न्॒क॒ण॒न्॒त्रि॒ण॒ॠ॒न्॒व॒क्ष॒स्य॒ । ।

योध तण्हं पढन्त्वान, अनागारो परिव्रजे ।
तण्हाभवपरिक्खीणं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥३४॥

राजगृह (वेणुवन)

जेटिल (धेर)

य इह तृष्णां प्रहायाऽनागारः परिव्रजेत् ।
तृष्णाभवपरिक्षीणं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

अद्वैतं गच्छन् विना श्रेयसं ब्रह्मणा ।
श्रद्धां कृत्वा ह्येवमेव त्वं वृत्तम् ।
श्रेयसं च न दत्त्वा चोत्पन्नं त्वं च ।
देवं च न ज्ञात्वा चैव त्वं वृत्तम् ।

जो यहाँ तृष्णा को छोड़, बेघर बन प्रव्रजित है, जिसकी तृष्णा और
(पुनर्जन्म) नष्ट हो गये, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

He who in this world, giving up craving, renounces and becomes a homeless one and who has finished his tendency towards craving, I call that man a Brahman.

हित्वा मानुसकं योगं, दिव्यं योगं उपचचगा ।

सर्वयोगविसंयुतं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणम् ॥२५॥

राजगृह (वेणुवन)

(मृतपूर्व नट निष्ठु)

हित्वा मानुषकं योगं दिव्यं योगं उपात्यगात् ।

सर्वयोगविसंयुतं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

सिं.यि.सुं.व.सुं.स.सुं.सिं. । ।

सुं.यि.सुं.व.स.स.सुं.सिं. । ।

सुं.व.गुं.सुं.सिं.सुं.सिं. । ।

सिं.स.सुं.सिं.सुं.सिं.सुं.सिं. । ।

मनुष्य (= भोगों के) लाभों को छोड़, दिव्य (भोगों के) लाभ को भी (जिसने) त्याग दिया, सारे ही लाभों में जो आसक्त नहीं है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

He who, discarding human bonds and throwing off attachment for existence as a God, completely free of all bonds, I call that man a Brahman.

P 150 (XXXII, 54)

P 217 V 417

सिं.यि.सुं.व.सुं.स.सुं.सिं. । ।

सुं.यि.सुं.व.स.स.सुं.सिं. । ।

सुं.व.गुं.सुं.सिं.सुं.सिं. । ।

सिं.स.सुं.सिं.सुं.सिं.सुं.सिं. । ।

हित्वा रतिं च अरतिं च, सीतिभूतं निरुपधिं ।

सर्वलोकाभिभुं वीरं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥३६॥

हित्वा रतिं चाऽरतिं च शीतीभूतं निरुपधिम् ।

सर्वलोकाऽभिभुवं वीरं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

दत्ता० दत्त० मी० दत्ता० वीर० वृष० दे० ।

वसिष्ठ० वस० वृष० वीर० वृष० वृष० ।

दत्ता० वीर० वृष० दे० वृष० वृष० वृष० ।

दे० वृष० वृष० वृष० वृष० वृष० ।

रति और अरति (=घृणा) को छोड़, जो शीतल-स्वभाव (तथा)
क्लेशरहित है, (जो ऐसा) सर्वलोकविजयी, वीर है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

He who has given up likes and dislikes, who is cooled and
without attachment. the hero who has conquered the world,
I call that man a Brahman.

च्युतिं यो वेदि सत्तानं, उपपत्तिं च सब्बसो ।
असत्तं सुगतं बुद्धं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥३७॥

राजगृह (वेणुवन)

बङ्गीस (बैर)

च्युतिं यो वेद मत्त्वानां, उपपत्तिं च सर्वशः ।
असक्तं सुगतं बुद्धं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

ससस उदग्गुक्कं सुससस उदग्गुक्कं
अक्कं अक्कं अक्कं अक्कं अक्कं
अक्कं अक्कं अक्कं अक्कं अक्कं
अक्कं अक्कं अक्कं अक्कं अक्कं

जो प्राणियों की च्युति (=मृत्यु) और उत्पत्ति को भली प्रकार जानता है, (जो) आशक्तिरहित सुगत (=सुन्दर) गति को प्राप्त और बुद्ध (=जानी) है उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

He who in every way knows the death and rebirth of beings, (understands impermanence), he who is detached, has gone to happiness and has wisdom, I call that man a Brahman.

P 151 (XXXII, 59)

P 218 V 419

अक्कं अक्कं अक्कं अक्कं अक्कं
अक्कं अक्कं अक्कं अक्कं अक्कं
अक्कं अक्कं अक्कं अक्कं अक्कं
अक्कं अक्कं अक्कं अक्कं अक्कं

यस्य गतिं न जानन्ति, देवा गन्धर्वमानुषा ।

स्त्रीणास्रवं अरहन्तं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥३८॥

यस्य गतिं न जानन्ति देव-गन्धर्व मानुषाः ।

स्त्रीणास्रवं अरहन्तं तमहं ब्रूमि ब्राह्मणम् ॥

གང་གི་འགྲོ་བ་སྣ་ཁྲམས་དང་། ।

དྲི་ཟ་མི་ཡིས་མི་ཤེས་པར། ।

ཟག་པ་ཟད་ཅིང་དགྲ་བཅོམ་པ། ।

དེ་ལ་བདག་ནི་བྲམ་ཟེང་བཟློད། ।

जिसकी गति (=पहुँच) को देवता, गन्धर्व और मनुष्य नहीं जानते, जो स्त्रीणास्रव (=रागादिरहित) और अहंत्व है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

He whose path neither the gods, nor spirits, nor men know, who has destroyed all taints and is an Arahāt, I call that man a Brahman.

P 150 (XXXII, 55)

P 218 V 420

གང་ཞིག་སྣ་དང་དྲི་ཟ་དང་། ।

མི་ཡི་འགྲོ་བ་མི་ཤེས་ཤིང་། ।

ཞི་བའི་འགྲོ་བ་མི་ཤེས་དེ། ।

བྲམ་ཟེ་ཡིན་པར་ངས་གསུངས་སོ། །

यस्स पुरे च पच्छा च, मज्जे च नत्थि किञ्चन ।
अकिञ्चनं अनादानं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥३६॥

राजशृङ्ग (वेणुवन)

धम्मदिन्ना (धेरे)

यस्य पुरश्च पश्चाच्च मध्ये च नास्ति किञ्चन ।
अकिञ्चनं अनादानं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

पादं च त्रैलोक्यं दत्तं भूयः सदा ।

दत्तं च त्रैलोक्यं दत्तं भूयः सदा ।

त्रैलोक्यं दत्तं भूयः सदा सदा ।

देवः सदा सदा सदा सदा सदा ।

जिम्मेके पूर्व, पश्चात् और मध्य में कुछ नहीं है, जो परिग्रहरहित =
अदानरहित है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

He who holds on to nothing whether past, future, or present, who has nothing and is free of grasping, I call that man a Brahman.

उत्तमं प्रवरं वीरं, महर्षिं विजिताविनं ।
अनेजं स्नातकं बुद्धं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥४०॥

जेतवन

अङ्गलिमाल (धेर)

ऋषभं प्रवरं वीरं महर्षिं विजितवन्ततम् ।
अनेजं स्नातकं बुद्धं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

शौरं श्रेष्ठं उत्तमं वीरं महर्षिं विजिताविनं ।

ऋषभं प्रवरं वीरं महर्षिं विजितवन्ततम् ।

अनेजं स्नातकं बुद्धं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

१ शौरं श्रेष्ठं उत्तमं वीरं महर्षिं विजिताविनं ।

अनेजं स्नातकं बुद्धं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

(जो) ऋषभ (= श्रेष्ठ), प्रवर, वीर, महर्षि, विजेता, अकम्प्य, स्नातक
और बुद्ध है उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

The supreme one, the leader, the hero, the great sage, the
conqueror, the unwavering, purified one possessed of wisdom,
I call that man a Brahman.

P 151 (XXXII, 61)

P 219 V 422

शौरं श्रेष्ठं उत्तमं वीरं महर्षिं विजिताविनं ।

ऋषभं प्रवरं वीरं महर्षिं विजितवन्ततम् ।

अनेजं स्नातकं बुद्धं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

१ शौरं श्रेष्ठं उत्तमं वीरं महर्षिं विजिताविनं ।

१ शौरं श्रेष्ठं उत्तमं वीरं महर्षिं विजिताविनं ।

पुब्बेनिवासं यो वेदि, सम्गापायं च पस्सति,
अथो जातिक्खयं पत्तो, अभिञ्जावोसितो मुनि ।

सब्बवोसितवोसानं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥४१॥

जेतवन

देवहित (ब्राह्मण)

पूर्वनिवासं यो वेद स्वर्गापायं च पश्यति ।
अथ जातिक्षणयं प्राप्तोऽभिज्ञा व्यवसितो मुनिः ।
सर्वव्यवसितव्यवसान तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥

एदं एवमिह भूयस्सु एवमिह भूयस्सु ।

अथो एवमिह भूयस्सु एवमिह भूयस्सु ।

अथो एवमिह भूयस्सु एवमिह भूयस्सु ।

अथो एवमिह भूयस्सु एवमिह भूयस्सु ।

अथो एवमिह भूयस्सु एवमिह भूयस्सु ।

अथो एवमिह भूयस्सु एवमिह भूयस्सु ।

अथो एवमिह भूयस्सु ।

अथो एवमिह भूयस्सु ।

जो पूर्व जन्म को जानता है, स्वर्ग और अगति को जो देखता है; और जिसका (पुनः) जन्म क्षीण हो गया (जो) अभिज्ञा (= दिव्य ज्ञान) परायण है उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

He who knows his former abodes (previous lives) who sees heaven and hell, who has reached the end of births, who is the sage with perfected superior knowledge, and who has done all that had to be done, I call that man a Brahman.

P 150 (XXXII, 57)

P 220 V 423

एदं एवमिह भूयस्सु एवमिह भूयस्सु ।

अथो एवमिह भूयस्सु एवमिह भूयस्सु ।

अथो एवमिह भूयस्सु एवमिह भूयस्सु ।

अथो एवमिह भूयस्सु एवमिह भूयस्सु ।

अथो एवमिह भूयस्सु एवमिह भूयस्सु ।

अथो एवमिह भूयस्सु एवमिह भूयस्सु ।

शुद्धि-पत्र

पृ० सं०	भाषा	अशुद्ध	शुद्ध
7	अ०	P 10	P 106
"	"		V 7
8	पा०	असुमानुपस्सि	असुमानुपस्सि
14	"	(XXXI)	(XXXI, 13)
18			आवस्ती (जेतवन) सुमना देवी
24	पा०	सतीमतो	सतीमतो
26			जेतवन बालनक्खत घुट्ट
29			जेतवन दो मित्र मिश्रु
31	"	उह	इहं
"	सं०	भिक्षः	भिक्षुः
32	सं०	तिल्स	तिस्स
36	"	सुदुर्गंश	सुदुर्दंश
37	"	दूरगमं	दूरगमं
42	"	द्विषं	द्विषयत्
46	अ०	1	17
57	सं०	विदन्ति	विन्दन्ति
58	"	उज्जिते	उज्जिते
59	सं०	सम्यक्	सम्यक्
63	अ०	(XXX 22)	(XXV, 22)
64	"	(XXX, 13)	(XXV, 13)
68	हि०	अनुपात	अनुताप
73	सं०	आवासेसु	आवासेषु
76	सं०	प्रवत्तारं	प्रवक्तारं
83	"	नोच्चावयं	नोच्चावच
84	पा०	न सीलवा	स सीलवा
86	अ०	(XYIX 38)	(XXIX 38)
92	सं०	शकुन्तानं	शकुन्तानां
95	"	इन्द्रकीलोपमस्ताहक्	इन्द्रकीलोपमस्ताह्क्
"	"	हृद	हृद
98	"	यत्थारहन्तो	यत्थारहन्तो
109	पा०	अभिवादनसीलिस्स	अभिवादनसीलिस्स
113	सं०	जीवे अपस्सं	जीवेद् अपश्यन्
"	"	सेय्यो पस्सतो	श्रेयः पश्यत्
130	"	सवं	सर्वं
132	अ०	ow	on

पृ० सं०	भाषा	अशुद्ध	शुद्ध
133	सं०	स्पृथेयुस्त्वाम्	स्पृथेयुस्त्वाम्
139	सं०	परिज्ञयं	परिक्षयं
143	पा०	लोकेस्मि	लोकस्मि
148	सं०	रोगनीपमङ्गुरम्	रोगनीडप्रमङ्गुरम्
149	,,	कपोतकान्यस्थीति	कपोतकान्यस्थीनि
169	,,	परम	परत्र
170	,,	"	"
176	हि०	ले जाते हैं	ले जाये जाते हैं ।
188	,,	सम्मासम्बुद्धसावबो	सम्यक्सम्बुद्धश्चावक
200	पा०	मनुस्सेमु	मनुस्सेमु
209	,,	चान्दिमा	चन्दिमा
228	,,	तूष्णीमासीत्	तूष्णीमासीत्
"	,,	बहुभाणिनाम	बहुभाणिनाम्
229	,,	व चैतहि	न चैतहि
243	,,	परम	परत्र
244	पा०	मिक्खवो	मिक्खवो
247	हि०	पाँच उपासक	पाँच सौ उपासक
250	सं०	रत्ति	रात्रौ
263	,,	म को	भवति ईर्षुको
275	,,	दर्शनस्य	दर्शनस्य
277	,,	कुष्माभिः	युष्माभिः
279	अं०	P 9	P 6
295	,,	P 152 (XXXII, 72) P 155 V 294	
307	हि०	सुन्दरी	सुन्दरी
321	पा०	नागवर्ग	नागवर्गो
328	हि०	मनही	मन की
,,	सं०	मातंगोऽरण्य	मातंगोऽरण्य
335	,,	मनुजस्स	मनुजस्य
,,	,,	वद्धते	वर्द्धते
354	,,	साय	स्वयम्
368	पा०	से वे	स वे
370	अं०	P 97	P 87
374	सं०	विश्यतः	विपश्यतः
387	पा०	विराजमासीत्	विरजमासीत्

गाथा-सूची

अकककम्	२६।२६	अपुञ्जलाभो च	२२।५
अकतं दुककतं	२२।६	अपका ते	६।१०
अककोच्छ्रि मं	१।४,३	अपमत्तो अयं	४।१३
अककोधनं वतवन्तं	२६।१८	अपमत्तो पमत्तेषु	२।६
अककोधेन जिने	१७।३	अपमादरता होथ	२३।८
अचरित्वा ब्रह्म-	११।१०, ११	अपमादरतो भिक्खु	२।११, १२
अककोसं बध्वन्धं	२६।१७	अपमादेन मघवा	२।१०
अचिरं वत'अं	३।६	अपमादो मतं	२।१
अऊआ हि लाभु	५।१६	अपमपि चै सहितं	१।२०
अट्ठीनं नगरं	११।५	अपलाभोपि चै	२५।७
अत्तदत्थं	१२।१०	अपमसुता	११।७
अत्तना चोद	२५।२०	अभये च भय-	२२।१२
अत्तना' व कतं	१२।५	अभित्थरेथ	६।१
अत्तना' व कतं पापं	१२।६	अभिवादनमीलस्स	८।१०
अत्तानञ्चे तथा	१२।३	अभूतलादी निरयं	२२।१
अत्तानञ्चे पिथ	१२।१	अयसा' व मल	१८।६
अत्तानमेव पठमं	१२।२	अयोगे युञ्ज	१६।१
अत्ता ह वे जितं	८।५	अलङ्कनो चेपि	१०।१४
अत्ता हि अत्तनो	२५।२१	अलज्जिता ये	२२।११
अत्ता हि अत्तनो	१२।४	अउजे वउज-	२२।१३
अत्थमिह जातमिह	२३।१२	अविच्छेद विच्छेदेषु	२६।२४
अथ पापानि	१०।८	असञ्जायमला	१२।७
अथवस्स अगागानि	१०।१२	असत भावन-	५।१४
अनवट्ठित्तचित्तस्म	३।६	असंसट्ठं	२६।२२
अनवस्सुत वित्तस्स	३।७	अमारं सारमतिनो	१।११
अनिककसावो कासाव	१।६	असाहसेन धम्मैन	१६।२
अनुपुञ्जेन मेघावी	१८।५	अमुभानुपस्सिं	१।८
अनुपवादी अनुपघातो	१४।७	अस्सद्धो अकतञ्जू	७।८
अनेकजातिसंमा	११।८	अस्सो यथा भद्रो	१०।१६
अन्धभूतो अयं	१३।८	अह नागो' व	२३।१
अपि दिव्वे	१४।६	अहिसका ये	१७।५

आकासे च पदं	१८।२०२१	कायेन संवरो	२५।२
आरोग्यपरमा	१५।८	कायेन सवुता	१७।१४
एवं संकारभूते-	४।१६	कासावकण्ठा	२२।२
भासा यस्स	२६।२८	किच्छो मनुस्स-	१४।४
इदं पुरे	२३।७	कि ते जटाहि	२६।१२
इध तप्पति	१।१७	कुम्भूपमं	३।८
इध नन्दति	१।१८	कुसो यथा	२२।६
इध मोदति	१।१६	को इमं पठविं	४।१
इध वस्सं	२०।१४	कोधं जहे	१७।१
इध सोचति	१।१५	खन्ती परमं तपो	१४।६
उच्छिन्द सिनेह	२०।१३	गतद्धिनो	७।१
उट्ठनकालम्हि	२०।८	गम्भमेके	६।११
उट्ठानवतो सतिमतो	२।४	गम्भीरपञ्ज-	२६।२१
उट्ठानेन	२।५	गहकारक	११।६
उतिट्ठे	१३।२	गामे वा यदि	७।६
उदकं हि	६।५, १०	चक्खुना	२५।१
उपनोतवयो	१८।३	चत्तारि ठानानि	२२।४
उय्युञ्जन्ति	७।२	चन्दनं तगरं	४।१२
उसभ पवर	२६।४०	चन्दं व विमल-	२६।३१
एकं अम्म	१३।१०	ते तादिसे	१४।१८
एकस्स चरितं	२३।११	ते सन्पन्न-	४।१४
एकासनं एकसेय्यं	२१।१६	चरन्ति बाला	५।७
एतं खो सरणं	१४।१४	विरप्पवासिं	१६।११
एतं दळ्हं	२६।१३	चुतिं यो वेदि	२६।३७
एतमत्थवसं	२०।१७	छन्दजातो	१६।१०
एतं विसेसतो	२।२	छिन्द सोतं	२६।१
एत हि तुम्हे	२०।३	छेत्वा नन्दिं	२६।१६
एथ पस्मथिमं	१३।५	जयं वेरं पसवति	१५।५
एवम्भो पुरिम	१८।१४	जिघच्छापारमा	१५।७
चरञ्जेनाधि	५।२	जोरन्ति वे राज	११।६
एसो व मग्गो	२०।२	ज्ञाय भिवखू	२५।१२
ओवदेय	६।२	ज्ञायिं विरज	२६।४
कण्हं धम्म	६।१२	तञ्च कम्मं	५।६
कयिरञ्जे	२२।८	तण्हाय जायते	१६।८
कामतो जायते	१६।७	ततो मला	१८।६
कायप्पकोपं	१७।११	तत्राभिरति	६।१३

तत्रायमादि	२५।१६	निधाय दण्डं	२६।२३
तथैव कत-	१६।१२	निधीनं' व	६।१
तपुत्त-पसु	२०।१५	नेक्खं	१७।१०
त वो वदामि	२४।४	न तेन अरियो	१६।१५
तसिनाय पुरक्खता	२४।१०, ६	न तेन येरो	१६।५
तस्मा पियं	१६।३	न तेन पण्डितो	१६।३
तस्मा हि धीरं	१५।१२	न तेन भिक्खू	१६।११
तिणदोसानि	२४।२३, २४, २५, २६	न तेन होति	१६।१
तुम्हेहि किच्चं	२०।४	नत्थि ज्ञान	२५।१३
ते ज्ञायिनो	२।३	नत्थि राग	१५।६
न तं माता	३।११	नत्थि राग	१८।१७
न तावता धम्म	१६।४	न नग	१०।१३
ददन्ति वे	१८।१५	न परेसं	४।७
तन्तं नयन्ति	२३।२	न पुप्फगन्धो	४।११
दिवा तपति	२६।५	न ब्राह्मणस्स	२६।७
दिसो दिसं	३।१०	न ब्राह्मणस्से	२६।८
दीघा जागरतो	५।१	न भजे	६।३
दुक्खं	१४।१३	न मुण्डकेन	१६।६
दुन्निगगहस्स	३।३	न मोनेन	१६।१३
दुप्पब्बज्ज	२१।१३	न वाक्करण	१६।७
दुल्लभो	१४।१५	न वे कदरिया	१३।११
दूरंगमं	३।५	न सन्ति पुत्ता	२०।१६
दूरे सन्तो	२१।१५	न सीलब्बत	१६।१६
धनपालको	२३।५	न हि एतेहि	२३।४
धम्मं चरे	१३।३	न हि पाप	५।१२
धम्मपीतो	६।४	न हि वेरेन	१।५
धम्मारामो	२५।५	निट्ठ गतो	२४।१८
न अत्तहेतू	६।६	पयतो जायते	१६।४
न अन्तलिक्खे	६।१२, १३	पुञ्जञ्चे पुरिसो	१।३
न कहापण	१४।८	पुत्तामं' त्थि	५।३
नगरं यथा	२२।१०	नेतं लो सरणं	१४।११
न चाहं	२६।१४	नेव देवो	८।६
न चाहू	१७।८	नो च लभेथ	२३।१०
न जटाहि	२६।११	पञ्च छिन्दे	२३।११
न तं कम्मं	५।८	पटिसन्थार	२५।१७
न तं दळ्हं	२४।१२	पठवीसमो	७।६

पण्डुपलामो	१८।१	मातरं पितरं	२१।५,६
पथव्या एकरज्जेन	१३।१२	मा पमाद-	२।७
पमादमनु	२।६	मा पियेहि	१६।२
पमादपणमादेन	२।८	मा' वमज्जेय पाप-	६।६
परदुक्खुपदानेन	२१।२	मा' वमज्जेय	६।७
परवज्जानुपस्सि	१८।१६	मा बोच फरुसं	१०।५
परिजिणमिदं	११।३	यस्स कायेन	२६।६
परे च न	१।६	यस्स गति	२६।३८
पविवेकरसं	१५।६	यस्स चेतं समु-	१८।६
पंसुकूलधरं	२६।१०	यस्स चेतं समु-	१८।१६
पस्स चित्तकतं	११।२	मुहुत्तमपि	५।६
पाणिमिह वे	६।६	मेत्ताविहारी	२५।६
पापज्जे पूरिमो	६।२	य अच्चन्त	१२।६
पापानि परि-	१६।१४	यं एसा सहति	२४।२
पापो' पि पस्सनि	६।४	यं किञ्चि यिट्ठं	८।६
पापोज्ज वत्त	२५।२२	यं किञ्चि सि	२२।७
मासे-मासे कुप	५।११	यज्जे विज्जू	१७।६
मासे मासे सहस्सेन	८।७	यतो यतो सम्म	२५।१५
मिद्धो यदा	२३।६	यथागारं दुच्छन्नं	१।१३
मुञ्च पूरे	२४।१५	यथागारं सुच्छन्नं	१।१४
पुब्बेनिवासं	२६।४१	यथा दण्डेन	१०।७
पूजारहे	१४।१७	यथापि गुप्फ	८।१०
पेमतो जायते	१६।५	यथापि भमरो	४।६
पोराणमेतं	१७।६	यथापि मूले	२४।५
फन्दनं जण्णलं	३।१	यथापि रहदो	६।७
फुसामि नेक्खम्म	१६।१७	यथापि रुचिरं	४।८,६
फेनुपमं	४।३	यथा बुब्बलकं	१३।४
भद्रो' पि	६।५	यथा सङ्कार	४।१५
मग्गानट्ठंगिको	२०।१	यदा द्वयेषु	२६।२
मत्तामुखपरिच्चागा	२१।१	यम्हा धम्मं	२६।१०
मधू' व मज्जनी	५।१०	यं हि किच्चं	२१।३
मनुजस्स पमत्त	२४।१	यमिह सच्चं च	१६।६
मनोप्यकोपं	१७।१३	योगा वे जायती	२०।१०
मनो पुब्बंगमा	१।१,२	यो च गाथा	८।३
ममेव कत	५।१५	यो च पुब्बे	१३।६
मलिरिथया	१८।८	यो च बुद्धज्ज	१४।१२

यो च वन्तकसाव	१११०	यो' ध पुञ्ज	२६१३०
यस्स छित्तिसती	२४१६	यो' ध पुञ्ज	१६११२
यस्स जालिनी	१४१२	यो निब्बानथो	२४१११
यस्स जितं	१४११	यो पाणमत्तिपातेति	१८११२
यस्स पापं	१३१७	यो बालो	५१६
यस्स पारं अपारं	२६१३	यो मुख	२५१४
यस्स पुरे च	२६१३६	यो वे उप्पतित	१७१२
यस्स रामो च	२६१२५	यो सहस्स	८१४
यस्सालया न	२६१२६	यो सामनं	१२१८
यस्सासवा	७१४	यो ह वे दहरो	२५१२३
यस्सिन्द्रियाणि	७१५	रतिया जायते	१६१६
यानि' मानि	१११४	रमणीयानि अरञ्जानि	७११०
याव जीवम्पि	५१५	राजतो वा	१०१११
यावदेव अनत्थाय	५११३	सब्बसंयोजन	२६११५
यावं हि वनथो	२०११२	सब्बसो नाम-	२५१८
ये च रवो	६१११	सब्बाभिभू	२४१२०
ये ज्ञानपसुता	१४१३	सब्बे तसन्ति	१०११,२
ये रागरत्ता	२४११४	सब्बे धम्मा	२०१७
येसं च सुसमा-	२११४	सब्बे सङ्खारा अ-	२०१५
येसं सन्निवयो	७१३	बहुम्पि चे	१११६
येसं सम्बोधि	६११४	बहु वे सरणं	१४११०
यां अप्पदुट्ठस्स	६११०	वावा नुरक्खी	२०१६
यो इमं पलियथ	१६१३२	वाणिजो' व	६१८
वचो पकोपं	१७११२	वारिजो' व	३१२
वज्जञ्च वज्जतो	२२११४	वालसंगतचारी	१५१११
वन छिन्दथ	२०१२१	वाहितवापो	२६१६
वर अस्सतरा	२३१३	वितक्कपमदितस्स	२४११६
वस्सिका त्रिय	२५११८	वितक्कूपसमे च	२४११७
यो च वस्ससतं	८१८	विततण्हो अनादानो	२४११६
यो च समेति	१६११०	वेदनं फल्लसं	१०११०
यो चेतं सहनी	२४१३	स चे नेरेसि	१०१६
यो दण्डेन	१०१६	स के लभेथ	२६१६
यो दुक्खस्स	२६१२०	सच्चं भणे	१७१४
यो' ध कामे	२६१३३	सदा जागरमानानं	१७१६
यो' ध तण्हं	२६१३४	सद्धो सीलेन	२१११४
यो' ध दीघं	२६१२७	सन्तकायो	२५११६

सन्तं तस्स	७।७	सुकरानि	१२।७
सब्बत्थ वे	६।८	सुखकामानि	१०।३,४
सब्बदानं	२४।२१	सुखं याव	२३।१४
सब्बपापस्स	१४।५	सुखा मत्तेय्यता	२३।१३
सुखो बुद्धानं	१४।१६	सुभानु पस्सि	१।७
सुजीवं	१८।१०	सुरामेरयपानं	१८।१३
सुञ्जागारं	२५।१४	सुसुखं वत	१५।१-४
सुदस्सं वज्ज	१८।१८	सेखो पठविं	४।२
सुदुद्दसं	३।४	सेय्यो अयो-	२२।३
सुप्पबुद्धं	२१।७-१२	सेलो यथा	६।६
सब्बे सुङ्खारा दु	२०।६	सो करोहि	१८।२,४
सरितानि	२४।८	हत्थसञ्जतो	२५।३
लाभं	२५।६	हनन्ति भोगा	२४।२२
भवन्ति सब्ब	२४।७	हंसा' दिच्च-	१३।६
सहस्सम्पि चे गाथा	८।२	हित्वा मानुसकं	२६।३५
सहस्सम्पि चे वाचा	८।१	हित्वा रतिं	२६।३६
साधु दस्सन-	१५।१०	हिरीनिसेधो	१०।१५
सारञ्च	१।१२	हिरीमता च	१८।११
सिञ्च भिक्खू	२५।१०	हीनं घम्मं	१३।१
सीलदस्सन-	१६।६		

